- पूरी तरह से फैंटेस मटीरियल और अपडेटेड-

किताब कैसे पढ़ें ~

बुद्धिमानी से पढ़ने के लिए क्लासिक गाइड

मोर्टिमर जे. एडलर और चार्ल्स वैन डोरेन

[illegible]

महान पुस्तकों को पढ़ने के लिए एक मार्गदर्शिका मोर्टिमर जे. एडलर द्वारा
विषयसूची
प्रस्तावना
भाग 1. पढ़ने की क्रिया
अध्याय एक (औसत पाठक के लिए)
अध्याय दो: "पढ़ने" का पठन
अध्याय तीन: पढ़ना ही सीखना है
अध्याय चार: शिक्षक, जीवित हों या मृत
अध्याय पाँच: विद्यालयों की पराजय
अध्याय छह: स्वयं सहायता पर
भाग II. नियम
अध्याय सात: अनेक नियमों से एक आदत तक
अध्याय आठ शीर्षक से ही समझ में आने वाली बातें अध्याय नौ: कंकाल को देखना
अध्याय दस: परिस्थितियों से तालमेल बिठाना अध्याय ग्यारह: प्रस्ताव क्या है और क्यों? अध्याय बारह: पलटकर जवाब देने का शिष्टाचार अध्याय तेरह: पाठक क्या कह सकता है
अध्याय चौदह और भी नियम
भाग III. पाठक का शेष जीवन
अध्याय पंद्रह: दूसरा भाग
अध्याय सोलह: महान पुस्तकें
अध्याय सत्रह: स्वतंत्र विचार और स्वतंत्र पुरुष परिशिष्ट:

पश्चिमी दुनिया की महान पुस्तकें कल्पनाशील साहित्य
इतिहास और सामाजिक विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान और गणित दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र महान पुस्तकों का प्रवेश द्वार कल्पनाशील साहित्य
आलोचनात्मक निबंध
मनुष्य और समाज
प्राकृतिक विज्ञान
अंक शास्त्र
दार्शनिक निबंध

प्रस्तावना

'हाउ टू रीड अ बुक' के इस विशेष संस्करण में, मैं वह बात स्पष्ट कर सकता हूँ जो 1940 में पुस्तक के पहली बार प्रकाशित होने पर पूरी तरह स्पष्ट नहीं थी। पुस्तक के पाठकों को पता था, हालाँकि इसका शीर्षक इसे पूरी तरह से स्पष्ट नहीं करता था, कि विषय किसी भी पुस्तक को पढ़ना नहीं था, बल्कि एक महान पुस्तक को पढ़ना था। 1940 में ऐसे शीर्षक का प्रचलन नहीं था, जिसके कारण पुस्तक शायद इतने व्यापक पाठकों तक नहीं पहुँच पाती। आज, लाखों अमेरिकी परिवार महान पुस्तकों को पढ़ने और उन पर चर्चा करने में लगे हुए हैं - ऐसी पुस्तकें जिन्हें पढ़ने के लिए वर्णित विधि की आवश्यकता होती है
- स्थिति काफी बदल गई है। इसलिए मैंने इस संस्करण के लिए एक नया उपशीर्षक जोड़ा है: महान पुस्तकों को पढ़ने के लिए एक मार्गदर्शिका।
'हाउ टू रीड अ बुक' किसी भी चीज को पढ़ने के लिए उपयोगी कौशल विकसित करने का प्रयास करता है।
ये कौशल मात्र उपयोगी ही नहीं, बल्कि महान पुस्तकों, उन पुस्तकों को पढ़ने के लिए आवश्यक हैं जो चिरस्थायी रुचि और महत्व रखती हैं। यद्यपि इन कौशलों

के बिना भी क्षणिक रुचि की पुस्तकें, पत्रिकाएँ और समाचार पत्र पढ़े जा सकते हैं, परन्तु इनके ज्ञान से पाठक क्षणिक रुचि की पुस्तकों को भी अधिक गति, सटीकता और विवेक के साथ पढ़ पाता है। विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक पठन का कौशल केवल उस प्रकार के पठन के लिए अपरिहार्य है जिससे मन कम समझ की अवस्था से अधिक समझ की अवस्था की ओर अग्रसर होता है, और उन चुनिंदा पुस्तकों को पढ़ने के लिए जो बार-बार पढ़ने पर भी बढ़ती हुई लाभप्रदता प्रदान करती हैं। वे चुनिंदा पुस्तकें ही महान पुस्तकें हैं— और यहाँ बताए गए पठन नियम उन्हीं पुस्तकों को पढ़ने के नियम हैं। पाठक को नियमों को लागू करने में मार्गदर्शन के लिए दिए गए सभी उदाहरण महान पुस्तकों से संबंधित हैं।

जब यह पुस्तक लिखी गई थी, तब यह कोलंबिया विश्वविद्यालय, शिकागो विश्वविद्यालय और एनापोलिस के सेंट जॉन कॉलेज में, साथ ही कई वयस्क समूहों के साथ, महान ग्रंथों को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के बीस वर्षों के अनुभव पर आधारित थी। तब से वयस्क समूहों की संख्या हजारों गुना बढ़ गई है; तब से देश भर के कई और कॉलेजों और विश्वविद्यालयों, साथ ही माध्यमिक विद्यालयों ने महान ग्रंथों को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के लिए समर्पित पाठ्यक्रम शुरू किए हैं, क्योंकि उन्हें उदार और मानवतावादी शिक्षा का मूल माना जाने लगा है। लेकिन, हालांकि ये सभी अमेरिकी शिक्षा में प्रगति हैं जिनके लिए हम आभारी होने के अच्छे कारण रखते हैं, मेरे विचार में 1940 के बाद से सबसे महत्वपूर्ण शैक्षिक घटना महान ग्रंथों का प्रकाशन और

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, इनकॉर्पोरेटेड द्वारा पश्चिमी महान पुस्तकों का वितरण

वर्ल्ड, जिसने महान पुस्तकों को लाखों अमेरिकी घरों तक और लगभग हर सार्वजनिक और स्कूल पुस्तकालय तक पहुंचाया है।

इस अवसर को मनाने के लिए, 'हाउ टू रीड अ बुक' के इस नए संस्करण में एक नया परिशिष्ट जोड़ा गया है जिसमें पश्चिमी दुनिया की महान पुस्तकों की सूची दी गई है; और साथ ही, अध्याय सोलह का संशोधित संस्करण भी शामिल किया गया है। पृष्ठ 373 पर जाएं और आपको वहां महान पुस्तकों को चार मुख्य समूहों में सूचीबद्ध मिलेगा: कल्पनात्मक साहित्य (कविता, कथा और नाटक); इतिहास और सामाजिक विज्ञान; प्राकृतिक विज्ञान और गणित; दर्शन और धर्मशास्त्र।

1952 में जब ग्रेट बुक्स ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड प्रकाशित हुई, तब से एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ने साहित्य और ज्ञान के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट कृतियों का एक पूरक संग्रह जोड़ा है, जिसका शीर्षक है गेटवे टू द ग्रेट बुक्स। इस संग्रह की विषय-सूची आपको परिशिष्ट में पृष्ठ 379 से मिलेगी।

जैसा कि इसके उपशीर्षक से स्पष्ट है, यह पुस्तक उन रचनाओं को पढ़ने के लिए एक मार्गदर्शिका है जो ध्यानपूर्वक पढ़ने और बार-बार पढ़ने योग्य हैं, और इसीलिए मैं इसे उन सभी को सुझाता हूँ जिनके पास ग्रेट बुक्स ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड और गेटवे टू द ग्रेट बुक्स का संग्रह है। लेकिन इन संग्रहों के मालिकों के पास अन्य सहायक उपकरण भी उपलब्ध हैं। ग्रेट बुक्स ऑफ द

वेस्टर्न वर्ल्ड के खंड 2 और 3 से मिलकर बना सिंटोपिकॉन, पढ़ने के लिए एक अलग प्रकार की मार्गदर्शिका है। हाउ टू रीड अ बुक का उद्देश्य पाठक को किसी एक महान पुस्तक को शुरू से अंत तक पढ़ने में मदद करना है। सिंटोपिकॉन पाठक को महान पुस्तकों के पूरे संग्रह को पढ़ने में मदद करता है, जिसमें सामान्य मानवीय रुचि के तीन हजार विषयों में से किसी एक पर उनके विचारों को पढ़ा जाता है, जिन्हें 102 महान विचारों के अंतर्गत व्यवस्थित किया गया है। (आपको इस पुस्तक के आवरण पर 102 महान विचार सूचीबद्ध मिलेंगे।) गेटवे टू द ग्रेट बुक्स के खंड 1 में एक सिंटोपिकल गाइड है जो लघु कृतियों के उस संग्रह के लिए भी इसी प्रकार का उद्देश्य पूरा करता है।

ब्रिटानिका के एक अन्य प्रकाशन का उल्लेख यहाँ करना आवश्यक है। हर साल की बेस्टसेलर किताबों के विपरीत, जो एक साल बाद पुरानी हो जाती हैं, महान पुस्तकें साहित्य की चिरस्थायी रचनाएँ हैं—हर सदी के हर साल मानव जाति के सामने आने वाली समस्याओं से प्रासंगिक बनी रहती हैं। इन्हें इसी दृष्टिकोण से पढ़ा जाना चाहिए—मानव जीवन और समाज, अतीत, वर्तमान और भविष्य पर प्रकाश डालने के लिए। और इसीलिए ब्रिटानिका 'द ग्रेट आइडियाज़ टुडे' नामक एक वार्षिक पत्रिका प्रकाशित करती है, जिसका उद्देश्य समकालीन घटनाओं और मुद्दों तथा कला और विज्ञान में नवीनतम प्रगति के संदर्भ में महान पुस्तकों और महान विचारों की उल्लेखनीय प्रासंगिकता को दर्शाना है।

पढ़ने और समझने में सहायक इन सभी साधनों के साथ, हमारी पश्चिमी सभ्यता का संचित ज्ञान उन सभी लोगों की पहुंच में है जो इनका सदुपयोग करने के लिए तत्पर हैं।

मोर्टिमर जे. एडलर

शिकागो

सितंबर, 1965

भाग 1.

पढ़ने की गतिविधि

अध्याय एक

औसत पाठक के लिए

- 1 -

यह उन पाठकों के लिए एक पुस्तक है जो पढ़ नहीं सकते। यह बात सुनने में शायद असभ्य लगे, हालांकि मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है। यह विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। असभ्यता और विरोधाभास का आभास केवल इसलिए होता है क्योंकि "पढ़ना" शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जा सकता है।

अब तक पढ़ चुके पाठक को यकीनन पढ़ना आता है, चाहे किसी भी मायने में हो। इसलिए आप समझ ही गए होंगे कि मेरा क्या मतलब है। मेरा कहना यह है कि यह किताब उन लोगों के लिए है जो पढ़ने के कुछ मायने तो जानते हैं, लेकिन बाकी मायने नहीं रखते। पढ़ने के कई तरीके होते हैं और पढ़ने की क्षमता भी अलग-अलग स्तर की होती है। यह कहना विरोधाभासी नहीं होगा कि यह किताब उन पाठकों के लिए है जो बेहतर पढ़ना चाहते हैं या पढ़ने के अपने मौजूदा तरीके से अलग किसी और तरीके से पढ़ना चाहते हैं।

तो फिर यह पुस्तक किसके लिए नहीं है? इस प्रश्न का उत्तर मैं दो चरम मामलों का उदाहरण देकर दे सकता हूँ। एक वे लोग हैं जो बिल्कुल भी या किसी भी तरह से पढ़ नहीं सकते: शिशु, मंदबुद्धि और अन्य भोले-भाले लोग। और दूसरे वे लोग हो

सकते हैं जो पढ़ने की कला में निपुण हों—जो हर तरह का पठन कर सकते हों और उसे यथासंभव कुशलता से कर सकते हों।

अधिकांश लेखक ऐसे लोगों के लिए लिखना पसंद करेंगे। लेकिन यह पुस्तक, जो स्वयं पढ़ने की कला से संबंधित है और जिसका उद्देश्य पाठकों को बेहतर पढ़ने में मदद करना है, पहले से ही कुशल पाठकों का ध्यान आकर्षित नहीं कर सकती।

इन दोनों चरम सीमाओं के बीच हमें औसत पाठक मिलते हैं, और इसका अर्थ है हममें से अधिकांश लोग जिन्होंने एबीसी सीख लिया है। हमने साक्षरता की राह पर कदम रख दिया है। लेकिन हममें से अधिकांश यह भी जानते हैं कि हम कुशल पाठक नहीं हैं। हम यह कई तरीकों से जानते हैं, लेकिन सबसे स्पष्ट रूप से तब जब हमें कुछ चीजें पढ़ने में बहुत कठिनाई होती है, या उन्हें पढ़ने में बहुत परेशानी होती है; या जब कोई और वही चीज पढ़ता है जो हमने पढ़ी है और हमें दिखाता है कि हमने कितना कुछ नहीं समझा या चूक की।

अगर आपको इस तरह का अनुभव नहीं हुआ है, अगर आपने कभी पढ़ने की मेहनत को महसूस नहीं किया है या उस निराशा को नहीं जाना है जब आपकी सारी कोशिशें नाकाम हो जाती हैं, तो मुझे नहीं पता कि मैं आपको इस समस्या में दिलचस्पी कैसे दिला सकता हूँ। हालाँकि, हममें से ज़्यादातर लोगों को पढ़ने में कठिनाई होती है, लेकिन हमें यह नहीं पता होता कि हमें परेशानी क्यों होती है या इसका समाधान क्या है।

मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि हममें से अधिकांश लोग पढ़ने को एक जटिल गतिविधि नहीं मानते, जिसमें कई चरण शामिल हों और अभ्यास के माध्यम से हम उनमें से प्रत्येक में धीरे-धीरे निपुणता प्राप्त कर सकें, जैसा कि किसी अन्य कला में होता है। हम शायद यह भी नहीं सोचते कि पढ़ने की भी कोई कला होती है। हम पढ़ने को लगभग उतना ही सरल और स्वाभाविक मानते हैं जितना कि देखना या चलना। लेकिन देखने या चलने की कोई कला नहीं होती।

पिछली गर्मियों में, जब मैं यह किताब लिख रहा था, एक युवक मुझसे मिलने आया। उसने मेरे काम के बारे में सुना था और मुझसे एक मदद माँगने आया था। क्या मैं उसे पढ़ने की क्षमता सुधारने का तरीका बता सकता हूँ? ज़ाहिर है, वह मुझसे कुछ वाक्यों में जवाब की उम्मीद कर रहा था। इससे भी बढ़कर, उसे लगता था कि एक बार जब उसे यह सरल नुस्खा पता चल जाएगा, तो सफलता उसके बिल्कुल करीब होगी।

मैंने समझाने की कोशिश की कि यह इतना आसान नहीं है। मैंने कहा कि इस किताब के कई पन्ने पढ़ने के विभिन्न नियमों पर चर्चा करने और उनका पालन करने का तरीका बताने में लगे हैं। मैंने उसे बताया कि यह किताब टेनिस खेलने की किताब जैसी है। जैसा कि किताबों में लिखा होता है, टेनिस की कला में विभिन्न स्ट्रोक को नियंत्रित करने के नियम, उनका उपयोग कब और कैसे करना है, इस पर चर्चा और इन सभी पहलुओं को एक सफल खेल की सामान्य रणनीति में व्यवस्थित करने का वर्णन शामिल होता है। पढ़ने की कला को भी इसी तरह से लिखा जाना चाहिए। पूरी किताब पढ़ने के लिए आपको जो भी कदम उठाने पड़ते हैं, उन सभी के लिए नियम होते हैं।

वह थोड़ा संशय में लग रहा था। हालाँकि उसे शक था कि उसे पढ़ना नहीं आता, लेकिन उसे यह भी लग रहा था कि सीखने के लिए इतना कुछ नहीं है। वह युवक एक संगीतकार था। मैंने उससे पूछा कि क्या ज़्यादातर लोग, जो आवाज़ें सुन सकते हैं, सिम्फनी सुनना जानते हैं? उसका जवाब था, बिलकुल नहीं। मैंने स्वीकार किया कि मैं भी उनमें से एक हूँ, और पूछा कि क्या वह मुझे बता सकता है कि एक संगीतकार की अपेक्षा के अनुसार संगीत कैसे सुना जाता है। बेशक वह बता सकता था, लेकिन कुछ शब्दों में नहीं। सिम्फनी सुनना एक जटिल प्रक्रिया है। आपको न केवल जागते रहना होता है, बल्कि बहुत सी अलग-अलग बातों पर ध्यान देना होता है, इसके बहुत से हिस्सों को पहचानना और आपस में जोड़ना होता है। वह मुझे संक्षेप में वह सब कुछ नहीं बता सकता था जो मुझे जानना ज़रूरी था। इसके अलावा, एक कुशल श्रोता बनने के लिए मुझे संगीत सुनने में बहुत समय बिताना होगा।

मैंने कहा, पढ़ने का मामला भी कुछ ऐसा ही है। अगर मैं संगीत सुनना सीख सकता हूँ, तो वह भी किताब पढ़ना सीख सकता है, लेकिन दोनों शर्तें एक जैसी ही हैं।
अच्छी तरह से किताब पढ़ना सीखना किसी भी अन्य कला या कौशल की तरह ही है। इसमें भी कुछ नियम होते हैं जिन्हें सीखना और पालन करना होता है। अभ्यास से अच्छी आदतें बनती हैं। इसमें कोई बहुत बड़ी कठिनाई नहीं है। बस सीखने की इच्छा और धैर्य की आवश्यकता होती है।

मुझे नहीं पता कि मेरे जवाब से वह पूरी तरह संतुष्ट हुआ या नहीं। अगर नहीं, तो उसके पढ़ने सीखने में एक बाधा थी। उसे अभी तक पढ़ने की प्रक्रिया का महत्व समझ नहीं आया था। चूंकि वह अब भी पढ़ने को एक ऐसी चीज मानता था जिसे लगभग कोई भी कर सकता है, प्राथमिक कक्षाओं में सीखी जाने वाली चीज, इसलिए शायद उसे अब भी संदेह था कि पढ़ना सीखना संगीत सुनना सीखने, टेनिस खेलना सीखने या अपनी इंद्रियों और मन के किसी भी जटिल उपयोग में निपुण होने जैसा ही है।

मुझे डर है कि यह कठिनाई हममें से अधिकांश लोगों के लिए समान है। इसीलिए मैं इस पुस्तक के पहले भाग को पढ़ने की गतिविधि को समझाने में समर्पित करने जा रहा हूँ। क्योंकि जब तक आप इसमें शामिल बातों को नहीं समझेंगे, तब तक आप उस प्रकार के मार्गदर्शन के लिए तैयार नहीं होंगे (जैसा कि यह युवक मेरे पास आने पर तैयार नहीं था)।

मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि आप सीखना चाहते हैं। मेरी मदद उतनी ही हो सकती है जितनी आप स्वयं अपनी मदद करेंगे। कोई भी आपको उतना ही सिखा सकता है जितना आप सीखना चाहते हैं या जितना आपको आवश्यक लगता है। लोग अक्सर कहते हैं कि अगर उन्हें पढ़ना आता तो वे पढ़ने की कोशिश करते। वास्तव में, अगर वे कोशिश करें तो वे पढ़ना सीख भी सकते हैं। और अगर वे सीखना चाहते हैं तो वे कोशिश जरूर करेंगे।

- 2 -

मुझे कॉलेज छोड़ने के बाद ही पता चला कि मैं पढ़ नहीं सकता। मुझे यह बात तब पता चली जब मैंने दूसरों को पढ़ना सिखाने की कोशिश की। ज़्यादातर माता- पिता ने शायद अपने बच्चों को पढ़ाते समय इसी तरह की खोज की होगी। विडंबना

यह है कि इसके परिणामस्वरूप, माता-पिता अक्सर अपने बच्चों से ज़्यादा पढ़ना सीखते हैं। इसका कारण सरल है। उन्हें इस काम में ज़्यादा सक्रिय रहना पड़ता है। जो भी कुछ सिखाता है, उसे ऐसा करना ही पड़ता है।

अब वापस अपनी कहानी पर आते हैं। रजिस्ट्रार के रिकॉर्ड के अनुसार, मैं कोलंबिया विश्वविद्यालय में अपने समय के सबसे अच्छे छात्रों में से एक था। हमने अच्छे अंकों से पाठ्यक्रम उत्तीर्ण किए। एक बार जब हमें नियम समझ आ जाते थे, तो पढ़ाई काफी आसान थी। अगर उस समय किसी ने हमसे कहा होता कि हमें ज्यादा ज्ञान नहीं है या हम ठीक से पढ़ नहीं सकते, तो हमें बहुत दुख होता। हमें पूरा विश्वास था कि हम व्याख्यानों को ध्यान से सुन सकते हैं और दी गई पुस्तकों को इस तरह पढ़ सकते हैं कि परीक्षा के प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकें। यही हमारी योग्यता का प्रमाण था।

हममें से कुछ ने एक ऐसा कोर्स किया जिससे हमारा आत्मसंतुष्टि का भाव बहुत बढ़ गया। जॉन एर्स्किन ने अभी-अभी मेरा कोर्स शुरू किया था। यह दो साल का कोर्स था, जिसे जनरल ऑनर्स कहा जाता था और यह जूनियर और सीनियर छात्रों के एक चुनिंदा समूह के लिए खुला था। इसमें केवल महान ग्रंथों को "पढ़ना" शामिल था, ग्रीक क्लासिक्स से लेकर लैटिन और मध्यकालीन उत्कृष्ट कृतियों तक, और विलियम जेम्स, आइंस्टीन और फ्रायड जैसे कल के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों तक। पुस्तकें सभी क्षेत्रों से थीं: इतिहास और विज्ञान या दर्शन की पुस्तकें, नाटकीय कविता और उपन्यास। हम सप्ताह में एक रात अपने शिक्षकों के साथ अनौपचारिक सेमिनार शैली में उन पर चर्चा करते थे।

उस कोर्स का मुझ पर दो तरह का प्रभाव पड़ा। एक तो यह कि मुझे लगा जैसे मैंने पहली बार शिक्षा के क्षेत्र में कोई अनमोल चीज़ पा ली हो। यहाँ असली चीज़ें थीं, जिन्हें वास्तविक तरीके से समझाया जा रहा था, उन पाठ्यपुस्तकों और व्याख्यानों वाले कोर्सों की तुलना में जो केवल याददाश्त पर ज़ोर देते थे। लेकिन दिक्कत यह थी कि मैंने न केवल यह सोचा कि मुझे कोई अनमोल चीज़ मिल गई है, बल्कि यह भी सोचा कि मैं उस खान का मालिक हूँ।

ये थीं वो महान पुस्तकें। मुझे पढ़ना आता था। मेरे लिए पूरी दुनिया खुली थी।

अगर स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं व्यवसाय, चिकित्सा या कानून के क्षेत्र में जाता, तो शायद अब भी मेरे मन में यह घमंड होता कि मुझे पढ़ना आता है और मैं सामान्य से कहीं अधिक पढ़ा-लिखा हूं।

सौभाग्य से, किसी चीज़ ने मुझे इस सपने से जगा दिया। कक्षा में पनपने वाले हर भ्रम को तोड़ने के लिए कठोर अनुभवों का एक स्कूल होता है। कुछ वर्षों का अभ्यास वकील और डॉक्टर को जगा देता है। व्यापार या अखबार का काम उस लड़के के भ्रम को तोड़ देता है जिसने वाणिज्य या पत्रकारिता की पढ़ाई पूरी करने के बाद खुद को व्यापारी या पत्रकार बनने का सपना देखा था। खैर, मैंने सोचा था कि मैं अच्छी तरह से शिक्षित हूँ, मुझे पढ़ना आता है और मैंने बहुत कुछ

पढ़ा है। इसका इलाज शिक्षण था, और मेरे अपराध के लिए ठीक-ठीक मिली सज़ा यह थी कि स्नातक होने के एक साल बाद मुझे उसी ऑनर्स कोर्स में पढ़ाना पड़ा जिसने मुझे इतना घमंडी बना दिया था।

छात्र जीवन में मैंने वे सभी पुस्तकें पढ़ ली थीं जिन्हें अब मुझे पढ़ाना था, लेकिन अपनी कम उम्र और लगन के कारण मैंने उन्हें दोबारा पढ़ने का फैसला किया—यानी कक्षा के लिए हर सप्ताह अभ्यास करने के लिए। मुझे आश्चर्य होता रहा कि हर सप्ताह वे पुस्तकें मेरे लिए लगभग नई थीं। ऐसा लग रहा था मानो मैं उन्हें पहली बार पढ़ रहा हूँ, वे पुस्तकें जिन्हें मैंने पूरी तरह से "अच्छी तरह से समझ लिया" था।

समय बीतने के साथ-साथ मुझे यह भी पता चला कि मुझे इन किताबों के बारे में न केवल बहुत कम जानकारी थी, बल्कि इन्हें ठीक से पढ़ना भी नहीं आता था। अपनी अज्ञानता और अक्षमता को छिपाने के लिए मैंने वही किया जो कोई भी युवा शिक्षक अपने छात्रों और अपनी नौकरी दोनों से डरते हुए करता है। मैंने द्वितीयक स्रोतों, विश्वकोशों, टीकाओं, और इन किताबों पर लिखी गई हर तरह की किताबों का इस्तेमाल किया। मैंने सोचा, इस तरह मैं छात्रों से ज़्यादा जानकार दिखूंगा। उन्हें पता नहीं चलेगा कि मेरे प्रश्न या मुद्दे उन किताबों के मेरे बेहतर अध्ययन से नहीं आए हैं जिन्हें वे भी पढ़ रहे थे।

सौभाग्य से मेरी पोल खुल गई, वरना मैं एक विद्यार्थी के रूप में जैसे काम चला रहा था, वैसे ही एक शिक्षक के रूप में भी संतुष्ट हो जाता। अगर मैं दूसरों को बेवकूफ बनाने में कामयाब हो जाता, तो शायद जल्द ही खुद को भी धोखा दे देता। मेरा पहला सौभाग्य यह था कि मुझे इस शिक्षण कार्य में कवि मार्क वैन डोरेन का सहकर्मी मिला। उन्होंने कविता पर चर्चा की शुरुआत की, जैसा कि मुझे इतिहास, विज्ञान और दर्शन के मामले में करना था। वे मुझसे कई साल बड़े थे, शायद मुझसे ज़्यादा ईमानदार थे, और निश्चित रूप से एक बेहतर पाठक थे। अपने प्रदर्शन की तुलना उनसे करने पर, मैं खुद को बेवकूफ नहीं बना सका। मैंने किताबों में क्या लिखा है, यह उन्हें पढ़कर नहीं, बल्कि उनके बारे में पढ़कर जाना था।

किताब के बारे में मेरे सवाल ऐसे थे जिनका जवाब कोई भी व्यक्ति बिना किताब पढ़े भी दे सकता था—कोई भी व्यक्ति जिसने उन सैकड़ों अन्य स्रोतों से मिली जानकारी का सहारा लिया हो जो पढ़ने में असमर्थ या अनिच्छुक लोगों के लिए उपलब्ध हैं। इसके विपरीत, उनके सवाल मानो किताब के पन्नों से ही निकले प्रतीत होते थे। ऐसा लगता था मानो उन्हें लेखक से कुछ गहरी आत्मीयता हो। हर किताब एक विशाल संसार थी, अन्वेषण के लिए असीम रूप से समृद्ध, और उस विद्यार्थी का बुरा हाल होता जो सवालों के जवाब ऐसे देता जैसे मानो वह उसमें यात्रा करने के बजाय किसी यात्रा वृत्तांत को सुन रहा हो। यह अंतर बहुत स्पष्ट था, और मेरे लिए असहनीय था। मुझे यह भूलने की अनुमति नहीं थी कि मुझे पढ़ना नहीं आता।

मेरी दूसरी खुशनसीबी उन विद्यार्थियों के समूह में थी जो उस पहली कक्षा में थे। वे मुझे समझने में देर नहीं लगा पाए। वे विश्वकोश, टीका या संपादक की प्रस्तावना का उपयोग करना उतना ही जानते थे जितना मैं। उनमें से एक, जो

बाद में एक आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हुआ, विशेष रूप से ज़िद्दी था। उसे पुस्तक के बारे में विभिन्न जानकारियों पर चर्चा करने में बहुत आनंद आता था, जो कि अन्य स्रोतों से प्राप्त की जा सकती थीं, और वह हमेशा मुझे और बाकी कक्षा को यह दिखाना चाहता था कि पुस्तक पर अभी भी चर्चा बाकी है। मेरा मतलब यह नहीं है कि वह या अन्य विद्यार्थी मुझसे बेहतर पुस्तक पढ़ सकते थे, या उन्होंने ऐसा किया था। स्पष्ट रूप से हममें से कोई भी, श्री वैन डोरेन को छोड़कर, पढ़ने का काम ठीक से नहीं कर रहा था।

शिक्षण के पहले वर्ष के बाद, साक्षरता के बारे में मेरी कुछ ही भ्रांतियाँ बची थीं। तब से, मैं छात्रों को किताबें पढ़ना सिखा रहा हूँ, छह साल कोलंबिया विश्वविद्यालय में मार्क वैन डोरेन के साथ और पिछले दस वर्षों से शिकागो विश्वविद्यालय में अध्यक्ष रॉबर्ट एम. के साथ।

हचिन्स। वर्षों के दौरान, मुझे लगता है कि मैंने धीरे-धीरे थोड़ा बेहतर पढ़ना सीख लिया है।

अब आत्म-धोखे का, या यह मान लेने का कि मैं विशेषज्ञ बन गया हूँ, कोई खतरा नहीं रह गया है।

क्यों? क्योंकि हर साल उन्हीं किताबों को पढ़ने से मुझे हर बार वही बात पता चलती है जो मुझे पढ़ाने की शुरुआत के पहले साल पता चली थी: जिस किताब को मैं दोबारा पढ़ रहा हूं, वह मेरे लिए लगभग नई ही है।

कुछ समय तक, हर बार जब मैं इसे दोबारा पढ़ता था, तो मुझे लगता था कि मैंने इसे आखिरकार अच्छी तरह पढ़ लिया है, लेकिन अगली बार पढ़ने पर मेरी कमियाँ और गलत व्याख्याएँ उजागर हो जाती थीं। ऐसा कई बार होने के बाद, हममें से सबसे मंदबुद्धि व्यक्ति भी यह सीख जाता है कि परिपूर्ण पठन इंद्रधनुष के अंत में ही होता है। हालाँकि अभ्यास से ही परिपूर्णता आती है, लेकिन पढ़ने की इस कला में, किसी भी अन्य कला की तरह, इस सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए आवश्यक समय अवधि निर्धारित समय से कहीं अधिक होती है।

- 3 -

मैं दो भावनाओं के बीच फंसा हुआ हूँ। मैं निश्चित रूप से आपको पढ़ना सीखने के इस प्रयास में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ, लेकिन मैं आपको यह कहकर धोखा नहीं देना चाहता कि यह बहुत आसान है या इसे थोड़े समय में किया जा सकता है। मुझे यकीन है कि आप धोखा नहीं खाना चाहेंगे। अन्य सभी कौशलों की तरह, अच्छी तरह से पढ़ना सीखने में भी कठिनाइयाँ आती हैं जिन्हें प्रयास और समय से पार किया जा सकता है। मेरा मानना है कि कोई भी व्यक्ति जो कोई भी काम शुरू करता है, वह इसके लिए तैयार रहता है और जानता है कि उपलब्धि अक्सर प्रयास से अधिक नहीं होती। आखिरकार, बचपन से लेकर बड़े होने तक, धन कमाने तक, परिवार पालने तक, या कुछ बुजुर्गों के पास मौजूद ज्ञान प्राप्त करने तक, समय और मेहनत लगती है। तो फिर पढ़ना सीखने और पढ़ने लायक सामग्री पढ़ने में समय और मेहनत क्यों न लगे?

बेशक, अगर हमने स्कूल में रहते हुए ही शुरुआत कर दी होती तो इतना समय नहीं लगता।

दुर्भाग्यवश, लगभग इसका ठीक उल्टा होता है: हमें रोक दिया जाता है। मैं बाद में स्कूलों की विफलता पर विस्तार से चर्चा करूँगा। यहाँ मैं केवल हमारे स्कूलों के बारे में इस तथ्य को दर्ज करना चाहता हूँ, एक ऐसा तथ्य जो हम सभी से संबंधित है, क्योंकि काफी हद तक उन्होंने ही हमें आज इस मुकाम तक पहुँचाया है।

वे लोग जो पढ़ने में इतने कुशल नहीं हैं कि वे लाभ के लिए पढ़ सकें या आनंद के लिए पढ़कर लाभ कमा सकें।

लेकिन शिक्षा का अंत स्कूली शिक्षा से नहीं होता, और न ही हममें से प्रत्येक के शैक्षिक भविष्य की पूरी जिम्मेदारी स्कूली व्यवस्था पर टिकी है। हर व्यक्ति स्वयं यह निर्णय ले सकता है और उसे लेना भी चाहिए कि वह अपनी प्राप्त शिक्षा से संतुष्ट है या नहीं, या यदि वह अभी भी स्कूली शिक्षा प्राप्त कर रहा है तो उससे संतुष्ट है या नहीं। यदि वह संतुष्ट नहीं है, तो इसके लिए कुछ करना उसकी जिम्मेदारी है। स्कूलों की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, अधिक स्कूली शिक्षा शायद ही कोई समाधान है। एक रास्ता यह है कि...

शायद अधिकांश लोगों के लिए उपलब्ध एकमात्र तरीका बेहतर पढ़ना सीखना है, और फिर, बेहतर पढ़कर, पढ़ने के माध्यम से जो कुछ सीखा जा सकता है, उसे और अधिक सीखना है।

इस पुस्तक में इस समस्या से निकलने का रास्ता और उसे अपनाने का तरीका बताया गया है। यह उन वयस्कों के लिए है जिन्हें धीरे-धीरे यह एहसास हो गया है कि उनकी पूरी स्कूली शिक्षा से उन्हें कितना कम लाभ मिला, साथ ही उन लोगों के लिए भी है जिन्हें ऐसे अवसर नहीं मिले और वे इस अभाव से उबरने के तरीके को लेकर असमंजस में हैं, जिसके लिए उन्हें बहुत पछतावा करने की आवश्यकता नहीं है। यह स्कूल और कॉलेज के उन छात्रों के लिए भी है जो कभी- कभी सोचते हैं कि वे अपनी शिक्षा में कैसे योगदान दें। यह उन शिक्षकों के लिए भी है जो कभी-कभी महसूस करते हैं कि वे उतना सहयोग नहीं दे पा रहे जितना उन्हें देना चाहिए, और शायद उन्हें यह भी नहीं पता कि कैसे दें।

जब मैं इस विशाल संभावित पाठक वर्ग को औसत पाठक के रूप में देखता हूँ, तो मैं प्रशिक्षण और क्षमता, शिक्षा या अनुभव में मौजूद सभी अंतरों को नज़रअंदाज़ नहीं कर रहा हूँ, और निश्चित रूप से इस साझा कार्य के प्रति रुचि और प्रेरणा के विभिन्न स्तरों को भी नहीं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम सभी इस कार्य और इसके महत्व को पहचानते हैं।

हम भले ही ऐसे व्यवसायों में लगे हों जिनमें जीविका कमाने के लिए पढ़ना आवश्यक न हो, फिर भी हमें यह महसूस हो सकता है कि हमारे खाली समय में कुछ ज्ञान होना चाहिए—ऐसा ज्ञान जो हम स्वयं पढ़कर प्राप्त कर सकते हैं। हम

पेशेवर रूप से ऐसे कार्यों में लगे हो सकते हैं जिनमें काम के दौरान तकनीकी पठन की आवश्यकता होती है: चिकित्सक को चिकित्सा साहित्य से अवगत रहना पड़ता है; वकील को मुकदमों का अध्ययन करना कभी बंद नहीं करना पड़ता; व्यापारी को वित्तीय विवरण, बीमा पॉलिसियाँ, अनुबंध आदि पढ़ने पड़ते हैं। चाहे पढ़ना सीखने के लिए हो या कमाने के लिए, इसे अच्छे या बुरे तरीके से किया जा सकता है।

हम कॉलेज के छात्र हो सकते हैं—शायद उच्च शिक्षा के उम्मीदवार—फिर भी यह महसूस करते हैं कि हमारे साथ जो हो रहा है वह शिक्षा नहीं, बल्कि रट्टा मारना है। कई कॉलेज छात्र, कम से कम स्नातक की डिग्री प्राप्त करते-करते, यह जान जाते हैं कि उन्होंने चार साल पाठ्यक्रम पढ़ने और परीक्षा उत्तीर्ण करके उन्हें पूरा करने में बिताए हैं। इस प्रक्रिया में जो महारत हासिल होती है, वह विषयवस्तु की नहीं, बल्कि शिक्षक के व्यक्तित्व की होती है। यदि छात्र व्याख्यानों और पाठ्यपुस्तकों में बताई गई बातों को पर्याप्त रूप से याद रखता है, और यदि उसे शिक्षक के पसंदीदा पूर्वाग्रहों की जानकारी है, तो वह पाठ्यक्रम आसानी से पास कर सकता है। लेकिन वह शिक्षा से वंचित रह जाता है।

हम किसी स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय में शिक्षक हो सकते हैं। मुझे उम्मीद है कि हममें से अधिकांश शिक्षक यह जानते हैं कि हम पढ़ने में कुशल नहीं हैं। मुझे उम्मीद है कि हम न केवल यह जानते हैं कि हमारे छात्र अच्छी तरह से पढ़ नहीं सकते, बल्कि यह भी कि हम उनसे बेहतर नहीं कर सकते। हर पेशे में कुछ हद तक दिखावा करना पड़ता है, जो आम लोगों या ग्राहकों को प्रभावित करने के लिए आवश्यक होता है। शिक्षकों के रूप में हमें जो दिखावा करना पड़ता है, वह ज्ञान और विशेषज्ञता का मुखौटा है। यह पूरी तरह से दिखावा नहीं है, क्योंकि हम आमतौर पर अपने सर्वश्रेष्ठ छात्रों से थोड़ा अधिक जानते हैं और थोड़ा बेहतर कर सकते हैं। लेकिन हमें इस दिखावे से खुद को धोखा नहीं देना चाहिए।

यदि हमें यह नहीं पता कि हमारे छात्र अच्छी तरह से पढ़ नहीं सकते, तो हम पाखंडियों से भी बदतर हैं: हम अपना काम बिल्कुल नहीं कर रहे हैं। और यदि हमें यह नहीं पता कि हम उनसे कहीं बेहतर पढ़ नहीं सकते, तो हमने अपने पेशेवर ढोंग को खुद को धोखा देने दिया है।

जिस प्रकार सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक वे होते हैं जो अपनी कमियों को छिपाकर नहीं बल्कि स्वीकारकर रोगी का विश्वास बनाए रखते हैं, उसी प्रकार सर्वश्रेष्ठ शिक्षक वे होते हैं जो दिखावा कम से कम करते हैं। यदि विद्यार्थी किसी कठिन समस्या से जूझ रहे हों, तो वह शिक्षक जो यह दर्शाता है कि वह भी केवल घुटनों के बल ही चल रहा है, उनकी कहीं अधिक सहायता करता है, बजाय उस शिक्षक के जो उनके सिर के ऊपर से ही ज्ञान की उड़ान भरता प्रतीत होता है। शायद, यदि हम शिक्षक अपनी पठन अक्षमताओं के बारे में अधिक ईमानदार हों, यह बताने में कम संकोच करें कि हमें पढ़ना कितना कठिन है और हम कितनी बार अटकते हैं, तो हम विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में रुचि दिला सकते हैं, न कि केवल पास होने की प्रक्रिया में।

- 4 -

मुझे उम्मीद है कि मैंने उन पाठकों को समझाने के लिए पर्याप्त बातें कह दी हैं जो पढ़ नहीं सकते कि मैं भी उनसे बहुत बेहतर नहीं पढ़ पाता। मेरी सबसे बड़ी खूबी यह है कि मैं स्पष्ट रूप से जानता हूँ कि मैं पढ़ नहीं पाता, और शायद क्यों नहीं पढ़ पाता। दूसरों को सिखाने के वर्षों के अनुभव का यही सबसे अच्छा फल है। बेशक, अगर मैं किसी दूसरे से थोड़ा बेहतर हूँ, तो मैं उसकी कुछ मदद कर सकता हूँ। हालाँकि हममें से कोई भी इतना अच्छा नहीं पढ़ पाता कि हम खुद संतुष्ट हो सकें, फिर भी हम किसी दूसरे से बेहतर पढ़ सकते हैं। हालाँकि हममें से बहुत कम लोग आमतौर पर अच्छा पढ़ते हैं, फिर भी हममें से हर कोई किसी विशेष परिस्थिति में अच्छा पढ़ सकता है, जब मामला इतना गंभीर हो कि असाधारण प्रयास करना अनिवार्य हो जाए।

आम तौर पर सतही ज्ञान रखने वाला विद्यार्थी किसी विशेष कारण से किसी एक विषय को अच्छी तरह समझ सकता है। वहीं, हम जैसे अन्य विद्वानों की तरह ही अधिकांश अध्ययन में सतही होते हैं, लेकिन जब विषय उनके अपने विशेष क्षेत्र से संबंधित होता है, तो वे अक्सर सावधानीपूर्वक अध्ययन करते हैं, विशेषकर तब जब उनकी प्रतिष्ठा उनके कथनों पर निर्भर करती है। अपने पेशे से संबंधित मामलों में, एक वकील विश्लेषणात्मक रूप से अध्ययन करता है। इसी प्रकार, एक चिकित्सक उन नैदानिक रिपोर्टों को पढ़ता है जिनमें उन लक्षणों का वर्णन होता है जिनसे वह वर्तमान में संबंधित है। लेकिन ये दोनों विद्वान अन्य क्षेत्रों में या अन्य समयों पर भी ऐसा ही प्रयास कर सकते हैं। यहां तक कि व्यापार भी एक विद्वान पेशे का रूप धारण कर लेता है जब उससे जुड़े लोगों को वित्तीय विवरणों या अनुबंधों की जांच करने के लिए कहा जाता है, हालांकि मैंने सुना है कि कई व्यवसायी इन दस्तावेजों को तब भी बुद्धिमत्तापूर्वक नहीं पढ़ पाते जब उनका भाग्य दांव पर लगा होता है।

अगर हम पुरुषों और महिलाओं को सामान्य रूप से देखें, और उनके व्यवसायों या पेशों से अलग देखें, तो मेरे दिमाग में केवल एक ही ऐसी स्थिति आती है जिसमें वे लगभग अपने दम पर आगे बढ़ते हैं, और सामान्य से बेहतर पढ़ने का प्रयास करते हैं।

जब वे प्रेम में होते हैं और प्रेम पत्र पढ़ते हैं, तो वे शब्दों के बीच छिपे अर्थों और हाशिये में लिखी बातों को भी समझते हैं; वे पूरे को उसके भागों के संदर्भ में और प्रत्येक भाग को पूरे के संदर्भ में पढ़ते हैं; वे संदर्भ और अस्पष्टता, इशारों और निहितार्थों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं; वे शब्दों के रंग, वाक्यों की सुगंध और वाक्यों के भार को महसूस करते हैं। वे विराम चिह्नों पर भी ध्यान दे सकते हैं। फिर, चाहे पहले कभी पढ़ा हो या बाद में, वे पढ़ते हैं।

ये उदाहरण, विशेषकर अंतिम उदाहरण, "पढ़ने" से मेरा क्या तात्पर्य है, इसका एक प्रारंभिक अनुमान देने के लिए पर्याप्त हैं। हालाँकि, यह पर्याप्त नहीं है। इस पुस्तक का सार तभी अधिक सटीक रूप से समझा जा सकता है जब पढ़ने के विभिन्न प्रकारों और स्तरों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाए। इस पुस्तक को बुद्धिमानी से पढ़ने के लिए—जो कि इस पुस्तक का उद्देश्य अपने

पाठकों को सभी पुस्तकों के साथ ऐसा करने में मदद करना है—इन भेदों को समझना आवश्यक है। यह अगले अध्याय का विषय है। यहाँ इतना समझना पर्याप्त है कि यह पुस्तक हर मायने में पढ़ने के बारे में नहीं है, बल्कि केवल उस प्रकार के पढ़ने के बारे में है जिसे इसके पाठक अच्छी तरह से नहीं कर पाते हैं, या बिल्कुल भी नहीं कर पाते हैं, सिवाय तब जब वे किसी पुस्तक से प्रेम करते हैं।

अध्याय दो

"पढ़ना" का पठन

- 1 -

किसी भी सामग्री को पढ़ने का एक प्राथमिक नियम यह है कि लेखक द्वारा प्रयुक्त सबसे महत्वपूर्ण शब्दों को पहचानें। हालांकि, केवल पहचानना ही पर्याप्त नहीं है। आपको यह भी जानना होगा कि उनका उपयोग कैसे किया जा रहा है। किसी महत्वपूर्ण शब्द को ढूंढना तो उस कठिन शोध की शुरुआत मात्र है जिसके द्वारा पाठ में इधर-उधर प्रकट होने वाले उस शब्द के अर्थों (सामान्य या विशेष) का पता लगाया जाता है।

आप जानते ही हैं कि "पढ़ना" इस पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण शब्दों में से एक है। लेकिन, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, इस शब्द के कई अर्थ हैं। यदि आप यह मानकर चलें कि आप इस शब्द का अर्थ समझते हैं, तो आगे बढ़ने से पहले ही हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

भाषा के बारे में बात करने के लिए भाषा का उपयोग करना—विशेषकर यदि कोई इसके दुरुपयोग के विरुद्ध अभियान चला रहा हो—जोखिम भरा है। हाल ही में श्री स्टुअर्ट चेज़ ने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम उन्हें 'शब्दों के बारे में शब्द' रखना चाहिए था। तब शायद वे उन आलोचकों के तीखे हमलों से बच जाते जिन्होंने तुरंत यह बताया कि श्री चेज़ स्वयं शब्दों के अत्याचार के शिकार हैं।

चेज़ ने इस खतरे को भांपते हुए कहा, "बेहतर की अपील करते हुए खराब भाषा का इस्तेमाल करने से मैं अक्सर खुद ही अपने जाल में फंस जाऊंगा।"

क्या मैं ऐसी गलतियों से बच सकता हूँ? मैं पढ़ने के बारे में लिख रहा हूँ, इसलिए ऐसा लगता है कि मुझे पढ़ने के नहीं, बल्कि लिखने के नियमों का पालन

करना होगा। अगर यह सच साबित होता है कि एक लेखक को पढ़ने के नियमों को ध्यान में रखना चाहिए, तो मेरा बचना शायद हकीकत से ज़्यादा दिखावटी हो। लेकिन आप तो पढ़ने के बारे में पढ़ रहे हैं। आप बच नहीं सकते। अगर पढ़ने के जो नियम मैं सुझाने जा रहा हूँ, वे सही हैं, तो आपको इस किताब को पढ़ते समय उनका पालन करना होगा।

लेकिन आप कहेंगे, जब तक हम नियमों को सीख और समझ नहीं लेंगे, तब तक हम उनका पालन कैसे कर पाएंगे? इसके लिए हमें नियमों को जाने बिना ही इस पुस्तक का कुछ भाग पढ़ना होगा।

इस दुविधा से निकलने का एकमात्र तरीका जो मुझे पता है, वह यह है कि हम आगे बढ़ते हुए आपको पढ़ने के प्रति जागरूक पाठक बनाएं। आइए महत्वपूर्ण शब्दों को खोजने और उनकी व्याख्या करने के नियम को लागू करके तुरंत शुरुआत करें।

- 2 -

जब आप किसी शब्द के विभिन्न अर्थों की खोज शुरू करते हैं, तो आमतौर पर शब्दकोश और सामान्य उपयोग के अपने ज्ञान से शुरुआत करना बुद्धिमानी होती है। यदि आपने देखा

ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी में "रीड" शब्द को खोजते ही, आपको सबसे पहले यह पता चलेगा कि इन्हीं चार अक्षरों से एक अप्रचलित संज्ञा बनी है जो किसी पशु के चौथे पेट को संदर्भित करती है, और एक क्रिया भी बनी है जो किसी प्रकार के शब्दों या प्रतीकों से जुड़ी मानसिक गतिविधि को दर्शाती है। आप तुरंत समझ जाएंगे कि हमें अप्रचलित संज्ञा पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि यह ध्यान दिया जाए कि पढ़ने का संबंध चिंतन से है। इसके बाद आपको पता चलेगा कि इस क्रिया के इक्कीस अर्थ हैं जो कमोबेश एक दूसरे से मिलते- जुलते हैं और कमोबेश प्रचलित हैं।

"पढ़ना" शब्द का एक असामान्य अर्थ सोचना या अनुमान लगाना है। यह अर्थ अनुमान लगाने या भविष्यवाणी करने के अधिक सामान्य अर्थ में परिवर्तित हो जाता है, जैसे कि जब हम सितारों, अपनी किस्मत या अपने भविष्य को पढ़ने की बात करते हैं। अंततः यह शब्द के उस अर्थ की ओर ले जाता है जिसमें यह पुस्तकों या अन्य लिखित दस्तावेजों को पढ़ने को संदर्भित करता है। इसके कई अन्य अर्थ भी हैं, जैसे मौखिक उच्चारण (जब कोई अभिनेत्री निर्देशक के लिए अपनी पंक्तियाँ पढ़ती है); जैसे कि जो दिखाई नहीं देता उसे जो दिखाई देता है उससे अलग करना (जब हम कहते हैं कि हम किसी व्यक्ति के चेहरे से उसके चरित्र को पढ़ सकते हैं); जैसे कि निर्देश, शैक्षणिक या व्यक्तिगत (जब कोई हमें व्याख्यान पढ़कर सुनाता है)।

उपयोग में सूक्ष्म भिन्नताएं अंतहीन प्रतीत होती हैं; एक गायक संगीत पढ़ता है; एक वैज्ञानिक प्रकृति को पढ़ता है; एक इंजीनियर अपने उपकरणों को पढ़ता है; एक प्रिंटर प्रूफ पढ़ता है; हम शब्दों के बीच छिपे अर्थ को समझते हैं; हम किसी स्थिति में कुछ और ही अर्थ निकालते हैं, या किसी व्यक्ति को समूह से बाहर कर देते हैं।

इन इंद्रियों में जो समानता है, उसे ध्यान में रखकर हम इसे सरल बना सकते हैं; अर्थात्, इसमें मानसिक गतिविधि शामिल होती है और किसी न किसी रूप में प्रतीकों की व्याख्या की जाती है। इससे शब्द के प्रयोग पर पहली सीमा लग जाती है। हम न तो आंतों के किसी अंग से संबंधित हैं और न ही उच्चारण से, यानी किसी बात को ज़ोर से बोलने से। दूसरी सीमा आवश्यकता है, क्योंकि हम कुछ तुलनात्मक बिंदुओं को छोड़कर, तारों, हाथों या चेहरों जैसे प्राकृतिक संकेतों की व्याख्या, चाहे वह प्रत्यक्ष दृष्टि से हो या किसी अन्य प्रकार से, पर विचार नहीं करेंगे। हम स्वयं को एक प्रकार के पठनीय प्रतीक तक सीमित रखेंगे, वह प्रतीक जो मनुष्य संचार के उद्देश्य से बनाते हैं—मानव भाषा के शब्द। इससे भौतिक उपकरणों के डायल पर लगे पॉइंटर, थर्मामीटर, गेज, स्पीडोमीटर आदि जैसे अन्य कृत्रिम संकेतों को पढ़ना संभव नहीं रह जाता।

अतः, इस पाठ में प्रयुक्त शब्द "पढ़ना" का अर्थ, शब्दों या अन्य बोधगम्य चिह्नों के रूप में इंद्रियों के समक्ष प्रकट होने वाली किसी भी चीज़ की व्याख्या या उसे समझना है। यह शब्द के अर्थ के बारे में कोई मनमाना नियम नहीं है।

"पढ़ना" का अर्थ है। यह केवल हमारी समस्या को परिभाषित करने का मामला है, जिसमें पढ़ने का अर्थ संचार प्राप्त करना है।

दुर्भाग्यवश, यह इतना आसान नहीं है, जैसा कि आपको तुरंत समझ आ जाएगा यदि कोई आपसे पूछे:

"सुनने के बारे में क्या? क्या वह भी संचार प्राप्त करना नहीं है?" मैं आगे पढ़ने और सुनने के संबंध पर चर्चा करूंगा, क्योंकि अच्छे पढ़ने के नियम ज्यादातर अच्छे सुनने के नियम ही होते हैं, हालांकि सुनने के मामले में इन्हें लागू करना शायद कठिन हो।

फिलहाल, पढ़ने और सुनने में अंतर करने के लिए इतना कहना ही काफी है कि प्राप्त होने वाले संचार को मौखिक के बजाय लिखित और मुद्रित रूप तक सीमित रखा जाए।

मैं "पढ़ना" शब्द का प्रयोग बताए गए सीमित और विशेष अर्थ में करने का प्रयास करूँगा। लेकिन मुझे पता है कि मैं हर बार सफल नहीं हो पाऊँगा। इस शब्द का प्रयोग इसके कुछ अन्य अर्थों में करना असंभव होगा। कभी-कभी मैं इतना विचारशील रहूँगा कि स्पष्ट रूप से बता दूँ कि मैं अर्थ बदल रहा हूँ। कभी-कभी मैं मान लूँगा कि संदर्भ ही आपके लिए पर्याप्त चेतावनी है। (आशा है) ऐसा बहुत कम होगा कि मैं अनजाने में ही अर्थ बदल दूँ।

हे प्रिय पाठक, धैर्य रखें, क्योंकि आप अभी शुरुआत कर रहे हैं। इससे पहले जो कुछ बताया गया है, वह "पढ़ना" शब्द के और भी संकीर्ण अर्थ को समझने की भूमिका मात्र है। अब हमें उस समस्या का सामना करना होगा जिसका संकेत पहले अध्याय में दिया गया था। हमें उस अर्थ में अंतर करना होगा जिसमें आप इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, और उस अर्थ में जिसमें आप इससे बेहतर या भिन्न तरीके से पढ़ना सीख सकते हैं।

ध्यान दें कि मैंने "बेहतर" या "अलग तरीके से" कहा है। एक शब्द क्षमता के स्तर में अंतर को दर्शाता है, जबकि दूसरा प्रकार के अंतर को। मेरा मानना है कि हम पाएंगे कि बेहतर पाठक एक अलग प्रकार का पठन भी कर सकता है। जबकि कमज़ोर पाठक शायद केवल एक ही प्रकार का पठन कर सकता है—सबसे सरल प्रकार का। आइए पहले पठन क्षमता की सीमा का अध्ययन करें ताकि यह निर्धारित कर सकें कि "बेहतर" और "कमज़ोर" से हमारा क्या तात्पर्य है।

- 3 -

एक स्पष्ट तथ्य यह दर्शाता है कि पढ़ने की क्षमता में विभिन्न स्तर होते हैं। यह तथ्य प्राथमिक कक्षाओं से शुरू होता है और शिक्षा प्रणाली के हर स्तर तक जारी रहता है। पढ़ना तीन मुख्य अक्षरों (रीडिंग, राइटिंग और राइटिंग) में से पहला है। यह पहला इसलिए है क्योंकि हमें पढ़कर सीखने के लिए पढ़ना सीखना आवश्यक है। जैसे-जैसे हम शिक्षा में आगे बढ़ते हैं, जो कुछ हमें सीखना होता है वह अधिक कठिन या जटिल होता जाता है, इसलिए हमें अपनी पढ़ने की क्षमता में भी उसी अनुपात में सुधार करना चाहिए।

साक्षरता सर्वत्र शिक्षा का प्राथमिक मापदंड है, लेकिन इसके कई स्तर होते हैं, प्राथमिक विद्यालय के डिप्लोमा से लेकर स्नातक की डिग्री या पीएचडी तक। लेकिन, अमेरिकी लोकतंत्र पर अपनी हालिया टिप्पणी, जिसका शीर्षक 'मानव स्वतंत्रता' है, में जैक्स बारज़ुन हमें आगाह करते हैं कि हमें इस दावे से गुमराह नहीं होना चाहिए कि हमारे पास दुनिया की सबसे साक्षर आबादी है। "इस अर्थ में साक्षरता शिक्षा नहीं है; यह मुद्रित पृष्ठ के संदेश को शीघ्रता और सही ढंग से ग्रहण करने के अर्थ में 'पढ़ना जानने' तक भी सीमित नहीं है, और न ही उस पर आलोचनात्मक निर्णय लेने की क्षमता है।"

माना जाता है कि पढ़ने की क्षमता में क्रमिक विकास एक शैक्षिक स्तर से दूसरे स्तर तक के विकास के साथ होता है। अमेरिकी शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए यह धारणा निराधार है। फ्रांस में आज भी यह सच है कि डॉक्टरेट की उपाधि के लिए उम्मीदवार को उच्च साक्षरता स्तर में प्रवेश पाने के लिए पर्याप्त पठन क्षमता प्रदर्शित करनी चाहिए। जिसे फ्रांसीसी भाषा में पाठ व्याख्या कहते हैं, वह एक कला है जिसका अभ्यास प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर किया जाना चाहिए और जिसमें आगे बढ़ने से पहले सुधार करना आवश्यक है। लेकिन इस देश में अक्सर हाई स्कूल के छात्र और कॉलेज के वरिष्ठ छात्र या यहां तक कि डॉक्टरेट उम्मीदवार द्वारा दी गई व्याख्या में बहुत कम अंतर दिखाई देता है। जब पुस्तक पढ़ने का कार्य दिया जाता है, तो हाई स्कूल के छात्र और कॉलेज के प्रथम वर्ष के छात्र अक्सर बेहतर होते हैं, शायद इसलिए कि वे बुरी आदतों से उतने प्रभावित नहीं होते।

अमेरिकी शिक्षा प्रणाली में, पढ़ने के मामले में, कुछ खामियाँ हैं, इसका मतलब सिर्फ यह है कि हमारे लिए पढ़ने के स्तर में अंतर स्पष्ट नहीं रह गया है, न कि यह अंतर बिल्कुल नहीं है। हमारा काम इस अस्पष्टता को दूर करना है। पढ़ने के स्तर में अंतर को और स्पष्ट करने के लिए, हमें बेहतर और बदतर के मापदंड परिभाषित करने होंगे।

xxxxxxx xxxxx xxx? xxxxx xxxxx xx xx xxxxxx xxxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxxx, xx xxxxx xxx xx xx xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxxx xxx xxxxx xxx xxx xx xx xxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxx xxxxx xx, xxxxx xxxxxxx xxxxxxxxx xx xxxxxxxxx xx 'xxxxxxxxxx xx xxxxxxxx' xx xxxxxx xx 'xxxxxxxxxxx xxx x xxxxxxxx' xxxxx xxxxxxxxxxxx xxxxxxxx xxx-xxxxxxxxx xxxxxxxxx xxx xxxxx xx, xx xxxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxx xxx, xx xxxxxx xx xxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxx xx xx 'x xxxxxxxxxx xxxxxxx' xxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xx xxx, xxx xxxxx xxx xx xxx xxxxxx xxxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxxx, xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx, xx xxxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxxxxx xxx-xxxxxxxxx xxxxxxxxx, xxxxx xx xxxxxx xx 'xxxxxxx xxxxxx' xx xxxxxxx xx 'xx xxxxxxxx xxxxxxxxx xxxxxx' xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxx

xx xxxxxxx xx xxx xxxxxxxx xxx xx xxxxxxxx xx xxxxxxxxxxx xx xxx-xxx xxxxxxx xx xx xxx xxxxx xxx, xx xxxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxx-xxx xxxxxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxxxx xx xx xx xx xxxxxx xx xx xxx xxxxx xxxxx

xxxxx xxxxxxx xxxxxxx xxx xx xxxxxxxxxx xxx xx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxx xx xxxxxxx, xxxxxxxx xxx xx, xxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxxxx xxx xx xxxxxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxx

xxxxxxx xx xxx, xxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xxx, xx xx xx xx xxx xx xxx-xxx xxxxxx xxx xxxxxxx xx xxx xx xx, xxxxxx xxxxx xxx xxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxx xx xxx xxxxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xxx, xxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xx xxxxx xx xx xxxxx xx xxxxxx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xxx xx xx xxx xxx, xx xxxxx xx xxx xx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxxxx xxx, xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xx xxx xx xx xxxxxx, xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xx xxx xxxxx xxxxxxx

xxxxx xxxxxxx xxx xx xx xxxxxxx xx, xxx xx xx xxx xxxxxx xx xx xx xx xxx xxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xx, xxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxx xxxxxx xxx xxxxxxx xx, xxxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxx xxxxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxxx xx xxx-xxx xxxxxxxxxxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxx xx: xxxxxx xxxxx xxxxx, xxxxx xx xxx xxxxxx, xxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxxxxx xxx xx xxx xxxxx xx xx xxx xxxxxxx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxx xx xx xxxxx-xxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xxx xx xxx xx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xx, xxxxxxxx xxxxxxxxxxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxx xxx xxx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx

xxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxx xx, xxxxxx xxx xxxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxxxxx xxx xx xxx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xxx xxxxxxx xxx, xxx xxxxxxx xx xxx xxxxxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxx

हैं, वह बस कम सक्रिय होता है। पठन की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना सक्रिय है। और एक पाठक दूसरे से उतना ही बेहतर होता है, जितना वह पठन में अधिक व्यापक सक्रियता दिखाने में सक्षम होता है। इस बात को समझाने के लिए, मुझे पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि आप यह समझें कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ कि वास्तव में, पूर्णतः निष्क्रिय पठन जैसी कोई चीज नहीं होती। यह केवल अधिक सक्रिय पठन की तुलना में ऐसा प्रतीत होता है।

इसमें कोई शक नहीं कि लिखना और बोलना सक्रिय क्रियाएँ हैं, जिनमें लेखक या वक्ता स्पष्ट रूप से कुछ कर रहा होता है। हालाँकि, कई लोग यह मानते हैं कि पढ़ना और सुनना पूरी तरह से निष्क्रिय क्रियाएँ हैं। इनमें कोई काम करने की ज़रूरत नहीं होती। वे पढ़ने और सुनने को किसी ऐसे व्यक्ति से संचार प्राप्त करने के रूप में देखते हैं जो सक्रिय रूप से संचार दे रहा होता है। इस हद तक वे सही हैं, लेकिन फिर वे यह मानकर गलती कर बैठते हैं कि संचार प्राप्त करना किसी आघात, वसीयत या अदालत के फैसले को प्राप्त करने जैसा है।

आइए बेसबॉल का उदाहरण लेते हैं। गेंद पकड़ना उतना ही क्रियाशील है जितना कि उसे फेंकना या मारना। यहाँ गेंद फेंकने वाला या बल्लेबाज़ देने वाला है, क्योंकि उसकी क्रिया से गेंद की गति शुरू होती है। कैचर या फील्डर गेंद को ग्रहण करने वाला है, क्योंकि उसकी क्रिया से गति समाप्त होती है। दोनों क्रियाएँ समान रूप से सक्रिय हैं, हालाँकि वे स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। यदि यहाँ कोई चीज़ निष्क्रिय है, तो वह गेंद है; इसे फेंका और पकड़ा जाता है। यह वह निष्क्रिय वस्तु है जिसे लिखा और पढ़ा जाता है, ठीक गेंद की तरह, जो प्रक्रिया को शुरू और समाप्त करने वाली दो क्रियाओं में एक समान निष्क्रिय वस्तु है।

हम इस उदाहरण को और आगे बढ़ा सकते हैं। एक अच्छा कैचर वह होता है जो मारी गई या फेंकी गई गेंद को रोक लेता है। कैचिंग की कला हर स्थिति में इसे यथासंभव कुशलता से करने का कौशल है। इसी प्रकार, पढ़ने की कला हर प्रकार के संचार को यथासंभव कुशलता से समझने का कौशल है। लेकिन "कैचर" के रूप में पाठक, प्लेट के पीछे खड़े व्यक्ति की तुलना में फील्डर के अधिक समान होता है। कैचर एक विशेष पिच के लिए संकेत देता है। उसे पता होता है कि क्या होने वाला है। एक अर्थ में, गेंद फेंकने से पहले पिचर और कैचर दो ऐसे व्यक्तियों की तरह होते हैं जिनके मन में केवल एक ही विचार होता है। हालांकि, बैटर और फील्डर के मामले में ऐसा नहीं है। फील्डर शायद यह चाहेंगे कि बैटर उनके संकेतों का पालन करें, लेकिन खेल ऐसे नहीं खेला जाता। इसलिए पाठक कभी-कभी यह चाहेंगे कि लेखक पढ़ने की सामग्री के लिए उनकी इच्छाओं के आगे पूरी तरह से झुक जाएं, लेकिन वास्तविकता आमतौर पर इसके विपरीत होती है। पाठक को मैदान में जो कुछ भी आता है, उसे समझना पड़ता है।

यह सादृश्य दो बिंदुओं पर विफल हो जाता है, और दोनों ही बिंदु शिक्षाप्रद हैं। पहली बात तो यह है कि बल्लेबाज और फील्डर विपरीत दिशाओं में होने के कारण एक ही लक्ष्य को लक्षित नहीं करते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को तभी सफल मानता है जब वह दूसरे को निराश करता है। इसके विपरीत, गेंदबाज और कैचर तभी सफल होते हैं जब वे सहयोग करते हैं। यहाँ लेखक और पाठक का संबंध बैटिंग लाइन पर खड़े खिलाड़ियों के बीच के संबंध जैसा है। लेखक निश्चित रूप से पकड़े जाने से बचने की कोशिश नहीं कर रहा होता, हालाँकि पाठक अक्सर ऐसा सोच सकता है। सफल संचार तभी होता है जब लेखक जो संदेश देना चाहता है वह पाठक तक पहुँच जाता है। लेखक और पाठक की कुशलता एक साझा लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है।

दूसरी बात यह है कि गेंद एक सरल इकाई है। या तो वह पूरी तरह पकड़ी जाती है या नहीं। लेकिन लेखन एक जटिल वस्तु है। इसे कमोबेश पूर्ण रूप से ग्रहण किया जा सकता है, लेखक के इरादे के बहुत छोटे अंश से लेकर संपूर्ण पाठ तक।

पाठक को मिलने वाली जानकारी की मात्रा आमतौर पर इस बात पर निर्भर करती है कि वह इस प्रक्रिया में कितनी सक्रियता दिखाता है, साथ ही साथ उन विभिन्न मानसिक क्रियाओं को करने में वह कितना कुशल है जो इसमें शामिल हैं।

अब हम पठन क्षमता का आकलन करने के लिए दूसरा मानदंड परिभाषित कर सकते हैं। यदि पढ़ने के लिए एक ही सामग्री दी जाए, तो एक व्यक्ति दूसरे से बेहतर पढ़ता है, पहला, अधिक सक्रियता से पढ़ने के कारण, और दूसरा, इसमें शामिल प्रत्येक क्रिया को अधिक सफलतापूर्वक करने के कारण। ये दोनों बातें आपस में संबंधित हैं। पढ़ना एक जटिल क्रिया है, ठीक वैसे ही जैसे लिखना। इसमें अनेक अलग-अलग क्रियाएँ शामिल होती हैं, और एक अच्छे पठन के लिए इन सभी का निष्पादन आवश्यक है। इसलिए, जो व्यक्ति इन विभिन्न क्रियाओं को अधिक कुशलता से कर सकता है, वह बेहतर ढंग से पढ़ सकता है।

- 4 -

मैंने आपको यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया है कि अच्छा और बुरा पढ़ना क्या होता है। मैंने केवल अस्पष्ट और सामान्य तरीके से ही अंतरों के बारे में बात की है। इससे अधिक यहाँ संभव नहीं है। जब तक आप अच्छे पाठक के लिए आवश्यक नियमों को नहीं जान लेते, तब तक आप इस विषय को पूरी तरह से समझ नहीं पाएंगे।

मुझे ऐसा कोई शॉर्टकट नहीं पता जिससे आपको अभी स्पष्ट और विस्तार से वह सब दिखाया जा सके जो मैं आशा करता हूँ कि आप इसे पूरा करने से पहले समझ जाएँगे। हो सकता है कि आप तब भी इसे न समझ पाएँ। टेनिस खेलने के तरीके पर कोई किताब पढ़ना आपको खेल में कौशल के विभिन्न पहलुओं को किनारे से देखने के लिए पर्याप्त नहीं है। अगर आप किनारे पर ही बैठे रहेंगे, तो आप कभी नहीं जान पाएँगे कि बेहतर या खराब खेलने का अनुभव कैसा होता है। इसी तरह, पढ़ने के नियमों को समझने और अपनी या दूसरों की उपलब्धि का सही मूल्यांकन करने से पहले आपको उन्हें व्यवहार में लाना होगा।

लेकिन मैं यहाँ एक और काम कर सकता हूँ जिससे आपको पढ़ने का अनुभव बेहतर ढंग से समझ में आ सकता है। मैं आपको पढ़ने के विभिन्न प्रकारों के बारे में बता सकता हूँ।

मुझे पढ़ने के बारे में बात करने का यह तरीका तब सूझा जब व्याख्यान मंच पर बोलते समय ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। मैं तीन हज़ार स्कूली शिक्षकों को शिक्षा पर व्याख्यान दे रहा था। मैं इस बात पर अफ़सोस जता रहा था कि कॉलेज के छात्र पढ़ नहीं पाते और इस बारे में कुछ भी नहीं किया जा रहा है। उनके चेहरों से मुझे समझ आ रहा था कि वे मेरी बात नहीं समझ रहे हैं। क्या वे बच्चों को पढ़ना नहीं सिखा रहे थे? वास्तव में, यह काम तो निचली कक्षाओं में किया जा रहा था। मुझे यह क्यों कहना चाहिए कि कॉलेज के चार साल मुख्य रूप से पढ़ना सीखने और महान पुस्तकें पढ़ने में ही बिताए जाएं?

उनकी आम अविश्वास की भावना और मेरी बेतुकी बातों से बढ़ती बेचैनी को देखते हुए, मैं और आगे बढ़ गया। मैंने कहा कि ज़्यादातर लोग पढ़ नहीं सकते, मेरे जान-पहचान के कई विश्वविद्यालय प्रोफेसर पढ़ नहीं सकते, और शायद मेरे श्रोता भी पढ़ नहीं सकते। इस अतिशयोक्ति ने स्थिति को और बिगाड़ दिया। वे जानते थे कि वे पढ़ सकते हैं। वे हर दिन पढ़ते थे। आखिर मंच पर खड़ा यह मूर्ख किस बात पर बकवास कर रहा था? तब मुझे समझाने का तरीका सूझा। समझाते हुए, मैंने पढ़ने के दो प्रकारों में अंतर बताया।

मैंने कुछ इस तरह से बात समझाई। मैंने कहा, ये एक किताब है, और ये तुम्हारा दिमाग है।

यह पुस्तक किसी लेखक द्वारा आपको कुछ संदेश देने के उद्देश्य से लिखी गई भाषा से बनी है। पढ़ने में आपकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप लेखक के सभी संदेशों को कितना समझ पाते हैं।

अब, जैसे-जैसे आप पन्ने पलटते हैं, या तो आप लेखक की कही हर बात को पूरी तरह समझ जाते हैं या नहीं। अगर आप समझ जाते हैं, तो आपको जानकारी तो मिल जाती है, लेकिन आपकी समझ नहीं बढ़ती। अगर सरलता से पढ़ने पर ही कोई किताब आपको पूरी तरह समझ आ जाती है, तो लेखक और आप एक ही सांचे में ढले दो दिमागों की तरह हैं। पन्ने पर बने प्रतीक केवल उस साझा समझ को दर्शाते हैं जो आप दोनों के मिलने से पहले थी।

चलिए दूसरा विकल्प लेते हैं। आप किताब को एक बार में पूरी तरह से नहीं समझ पाते हैं।

चलिए मान भी लेते हैं—जो दुर्भाग्यवश हमेशा सच नहीं होता—कि आप इतना समझते हैं कि आपको पता है कि आप सब कुछ नहीं समझते। आप जानते हैं कि पुस्तक में आपकी समझ से कहीं अधिक है और इसलिए, पुस्तक में कुछ ऐसा है जो आपकी समझ को बढ़ा सकता है।

तो फिर आप क्या करेंगे? आप कई चीजें कर सकते हैं। आप किताब को किसी ऐसे व्यक्ति के पास ले जा सकते हैं, जिसे आप अपने से बेहतर पढ़ सकते हैं, और उससे उन हिस्सों को समझाने के लिए कह सकते हैं जो आपको परेशान कर रहे हैं। या आप उससे कोई पाठ्यपुस्तक या टीका सुझाने के लिए कह सकते हैं जो लेखक के कहने का अर्थ बताकर सब कुछ स्पष्ट कर दे। या आप, जैसा कि कई छात्र करते हैं,

यह तय कर सकते हैं कि जो आपकी समझ से परे है, उस पर ध्यान देने की कोई जरूरत नहीं है, आप काफी कुछ समझ चुके हैं, और बाकी सब मायने नहीं रखता। यदि आप इनमें से कोई भी काम करते हैं, तो आप पढ़ने का वह काम नहीं कर रहे हैं जो किताब के लिए आवश्यक है।

यह केवल एक ही तरीके से किया जा सकता है। बिना किसी बाहरी सहायता के, आप पुस्तक को अपने अध्ययन कक्ष में ले जाते हैं और उस पर काम करते हैं। केवल अपने मन की शक्ति से, आप अपने सामने मौजूद प्रतीकों पर इस प्रकार कार्य करते हैं कि आप धीरे-धीरे कम समझ की अवस्था से अधिक समझ की अवस्था तक पहुँच जाते हैं। मन द्वारा पुस्तक पर किए गए इस कार्य से प्राप्त यह उत्थान ही पठन है, उस प्रकार का पठन जो आपकी समझ को चुनौती देने वाली पुस्तक के लिए उपयुक्त है।

इस प्रकार मैंने पढ़ने का अपना अर्थ संक्षेप में परिभाषित किया: वह प्रक्रिया जिसके द्वारा मन, केवल पठनीय सामग्री के प्रतीकों के सहारे और बिना किसी बाहरी सहायता के, अपनी स्वयं की क्रियाओं की शक्ति से स्वयं को उन्नत करता है। मन कम समझ से अधिक समझ की ओर बढ़ता है। इस प्रक्रिया को संभव बनाने वाली क्रियाएँ ही पठन कला का निर्माण करती हैं। मैंने तीन हज़ार शिक्षकों से पूछा, "आप इनमें से कितनी क्रियाएँ जानते हैं? यदि आपका जीवन किसी ऐसी पठनीय सामग्री को समझने पर निर्भर करता है जो पहली बार पढ़ने पर आपको कुछ अस्पष्ट लगती है, तो आप स्वयं क्या करेंगे?"

अब उनके चेहरे कुछ और ही कहानी बयां कर रहे थे। उन्होंने साफ तौर पर स्वीकार किया कि उन्हें नहीं पता कि क्या करना है। इसके अलावा, उन्होंने यह भी संकेत दिया कि वे यह मानने को तैयार हैं कि ऐसी कला होती है और कुछ लोगों में यह जरूर होती है।

स्पष्ट है कि सभी प्रकार का पठन वैसा नहीं होता जैसा मैंने अभी वर्णित किया है। हम बहुत सारा ऐसा पठन करते हैं जिससे हमें किसी भी प्रकार का उत्थान नहीं होता, हालांकि हमें जानकारी मिल सकती है, हमारा मनोरंजन हो सकता है या हम चिढ़ सकते हैं।

पढ़ने के कई प्रकार प्रतीत होते हैं: जानकारी के लिए, मनोरंजन के लिए, और समझने के लिए। पहली नज़र में ऐसा लगता है कि यह केवल पढ़ने के उद्देश्य में अंतर है। लेकिन यह बात आंशिक रूप से ही सही है। कुछ हद तक, यह पढ़ने की सामग्री और पढ़ने के तरीके में अंतर पर भी निर्भर करता है। आप कॉमिक्स से ज़्यादा जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते और पंचांग से बौद्धिक उन्नति भी नहीं कर सकते। क्योंकि पढ़ने की सामग्री का महत्व अलग-अलग होता है, इसलिए हमें उनका उपयोग भी उसी के अनुसार करना चाहिए। हमें अपने प्रत्येक उद्देश्य को पूरा करने के लिए उससे संबंधित सामग्री का सहारा लेना चाहिए। इससे भी बढ़कर, हमें प्रत्येक प्रकार की सामग्री को उचित रूप से पढ़कर अपने उद्देश्यों को पूरा करना आना चाहिए।

मनोरंजन के लिए पढ़ने की बात को फिलहाल छोड़ते हुए, मैं यहाँ पढ़ने के दो मुख्य प्रकारों पर विचार करना चाहता हूँ: जानकारी के लिए पढ़ना और अधिक समझने के लिए पढ़ना। मुझे लगता है कि आप पढ़ने के इन दोनों प्रकारों और

पढ़ने की क्षमता के स्तर के बीच संबंध को समझ पाएंगे। कमज़ोर पाठक आमतौर पर केवल पहले प्रकार का ही पढ़ पाता है: जानकारी के लिए पढ़ना। जबकि बेहतर पाठक यह तो कर ही सकता है, बल्कि इससे कहीं अधिक भी कर सकता है। वह अपनी समझ के साथ-साथ तथ्यों का भंडार भी बढ़ा सकता है।

पढ़ने के माध्यम से अपने बौद्धिक प्रयास से कम समझ से अधिक समझ की ओर बढ़ना, अपने दम पर सफलता प्राप्त करने जैसा है। मुझे तो ऐसा ही लगता है। यह एक बड़ा प्रयास है। स्पष्टतः, यह अधिक सक्रिय प्रकार का पठन होगा, जिसमें न केवल अधिक विविध गतिविधियाँ शामिल होंगी, बल्कि आवश्यक विभिन्न कार्यों को करने में अधिक कौशल की भी आवश्यकता होगी। यह भी स्पष्ट है कि जिन चीजों को आमतौर पर पढ़ना अधिक कठिन माना जाता है, और इसलिए केवल कुशल पाठकों के लिए ही उपयुक्त समझा जाता है, वे ही इस प्रकार के पठन के लिए सबसे अधिक उपयुक्त और आवश्यक होती हैं।

पत्रिकाएँ और समाचार पत्र जैसी चीज़ें जिन्हें आप बिना किसी प्रयास के समझ सकते हैं, उनमें न्यूनतम पठन की आवश्यकता होती है। कला के लिए आपको बहुत कम प्रयास करना पड़ता है। आप अपेक्षाकृत निष्क्रिय तरीके से पढ़ सकते हैं।

जो भी व्यक्ति थोड़ा-बहुत पढ़ सकता है, उसके लिए इस प्रकार की कुछ न कुछ सामग्री अवश्य उपलब्ध होती है, हालांकि यह अलग-अलग व्यक्तियों के लिए भिन्न हो सकती है। जो एक व्यक्ति के लिए सरल या मामूली हो, वही दूसरे के लिए पर्याप्त मेहनत का विषय हो सकता है। कोई व्यक्ति अपने पूरे प्रयास से कितनी प्रगति कर सकता है, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उसके पास कितना कौशल है या वह कितना कौशल प्राप्त कर सकता है, और यह किसी हद तक उसकी जन्मजात बुद्धि के सापेक्ष होता है।

लेकिन मुद्दा यह नहीं है कि जन्म के सौभाग्य या दुर्भाग्य के आधार पर अच्छे और बुरे पाठकों में अंतर किया जाए। मुद्दा यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए दो प्रकार की पठनीय सामग्री होती है: एक वह जिसे वह सहजता से पढ़कर जानकारी प्राप्त कर सकता है, क्योंकि उसमें ऐसी कोई बात नहीं होती जिसे वह तुरंत समझ न सके; दूसरी वह सामग्री जो उसकी समझ से परे होती है, यानी जिसे समझने के लिए उसे प्रयास करना पड़ता है। बेशक, यह उसकी समझ से बहुत परे भी हो सकती है, हमेशा के लिए उसकी पकड़ से बाहर।

लेकिन यह बात वह तब तक नहीं बता सकता जब तक वह कोशिश न करे, और वह तब तक कोशिश नहीं कर सकता जब तक वह पढ़ने की कला - यानी प्रयास करने का कौशल - विकसित न कर ले।

- 5 -

हममें से अधिकांश लोग अपनी समझ की सीमाओं को नहीं जानते। हमने कभी अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं किया है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि लगभग सभी क्षेत्रों की महान पुस्तकें सामान्य बुद्धि वाले सभी व्यक्तियों की समझ में आती हैं, बशर्ते कि वे उन्हें पढ़ने के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त कर लें

और प्रयास करें। बेशक, जन्म से ही अधिक भाग्यशाली लोग लक्ष्य तक अधिक आसानी से पहुंच जाएंगे, लेकिन दौड़ हमेशा तेज दौड़ने वाले की नहीं होती।

यहां कुछ छोटी-छोटी बातें हैं जिन पर आपको ध्यान देना चाहिए। पढ़ते समय किसी चीज़ के बारे में आपका निर्णय गलत हो सकता है। आपको लग सकता है कि आप उसे समझ गए हैं और सहज पठन से जो कुछ मिला है उससे संतुष्ट हो सकते हैं, जबकि वास्तव में बहुत कुछ आपकी समझ से परे हो सकता है। सही अभ्यास का पहला सिद्धांत पुराना है: ज्ञान की शुरुआत अपनी अज्ञानता का सही आकलन करने से होती है। इसलिए, समझने के सचेत प्रयास के रूप में पढ़ने की शुरुआत समझने योग्य और न समझने योग्य के बीच की रेखा को सटीक रूप से समझने से होती है।

मैंने कई विद्यार्थियों को कठिन पुस्तक को ऐसे पढ़ते देखा है जैसे वे खेल समाचार पत्र पढ़ रहे हों। कभी-कभी मैं कक्षा की शुरुआत में उनसे पूछता था कि क्या उन्हें पाठ से संबंधित कोई प्रश्न हैं, क्या कुछ समझ में नहीं आया। उनकी चुप्पी ही नकारात्मक उत्तर देती थी। दो घंटे बीतने के बाद, जब वे पुस्तक की व्याख्या से जुड़े सबसे सरल प्रश्नों का भी उत्तर नहीं दे पाते थे, तो वे असमंजस भरे लहजे में अपनी कमी स्वीकार करते थे। वे असमंजस में इसलिए थे क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि उन्होंने पाठ पढ़ लिया है। उन्होंने पढ़ा तो था, लेकिन सही तरीके से नहीं।

यदि उन्होंने कक्षा समाप्त होने के बाद की बजाय पढ़ते समय ही खुद को उलझन में पड़ने दिया होता; यदि उन्होंने उन चीजों को नोट करने के लिए खुद को प्रोत्साहित किया होता जो उन्हें समझ में नहीं आईं, बजाय इसके कि वे उन मामलों को तुरंत दिमाग से निकाल दें, तो शायद उन्हें पता चल जाता कि उनके सामने रखी किताब उनके सामान्य ज्ञान से अलग थी।

अब मैं इन दोनों प्रकार के पठन के बीच के अंतर को संक्षेप में समझा देता हूँ। हमें दोनों पर विचार करना होगा क्योंकि एक तरीके से जो पठनीय है और दूसरे तरीके से जिसे पढ़ना आवश्यक है, उसके बीच की रेखा अक्सर धुंधली होती है। हम दोनों प्रकार के पठन को जितना अलग रख सकते हैं, उतना ही हम "पठन" शब्द का प्रयोग दो अलग-अलग अर्थों में कर सकते हैं।

पहला अर्थ वह है जिसमें हम खुद को अखबार, पत्रिकाएँ या ऐसी कोई भी चीज़ पढ़ते हुए बताते हैं जो हमारी कुशलता और प्रतिभा के अनुसार हमें पूरी तरह समझ में आती है। ऐसी चीज़ें हमारी याददाश्त को बढ़ा सकती हैं, लेकिन हमारी समझ को बेहतर नहीं बना सकतीं, क्योंकि इन्हें पढ़ने से पहले हमारी समझ इनके बराबर ही थी। अन्यथा, अगर हम सचेत और ईमानदार होते, तो हम उस उलझन और असमंजस का सामना करते जो अपनी क्षमता से अधिक पढ़ने से उत्पन्न होती है।

दूसरा अर्थ वह है जिसमें मैं कहूंगा कि एक व्यक्ति को कुछ ऐसा पढ़ना पड़ता है जिसे वह शुरू में पूरी तरह से समझ नहीं पाता। यहां पढ़ने की वस्तु शुरू में पाठक से बेहतर होती है। लेखक कुछ ऐसा संप्रेषित कर रहा है जिससे पाठक की समझ बढ़ सके। असमानों के बीच ऐसा संवाद संभव होना चाहिए, अन्यथा एक व्यक्ति दूसरे से कभी कुछ नहीं सीख सकता, चाहे वह बोलकर हो या लिखकर। यहां

"सीखने" से मेरा तात्पर्य अधिक समझने से है, न कि उस जानकारी को याद रखने से जिसकी बोधगम्यता का स्तर आपके पास पहले से मौजूद अन्य जानकारी के समान हो।

यदि नए तथ्य उसी प्रकार के हों जो आप पहले से जानते हैं, तो पढ़ने के दौरान नई जानकारी प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती, बशर्ते कि वे समझने योग्य हों। उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति अमेरिकी इतिहास के कुछ तथ्यों को जानता है और उन्हें एक विशेष परिप्रेक्ष्य में समझता है, वह पढ़ने के माध्यम से, प्रथम अर्थ में, ऐसे और तथ्य आसानी से प्राप्त कर सकता है और उन्हें उसी परिप्रेक्ष्य में समझ सकता है। मान लीजिए कि वह एक ऐसा इतिहास पढ़ रहा है जो केवल कुछ और तथ्य प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं करता, बल्कि उन सभी तथ्यों पर एक नया और शायद अधिक गहन प्रकाश डालता है जिन्हें वह जानता है। मान लीजिए कि यहाँ उसकी समझ पढ़ने से पहले की तुलना में कहीं अधिक है। यदि वह उस अधिक समझ को प्राप्त करने में सक्षम है, तो वह द्वितीय अर्थ में पढ़ रहा है। उसने अपने स्वयं के प्रयास से स्वयं को उन्नत किया है, यद्यपि अप्रत्यक्ष रूप से, यह लेखक के कारण संभव हुआ है, जिसके पास उसे सिखाने के लिए कुछ था।

इस प्रकार का पठन किन परिस्थितियों में होता है? दो परिस्थितियाँ हैं। पहली, समझ में प्रारंभिक असमानता होती है। लेखक को पाठक से श्रेष्ठ होना चाहिए, और उसकी पुस्तक को सुपाठ्य रूप में उन अंतर्दृष्टियों को व्यक्त करना चाहिए जो उसके पास हैं और उसके संभावित पाठकों में नहीं हैं। दूसरी, पाठक को इस असमानता को कुछ हद तक दूर करने में सक्षम होना चाहिए, शायद पूरी तरह से नहीं, लेकिन हमेशा लेखक के साथ समानता की ओर अग्रसर होना चाहिए। जिस हद तक समानता प्राप्त होती है, संचार पूर्णतः संपन्न हो जाता है।

संक्षेप में कहें तो, हम केवल अपने से श्रेष्ठ लोगों से ही सीख सकते हैं। हमें यह जानना होगा कि वे कौन हैं और उनसे कैसे सीखा जाए। इस प्रकार का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति में पढ़ने की वह कला होती है जिसके बारे में मैं विशेष रूप से बात कर रहा हूँ। संभवतः हर किसी में इस प्रकार पढ़ने की कुछ क्षमता होती है। लेकिन हम सभी अपने प्रयासों को अधिक सार्थक सामग्री पर लागू करके अधिक लाभ प्राप्त करते हैं।

अध्याय तीन

पढ़ना ही सीखना है

- 1 -

जैसा कि आपने देखा है, पढ़ने का एक नियम यह है कि पुस्तक में महत्वपूर्ण शब्दों को चुनकर उनकी व्याख्या करें। एक और नियम है जो इससे निकटता से संबंधित है: महत्वपूर्ण वाक्यों को खोजना और उनका अर्थ समझना।

"पढ़ना सीखना है" ये दो शब्द मिलकर एक वाक्य बनाते हैं। यह वाक्य इस चर्चा के लिए स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण है। वास्तव में, मैं कहूंगा कि यह अब तक का सबसे महत्वपूर्ण वाक्य है। इसकी महत्ता इसमें प्रयुक्त शब्दों के महत्व से स्पष्ट होती है। ये शब्द न केवल महत्वपूर्ण हैं बल्कि अस्पष्ट भी हैं, जैसा कि हमने "पढ़ना" के मामले में देखा है।

अब, यदि "पढ़ना" शब्द के कई अर्थ हैं, और इसी प्रकार "सीखना" शब्द के भी, और यदि वह छोटा सा शब्द "है" सबसे अधिक अस्पष्ट है, तो आप वाक्य की पुष्टि या खंडन करने की स्थिति में नहीं हैं। इसके अनेक अर्थ हो सकते हैं, जिनमें से कुछ सत्य और कुछ असत्य हो सकते हैं।

जब आप मेरे द्वारा प्रयुक्त तीनों शब्दों का अर्थ समझ लेंगे, तब आपको वह बात समझ आ जाएगी जो मैं कहना चाह रहा हूँ। तब, और केवल तभी, आप यह तय कर सकते हैं कि आप मुझसे सहमत हैं या नहीं।

चूंकि आप जानते हैं कि हम मनोरंजन के लिए पढ़ने पर विचार नहीं कर रहे हैं, इसलिए आप मुझे यह न कहने के लिए गलत ठहरा सकते हैं: "कुछ पढ़ना सीखना है।" मेरा बचाव वही है जो आप एक पाठक के रूप में जल्द ही समझ जाएंगे। संदर्भ के कारण मुझे "कुछ" कहने की आवश्यकता नहीं थी। यह स्पष्ट था कि हम मनोरंजन के लिए पढ़ने को अनदेखा करने वाले थे।

इस वाक्य की व्याख्या करने के लिए, हमें सबसे पहले यह पूछना होगा: सीखना क्या है? स्पष्ट है कि हम यहाँ सीखने पर पर्याप्त चर्चा नहीं कर सकते। इसका एकमात्र संक्षिप्त समाधान यह है कि हम उस बात का एक मोटा-मोटा अनुमान लगा लें जो हर कोई जानता है: सीखना ज्ञान प्राप्त करना है।

भागो मत। मैं "ज्ञान" को परिभाषित नहीं करने जा रहा हूँ। अगर मैंने ऐसा करने की कोशिश की, तो हम अन्य शब्दों की भरमार में उलझ जाएँगे जो अचानक महत्वपूर्ण हो जाएँगे और स्पष्टीकरण की मांग करेंगे। हमारे उद्देश्य के लिए, "ज्ञान" के बारे में आपकी वर्तमान समझ ही पर्याप्त है। आपके पास ज्ञान है। आप जानते हैं कि आप जानते हैं और क्या जानते हैं। आप किसी बात को जानने और न जानने के बीच का अंतर जानते हैं।

यदि आपसे ज्ञान की प्रकृति का दार्शनिक विश्लेषण करने को कहा जाए, तो शायद आप असमंजस में पड़ जाएँ; लेकिन कई दार्शनिक भी ऐसा ही कर चुके हैं। चलिए, उनकी चिंताओं को छोड़ दें और यह मानकर चलें कि हम एक-दूसरे को समझते हैं, "ज्ञान" शब्द का प्रयोग करें। लेकिन, आप आपत्ति कर सकते हैं, भले ही हम यह मान लें कि हम "ज्ञान" से क्या तात्पर्य रखते हैं, उसे अच्छी तरह समझते हैं, फिर भी यह कहना कठिन है कि सीखना ही ज्ञान प्राप्त करना है। कोई व्यक्ति टेनिस खेलना या खाना बनाना सीखता है। टेनिस खेलना और खाना बनाना अब ज्ञान है। ये किसी कार्य को करने के ऐसे तरीके हैं जिनमें कौशल की आवश्यकता होती है।

इस आपत्ति में दम है। हालांकि हर कौशल में ज्ञान शामिल होता है, लेकिन कौशल होना ज्ञान से कहीं अधिक है। कौशलवान व्यक्ति न केवल कुछ जानता है, बल्कि वह कुछ ऐसा कर सकता है जो कौशलहीन व्यक्ति बिल्कुल भी नहीं कर सकता या उतनी अच्छी तरह से नहीं कर सकता।

यहां एक जाना-पहचाना अंतर है, जिसे हम सभी तब समझते हैं जब हम किसी काम को करने के तरीके को जानने और किसी बात के सच होने को जानने की बात करते हैं। किसी काम को करने का तरीका और सच होना, दोनों ही सीखे जा सकते हैं। आपने पहले ही इस अंतर को स्वीकार कर लिया है, क्योंकि आप जानते हैं कि पढ़ने से सीखने के लिए पहले पढ़ना सीखना पड़ता है।

इस प्रकार, "सीखना" शब्द के हमारे वर्तमान प्रयोग पर एक प्रारंभिक प्रतिबंध लगाया जाता है। पढ़ना केवल ज्ञान प्राप्त करने के अर्थ में सीखना है, कौशल के अर्थ में नहीं। आप केवल इस पुस्तक को पढ़कर पढ़ना नहीं सीख सकते। आप केवल पढ़ने की प्रकृति और कला के नियमों को ही सीख सकते हैं।
इससे आपको पढ़ना सीखने में मदद मिल सकती है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, आपको नियमों का पालन करना होगा और कला का अभ्यास करना होगा। केवल इसी तरह से कौशल प्राप्त किया जा सकता है, जो मात्र पुस्तक से प्राप्त ज्ञान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

- 2 -

अब तक तो सब ठीक है। लेकिन अब हमें सूचना के लिए पढ़ने और समझने के लिए पढ़ने के बीच के अंतर को समझना होगा। पिछले अध्याय में मैंने बताया था कि दूसरे प्रकार का पढ़ना कितना अधिक सक्रिय होता है और इसे करने में कैसा अनुभव होता है। अब हमें इन दोनों प्रकार के पढ़ने से मिलने वाले लाभ में अंतर पर विचार करना होगा। सूचना और समझ दोनों ही किसी न किसी रूप में ज्ञान हैं। अधिक जानकारी प्राप्त करना सीखना है, और जो पहले समझ में नहीं आया था उसे समझना भी सीखना है।

क्या अंतर है?

जानकारी होना मात्र यह जानना है कि कोई बात सच है। ज्ञान प्राप्त करना इसके अतिरिक्त यह जानना है कि वह बात किस बारे में है: वह बात क्यों सच है, उसका अन्य तथ्यों से क्या संबंध है, किन मामलों में वह समान है और किन मामलों में भिन्न है, इत्यादि।

हममें से अधिकांश लोग किसी बात को याद रखने और उसे समझाने की क्षमता के बीच के अंतर से परिचित हैं। यदि आपको लेखक की कही हुई बात याद है, तो आपने उसे पढ़कर कुछ सीखा है। यदि उसकी कही हुई बात सच है, तो आपने दुनिया के बारे में भी कुछ सीखा है। लेकिन चाहे वह किताब के बारे में कोई तथ्य हो या दुनिया के बारे में, यदि आपने केवल अपनी याददाश्त का इस्तेमाल किया है, तो आपको केवल जानकारी मिली है। आपको ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है। ज्ञान तभी प्राप्त होता है जब आप लेखक की कही हुई बात को जानने के साथ-साथ उसके कहने का अर्थ और कारण भी समझते हैं।

मैंने फिर भी कोशिश जारी रखी। शायद, अगर वे अपने अनुभव के आधार पर अक्विनास को नहीं समझ पा रहे थे, तो उपन्यासों को पढ़ने से मिले अप्रत्यक्ष अनुभव का सहारा ले सकें। उन्होंने कुछ उपन्यास पढ़े थे। कहीं-कहीं उन्होंने कोई महान उपन्यास भी पढ़ा था। क्या इन कहानियों में भी भावनाएँ प्रकट होती थीं? क्या अलग-अलग भावनाएँ थीं और वे आपस में कैसे जुड़ी थीं? यहाँ भी उनका जवाब पहले जैसा ही निराशाजनक रहा। उन्होंने मुझे कहानी का सतही सारांश बताकर ही उत्तर दिया। वे अपने पढ़े हुए उपन्यासों को उतना ही कम समझते थे जितना कि सेंट थॉमस को।

अंत में, मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने कभी ऐसे कोई अन्य पाठ्यक्रम लिए हैं जिनमें भावनाओं या मनोभावों पर चर्चा हुई हो। उनमें से अधिकांश ने मनोविज्ञान का प्रारंभिक पाठ्यक्रम लिया था, और उनमें से एक-दो ने फ्रायड के बारे में सुना भी था, और शायद थोड़ा-बहुत पढ़ा भी था। जब मुझे पता चला कि उन्होंने भावनाओं के शरीर विज्ञान, जिसमें उन्होंने शायद अच्छे अंक प्राप्त किए थे, और सेंट थॉमस द्वारा वर्णित मनोभावों के बीच कोई संबंध नहीं जोड़ा; जब मुझे पता चला कि वे यह भी नहीं समझ पा रहे थे कि सेंट थॉमस वही मूल बात कह रहे थे जो फ्रायड कह रहे थे, तब मुझे समझ आया कि मुझे किस चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

ये छात्र कॉलेज के तृतीय और अंतिम वर्ष के थे। वे एक मायने में तो पढ़ सकते थे, लेकिन दूसरे मायने में नहीं। स्कूल में अपने पूरे समय में वे केवल जानकारी के लिए ही पढ़ते रहे थे, उस तरह की जानकारी जो आपको प्रश्नोत्तरी और परीक्षाओं के उत्तर देने के लिए दिए गए असाइनमेंट से प्राप्त करनी पड़ती है। उन्होंने कभी एक किताब को दूसरी किताब से, एक पाठ्यक्रम को दूसरे से, या किताबों या व्याख्यानों में कही गई किसी भी बात को अपने जीवन में घटित घटनाओं से नहीं जोड़ा।

यह न जानते हुए कि किसी पुस्तक को केवल उसके स्पष्ट कथनों को याद करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, कक्षा में आने पर वे अपनी घोर असफलता से पूरी तरह अनजान थे। उनके अनुसार, उन्होंने उस दिन का पाठ पूरी लगन से तैयार किया था। उन्हें कभी यह ख्याल भी नहीं आया था कि उन्हें यह साबित करना पड़ सकता है कि उन्होंने जो पढ़ा है उसे वे समझते हैं। यहाँ तक कि जब कई बार कक्षा में जाकर उन्हें इस नई आवश्यकता का एहसास होने लगा, तब भी वे असहाय थे। ज़्यादा से ज़्यादा उन्हें थोड़ा-बहुत यह एहसास हुआ कि वे जो पढ़ रहे हैं उसे नहीं समझ पा रहे हैं, लेकिन वे इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते थे। अपनी स्कूली शिक्षा के अंत के करीब, वे पढ़ने और समझने की कला में पूरी तरह अकुशल थे।

- 3 -

जब हम जानकारी के लिए पढ़ते हैं, तो हमें तथ्यों की आवश्यकता होती है। जब हम समझने के लिए पढ़ते हैं, तो हम न केवल तथ्य सीखते हैं बल्कि उनका महत्व भी समझते हैं। पढ़ने के प्रत्येक प्रकार का अपना महत्व है, लेकिन इसका उपयोग सही जगह पर किया जाना चाहिए। यदि कोई लेखक हमसे अधिक नहीं समझता है, या यदि वह किसी विशेष अंश को समझाने का प्रयास नहीं करता है, तो हम उससे

केवल जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन यदि किसी लेखक के पास ऐसी अंतर्दृष्टि है जो हमारे पास नहीं है और यदि उसने उसे अपने लेखन में व्यक्त करने का प्रयास किया है, तो यदि हम उसे समाचार पत्रों या पत्रिकाओं को पढ़ने के तरीके से अलग तरीके से नहीं पढ़ते हैं, तो हम उसके उपहार की उपेक्षा कर रहे हैं।

जिन पुस्तकों को हम महान या अच्छी मानते हैं, वे आम तौर पर बेहतर पठन-पाठन की पात्र होती हैं। यह सत्य है कि किसी भी चीज़ को जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ समझने के लिए भी पढ़ा जा सकता है। लेखक ने जो कहा है उसे याद रखना और उसके भावार्थ को समझना आना चाहिए। एक अर्थ में, जानकारी होना ज्ञान प्राप्त करने की पूर्व शर्त है।

लेकिन मुख्य बात सिर्फ जानकारी हासिल करना नहीं है। किसी महान पुस्तक को केवल जानकारी के लिए पढ़ना उतना ही व्यर्थ है जितना कि फाउंटेन पेन से कीड़े खोदना।

मोंटेग्न "ज्ञान से पहले आने वाली वर्णमाला की अज्ञानता और उसके बाद आने वाली डॉक्टरेट स्तर की अज्ञानता" की बात करते हैं। एक अज्ञानता उन लोगों की है जिन्हें एबीसी भी नहीं आता और वे पढ़ नहीं सकते। दूसरी अज्ञानता उन लोगों की है जिन्होंने कई किताबें गलत तरीके से पढ़ी हैं। पोप ने उन्हें ठीक ही कहा है, "किताबों में भरे मूर्ख, अज्ञानता से पढ़े हुए।" हमेशा से ऐसे पढ़े-लिखे अज्ञानी रहे हैं जिन्होंने बहुत कुछ पढ़ा है लेकिन ठीक से नहीं पढ़ा। यूनानियों ने ज्ञान और मूर्खता के ऐसे मिश्रण के लिए एक नाम रखा था, जो हर युग के उन लोगों पर लागू होता है जो किताबी तो हैं लेकिन कम पढ़े-लिखे हैं। वे सभी द्वितीय वर्ष के छात्र हैं।

अच्छी तरह से पढ़े जाने का मतलब अक्सर पढ़ने की मात्रा होता है, गुणवत्ता नहीं। केवल निराशावादी और मानवद्वेषी शोपेनहावर ही नहीं थे जिन्होंने अत्यधिक पढ़ने की निंदा की, क्योंकि उन्होंने पाया कि अधिकतर लोग निष्क्रिय रूप से पढ़ते हैं और खुद को असंसाधित जानकारी की विषाक्त मात्रा से भर लेते हैं। बेकन और हॉब्स ने भी यही बात कही। हॉब्स ने कहा: "अगर मैं उतनी ही किताबें पढ़ता जितनी अधिकांश पुरुष पढ़ते हैं"—उनका मतलब था

"गलत समझना"—"मुझे भी उनकी तरह मंदबुद्धि होना चाहिए।" बेकन ने "स्वाद लेने योग्य पुस्तकों, निगलने योग्य पुस्तकों और पचाने योग्य कुछ पुस्तकों" के बीच अंतर बताया। इस पूरी प्रक्रिया में जो बात समान बनी रहती है, वह है विभिन्न प्रकार के साहित्य के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रकार के पठन के बीच का अंतर।

- 4 -

"पढ़ना सीखना है" इस वाक्य की व्याख्या करने में हमने कुछ प्रगति की है। हम जानते हैं कि कुछ, लेकिन सभी नहीं, सीखना पढ़ने के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है: ज्ञान की प्राप्ति, कौशल की नहीं। हालाँकि, यदि हम यह निष्कर्ष निकालें कि जिस प्रकार का पढ़ना सूचना या समझ में वृद्धि करता है, वह उस

प्रकार के सीखने के समान है जिससे अधिक ज्ञान प्राप्त होता है, तो हम एक गंभीर त्रुटि कर रहे होंगे। हम यह कह रहे होंगे कि कोई भी व्यक्ति पढ़ने के अलावा ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, जो स्पष्ट रूप से गलत है।

इस त्रुटि से बचने के लिए, अब हमें सीखने के प्रकारों में एक और अंतर पर विचार करना होगा।

यह अंतर पठन की पूरी प्रक्रिया और शिक्षा से इसके संबंध पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। (यदि अब मैं जो बात कहने जा रहा हूँ वह आपके लिए अपरिचित और शायद कुछ कठिन हो, तो मेरा सुझाव है कि आप अगले पृष्ठों को अपने पठन कौशल की परीक्षा के रूप में लें। सक्रिय पठन शुरू करने के लिए यह एक अच्छी जगह है—महत्वपूर्ण शब्दों को चिह्नित करना, अंतरों को समझना और यह देखना कि जिस वाक्य से हमने शुरुआत की थी उसका अर्थ कैसे विस्तृत होता है।)

शिक्षा के इतिहास में, ज्ञान के स्रोतों के रूप में ज्ञान की शिक्षा और खोज में हमेशा अंतर किया गया है। शिक्षा तब होती है जब एक व्यक्ति दूसरे को बोलकर या लिखकर सिखाता है। हालांकि, हम बिना सिखाए भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यदि ऐसा न होता, और प्रत्येक शिक्षक को वह सीखना पड़ता जो वह दूसरों को सिखाता है, तो ज्ञान प्राप्ति की कोई शुरुआत ही नहीं होती। इसलिए, खोज का होना आवश्यक है—यानी बिना सिखाए, शोध, जांच या चिंतन के माध्यम से कुछ सीखना।

खोज और शिक्षण में वही अंतर है जो शिक्षक के बिना सीखने से लेकर शिक्षक की सहायता से सीखने तक होता है। दोनों ही मामलों में, सीखने की प्रक्रिया सीखने वाले पर ही निर्भर करती है। यह मानना घोर त्रुटि होगी कि खोज सक्रिय अधिगम है और शिक्षण निष्क्रिय।

निष्क्रिय अधिगम जैसी कोई चीज नहीं होती, क्योंकि पूर्ण निष्क्रिय पठन संभव नहीं है।

अधिगम की इन दोनों गतिविधियों में अंतर उन सामग्रियों के संदर्भ में है जिन पर शिक्षार्थी कार्य करता है। जब उसे पढ़ाया या निर्देश दिया जा रहा होता है, तो शिक्षार्थी उसे संप्रेषित की गई किसी चीज़ पर क्रिया करता है। वह लिखित या मौखिक संवाद पर क्रियाएँ करता है।

वह पढ़ने या सुनने के माध्यम से सीखता है। यहाँ पढ़ने और सुनने के बीच घनिष्ठ संबंध पर ध्यान दें। यदि हम संचार प्राप्त करने के इन दो तरीकों के बीच सूक्ष्म अंतरों को अनदेखा कर दें, तो हम कह सकते हैं कि पढ़ना और सुनना एक ही कला है—सीखने की कला। हालाँकि, जब शिक्षार्थी किसी भी प्रकार के शिक्षक की सहायता के बिना आगे बढ़ता है, तो सीखने की प्रक्रिया प्रवचन के बजाय प्रकृति पर आधारित होती है। इस प्रकार के सीखने के नियम खोज की कला का निर्माण करते हैं। यदि हम "पढ़ना" शब्द का शिथिल अर्थ में प्रयोग करें, तो हम कह सकते हैं कि खोज प्रकृति को पढ़ने की कला है, जैसे निर्देश (सीखना) पुस्तकों को पढ़ने की कला है या, सुनने को शामिल करते हुए, प्रवचन से सीखने की कला है।

चिंतन के बारे में क्या? यदि "चिंतन" से हमारा तात्पर्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने मन का उपयोग करना है, और यदि शिक्षा और खोज ही ज्ञान प्राप्त करने के सभी तरीके हैं, तो स्पष्ट है कि हमारा सारा चिंतन इन दोनों गतिविधियों में से किसी एक के दौरान ही घटित होता है। हमें पढ़ने और सुनने के दौरान चिंतन करना चाहिए, ठीक उसी प्रकार जैसे हमें शोध के दौरान चिंतन करना चाहिए। स्वाभाविक रूप से, चिंतन के प्रकार भिन्न होते हैं—ठीक वैसे ही जैसे सीखने के दो तरीके भिन्न होते हैं।

कई लोग चिंतन को शिक्षण की तुलना में अनुसंधान और खोज से अधिक संबंधित मानते हैं, इसका कारण यह है कि वे पढ़ने और सुनने को निष्क्रिय क्रियाएँ समझते हैं। यह शायद सच है कि सूचना प्राप्त करने के लिए पढ़ते समय चिंतन की आवश्यकता कम होती है, जबकि कुछ नया खोजने के प्रयास में चिंतन अधिक होता है। यह कम सक्रिय प्रकार का पठन है। लेकिन यह अधिक सक्रिय पठन—समझने के प्रयास—के लिए सच नहीं है।

इस तरह की पढ़ाई करने वाला कोई भी व्यक्ति यह नहीं कहेगा कि इसे बिना सोचे- समझे किया जा सकता है।

चिंतन अधिगम प्रक्रिया का मात्र एक भाग है। इसमें इंद्रियों और कल्पना का भी प्रयोग आवश्यक है। अवलोकन करना, स्मृति में रखना और जो प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता, उसकी कल्पना करना भी आवश्यक है। एक बार फिर, शोध या खोज की प्रक्रिया में इन गतिविधियों की भूमिका पर बल देने और पठन-श्रवण या श्रवण के माध्यम से अधिगम की प्रक्रिया में इनके महत्व को भुला देने या कम आंकने की प्रवृत्ति पाई जाती है। थोड़ा चिंतन करने पर यह स्पष्ट होता है कि संवेदी और तार्किक शक्तियाँ, संक्षेप में, खोज की कला में प्रयुक्त सभी कौशलों को समाहित करती हैं: अवलोकन की कुशलता, सहज स्मृति, कल्पना की व्यापकता और, निश्चित रूप से, विश्लेषण और चिंतन में प्रशिक्षित तर्कशक्ति। यद्यपि सामान्यतः ये कौशल समान होते हैं, फिर भी अधिगम के दो प्रमुख प्रकारों में इनका प्रयोग भिन्न-भिन्न हो सकता है।

- 5 -

मैं एक बार फिर उन दो गलतियों पर ज़ोर देना चाहूँगा जो अक्सर होती हैं। एक गलती उन लोगों द्वारा की जाती है जो चिंतन कला के बारे में इस तरह लिखते या बोलते हैं मानो ऐसी कोई कला अपने आप में ही हो। चूंकि हम कभी भी सीखने या शोध की प्रक्रिया से अलग होकर नहीं सोचते, इसलिए चिंतन कला, एक ओर पढ़ने और सुनने की कला और दूसरी ओर खोज की कला से अलग नहीं हो सकती। यह बात चाहे जितनी भी सच हो कि पढ़ना सीखना है, उतनी ही सच यह भी है कि पढ़ना चिंतन है। चिंतन कला का संपूर्ण वर्णन केवल पढ़ने और शोध के संपूर्ण विश्लेषण के संदर्भ में ही किया जा सकता है।

एक और गलती उन लोगों से होती है जो चिंतन की कला को खोज की कला के समान मानते हैं। इस गलती का सबसे बड़ा उदाहरण, जिसने अमेरिकी शिक्षा को बहुत प्रभावित किया है, जॉन ड्यूई की पुस्तक 'हाउ वी थिंक' है। यह पुस्तक हमारे

शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षित हजारों शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक रही है। प्रोफेसर ड्यूई चिंतन की चर्चा को केवल खोज द्वारा सीखने तक ही सीमित रखते हैं। लेकिन यह हमारे सोचने के दो मुख्य तरीकों में से केवल एक है। यह जानना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि जब हम कोई पुस्तक पढ़ते हैं या कोई व्याख्यान सुनते हैं तो हम कैसे सोचते हैं। शायद, शिक्षण में लगे शिक्षकों के लिए यह और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पढ़ने की कला का संबंध सीखने की कला से होना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे लिखने की कला का संबंध पढ़ने की कला से होता है। मुझे संदेह है कि जो व्यक्ति अच्छी तरह से पढ़ना नहीं जानता, वह अच्छी तरह से लिख सकता है। इसी प्रकार, मुझे संदेह है कि जो व्यक्ति सीखने की कला नहीं जानता, वह पढ़ाने में कुशल हो सकता है।

इन त्रुटियों का कारण संभवतः जटिल है। आंशिक रूप से, ये इस गलत धारणा के कारण हो सकती हैं कि शिक्षण और अनुसंधान गतिविधियाँ हैं, जबकि पढ़ना और सीखना केवल निष्क्रिय क्रियाएँ हैं। आंशिक रूप से, ये त्रुटियाँ वैज्ञानिक पद्धति के अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन के कारण भी हैं, जो अन्वेषण या अनुसंधान पर इस प्रकार बल देती है मानो यही चिंतन का एकमात्र अवसर हो। संभवतः एक समय ऐसा भी था जब इसके विपरीत त्रुटि हुई थी: जब लोगों ने पुस्तकों के पठन पर अत्यधिक बल दिया और प्रकृति के अध्ययन पर कम ध्यान दिया। हालाँकि, यह हमें दोषमुक्त नहीं करता। दोनों ही अतिवादी स्थितियाँ समान रूप से हानिकारक हैं। एक संतुलित शिक्षा में दोनों प्रकार के अधिगम और उनसे संबंधित कलाओं पर उचित बल देना आवश्यक है।

इनके कारण चाहे जो भी हों, अमेरिकी शिक्षा पर इन त्रुटियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। संभवतः इन्हीं त्रुटियों के कारण स्कूली शिक्षा प्रणाली में बुद्धिमत्तापूर्ण पठन की लगभग पूर्ण उपेक्षा हुई है। छात्रों को स्वयं चीजों की खोज करने का प्रशिक्षण देने में दूसरों से सीखने का प्रशिक्षण देने की तुलना में कहीं अधिक समय व्यतीत होता है। मेरे विचार से, जो पहले से ही खोजा जा चुका है, उसे स्वयं खोजने में समय बर्बाद करने में कोई विशेष गुण नहीं है। हमें अपने शोध कौशल को उस चीज़ के लिए बचाकर रखना चाहिए जिसकी अभी तक खोज नहीं हुई है, और अपने शिक्षण कौशल का उपयोग उस चीज़ को सीखने के लिए करना चाहिए जो दूसरे पहले से जानते हैं और इसलिए सिखा सकते हैं।

इस तरह प्रयोगशाला पाठ्यक्रमों में बहुत सारा समय बर्बाद हो जाता है। प्रयोगशाला की इस अतिशयता के लिए आमतौर पर यह बहाना दिया जाता है कि इससे विद्यार्थी को सोचना सिखाया जाता है। यह बात सच है, लेकिन केवल एक ही प्रकार की सोच में। एक सुशिक्षित व्यक्ति, यहाँ तक कि एक शोध वैज्ञानिक को भी, पढ़ते समय सोचने में सक्षम होना चाहिए। मनुष्य की प्रत्येक पीढ़ी को सब कुछ स्वयं से सीखने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, मानो पहले कभी कुछ सीखा ही न गया हो।

दरअसल, वे ऐसा नहीं कर सकते।

जब तक पढ़ने की कला को बढ़ावा नहीं दिया जाता, जैसा कि आज अमेरिकी शिक्षा में नहीं है, पुस्तकों का उपयोग धीरे-धीरे कम होता जाएगा। हम प्रकृति से

बात करके कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि वह हमेशा उत्तर देगी, लेकिन हमारे पूर्वजों के हमसे बात करने का कोई अर्थ नहीं है जब तक हम सुनना नहीं जानते।

आप कह सकते हैं कि किताबें पढ़ने और प्रकृति को समझने में कोई खास अंतर नहीं है। लेकिन याद रखें कि प्रकृति की वस्तुएं किसी अन्य मानव मन से कुछ व्यक्त करने वाले प्रतीक नहीं हैं, जबकि हम जो शब्द पढ़ते और सुनते हैं वे प्रतीक हैं। और यह भी याद रखें कि जब हम सीधे प्रकृति से सीखने का प्रयास करते हैं, तो हमारा अंतिम लक्ष्य उस दुनिया को समझना होता है जिसमें हम रहते हैं। हम प्रकृति से न तो सहमत होते हैं और न ही असहमत, जैसा कि हम अक्सर किताबों के मामले में करते हैं।

जब हम पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, तो हमारा अंतिम लक्ष्य एक ही होता है। लेकिन, दूसरे मामले में, हमें पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि हम पुस्तक का अर्थ समझ रहे हैं। तभी हम यह तय कर सकते हैं कि हम उसके लेखक से सहमत हैं या असहमत। प्रकृति को प्रत्यक्ष रूप से समझने की प्रक्रिया पुस्तक के माध्यम से उसे समझने की प्रक्रिया से भिन्न होती है। आलोचनात्मक क्षमता का उपयोग केवल बाद वाले मामले में ही आवश्यक है।

- 6 -

मैं अब तक इस तरह से चर्चा कर रहा था मानो पढ़ना और सुनना दोनों को ही शिक्षकों से सीखना माना जा सकता है। कुछ हद तक यह सच भी है। दोनों ही शिक्षा प्राप्त करने के तरीके हैं, और दोनों के लिए ही सीखने की कला में निपुण होना आवश्यक है। व्याख्यानों की श्रृंखला सुनना कई मायनों में पुस्तक पढ़ने जैसा ही है। पुस्तक पढ़ने के लिए मैं जो नियम बनाऊंगा, उनमें से कई व्याख्यानों की श्रृंखला में भी लागू होते हैं। फिर भी, पढ़ने की कला पर चर्चा केंद्रित करने, या कम से कम पढ़ने पर ही मुख्य बल देने और अन्य पहलुओं को गौण मानने का एक ठोस कारण है। कारण यह है कि सुनना एक जीवित शिक्षक से सीखना है, जबकि पढ़ना एक मृत शिक्षक से सीखना है, या कम से कम ऐसे शिक्षक से सीखना है जो अपने लेखन के माध्यम से ही हमारे सामने प्रकट होता है।

यदि आप किसी जीवित शिक्षक से प्रश्न पूछें, तो हो सकता है कि वे सचमुच आपको उत्तर दें। यदि उनकी बात आपको समझ न आए, तो आप उनसे उनका अर्थ पूछकर सोचने की परेशानी से बच सकते हैं। लेकिन यदि आप किसी पुस्तक से प्रश्न पूछें, तो आपको उसका उत्तर स्वयं ही देना होगा। इस मामले में पुस्तक प्रकृति के समान है। जब आप उससे बात करते हैं, तो वह आपको तभी उत्तर देती है जब आप स्वयं सोचने और विश्लेषण करने का कार्य करते हैं।

मेरा मतलब यह बिलकुल नहीं है कि अगर शिक्षक आपके प्रश्न का उत्तर दे दे, तो आपको आगे कोई काम नहीं करना है। ऐसा तभी होता है जब प्रश्न केवल तथ्य से संबंधित हो। लेकिन अगर आप स्पष्टीकरण चाहते हैं, तो आपको उसे समझना होगा, अन्यथा आपको कुछ भी समझाया नहीं गया है।

फिर भी, जब आपके सामने एक जीवित शिक्षक उपलब्ध होता है, तो आपको उसे समझने की दिशा में एक सहारा मिलता है, जैसा कि तब नहीं मिलता जब आपके पास केवल पुस्तक में लिखे शिक्षक के शब्द ही होते हैं।

लेकिन किताबें शिक्षकों के मार्गदर्शन और सहायता से भी पढ़ी जा सकती हैं। इसलिए हमें किताबों और शिक्षकों के बीच के संबंध पर विचार करना चाहिए— किताबों से शिक्षा प्राप्त करने के तरीके, शिक्षकों की सहायता के साथ और शिक्षकों की सहायता के बिना, के बीच के संबंध पर। यह अगले अध्याय का विषय है। स्पष्ट रूप से, यह उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण है जो अभी स्कूल में हैं। लेकिन यह उन लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण है जो स्कूल में नहीं हैं, क्योंकि हमें अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए केवल किताबों पर ही निर्भर रहना पड़ सकता है, और हमें यह जानना चाहिए कि किताबों से अच्छी तरह से कैसे सीखा जाए।

हो सकता है कि शिक्षकों की कमी हमारे लिए बेहतर हो, या हो सकता है कि बदतर हो।

चौथा अध्याय

शिक्षक, चाहे जीवित हों या मृत

- 1 -

हम व्याख्यान सुनकर और पुस्तक पढ़कर दोनों तरह से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यही कारण है कि अब हम पुस्तकों और शिक्षकों पर विचार कर रहे हैं, ताकि पठन को सीखने की प्रक्रिया के रूप में हमारी समझ पूर्ण हो सके।

जैसा कि हमने देखा है, शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे से संवाद के माध्यम से सीखता है। इस प्रकार निर्देश, खोज से भिन्न है, जो वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं अवलोकन और चिंतन के माध्यम से कुछ सीखता है, न कि दूसरों से संवाद प्राप्त करके। यह सत्य है कि ये दोनों प्रकार के अधिगम किसी भी व्यक्ति की वास्तविक शिक्षा में घनिष्ठ रूप से और जटिल रूप से जुड़े हुए हैं। एक दूसरे का सहायक हो सकता है। लेकिन मुख्य बात यह है कि यदि हम प्रयास करें तो हम हमेशा यह बता सकते हैं कि हमने जो कुछ सीखा है वह किसी और से सीखा है या स्वयं खोजा है।

हम शायद यह भी बता सकें कि हमने इसे किसी किताब से सीखा है या किसी शिक्षक से।

लेकिन, "शिक्षण" शब्द के अर्थ के अनुसार, जिस पुस्तक ने हमें कुछ सिखाया है, उसे "शिक्षक" कहा जा सकता है। इसलिए, हमें लेखन शिक्षकों और मौखिक शिक्षकों, पढ़ने के माध्यम से सीखने वाले शिक्षकों और सुनने के माध्यम से सीखने वाले शिक्षकों के बीच अंतर करना चाहिए।

समझने में आसानी के लिए, मैं बोलने वाले शिक्षक को "जीवित शिक्षक" कहूंगा। वह एक इंसान है जिससे हमारा व्यक्तिगत संपर्क होता है। और मैं किताबों को "मृत शिक्षक" कहूंगा। कृपया ध्यान दें कि मेरा मतलब यह नहीं है कि किताब का लेखक मर चुका है। वास्तव में, वह एक जीवित शिक्षक हो सकता है जो न केवल हमें व्याख्यान देता है बल्कि हमें अपनी लिखी हुई पाठ्यपुस्तक भी पढ़ने को देता है।

लेखक जीवित हो या मर जाए, पुस्तक एक निर्जीव वस्तु है। वह हमसे बात नहीं कर सकती, न ही प्रश्नों का उत्तर दे सकती है। वह विकसित नहीं होती, न ही अपना विचार बदलती है। वह एक संचार है, लेकिन हम उससे उस अर्थ में संवाद नहीं कर सकते जिस अर्थ में हम कभी-कभार अपने जीवित गुरुओं से कुछ संवाद करने में सफल हो जाते हैं। वे दुर्लभ मामले जिनमें हम पढ़ी हुई पुस्तक के लेखक से सार्थक संवाद करने में सक्षम हुए हैं, हमें लेखक की मृत्यु या कम से कम संवाद के लिए अनुपलब्ध होने पर अपनी इस कमी का एहसास करा सकते हैं।

- 2 -

हमारी शिक्षा में प्रत्यक्ष शिक्षक की क्या भूमिका है? प्रत्यक्ष शिक्षक हमें कुछ कौशल हासिल करने में मदद कर सकते हैं: वे हमें बालू काटना सिखा सकते हैं, प्रारंभिक कक्षाओं में अक्षर बनाना और पहचानना सिखा सकते हैं, या वर्तनी और उच्चारण, जोड़-घटाव, खाना बनाना, सिलाई करना और बढ़ईगिरी सिखा सकते हैं। प्रत्यक्ष शिक्षक हमें किसी भी कला को विकसित करने में सहायता कर सकते हैं, यहाँ तक कि सीखने की कला को भी, जैसे प्रायोगिक अनुसंधान की कला या पढ़ने की कला।

इस तरह की सहायता प्रदान करने में, केवल संवाद से कहीं अधिक शामिल होता है। प्रत्यक्ष शिक्षक न केवल हमें यह बताता है कि क्या करना है, बल्कि यह भी दिखाता है कि कैसे करना है और उससे भी अधिक प्रत्यक्ष रूप से, हमें उस प्रक्रिया को करने में मदद करता है। इन मामलों में, यह निर्विवाद है कि एक प्रत्यक्ष शिक्षक एक मृत शिक्षक से कहीं अधिक सहायक हो सकता है। सबसे सफल मार्गदर्शिका पुस्तक भी आपको हाथ पकड़कर नहीं ले जा सकती या सही समय पर यह नहीं कह सकती, "इसे इस तरह मत करो। इसे इस तरह करो।"

अब एक बात तुरंत स्पष्ट हो जाती है। खोज के माध्यम से प्राप्त होने वाले सभी ज्ञान के संदर्भ में, एक शिक्षक केवल एक ही भूमिका निभा सकता है। वह स्पष्ट रूप से हमें वह ज्ञान नहीं सिखा सकता, क्योंकि तब हम उसे खोज के

माध्यम से प्राप्त नहीं कर पाएंगे। वह केवल हमें खोज की कला सिखा सकता है, अर्थात् शोध कैसे करें, चीजों को जानने की प्रक्रिया में अवलोकन और चिंतन कैसे करें, यह बता सकता है। इसके अतिरिक्त, वह हमें इस प्रक्रिया में निपुण बनने में मदद कर सकता है। सामान्यतः यह ड्यूई की पुस्तक 'हाउ वी थिंक' जैसी पुस्तकों और उन लोगों का क्षेत्र है जिन्होंने छात्रों को इसके नियमों के अनुसार अभ्यास कराने का प्रयास किया है।

चूंकि हमारा मुख्य विषय पठन है—और निर्देश के माध्यम से सीखने का दूसरा तरीका—इसलिए हम अपनी चर्चा को शिक्षक की भूमिका तक ही सीमित रख सकते हैं, जो ज्ञान का संचार करता है या हमें संचार के माध्यम से सीखने में मदद करता है। और फिलहाल, आइए हम जीवित शिक्षक को ज्ञान के स्रोत के रूप में ही देखें, न कि ऐसे उपदेशक के रूप में जो हमें कुछ करना सिखाता है।

ज्ञान के स्रोत के रूप में देखे जाने वाले जीवित शिक्षक, मृत शिक्षकों, यानी पुस्तकों के साथ या तो प्रतिस्पर्धा करते हैं या सहयोग करते हैं। प्रतिस्पर्धा से मेरा तात्पर्य उस तरीके से है जिसमें कई जीवित शिक्षक अपने छात्रों को व्याख्यानों के माध्यम से वह सब कुछ बताते हैं जो छात्र स्वयं उन पुस्तकों को पढ़कर सीख सकते हैं जिन्हें शिक्षक ने स्वयं पढ़ा है। पत्रिकाओं के अस्तित्व में आने से बहुत पहले, जीवित शिक्षक "पाठकों के सारांश" बनकर अपनी जीविका कमाते थे। सहयोग से मेरा तात्पर्य उस तरीके से है जिसमें जीवित शिक्षक किसी न किसी रूप में शिक्षण के कार्य को स्वयं और उपलब्ध पुस्तकों के बीच विभाजित करते हैं: कुछ बातें वे छात्र को बताते हैं, आमतौर पर जो उन्होंने स्वयं पढ़ा है उसका सार प्रस्तुत करते हुए, और कुछ बातें वे अपेक्षा करते हैं कि छात्र उन्हें पढ़कर सीख लें।

यदि ज्ञान के संचार के संबंध में एक शिक्षक का एकमात्र कार्य यही होता, तो यह निष्कर्ष निकलता कि विद्यालय में जो कुछ भी सीखा जा सकता है, वह विद्यालय के बाहर और बिना शिक्षकों के भी सीखा जा सकता है। स्वयं पढ़ने में शायद किताबों को समझने से थोड़ा अधिक प्रयास करना पड़े। यदि पुस्तकें ही आपके एकमात्र शिक्षक हों, तो आपको शायद अधिक पुस्तकें पढ़नी पड़ें। लेकिन यह बात चाहे जिस हद तक सच हो कि शिक्षक के पास स्वयं पढ़ने से प्राप्त ज्ञान के अलावा संचार करने के लिए कोई ज्ञान नहीं होता, आप उसे सीधे पुस्तकों से स्वयं सीख सकते हैं। यदि आप अच्छी तरह से पढ़ सकते हैं, तो आप उसे सीख भी सकते हैं।

मुझे लगता है कि अगर आप जानकारी के बजाय समझ हासिल करना चाहते हैं, तो पढ़ना आपको ज़्यादा मदद करेगा। बेशक, हममें से ज़्यादातर लोग निष्क्रिय रूप से पढ़ने की आदत से ग्रस्त हैं; लेकिन व्याख्यान सुनते समय तो और भी ज़्यादा निष्क्रिय रहने की संभावना होती है। व्याख्यान को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में अच्छी तरह से वर्णित किया गया है जिसमें शिक्षक के नोट्स छात्र के नोट्स बन जाते हैं, बिना किसी के मन से गुज़रे।

नोट्स लेना आमतौर पर समझने की प्रक्रिया नहीं होती, बल्कि कही गई बातों का लगभग स्वतःस्फूर्त रिकॉर्ड होता है। जैसे-जैसे व्यक्ति शिक्षण संस्थानों में अधिक वर्ष बिताता है, नोट्स लेने की आदत सीखने और सोचने-समझने की जगह

ले लेती है। यह स्थिति कानून और चिकित्सा जैसे व्यावसायिक संस्थानों और स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रमों में सबसे खराब होती है। किसी ने कहा था कि इस तरह से स्नातकोत्तर और स्नातक छात्रों में अंतर किया जा सकता है। यदि आप कक्षा में जाकर "शुभ प्रभात" कहते हैं और छात्र जवाब देते हैं, तो वे स्नातक छात्र हैं। यदि वे इसे लिख लेते हैं, तो वे स्नातकोत्तर छात्र हैं।

एक शिक्षक द्वारा निभाए जाने वाले दो अन्य कार्य भी हैं, जिनके माध्यम से वह पुस्तकों से संबंधित होता है।

एक कारण है दोहराव। हम सभी ने स्कूल में ऐसे पाठ्यक्रम पढ़े हैं जिनमें शिक्षक कक्षा में वही बातें दोहराते थे जो हमें उनकी या उनके किसी सहकर्मी द्वारा लिखित पाठ्यपुस्तक में पढ़ने के लिए दी गई थीं। मैं स्वयं भी इस तरह पढ़ाने का दोषी रहा हूँ। मुझे अपना पहला पाठ्यक्रम याद है। यह प्रारंभिक मनोविज्ञान था। एक पाठ्यपुस्तक दी गई थी। विभाग द्वारा इस पाठ्यक्रम के सभी अनुभागों के लिए निर्धारित परीक्षा यह दर्शाती है कि छात्र को केवल वही याद रखना है जो पाठ्यपुस्तक में लिखा है। एक शिक्षक के रूप में मेरा एकमात्र कार्य पाठ्यपुस्तक को अपना काम करने में सहायता करना था। कुछ हद तक, मैंने ऐसे प्रश्न पूछे जो परीक्षा में पूछे जा सकते थे। कुछ हद तक, मैंने व्याख्यान दिया, पुस्तक के अध्यायों को दोहराते हुए, लेखक द्वारा प्रयुक्त शब्दों से बहुत भिन्न नहीं।

कभी-कभी मैंने किसी बात को समझाने की कोशिश की होगी, लेकिन अगर छात्र ने समझने के लिए पढ़ने का प्रयास किया होता, तो वह स्वयं ही बात समझ जाता। यदि वह इस तरह से पढ़ नहीं सकता था, तो संभवतः वह मेरी व्याख्या को भी समझकर सुन नहीं पाता।

अधिकांश छात्र योग्यता के लिए नहीं, बल्कि क्रेडिट के लिए यह कोर्स कर रहे थे। चूंकि परीक्षा समझ का नहीं, बल्कि जानकारी का मूल्यांकन करती थी, इसलिए शायद उन्हें मेरी व्याख्याएँ समय की बर्बादी लगती थीं—मेरी ओर से केवल दिखावा। वे कक्षा में क्यों आते रहे, यह मुझे समझ नहीं आता। यदि उन्होंने खेल पृष्ठ जितना ही समय पाठ्यपुस्तक पढ़ने में लगाया होता, और जानकारी के हर छोटे-छोटे पहलू पर उतनी ही लगन दिखाई होती, तो वे मुझसे ऊबे बिना परीक्षा पास कर सकते थे।

- 3 -

जिस कार्य पर अभी चर्चा होनी बाकी है, उसका नाम देना मुश्किल है। शायद मैं इसे यह नाम दे सकता हूँ।

"मौलिक रचना।" मैं उस जीवित शिक्षक के बारे में सोच रहा हूँ जिसे कुछ ऐसा ज्ञान है जो कहीं भी किताबों में नहीं मिलता। यह कुछ ऐसा होना चाहिए जिसे उसने स्वयं खोजा हो और अभी तक पाठकों के लिए उपलब्ध न कराया हो। ऐसा बहुत कम होता है। आजकल यह सबसे अधिक विद्वता या वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में देखने को मिलता है। कभी-कभी स्नातकोत्तर विद्यालय में व्याख्यानों की एक श्रृंखला के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है जो एक मौलिक रचना होती है। यदि आप उन व्याख्यानों को सुनने के लिए भाग्यशाली नहीं हैं, तो आप आमतौर पर

हालांकि, एक अपवाद है, और यही बात महत्वपूर्ण है। आइए, उन जीवित शिक्षकों को प्राथमिक शिक्षक कहें जो मौलिक संचार का कार्य करते हैं।

प्रत्येक पीढ़ी में ऐसे कुछ ही शिक्षक होते हैं, हालांकि उनमें से अधिकांश प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षक हैं जो अभी जीवित हैं, इसलिए मृत शिक्षकों में भी हम यही अंतर कर सकते हैं। प्राथमिक और माध्यमिक पुस्तकें होती हैं।

प्राथमिक पुस्तकें वे हैं जिनमें मौलिक संदेश होते हैं। बेशक, उनका पूर्ण रूप से मौलिक होना आवश्यक नहीं है। इसके विपरीत, पूर्ण मौलिकता असंभव और भ्रामक दोनों है। यह केवल हमारी सांस्कृतिक परंपरा की काल्पनिक शुरुआत को छोड़कर असंभव है। यह भ्रामक इसलिए है क्योंकि किसी को भी स्वयं उस चीज़ को खोजने का प्रयास नहीं करना चाहिए जो उसे दूसरों से सिखाई जा सकती है। सर्वोत्तम प्रकार की मौलिकता स्पष्ट रूप से वह है जो ज्ञान की परंपरा द्वारा उपलब्ध कराए गए ज्ञान भंडार में कुछ जोड़ती है। परंपरा की अज्ञानता या उपेक्षा से झूठी या खोखली मौलिकता उत्पन्न होने की संभावना होती है।

ज्ञान के सभी क्षेत्रों में महान पुस्तकें, शब्द के अच्छे अर्थों में, "मौलिक" होती हैं।

संचार। ये वे पुस्तकें हैं जिन्हें आमतौर पर "क्लासिक" कहा जाता है, लेकिन अधिकांश लोगों के लिए इस शब्द का अर्थ गलत और भ्रामक है—गलत इस अर्थ में कि यह प्राचीनता को संदर्भित करता है, और भ्रामक इस अर्थ में कि यह अपठनीय लगता है। महान पुस्तकें आज भी लिखी जा रही हैं और कल भी लिखी गईं, अपठनीय होने के बजाय, महान पुस्तकें सबसे अधिक पठनीय हैं और वे ही सबसे अधिक पढ़ने योग्य हैं।

- 4 -

मैंने अब तक जो कहा है, उससे शायद आपको अलमारियों में रखी सभी किताबों में से बेहतरीन किताब चुनने में मदद न मिले। दरअसल, मैं अभी उन मानदंडों को नहीं बताऊंगा जो किसी किताब को बेहतरीन बनाते हैं।

ये ऐसे मापदंड हैं जो आपको अच्छी और बुरी किताबों में फर्क करने में मदद करते हैं—हालांकि काफी बाद में (ठीक कहें तो सोलहवें अध्याय में)। किसी व्यक्ति को यह बताना कि क्या पढ़ना है, इससे पहले कि उसे यह बताया जाए कि कैसे पढ़ना है, शायद तर्कसंगत लगे, लेकिन मेरा मानना है कि पहले पढ़ने की आवश्यकताओं को समझाना ही बेहतर शिक्षण पद्धति है।

जब तक कोई ध्यानपूर्वक और आलोचनात्मक रूप से पढ़ना नहीं सीखता, तब तक पुस्तकों के मूल्यांकन के मानदंड, चाहे वे स्वयं में कितने भी सही क्यों न हों, केवल मनमाने नियम बनकर रह जाते हैं। कुछ महान पुस्तकों को कुशलतापूर्वक पढ़ने के बाद ही आप उन मानकों को गहराई से समझ पाएंगे जिनके आधार पर अन्य पुस्तकों को महान या अच्छी माना जा सकता है।

यदि आप उन पुस्तकों के शीर्षक जानने के लिए उत्सुक हैं जिन्हें अधिकांश जानकार पाठकों ने महान माना है, तो आप परिशिष्ट देख सकते हैं जिसमें उनकी सूची दी गई है; लेकिन मैं आपको सलाह दूंगा कि आप अध्याय सोलह में उनके गुणों और विषयवस्तु पर हुई चर्चा को पढ़ने के बाद ही पढ़ें।

हालांकि, यहां मौजूद महान पुस्तकों के बारे में मैं एक बात कह सकता हूँ। इससे शायद यह स्पष्ट हो जाए कि वे आम तौर पर पठनीय क्यों हैं, भले ही इससे यह स्पष्ट न हो कि उन्हें आम तौर पर क्यों पढ़ा जाना चाहिए। वे लोकप्रिय रचनाओं की तरह हैं क्योंकि उनमें से अधिकांश आम लोगों के लिए लिखी गई हैं, न कि विद्वानों या ज्ञानियों के लिए। वे पाठ्यपुस्तकों की तरह हैं क्योंकि वे शुरुआती लोगों के लिए हैं, न कि विशेषज्ञों या उन्नत छात्रों के लिए। आप समझ सकते हैं कि ऐसा क्यों है। अपनी मौलिकता के बावजूद, उन्हें ऐसे पाठकों को संबोधित करना होता है जो बिल्कुल शुरुआत से सीखते हैं। किसी महान पुस्तक को पढ़ने के लिए कोई पूर्व शर्त नहीं है, सिवाय ज्ञान की परंपरा में किसी अन्य महान पुस्तक के, जिससे बाद के शिक्षक ने स्वयं शिक्षा प्राप्त की हो।

पाठ्यपुस्तकों और लोकप्रिय पुस्तकों के विपरीत, महान पुस्तकें ऐसे पाठकों को ध्यान में रखकर लिखी जाती हैं जो पढ़ने में पूरी तरह सक्षम हों। यही उनकी एक प्रमुख विशेषता है, और शायद यही कारण है कि आज उन्हें बहुत कम पढ़ा जाता है। वे न केवल मौलिक रचनाएँ हैं, बल्कि सारांश या पुनरावृति भी नहीं हैं, और इनके विपरीत वे सरल भाषा में जानकारी नहीं देतीं। वे कहती हैं: "यहाँ ज्ञान है जो प्राप्त करने योग्य है। आइए और इसे प्राप्त कीजिए।"

आज हमारी शिक्षा प्रणाली में पाठ्यपुस्तकों और व्याख्यान पाठ्यक्रमों की बढ़ती संख्या हमारी घटती साक्षरता का सबसे पुख्ता संकेत है। यह कहावत कि जो पढ़ा नहीं सकते, वे शिक्षकों को पढ़ाते हैं, उससे भी कहीं अधिक सत्य यह है कि जो शिक्षक अपने छात्रों को महान पुस्तकें पढ़ने में मदद नहीं कर सकते, वे उनके लिए पाठ्यपुस्तकें लिखते हैं, या कम से कम अपने सहकर्मियों द्वारा लिखी गई पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करते हैं। पाठ्यपुस्तक या नियमावली को लगभग एक शिक्षण संबंधी आविष्कार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

जो लोग अच्छी तरह से पढ़ नहीं पाते, उनके दिमाग में कुछ न कुछ ऐसा डाल दिया जाता है जिससे वे सक्रिय रूप से सीख सकें। एक सामान्य कक्षा व्याख्यान भी इसी तरह का एक साधन है। जब शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ किताबें पढ़ने का तरीका नहीं पता होता, तो वे मजबूरन उन्हें व्याख्यान देने लगते हैं।

पाठ्यपुस्तकें और हर तरह की लोकप्रिय पुस्तकें उन लोगों के लिए लिखी जाती हैं जो पढ़ना नहीं जानते या केवल जानकारी के लिए पढ़ते हैं। मृत शिक्षकों के रूप में, वे उन जीवित माध्यमिक शिक्षकों के समान हैं जिन्होंने इन्हें लिखा था। जीवित हो या मृत, माध्यमिक शिक्षक शिक्षार्थी से अत्यधिक या कुशल गतिविधि की अपेक्षा किए बिना ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करता है।

उनकी शिक्षण कला में छात्रों से सीखने की कला की न्यूनतम अपेक्षा होती है।

वे दिमाग को ज्ञान देने के बजाय उसमें जानकारी भरते हैं। उनकी सफलता का पैमाना यह है कि कोई व्यक्ति कितना ज्ञान ग्रहण कर सकता है।

हमारा अंतिम लक्ष्य सूचना प्राप्त करने के बजाय समझ प्राप्त करना है, हालांकि सूचना एक आवश्यक चरण है। इसलिए हमें प्राथमिक शिक्षकों के पास जाना चाहिए, क्योंकि उनके पास देने के लिए समझ है। क्या इसमें कोई संदेह है कि प्राथमिक शिक्षक माध्यमिक शिक्षकों की तुलना में सीखने के बेहतर स्रोत हैं? क्या इसमें कोई संदेह है कि वे हमसे जो प्रयास करने की अपेक्षा करते हैं, उससे हमारे मन का महत्वपूर्ण विकास होता है? हम सीखने में प्रयास करने से बच सकते हैं।

लेकिन हम सहज शिक्षा के परिणामों से बच नहीं सकते—माध्यमिक शिक्षकों द्वारा हमें शिक्षित किए जाने से हम जो तरह-तरह की अनियमितताएं एकत्र करते हैं।

मान लीजिए कि एक ही महाविद्यालय में दो वक्ता व्याख्यान दे रहे हों, एक ने किसी सत्य की खोज की हो, और दूसरा पहले वक्ता के काम के बारे में सुनी- सुनाई बातों को दोहरा रहा हो, तो आप किसे सुनना पसंद करेंगे? जी हाँ, मान लीजिए कि दोहराने वाला वक्ता आपकी समझ के अनुसार सरल भाषा में समझाकर बात को और स्पष्ट करने का वादा करे, तब भी क्या आपको संदेह नहीं होगा कि सुनी- सुनाई बातों में कुछ कमी है? यदि आप अधिक मेहनत करेंगे, तो आपको बेहतर परिणाम मिलेंगे।

यह सच है कि अधिकांश प्राथमिक शिक्षक मर चुके हैं—वे व्यक्ति हैं, और उनके द्वारा छोड़ी गई पुस्तकें भी मृत शिक्षक हैं—जबकि अधिकांश जीवित शिक्षक द्वितीयक हैं। लेकिन मान लीजिए कि हम सर्वकालिक प्राथमिक शिक्षकों को पुनर्जीवित कर सकें। मान लीजिए कि कोई ऐसा महाविद्यालय या विश्वविद्यालय हो जिसमें शिक्षक इस प्रकार हों। हेर्डोटस और थ्यूसीडाइड्स ग्रीस का इतिहास पढ़ाते हों, और गिब्बन रोम के पतन पर व्याख्यान देते हों। प्लेटो और सेंट थॉमस एक साथ तत्वमीमांसा का पाठ्यक्रम पढ़ाते हों; फ्रांसिस बेकन और जॉन स्टुअर्ट मिल विज्ञान के तर्क पर चर्चा करते हों; अरस्तू, स्पिनोज़ा और इमैनुअल कांट नैतिक समस्याओं पर एक मंच साझा करते हों; मैकिवेली, थॉमस हॉब्स और जॉन लॉक राजनीति पर बात करते हों।

आप यूक्लिड, डेसकार्टेस, रीमैन और कैंटर से गणित के पाठ्यक्रम ले सकते हैं, जिनमें अंत में बर्ट्रेंड रसेल और ए.एन. व्हाइटहेड भी शामिल होंगे। आप सेंट ऑगस्टीन और विलियम जेम्स को मनुष्य और मानव मन की प्रकृति पर बात करते हुए सुन सकते हैं, और संभवतः जैक्स मैरिटेन उनके व्याख्यानों पर टिप्पणी करेंगे। हार्वे ने रक्त परिसंचरण पर चर्चा की, और गैलेन, क्लाउड बर्नार्ड और हाल्डेन ने सामान्य शरीर क्रिया विज्ञान पढ़ाया।

भौतिकी पर व्याख्यानों में गैलीलियो और न्यूटन, फैराडे और मैक्सवेल, प्लैंक और आइंस्टीन जैसे प्रतिभाशाली विद्वानों ने भाग लिया। बॉयल, डाल्टन, लावोसियर और पाश्चर ने रसायन विज्ञान पढ़ाया। डार्विन और मेंडल

ने विकासवाद और आनुवंशिकी पर मुख्य व्याख्यान दिए, साथ ही बेटसन और टी.एच. मॉर्गन ने भी सहायक व्याख्यान दिए।

अरस्तू, सर फिलिप सिडनी, वर्ड्सवर्थ और शेली ने कविता की प्रकृति और साहित्यिक आलोचना के सिद्धांतों पर चर्चा की, साथ ही टी.एस. एलियट ने भी इसमें भाग लिया। अर्थशास्त्र में, एडम स्मिथ, रिकार्डो, कार्ल मार्क्स और मार्शल ने व्याख्यान दिए। बोआस ने मानव जाति और उसकी विभिन्न नस्लों पर, थोर्सटिन वेबलन और जॉन ड्यूई ने अमेरिकी लोकतंत्र की आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं पर चर्चा की, और लेनिन ने साम्यवाद पर व्याख्यान दिया।

एटियेन गिलसन ने दर्शन के इतिहास का विश्लेषण किया, और पोइंकेयर और डुहेम ने विज्ञान के इतिहास का। संभवतः लियोनार्डो दा विंची द्वारा कला पर व्याख्यान और फ्रायड द्वारा लियोनार्डो पर व्याख्यान भी होंगे। हॉब्स और लॉक, ओग्डेन और रिचर्ड्स, कोर्ज़िब्स्की और स्टुअर्ट चेज़ पर चर्चा कर सकते हैं। इससे कहीं अधिक संकाय की कल्पना की जा सकती है, लेकिन यह पर्याप्त है।

अगर किसी को इस विश्वविद्यालय में दाखिला मिल जाए, तो क्या वह किसी और विश्वविद्यालय में जाना चाहेगा? यहाँ छात्रों की संख्या सीमित नहीं होनी चाहिए। प्रवेश की एकमात्र शर्त पढ़ने की क्षमता और इच्छाशक्ति है। यह विद्यालय उन सभी के लिए है जो उच्च कोटि के शिक्षकों से सीखने के लिए इच्छुक और सक्षम हैं। भले ही वे अपनी जीवंत उपस्थिति से हमारी सुस्ती को दूर न कर रहे हों, लेकिन वे किसी और अर्थ में मृत नहीं हैं। यदि समकालीन अमेरिका उन्हें मृत मानकर खारिज कर देता है, तो जैसा कि हाल ही में एक प्रसिद्ध लेखक ने कहा, हम प्राचीन एथेंसवासियों की मूर्खता को दोहरा रहे हैं, जिन्होंने यह मान लिया था कि सुकरात की मृत्यु हेमलॉक पीने से हुई थी।

महान ग्रंथों को विद्यालय में या विद्यालय के बाहर पढ़ा जा सकता है। यदि इन्हें विद्यालय में, जीवित शिक्षकों की देखरेख में कक्षाओं में पढ़ा जाए, तो शिक्षकों को स्वयं को मृत शिक्षकों के प्रति समर्पित करना होगा। हम केवल अपने से श्रेष्ठ बौद्धिक व्यक्तियों से ही सीख सकते हैं। महान ग्रंथ अधिकांश जीवित शिक्षकों और उनके छात्रों से श्रेष्ठ हैं।

माध्यमिक शिक्षक वास्तव में एक बेहतर विद्यार्थी होता है, और उसे स्वयं को अपने शिष्यों के साथ-साथ गुरुओं से सीखने वाला समझना चाहिए। उसे प्राथमिक शिक्षक की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए, न ही किसी महान ग्रंथ को अपने किसी सहकर्मी द्वारा लिखित सामान्य पाठ्यपुस्तक की तरह उपयोग करना चाहिए। यदि वह केवल स्वयं सीखकर ही ज्ञान प्राप्त कर चुका है, तो उसे अपने मौलिक शोधों के बल पर ज्ञानवान और शिक्षक होने का ढोंग नहीं करना चाहिए। उसके स्वयं के ज्ञान के प्राथमिक स्रोत उसके विद्यार्थियों के लिए भी सीखने के प्राथमिक स्रोत होने चाहिए, और ऐसा शिक्षक ईमानदारी से तभी कार्य कर सकता है जब वह महान ग्रंथों और उनके युवा पाठकों के बीच आकर स्वयं को महिमामंडित न करे। उसे बाधक बनकर नहीं, बल्कि मध्यस्थ बनकर आना चाहिए—एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो कम सक्षम लोगों को सर्वश्रेष्ठ बुद्धिजीवियों से अधिक प्रभावी संपर्क स्थापित करने में सहायता करता है।

साथ ही, मैं यह भी कह रहा हूँ कि महान पुस्तकें हर व्यक्ति पढ़ सकता है।
माध्यमिक शिक्षकों से उसे जिस मदद की ज़रूरत है, वह त्वरित शिक्षा देने वाले वैकल्पिक शिक्षकों के रूप में नहीं है।

इसमें पढ़ना सीखने में मदद करना शामिल है, और इससे भी बढ़कर, जब संभव हो, तो महान पुस्तकों को पढ़ने के दौरान वास्तव में मदद करना शामिल है।

आइए, इस बात पर थोड़ा और विस्तार से चर्चा करें कि महान पुस्तकें सबसे आसानी से पढ़ी जा सकती हैं। कुछ मामलों में, बेशक, उन्हें पढ़ना कठिन होता है। उन्हें पढ़ने के लिए उच्चतम स्तर की पठन क्षमता की आवश्यकता होती है। उनकी शिक्षण कला के लिए सीखने की उतनी ही और समानुपातिक कला की आवश्यकता होती है। लेकिन साथ ही, महान पुस्तकें हमें उन विषयों के बारे में सबसे अधिक जानकारी देने में सक्षम होती हैं जिनसे वे संबंधित हैं। यदि हमारे पास उन्हें अच्छी तरह से पढ़ने के लिए आवश्यक कौशल होता, तो हम पाते कि वे संबंधित विषयों में महारत हासिल करने का सबसे आसान, क्योंकि सबसे सरल और पर्याप्त तरीका हैं।

यहां एक विरोधाभास है। इसका कारण यह है कि इसमें दो अलग-अलग प्रकार की निपुणता शामिल है। एक ओर, लेखक की अपने विषय पर निपुणता है; दूसरी ओर, लेखक द्वारा लिखित पुस्तक को समझने की हमारी आवश्यकता है। ये पुस्तकें अपनी निपुणता के कारण महान मानी जाती हैं, और हम पाठकों के रूप में अपनी योग्यता का आकलन इन पुस्तकों को समझने की अपनी क्षमता के आधार पर करते हैं।

यदि पढ़ने का हमारा उद्देश्य ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्राप्त करना है, तो महान पुस्तकें सबसे सुगम होती हैं, चाहे पाठक कम कुशल हो या अधिक कुशल, क्योंकि वे सबसे अधिक शिक्षाप्रद होती हैं। स्पष्टतः, मेरा तात्पर्य "सबसे सुगम" से "कम से कम प्रयास" से नहीं है—यहाँ तक कि विशेषज्ञ पाठक के लिए भी नहीं। मेरा तात्पर्य यह है कि ये पुस्तकें हर स्तर के प्रयास और क्षमता का भरपूर फल देती हैं। हो सकता है कि सोना खोदना आलू खोदने से अधिक कठिन हो, लेकिन सफल प्रयास की प्रत्येक इकाई का भरपूर प्रतिफल मिलता है।

महान ग्रंथों और उनके विषयवस्तु के बीच का संबंध, जो उन्हें महान बनाता है, अपरिवर्तनीय है। यह एक वस्तुनिष्ठ और अटल तथ्य है। लेकिन प्रारंभिक पाठक की योग्यता और पढ़ने योग्य पुस्तकों के बीच का संबंध बदला जा सकता है। मार्गदर्शन और अभ्यास के माध्यम से पाठक को अधिक सक्षम बनाया जा सकता है। ऐसा होने पर, वह न केवल महान ग्रंथों को पढ़ने में अधिक सक्षम होता है, बल्कि परिणामस्वरूप, वह विषयवस्तु को उसी प्रकार समझने के निकट पहुंचता जाता है जिस प्रकार विद्वानों ने उसे समझा था। ऐसी निपुणता ही शिक्षा का आदर्श है।

इस आदर्श की प्राप्ति में सहायता करना माध्यमिक शिक्षकों का दायित्व है।

- 6 -

इस पुस्तक को लिखते समय मैं एक माध्यमिक शिक्षक हूँ। मेरा उद्देश्य सहायता और मार्गदर्शन करना है। मैं आपके लिए कोई पुस्तक नहीं पढूंगा ताकि आपको स्वयं पढ़ने की परेशानी न हो। इस पुस्तक का केवल दो ही उद्देश्य हैं: आपको पढ़ने के लाभों में रुचि जगाना और पढ़ने की कला को विकसित करने में आपकी सहायता करना।

अगर आप अब स्कूल में नहीं हैं, तो हो सकता है कि आपको किसी दिवंगत शिक्षक की मदद लेनी पड़े, जैसे कि यह किताब। और कोई भी व्यावहारिक किताब उतनी मददगार नहीं हो सकती, जितनी कि एक अच्छा जीवित मार्गदर्शक। हो सकता है कि किसी किताब में दिए गए नियमों के अनुसार अभ्यास करना थोड़ा मुश्किल हो, बिना किसी रोक-टोक, सुधार या मार्गदर्शन के। लेकिन यह निश्चित रूप से संभव है। इतने सारे लोगों ने इसे कर दिखाया है कि इस संभावना पर कोई संदेह नहीं रह जाता। शुरुआत करने में कभी देर नहीं होती, लेकिन हम सभी को उस स्कूली व्यवस्था से नाराज़ होने का कारण है जो हमें जीवन की शुरुआत में अच्छी सीख देने में विफल रही।

विद्यालयों की विफलता और उनकी ज़िम्मेदारी अगले अध्याय का विषय है। इस अध्याय को समाप्त करते हुए, मैं आपका ध्यान दो बातों की ओर दिलाना चाहता हूँ। पहली बात यह है कि आपने पढ़ने के नियमों के बारे में कुछ सीखा है। पिछले अध्यायों में आपने महत्वपूर्ण शब्दों और वाक्यों को चुनकर उनकी व्याख्या करने का महत्व देखा। इस अध्याय में आपने महान कृतियों की पठनीयता और शिक्षा में उनकी भूमिका के बारे में एक तर्क का अनुसरण किया है। किसी लेखक के तर्क को समझना और उसका अनुसरण करना पढ़ने का एक और चरण है। मैं इसके नियम पर आगे विस्तार से चर्चा करूँगा।

दूसरा बिंदु यह है कि हमने अब इस पुस्तक का उद्देश्य काफी हद तक स्पष्ट कर दिया है। इसमें कई पृष्ठ लगे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि आप समझ सकते हैं कि अगर मैंने इसे पहले पैराग्राफ में ही बता दिया होता तो यह समझ से परे होता। मैं कह सकता था: "इस पुस्तक का उद्देश्य आपको जानकारी के लिए नहीं, बल्कि समझ के लिए पढ़ने की कला विकसित करने में मदद करना है; इसलिए, इसका लक्ष्य आपको महान पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना और सहायता प्रदान करना है।" लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप मेरा मतलब समझ पाते।

अब आप समझ गए हैं, भले ही आपको इस उद्यम के लाभ या महत्व के बारे में अभी भी कुछ शंकाएँ हों। आप सोच सकते हैं कि महान पुस्तकों के अलावा भी कई ऐसी पुस्तकें हैं जो पढ़ने लायक हैं। मैं बिल्कुल सहमत हूँ। लेकिन आपको यह भी मानना होगा कि पुस्तक जितनी अच्छी होगी, उसे पढ़ना उतना ही सार्थक होगा। इसके अलावा, यदि आप महान पुस्तकों को पढ़ना सीख जाते हैं, तो आपको अन्य पुस्तकें, या किसी भी अन्य चीज़ को पढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होगी। आप अपने इस कौशल का उपयोग आसान लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं। लेकिन क्या मैं आपको याद दिला दूं कि एक शिकारी बेकार की चीजों का शिकार नहीं करता?

अध्याय पाँच

स्कूलों की हार

- 1 -

पिछले अध्यायों में मैंने विद्यालय प्रणाली के बारे में कुछ ऐसी बातें कही हैं जो सच न होने पर मानहानिकारक हैं। लेकिन अगर वे सच हैं, तो वे उन शिक्षकों के खिलाफ गंभीर आरोप हैं जिन्होंने जनता के भरोसे का उल्लंघन किया है। हालांकि यह अध्याय आपको पढ़ना सिखाने के विषय से हटकर एक लंबी चर्चा लग सकता है, लेकिन यह उस स्थिति को समझाने के लिए आवश्यक है जिसमें हममें से अधिकांश लोग या हमारे बच्चे खुद को पाते हैं—"शिक्षित" होते हुए भी निरक्षर।

अगर स्कूल अपना काम ठीक से कर रहे होते, तो इस किताब की जरूरत ही नहीं पड़ती।

अब तक मैंने हाई स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय में शिक्षक के रूप में अपने निजी अनुभव के आधार पर ही बात की है। लेकिन अमेरिकी शिक्षा की दयनीय विफलताओं के बारे में आपको केवल मेरी बिना पुष्टि वाली बात पर ही भरोसा करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे कई अन्य गवाह हैं जिन्हें गवाही के लिए बुलाया जा सकता है। आम गवाहों से बेहतर, जो शायद अपने निजी अनुभव के आधार पर ही बोलते हों, इस विषय पर वैज्ञानिक प्रमाण मौजूद हैं। हम विशेषज्ञों द्वारा किए गए परीक्षणों और मापों के परिणामों की रिपोर्ट सुन सकते हैं।

जहां तक मुझे याद है, स्कूलों में बच्चों को अच्छी तरह से लिखना-बोलना न सिखाने की शिकायतें हमेशा से आती रही हैं। ये शिकायतें मुख्य रूप से हाई स्कूल और कॉलेज के छात्रों पर केंद्रित रही हैं। प्राथमिक विद्यालय की डिप्लोमा से इन विषयों में उच्च दक्षता की गारंटी नहीं मिलती थी। लेकिन स्कूल में चार-आठ साल बिताने के बाद, इन बुनियादी कार्यों को अनुशासित तरीके से करने की क्षमता की उम्मीद करना स्वाभाविक था।

अंग्रेजी पाठ्यक्रम हाई स्कूल के पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग था, और आज भी काफी हद तक है। हाल तक, प्रत्येक कॉलेज में प्रथम वर्ष के लिए अंग्रेजी एक

अनिवार्य पाठ्यक्रम था। इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य मातृभाषा में लेखन कौशल विकसित करना था।

हालांकि लेखन की तुलना में इस पर कम जोर दिया जाता है, लेकिन स्पष्ट रूप से बोलने की क्षमता, भले ही वाक्पटुता के साथ न हो, भी अपेक्षित लक्ष्यों में से एक मानी जाती थी।

शिकायतें हर तरफ से आईं। व्यापारियों ने, जिन्हें निश्चित रूप से ज्यादा उम्मीदें नहीं थीं, स्कूल के बाद उनके संपर्क में आने वाले युवाओं की अक्षमता का विरोध किया।

असंख्य समाचार पत्रों के संपादकीय लेखों में उनके विरोध की गूंज सुनाई दी और साथ ही अपनी आवाज भी जोड़ी गई, जिसमें उस संपादक की दुर्दशा को व्यक्त किया गया जिसे कॉलेज से स्नातक हुए लोगों द्वारा उसके डेस्क पर भेजे गए दस्तावेजों को संपादित करना पड़ता था।

कॉलेज में प्रथम वर्ष के अंग्रेजी शिक्षकों को वह सब कुछ दोबारा करना पड़ रहा है जो हाई स्कूल में पूरा हो जाना चाहिए था। अन्य कॉलेज पाठ्यक्रमों के शिक्षकों ने छात्रों द्वारा टर्म पेपर या परीक्षाओं में प्रस्तुत की जाने वाली बेहद अव्यवस्थित और असंगत अंग्रेजी के बारे में शिकायत की है।

और जो भी व्यक्ति स्नातकोत्तर विद्यालय या विधि विद्यालय में पढ़ा चुका है, वह जानता है कि बी.ए.

हमारे सर्वश्रेष्ठ कॉलेजों से शिक्षा प्राप्त करना किसी छात्र के लेखन या बोलने के कौशल के संदर्भ में बहुत कम मायने रखता है। कई पीएचडी उम्मीदवारों को अपने शोध प्रबंध लेखन में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, छात्रवृत्ति या वैज्ञानिक योग्यता के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सरल, स्पष्ट और सीधी अंग्रेजी की न्यूनतम आवश्यकताओं के संबंध में। विधि विद्यालय में मेरे सहकर्मी अक्सर यह नहीं बता पाते कि कोई छात्र कानून जानता है या नहीं, क्योंकि वह किसी मुद्दे पर अपने विचार को सुसंगत रूप से व्यक्त करने में असमर्थ होता है।

मैंने केवल लेखन और बोलने का उल्लेख किया है, पढ़ने का नहीं। हाल ही तक, पढ़ने में कहीं अधिक व्यापक अक्षमता पर किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया, सिवाय शायद उन विधि प्रोफेसरों के, जिन्होंने विधि अध्ययन की केस स्टडी पद्धति की शुरुआत के बाद से यह महसूस किया है कि विधि विद्यालय में आधा समय छात्रों को केस स्टडी पढ़ना सिखाने में व्यतीत होता है। हालाँकि, वे सोचते थे कि यह बोझ विशेष रूप से उन पर है, कि केस स्टडी पढ़ने में कुछ बहुत ही खास बात है।

उन्हें यह एहसास नहीं था कि यदि कॉलेज स्नातकों के पास पढ़ने का अच्छा कौशल हो, तो मामलों को पढ़ने की अधिक विशिष्ट तकनीक को वर्तमान में लगने वाले समय के आधे से भी कम समय में सीखा जा सकता है।

पढ़ने की उपेक्षा और लिखने-बोलने पर अधिक ज़ोर देने का एक कारण वही है जिसका ज़िक्र मैं पहले ही कर चुका हूँ। ज़्यादातर लोगों के लिए लिखना और बोलना, पढ़ने की तुलना में कहीं अधिक सक्रिय गतिविधियाँ हैं। चूंकि हम कौशल को गतिविधि से जोड़ते हैं, इसलिए इस गलती का स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि लिखने-बोलने की कमियों को तकनीक की कमी से जोड़ दिया जाता है, और यह मान लिया जाता है कि पढ़ने में असफलता नैतिक दोषों के कारण होती है— यानी कौशल की कमी के बजाय परिश्रम की कमी के कारण। यह गलती धीरे-धीरे सुधर रही है। पढ़ने की समस्या पर अब पहले से कहीं अधिक ध्यान दिया जा रहा है। मेरा मतलब यह नहीं है कि शिक्षकों ने अभी तक इसका समाधान खोज लिया है, बल्कि उन्होंने अंततः यह महसूस किया है कि स्कूल पढ़ने के मामले में भी उतनी ही बुरी तरह, या शायद उससे भी बदतर, असफल हो रहे हैं, जितनी बुरी तरह लिखने-बोलने में।

यह बात तुरंत स्पष्ट हो जानी चाहिए कि ये कौशल आपस में संबंधित हैं। ये सभी संचार की प्रक्रिया में भाषा के उपयोग की कलाएँ हैं, चाहे संचार की शुरुआत करना हो या उसे ग्रहण करना। इसलिए, यदि हमें इन विभिन्न कौशलों में कमियों के बीच सकारात्मक संबंध दिखाई दे तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। शैक्षिक मापदंडों के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान के बिना भी, मैं यह भविष्यवाणी करने को तैयार हूँ कि जो व्यक्ति अच्छी तरह से लिख नहीं सकता, वह अच्छी तरह से पढ़ भी नहीं सकता। वास्तव में, मैं इससे भी आगे बढ़कर कहूँगा कि मैं शर्त लगा सकता हूँ कि पढ़ने में उसकी असमर्थता ही उसके लेखन में कमियों का आंशिक कारण है।

पढ़ना कितना भी कठिन क्यों न हो, यह लिखने और बोलने की कला से कहीं अधिक आसान है। दूसरों से प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए, यह जानना आवश्यक है कि संदेश कैसे ग्रहण किया जाता है, और इसके अतिरिक्त, वांछित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए माध्यम पर पूर्ण पकड़ होनी चाहिए। यद्यपि शिक्षण और शिक्षा प्राप्त करने की कलाएँ परस्पर संबंधित हैं, फिर भी शिक्षक, चाहे वह लेखक हो या वक्ता, को शिक्षण प्रक्रिया को निर्देशित करने के लिए उसका पूर्वाभास होना चाहिए। संक्षेप में, उसे अपने लिखे हुए को इस प्रकार पढ़ना या सुनना आना चाहिए जैसे कि वह स्वयं उससे शिक्षा प्राप्त कर रहा हो। जब शिक्षकों में स्वयं शिक्षा प्राप्त करने की कला नहीं होती, तो वे अच्छे शिक्षक नहीं बन सकते।

- 2 -

मुझे आपसे अपनी निराधार भविष्यवाणी को स्वीकार करने या बिना सोचे-समझे मेरी शर्त पूरी करने के लिए कहने की आवश्यकता नहीं है। वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर विशेषज्ञों से गवाही ली जा सकती है। हमारे विद्यालयों के छात्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन मान्यता प्राप्त उपलब्धि परीक्षण प्रणालियों द्वारा किया गया है।

ये परीक्षण शैक्षणिक उपलब्धियों के सभी पहलुओं को परखते हैं—सूचना के मानक क्षेत्रों के साथ-साथ बुनियादी कौशल, यानी तीन अंकगणित (रीडिंग, राइटिंग और राइटिंग)—ये परीक्षण न केवल यह दर्शाते हैं कि हाई स्कूल

स्नातक अकुशल है, बल्कि यह भी कि वह चौंकाने वाली हद तक अनभिज्ञ है। हमें अपना ध्यान कौशल की कमियों, विशेष रूप से पढ़ने की कमियों पर केंद्रित करना चाहिए, हालांकि लेखन और बोलने संबंधी निष्कर्ष इस बात का सहायक प्रमाण हैं कि संचार के किसी भी पहलू में हाई स्कूल स्नातक आमतौर पर पूरी तरह से अनभिज्ञ होता है।

यह कोई हंसी की बात नहीं है। बारह साल की स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद बुनियादी जानकारी का अभाव होना कितना भी दुखद क्यों न हो, उससे कहीं अधिक चिंताजनक यह है कि उन्हें उस एकमात्र साधन का उपयोग करने से वंचित रखा जाए जो इस स्थिति को सुधार सकता है। यदि वे पढ़ सकते—लिखने और बोलने की तो बात ही छोड़िए—तो वे अपने वयस्क जीवन भर स्वयं को शिक्षित कर सकते थे।

ध्यान दें कि परीक्षणों में जो कमी पाई गई है, वह पढ़ने के आसान तरीके— यानी जानकारी प्राप्त करने के लिए पढ़ने—में है। अधिकतर मामलों में, परीक्षण समझने के लिए पढ़ने की क्षमता का मापन भी नहीं करते। यदि वे ऐसा करते, तो परिणाम दंगे का कारण बन जाते।

पिछले साल कोलंबिया कॉलेज के टीचर्स ऑफ कॉलेज के प्रोफेसर जेम्स मर्सल ने द अटलांटिक मंथली में "स्कूलों की हार" शीर्षक से एक लेख लिखा था। उन्होंने अपना आरोप इस आधार पर लगाया था:

"हजारों जांच-पड़ताल" जिनमें "शिक्षा के क्षेत्र में तीस वर्षों के अत्यंत विविध शोध के सुसंगत प्रमाण" शामिल हैं। साक्ष्यों का एक बड़ा हिस्सा कार्नेगी फाउंडेशन द्वारा पेंसिल्वेनिया के स्कूलों में किए गए हालिया सर्वेक्षण से प्राप्त हुआ है। मैं उनके अपने शब्दों को उद्धृत करना चाहूंगा:

अंग्रेजी के बारे में क्या? यहाँ भी असफलता और हार का इतिहास रहा है। क्या विद्यालय में विद्यार्थी अपनी मातृभाषा को प्रभावी ढंग से पढ़ना सीखते हैं? हाँ और ना। पाँचवीं और छठी कक्षा तक, कुल मिलाकर, पढ़ना प्रभावी ढंग से पढ़ाया जाता है और अच्छी तरह से सीखा जाता है। उस स्तर तक हमें निरंतर और सामान्य सुधार देखने को मिलता है, लेकिन उसके बाद प्रगति रुक जाती है। ऐसा इसलिए नहीं है कि कोई व्यक्ति छठी कक्षा में पहुँचते ही अपनी दक्षता की स्वाभाविक सीमा तक पहुँच जाता है, क्योंकि यह बार-बार सिद्ध हुआ है कि विशेष शिक्षण से बड़े बच्चे और वयस्क भी जबरदस्त सुधार कर सकते हैं। न ही इसका यह अर्थ है कि अधिकांश छठी कक्षा के विद्यार्थी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए पर्याप्त रूप से अच्छी तरह से पढ़ पाते हैं। बहुत से विद्यार्थी छपे हुए पृष्ठ से अर्थ निकालने में अपनी अक्षमता के कारण हाई स्कूल में खराब प्रदर्शन करते हैं। वे सुधार कर सकते हैं; उन्हें सुधार करने की आवश्यकता है; लेकिन वे नहीं करते।

एक औसत हाई स्कूल स्नातक ने काफी पढ़ाई की होती है, और यदि वह कॉलेज जाता है तो वह और भी अधिक पढ़ाई करेगा; लेकिन संभावना है कि वह एक कमजोर और अक्षम पाठक होगा।

(ध्यान दें कि यह बात औसत छात्र पर लागू होती है, न कि उस व्यक्ति पर जिसे विशेष सुधारात्मक उपचार की आवश्यकता है।) वह एक सरल कथा को समझ सकता है और उसका आनंद ले सकता है। लेकिन अगर उसे किसी गहन व्याख्या, सावधानीपूर्वक और संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत तर्क, या आलोचनात्मक चिंतन की आवश्यकता वाले किसी अंश को समझने के लिए कहा जाए, तो वह असमंजस में पड़ जाता है। उदाहरण के लिए, यह सिद्ध हो चुका है कि औसत हाई स्कूल का छात्र किसी अंश के केंद्रीय विचार को, या किसी तर्क या व्याख्या में जोर और गौणता के स्तर को स्पष्ट करने में आश्चर्यजनक रूप से अक्षम होता है। कॉलेज में काफी आगे बढ़ने तक वह लगभग छठी कक्षा के स्तर का ही पाठक बना रहता है।

कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद भी, मैं यह कहना चाहूँगा कि उसकी हालत में कोई खास सुधार नहीं हुआ है। मेरा मानना है कि यह सच है कि जो व्यक्ति जानकारी प्राप्त करने के लिए ठीक-ठाक तरीके से पढ़ नहीं सकता, वह कॉलेज की पढ़ाई पूरी नहीं कर सकता। हो सकता है कि इस कमी के कारण उसे कॉलेज में दाखिला ही न मिल पाता। लेकिन अगर हम पढ़ने के प्रकारों के बीच अंतर को ध्यान में रखें, और यह याद रखें कि परीक्षाएँ मुख्य रूप से सरल प्रकार के पढ़ने की क्षमता को मापती हैं, तो इस तथ्य से हमें कोई खास तसल्ली नहीं मिल सकती कि कॉलेज के छात्र छठी कक्षा के बच्चों से बेहतर पढ़ते हैं। स्नातकोत्तर और व्यावसायिक संस्थानों के प्रमाण बताते हैं कि समझने के लिए पढ़ने के मामले में वे अभी भी छठी कक्षा के बच्चों के स्तर पर ही हैं।

प्रोफेसर मर्सल ने उन पठन सामग्री की श्रेणी के बारे में और भी निराशाजनक ढंग से लिखा है जिसमें स्कूल छात्रों की रुचि जगाने में सफल होते हैं:

स्कूल के छात्र, साथ ही हाई स्कूल और कॉलेज के स्नातक भी बहुत कम पढ़ते हैं। औसत दर्जे की पत्रिकाएँ और सामान्य स्तर की कहानियाँ ही उनकी मुख्य पसंद हैं। पढ़ने का चुनाव सुनी-सुनाई बातों, अनौपचारिक सिफारिशों और विज्ञापनों के आधार पर किया जाता है। शिक्षा स्पष्ट रूप से विवेकशील या साहसिक पाठक वर्ग तैयार नहीं कर रही है। एक शोधकर्ता का निष्कर्ष है कि "इस बात का कोई संकेत नहीं है कि स्कूल पढ़ने को एक मनोरंजक गतिविधि के रूप में स्थायी रुचि विकसित करने में सफल हो रहे हैं।"

छात्रों और स्नातकों द्वारा महान पुस्तकों को पढ़ने की बात करना कुछ हद तक आशावादी है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि वे हर साल प्रकाशित होने वाली अच्छी गैर-काल्पनिक पुस्तकों को भी नहीं पढ़ते हैं।

मैं लेखन के बारे में मर्सल की अतिरिक्त रिपोर्ट को सरसरी तौर पर देखता हूँ: कि औसत छात्र अपनी मातृभाषा में "स्पष्ट रूप से, सटीक रूप से और व्यवस्थित ढंग से" खुद को व्यक्त नहीं कर सकता; कि

"हाई स्कूल के बहुत से छात्र वाक्य और वाक्य के बीच अंतर नहीं कर पाते हैं"; औसत छात्र की शब्दावली बहुत कम होती है। "हाई स्कूल के अंतिम वर्ष से कॉलेज के अंतिम वर्ष तक, लिखित अंग्रेजी की शब्दावली में शायद ही कोई वृद्धि होती है। बारह साल स्कूल में बिताने के बाद भी बहुत से छात्र अंग्रेजी का प्रयोग बचकाने और अपरिपक्व तरीके से करते हैं; और चार साल बाद थोड़ा-बहुत सुधार होता है।" इन तथ्यों का असर पढ़ने पर भी पड़ता है। जो छात्र "अर्थ की सूक्ष्म और सटीक बारीकियों को व्यक्त नहीं कर सकता" वह निश्चित रूप से किसी ऐसे व्यक्ति के भावों में भी उन्हें नहीं समझ पाएगा जो छठी कक्षा के छात्र की समझ से परे सूक्ष्मता के स्तर से ऊपर संवाद करने का प्रयास कर रहा हो।

इसके और भी प्रमाण मौजूद हैं। हाल ही में न्यूयॉर्क राज्य के बोर्ड ऑफ रीजेंट्स ने अपने स्कूलों की उपलब्धियों की जांच कराने का अनुरोध किया था। यह जांच कोलंबिया के प्रोफेसर लूथर गुलिक की देखरेख में गठित एक आयोग द्वारा की गई थी। रिपोर्ट के एक खंड में हाई स्कूलों के बारे में बताया गया है, और इसमें एक भाग विशेष रूप से हाई स्कूलों को समर्पित है।

"सीखने के साधनों पर पकड़।" मैं फिर से उद्धृत करता हूँ: हाई स्कूल से स्नातक होने वाले छात्रों में से भी बड़ी संख्या में छात्र सीखने के बुनियादी साधनों में गंभीर रूप से पिछड़े हुए हैं। जांच समिति द्वारा पास आउट होने वाले छात्रों को दिए गए परीक्षणों में सरल अंग्रेजी पढ़ने और समझने की क्षमता का परीक्षण शामिल था... छात्रों को दिए गए अंशों में सरल वैज्ञानिक लेखों, ऐतिहासिक विवरणों, आर्थिक समस्याओं पर चर्चा आदि से लिए गए पैराग्राफ शामिल थे। यह परीक्षण मूल रूप से आठवीं कक्षा के छात्रों के लिए बनाया गया था।

उन्होंने पाया कि हाई स्कूल के औसत वरिष्ठ छात्र आठवीं कक्षा के स्तर की उपलब्धि मापने के लिए डिज़ाइन की गई परीक्षा उत्तीर्ण कर सकते हैं। यह हाई स्कूलों के लिए कोई उल्लेखनीय जीत नहीं है। लेकिन उन्होंने यह भी पाया कि "न्यूयॉर्क राज्य के लड़के-लड़कियों का एक चिंताजनक रूप से बड़ा हिस्सा माध्यमिक स्कूलों को छोड़ देता है, यहाँ तक कि उच्च शिक्षा संस्थानों में भी जाता है, लेकिन वांछित न्यूनतम स्तर प्राप्त नहीं कर पाता।" उनकी इस बात से सहमत होना ही पड़ेगा कि "उन कौशलों में जिनका उपयोग हर किसी को करना चाहिए"—जैसे पढ़ना और लिखना—"हर किसी में कम से कम न्यूनतम योग्यता होनी चाहिए।" यह स्पष्ट है कि प्रोफेसर मर्सल "स्कूलों की हार" की बात करते समय अति कठोर भाषा का प्रयोग नहीं कर रहे हैं।

रीजेंट्स की जांच समिति ने हाई स्कूल के छात्रों द्वारा स्कूल और पाठ्यक्रमों से अलग, स्वयं द्वारा किए जाने वाले अध्ययन के प्रकार का अध्ययन किया। उनका मानना था कि इसका निर्धारण स्कूल के बाहर की उनकी पठन सामग्री से किया जा सकता है। और उनके निष्कर्षों से पता चलता है कि "स्कूल

से निकलने के बाद, अधिकांश लड़के-लड़कियां केवल मनोरंजन के लिए पढ़ते हैं, मुख्य रूप से औसत दर्जे की या घटिया किस्म की उपन्यास पत्रिकाओं और दैनिक समाचार पत्रों में।" स्कूल में और स्कूल के बाहर, उनकी पठन सामग्री का दायरा बेहद सीमित और सरलतम स्तर का है। गैर-कथा साहित्य तो दूर की बात है। वे अपने स्कूली वर्षों के दौरान प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों से भी परिचित नहीं हैं। वे केवल सबसे प्रसिद्ध बेस्टसेलर के नाम ही जानते हैं।

इससे भी बुरी बात यह है कि "स्कूल से निकलने के बाद, वे किताबों से दूर रहने लगते हैं। साक्षात्कार में शामिल लड़कों और लड़कियों में से 40 प्रतिशत से भी कम ने साक्षात्कार से पहले के दो हफ्तों में कोई किताब या उसका कोई हिस्सा पढ़ा था। दस में से केवल एक ने ही गैर-काल्पनिक किताबें पढ़ी थीं।" ज़्यादातर वे पत्रिकाएँ ही पढ़ते हैं, अगर कुछ पढ़ते भी हैं तो। और यहाँ भी उनका पढ़ने का स्तर कम है: "सौ युवाओं में से दो से भी कम हार्पर, स्क्रिब्नर या द अटलांटिक मंथली जैसी पत्रिकाएँ पढ़ते हैं।"

इस भयावह निरक्षरता का कारण क्या है? रीजेंट्स की जांच रिपोर्ट समस्या की जड़ की ओर इशारा करते हुए कहती है कि "इन लड़के-लड़कियों की पढ़ने की आदतें निस्संदेह इस तथ्य से सीधे तौर पर प्रभावित होती हैं कि उनमें से कई ने कभी भी समझकर पढ़ना नहीं सीखा है।" उनमें से कुछ को "ऐसा लगता था कि वे पूरी तरह से शिक्षित हैं, और इसलिए पढ़ना अनावश्यक है।" लेकिन, अधिकतर को पढ़ना नहीं आता, और इसलिए उन्हें पढ़ने में आनंद नहीं आता। पढ़ने का कौशल होना इसके उपयोग और अभ्यास में आनंद के लिए एक अनिवार्य शर्त है। उनकी सामान्य पढ़ने की अक्षमता—समझने के लिए और कुछ मामलों में तो जानकारी प्राप्त करने के लिए भी—को देखते हुए, हाई स्कूल से स्नातक हुए छात्रों के सीमित पठन स्तर और उनके द्वारा पढ़े गए पाठ की निम्न गुणवत्ता का पता चलना आश्चर्यजनक नहीं है।

इसके गंभीर परिणाम स्पष्ट हैं। रीजेंट्स की रिपोर्ट के इस खंड में निष्कर्ष निकाला गया है, "इनमें से बड़ी संख्या में लड़कों और लड़कियों द्वारा किए गए पठन की निम्न गुणवत्ता से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि उनका स्वतंत्र पठन उनकी शैक्षिक योग्यता में बहुत अधिक वृद्धि करेगा।" कॉलेज में उनकी उपलब्धियों के बारे में जो जानकारी है, उससे भी कॉलेज स्नातक के लिए उम्मीदें कुछ खास नहीं हैं। स्नातक होने के बाद उनके द्वारा गंभीर पठन करने की संभावना केवल थोड़ी ही अधिक होती है, क्योंकि शैक्षणिक संस्थानों में चार और वर्ष बिताने के बाद उनका पठन कौशल केवल थोड़ा ही बेहतर होता है।

मैं यह बात दोहराना चाहता हूँ, क्योंकि मैं याद रखना चाहता हूँ, कि ये निष्कर्ष चाहे कितने भी परेशान करने वाले क्यों न लगें, अगर परीक्षण और भी कठिन होते तो स्थिति इससे कहीं ज़्यादा गंभीर होती। ये परीक्षण अपेक्षाकृत सरल अनुच्छेदों की अपेक्षाकृत सरल समझ को मापते हैं। छात्रों को एक छोटा सा अनुच्छेद पढ़ने के बाद जिन प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं, उनमें लेखक के कहे गए शब्दों की सटीक जानकारी से ज़्यादा कुछ नहीं मांगा जाता।

इनमें व्याख्या की ज्यादा जरूरत नहीं होती, और आलोचनात्मक निर्णय की तो बिल्कुल भी नहीं।

मैं कहता हूँ कि परीक्षाएँ पर्याप्त रूप से कठिन नहीं हैं, लेकिन जो मानक मैं निर्धारित करना चाहता हूँ, वह निश्चित रूप से बहुत कठोर नहीं है। क्या यह अपेक्षा करना अतिशयोक्ति है कि एक छात्र केवल एक पैराग्राफ नहीं, बल्कि पूरी किताब पढ़ सके और उसमें कही गई बातों को ही नहीं, बल्कि विषयवस्तु की बेहतर समझ भी प्रदर्शित कर सके? क्या स्कूलों से यह अपेक्षा करना अतिशयोक्ति है कि वे अपने छात्रों को न केवल व्याख्या करना सिखाएँ, बल्कि आलोचना करना भी सिखाएँ; अर्थात्, सही और गलत में अंतर करना, यदि वे आश्वस्त न हों तो निर्णय को स्थगित करना, या यदि वे सहमत या असहमत हों तो तर्क के साथ निर्णय लेना? मुझे नहीं लगता कि हाई स्कूल या कॉलेज से ऐसी अपेक्षाएँ रखना अतिशयोक्ति होगी, फिर भी यदि ऐसी आवश्यकताओं को परीक्षाओं में शामिल कर लिया जाए, और संतोषजनक प्रदर्शन स्नातक होने की शर्त बन जाए, तो हर जून में डिप्लोमा प्राप्त करने वाले सौ छात्रों में से एक भी स्नातक की उपाधि धारण नहीं कर पाएगा।

- 3 -

आपको लग सकता है कि मैंने अब तक जो सबूत पेश किए हैं, वे स्थानीय हैं, केवल न्यूयॉर्क और पेंसिल्वेनिया तक सीमित हैं, या उनमें औसत या गरीब हाई स्कूल के छात्रों को ही ज़्यादा महत्व दिया गया है। लेकिन ऐसा नहीं है। ये सबूत देश की सामान्य स्थिति को दर्शाते हैं। न्यूयॉर्क और पेंसिल्वेनिया के स्कूल औसत से बेहतर हैं।

और सबूतों में सर्वश्रेष्ठ हाई स्कूल के वरिष्ठ छात्र शामिल हैं, न कि केवल कमज़ोर छात्र।

आइए, इस अंतिम कथन को एक और उदाहरण से पुष्ट करें। जून 1939 में, शिकागो विश्वविद्यालय ने ग्रीष्मकालीन सत्र में भाग लेने वाले शिक्षकों के लिए पठन विषय पर चार दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया। एक बैठक में, शिक्षा विभाग के प्रोफेसर डीडरिच ने शिकागो में आयोजित एक परीक्षा के परिणाम प्रस्तुत किए, जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से छात्रवृत्ति के लिए आए मेधावी हाई स्कूल के वरिष्ठ छात्रों को शामिल किया गया था। अन्य बातों के अलावा, इन उम्मीदवारों की पठन क्षमता की भी परीक्षा ली गई। प्रोफेसर डीडरिच ने उपस्थित एक हजार शिक्षकों को बताया कि परीक्षा के परिणामों से पता चला कि इन "सक्षम" छात्रों में से अधिकांश को वह समझ में नहीं आ रहा था जो वे पढ़ रहे थे।

इसके अलावा, उन्होंने आगे कहा, "हमारे विद्यार्थियों को जो कुछ वे पढ़ते या सुनते हैं, उसे समझने में या अपने शब्दों या लेखन के अर्थ को जानने में प्रत्यक्ष सहायता नहीं मिल रही है।" यह स्थिति केवल हाई स्कूलों तक ही सीमित नहीं है। यह इस देश के कॉलेजों पर भी समान रूप से लागू होती है, और यहाँ तक कि इंग्लैंड में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के स्नातक छात्रों के भाषाई कौशल के संबंध में भी यही बात लागू होती है।

छात्रों को मदद क्यों नहीं मिल रही है? ऐसा इसलिए तो नहीं हो सकता कि पेशेवर शिक्षक स्थिति से अनभिज्ञ हैं। शिकागो में वह सम्मेलन चार दिनों तक चला था।

सुबह, दोपहर और शाम के सत्रों में कई शोध पत्र प्रस्तुत किए गए—सभी पढ़ने की समस्या पर आधारित थे। इसका कारण शायद यही है कि शिक्षकों को इस समस्या का समाधान नहीं पता; साथ ही, शायद इसलिए भी कि वे यह नहीं समझते कि छात्रों को अच्छी तरह से पढ़ना, लिखना और बोलना सिखाने में कितना समय और प्रयास लगता है। अन्य कई कम महत्वपूर्ण विषय पाठ्यक्रम में अनावश्यक रूप से शामिल हो गए हैं।

कुछ साल पहले मुझे एक ऐसा अनुभव हुआ था जो इस संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है। श्रीमान...

हचिन्स और मैंने विश्वविद्यालय द्वारा संचालित प्रायोगिक स्कूल में हाई स्कूल के जूनियर और सीनियर छात्रों के एक समूह के साथ महान पुस्तकों को पढ़ने का बीड़ा उठाया था। इसे एक अनोखा "प्रयोग" या उससे भी बुरा, एक बेतुका विचार माना जा रहा था। इनमें से कई पुस्तकें कॉलेज के जूनियर और सीनियर छात्रों द्वारा नहीं पढ़ी जा रही थीं। वे केवल स्नातकोत्तर छात्रों के मनोरंजन के लिए थीं। और हम उन्हें हाई स्कूल के लड़के-लड़कियों के साथ पढ़ने जा रहे थे!

पहले साल के अंत में, मैं हाई स्कूल के प्रधानाचार्य के पास हमारी प्रगति की रिपोर्ट देने गया। मैंने कहा कि ये छोटे छात्र स्पष्ट रूप से किताबें पढ़ने में रुचि दिखा रहे थे।

उनके पूछे गए सवालों से यह बात ज़ाहिर हो गई। कक्षा में उठाए गए विषयों पर उनकी तीक्ष्णता और जीवंतता से पता चलता था कि वे उन वरिष्ठ छात्रों से कहीं बेहतर थे जो वर्षों तक व्याख्यान सुनने, नोट्स बनाने और परीक्षा पास करने के कारण सुस्त पड़ गए थे। उनमें कॉलेज के वरिष्ठ छात्रों या स्नातकोत्तर छात्रों से कहीं अधिक क्षमता थी। लेकिन, मैंने कहा, यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उन्हें किताब पढ़ना नहीं आता था। श्री हचिन्स और मैं, उनके साथ सप्ताह में जो कुछ घंटे बिताते थे, उनमें न तो किताबों पर चर्चा कर सकते थे और न ही उन्हें पढ़ना सिखा सकते थे। यह अफ़सोस की बात थी कि उनकी जन्मजात प्रतिभाओं को उस कार्य के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा रहा था जो स्पष्ट रूप से सर्वोच्च शैक्षिक महत्व का था।

मैंने पूछा, "हाई स्कूल छात्रों को पढ़ना सिखाने के लिए क्या कर रहा था?" मुझे पता चला कि प्रधानाचार्य इस विषय पर काफी समय से विचार कर रहे थे। उन्हें संदेह था कि छात्र ठीक से पढ़ नहीं पाते, लेकिन उनके प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम में समय नहीं था। उन्होंने उन सभी महत्वपूर्ण कार्यों को गिनाया जो वे कर रहे थे। मैंने यह कहने से परहेज किया कि यदि छात्रों को पढ़ना आता, तो वे इनमें से अधिकांश पाठ्यक्रमों को छोड़ सकते थे और किताबें पढ़कर वही बात सीख सकते थे। उन्होंने आगे कहा, "वैसे भी, अगर हमारे पास समय होता भी, तो भी हम तब तक पढ़ने के बारे में ज्यादा कुछ नहीं कर सकते थे जब तक कि शिक्षा विभाग इस विषय पर अपना शोध पूरा नहीं कर लेता।"

मैं असमंजस में था। पढ़ने की कला के बारे में मुझे जो जानकारी थी, उसके आधार पर मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि किस प्रकार के प्रायोगिक शोध किए जा रहे हैं जो छात्रों को पढ़ना सीखने में या उनके शिक्षकों को उन्हें प्रशिक्षित करने में मदद कर सकते हैं। मैं इस विषय पर प्रायोगिक साहित्य से भलीभांति परिचित था। हजारों शोध और अनगिनत रिपोर्टें "पठन मनोविज्ञान" का निर्माण करती हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के फ़ॉन्ट, पृष्ठ लेआउट, प्रकाश व्यवस्था आदि के संबंध में आंखों की गति का अध्ययन किया गया है। इनमें प्रकाशीय यांत्रिकी और संवेदी तीक्ष्णता या अक्षमता के अन्य पहलुओं पर भी चर्चा की गई है। इनमें विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर उपलब्धि के मानकीकरण के लिए सभी प्रकार के परीक्षण और माप शामिल हैं। और प्रयोगशाला और नैदानिक अध्ययन भी हुए हैं जो पढ़ने के भावनात्मक पहलुओं से संबंधित हैं। मनोचिकित्सकों ने पाया है कि कुछ बच्चे पढ़ने को लेकर भावनात्मक रूप से उग्र हो जाते हैं, जैसे अन्य गणित को लेकर होते हैं। कभी-कभी भावनात्मक कठिनाइयाँ पढ़ने की अक्षमता का कारण बनती हैं; कभी-कभी वे इसका परिणाम होती हैं।

इस सारे काम के, ज़्यादा से ज़्यादा, दो ही व्यावहारिक उपयोग हैं। परीक्षण और मापन से विद्यालय प्रशासन, छात्रों का वर्गीकरण और स्तर निर्धारण, और किसी न किसी प्रक्रिया की प्रभावशीलता का निर्धारण आसान हो जाता है। भावनाओं और इंद्रियों, विशेष रूप से आँख, की गतिविधियों और दृष्टि अंग के रूप में उसके अध्ययन से "उपचारात्मक पठन" के चिकित्सीय कार्यक्रम का विकास हुआ है। लेकिन इस सारे काम में इस समस्या पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है कि युवाओं को ज्ञान और सूचना दोनों के लिए अच्छी तरह से पढ़ने की कला कैसे सिखाई जाए। मेरा मतलब यह नहीं है कि यह काम बेकार या महत्वहीन है, या यह कि उपचारात्मक पठन कई बच्चों को गंभीर अक्षमताओं से नहीं बचा सकता। मेरा मतलब केवल इतना है कि अच्छे पाठक बनाने में इसका वही संबंध है जो एक उपन्यासकार के विकास में उचित मांसपेशीय समन्वय का होता है, जिसे लेखन या टाइपिंग में अपनी आँखों का उपयोग करना पड़ता है।

एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो सकती है। मान लीजिए आप टेनिस खेलना सीखना चाहते हैं।

आप टेनिस सीखने के लिए एक कोच के पास जाते हैं। वह आपको ध्यान से देखता है, कुछ देर कोर्ट पर आपको खेलते हुए देखता है, और फिर, अपने असाधारण विवेकशील स्वभाव के कारण, आपको बताता है कि वह आपको सिखा नहीं सकता। आपके पैर के अंगूठे में एक गांठ है, और एक पैर के तलवे पर एक छोटा सा उभार है। आपकी शारीरिक मुद्रा आम तौर पर खराब है, और आपके कंधे की मांसपेशियां अकड़ जाती हैं। आपको चश्मे की ज़रूरत है। और अंत में, जब भी गेंद आपकी ओर आती है तो आप घबरा जाते हैं, और जब भी आप उसे मिस करते हैं तो आप गुस्से में भड़क उठते हैं।

किसी कायरोपोडिस्ट और ऑस्टियोपैथ के पास जाओ। किसी मालिश करने वाले से आराम पाओ। अपनी आँखों का इलाज करवाओ और मनोविश्लेषण की मदद से या उसके

बिना, अपनी भावनाओं को किसी तरह से ठीक करवाओ। ये सब करो, वह कहता है, और फिर वापस आना, मैं तुम्हें टेनिस खेलना सिखाने की कोशिश करूँगा।

ऐसा कहने वाला कोच न केवल विवेकपूर्ण होगा बल्कि उसका निर्णय भी सही होगा।

इन तमाम अक्षमताओं के साथ आपको टेनिस की कला सिखाने का कोई फायदा नहीं है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने उन अक्षमताओं का बेहतर निदान किया है जो किसी व्यक्ति को पढ़ना सीखने से रोकती हैं या बाधा डालती हैं, और उन्होंने उपचारात्मक पठन में योगदान देने वाली कई तरह की चिकित्सा पद्धतियाँ विकसित की हैं। लेकिन जब यह सारा काम हो जाता है, जब चिकित्सा में अधिकतम सफलता मिल जाती है, तब भी आपको पढ़ना या टेनिस खेलना सीखना ही होगा।

जो डॉक्टर आपके पैरों का इलाज करते हैं, आपको चश्मा देते हैं, आपकी शारीरिक मुद्रा सुधारते हैं और आपके भावनात्मक तनाव को दूर करते हैं, वे आपको टेनिस खिलाड़ी नहीं बना सकते, हालांकि वे आपको एक ऐसे व्यक्ति से जो खेलना नहीं सीख सकता, एक ऐसे व्यक्ति में बदल देते हैं जो खेलना सीख सकता है। इसी तरह, जो मनोवैज्ञानिक आपकी पढ़ने की अक्षमता का निदान करते हैं और उसका इलाज बताते हैं, वे आपको एक अच्छा पाठक बनाना नहीं जानते।

अधिकांश शैक्षिक अनुसंधान मात्र पढ़ने के मुख्य कार्य की प्रारंभिक अवस्था है। यह बाधाओं को पहचानता और दूर करता है। यह अक्षमता को दूर करने में सहायक होता है, लेकिन अक्षमता को नहीं। अधिक से अधिक, यह किसी न किसी रूप में असामान्य व्यक्तियों को सामान्य व्यक्ति के समान बना देता है, जिनकी जन्मजात प्रतिभा उन्हें प्रशिक्षण के लिए स्वतंत्र बनाती है। लेकिन सामान्य व्यक्ति को प्रशिक्षित करना पड़ता है। सीखने की क्षमता उनमें जन्मजात होती है, लेकिन कला उनमें नहीं होती। उसे निखारना पड़ता है। असामान्यताओं का उपचार जन्मजात असमानताओं या प्रारंभिक विकास की आकस्मिकताओं को दूर कर सकता है। भले ही यह सभी मनुष्यों को उनकी प्रारंभिक सीखने की क्षमता में लगभग समान बनाने में सफल हो जाए, यह इससे आगे नहीं बढ़ सकता। उस बिंदु पर, कौशल का विकास शुरू करना होगा। संक्षेप में, पढ़ने की कला में वास्तविक प्रशिक्षण वहीं से शुरू होता है जहाँ शैक्षिक मनोवैज्ञानिक अपना काम छोड़ देते हैं।

इसकी शुरुआत होनी चाहिए। दुर्भाग्य से, ऐसा नहीं होता, जैसा कि सभी प्रमाण दर्शाते हैं। और, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, इसके दो कारण हैं। पहला, प्राथमिक विद्यालय से लेकर महाविद्यालय तक का पाठ्यक्रम और सामान्य शिक्षा कार्यक्रम अन्य समय लेने वाली चीजों से इतना भरा हुआ है कि बुनियादी कौशलों पर पर्याप्त ध्यान देना संभव नहीं हो पाता। दूसरा, अधिकांश शिक्षकों को पढ़ने की कला सिखाने का तरीका नहीं पता। आज पाठ्यक्रम में तीन अंकगणित (रीडिंग, राइटिंग, अरिथमेटिक) केवल अपने सबसे प्रारंभिक रूप में मौजूद हैं। इन्हें प्राथमिक कक्षाओं का विषय माना जाता है, जबकि इन्हें स्नातक की डिग्री तक पढ़ाया जाना चाहिए। परिणामस्वरूप,

पाठ्यक्रम के तत्व कहीं किनारे पड़े हैं, मानो उन्हें ठंडे बस्ते में डाल दिया गया हो या कबाड़ में फेंक दिया गया हो।

इस प्रक्रिया में, जो ऐच्छिक शिक्षा प्रणाली द्वारा शुरू हुई और प्रगतिशील शिक्षा की अतिरंजनाओं द्वारा पूरी हुई, बुनियादी बौद्धिक विषय या तो हाशिए पर धकेल दिए गए या पूरी तरह से हाशिए पर चले गए।

अपने झूठे उदारवाद में, प्रगतिशील शिक्षाविदों ने अनुशासन को नियमबद्धता के साथ भ्रमित कर दिया और यह भूल गए कि अनुशासन द्वारा मुक्त मन के बिना सच्ची स्वतंत्रता असंभव है। मैं उन्हें जॉन ड्यूई के ये शब्द बार-बार उद्धृत करता हूँ। उन्होंने बहुत पहले कहा था: "अनुशासन, जो प्रशिक्षित शक्ति का पर्याय है, स्वतंत्रता का भी पर्याय है... संक्षेप में, सच्ची स्वतंत्रता बौद्धिक होती है; यह विचार की प्रशिक्षित शक्ति में निहित होती है।" विचार की शक्ति में प्रशिक्षित अनुशासित मन वह होता है जो आलोचनात्मक रूप से पढ़ और लिख सकता है, साथ ही खोज में कुशल कार्य भी कर सकता है। जैसा कि हमने देखा है, चिंतन की कला, सिखाए जाने या स्वयं के शोध के माध्यम से सीखने की कला है।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ, मैं फिर से दोहराता हूँ, कि पढ़ना जानना और किताबों से सीखना ही शिक्षा का संपूर्ण रूप है। व्यक्ति को बुद्धिमानी से शोध करने में भी सक्षम होना चाहिए।

इसके अलावा, चिंतन के लिए आवश्यक आधारभूत ज्ञान के सभी क्षेत्रों में व्यक्ति को तथ्यों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। हमारे पास उपलब्ध शैक्षिक समय में इन सभी चीजों को पूरा करने में कोई बाधा नहीं है। लेकिन यदि इनमें से किसी एक को चुनना हो, तो निश्चित रूप से मूलभूत कौशलों पर प्राथमिक जोर देना चाहिए और किसी भी प्रकार की जानकारी को महत्व नहीं देना चाहिए। जो लोग इसके विपरीत चुनाव करते हैं, उन्हें शिक्षा को तथ्यों के एक बोझ के रूप में देखना चाहिए जिसे विद्यालय में रटा जाता है और जीवन भर ढोना पड़ता है, हालांकि जैसे-जैसे यह बोझ कम उपयोगी साबित होता है, यह और भारी होता जाता है।

मेरे विचार से शिक्षा का अधिक तर्कसंगत दृष्टिकोण अनुशासन पर बल देने वाला है। इस दृष्टिकोण से, विद्यालय में जो कुछ मिलता है वह केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि सीखने की तकनीक, यानी पर्यावरण द्वारा उपलब्ध सभी माध्यमों से स्वयं को शिक्षित करने की कला है। संस्थान तभी शिक्षा प्रदान करते हैं जब वे व्यक्ति को जीवन भर सीखने में सक्षम बनाते हैं। पढ़ने की कला और शोध की तकनीक सीखने के प्राथमिक साधन हैं, जिनके माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जाता है और उसका पता लगाया जाता है। इसीलिए ये एक सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली के प्राथमिक उद्देश्य होने चाहिए।

हालांकि मैं कार्लाइल के इस कथन से असहमत नहीं हूँ कि "विश्वविद्यालय या सर्वोच्च शिक्षा संस्थान हमारे लिए वही कर सकते हैं जो पहले संस्थान ने शुरू किया था - हमें पढ़ना सिखाना," फिर भी मैं कॉर्नेल के प्रोफेसर टेनी से सहमत हूँ कि यदि संस्थान छात्रों को पढ़ना सिखाते हैं, तो उन्होंने उनके हाथों में "उच्च शिक्षा का प्राथमिक साधन" सौंप दिया है। इसके बाद,

छात्र, यदि चाहें तो, स्वयं को शिक्षित कर सकते हैं। यदि संस्थान अपने विद्यार्थियों को अच्छी तरह पढ़ना सिखाते हैं, तो वे उन्हें विद्यार्थी बना लेंगे, और विद्यार्थी स्कूल से बाहर और उसके बाद भी विद्यार्थी बने रहेंगे।

संक्षेप में, मैं आपका ध्यान पढ़ने की एक ऐसी गलती की ओर दिलाना चाहता हूँ जो कई लोग, विशेषकर प्रोफेसर, करते हैं। एक लेखक कहता है कि वह किसी चीज़ को प्राथमिक महत्व का मानता है, या किसी अन्य चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण मानता है। एक अकुशल पाठक इसे इस प्रकार समझता है कि लेखक जिस चीज़ पर ज़ोर दे रहा है, उसके अलावा और कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। मैंने राष्ट्रपति हचिन की पुस्तक 'हायर लर्निंग इन अमेरिका' की कई समीक्षाएँ पढ़ी हैं जिनमें उदार या सामान्य शिक्षा के लिए साक्षरता को अपरिहार्य बताने के उनके ज़ोर को मूर्खतापूर्ण या यहाँ तक कि दुर्भावनापूर्ण ढंग से अन्य सभी चीज़ों के बहिष्कार के रूप में देखा गया है। जैसा कि वे स्पष्ट रूप से कहते हैं, यह कहना कि कोई भी चीज़ पहले नहीं आती, इसका अर्थ यह नहीं है कि अन्य चीज़ें दूसरे, तीसरे और इसी प्रकार के महत्व को नकार रही हैं।

मेरी कही बातों को संभवतः प्रोफेसर या शिक्षा जगत के पेशेवर लोग गलत समझेंगे। वे शायद इससे भी आगे बढ़कर मुझ पर "संपूर्ण मनुष्य" की उपेक्षा करने का आरोप लगाएंगे, क्योंकि मैंने शिक्षा में भावनाओं के अनुशासन और नैतिक चरित्र निर्माण पर चर्चा नहीं की है। हालांकि, जिस चरित्र पर चर्चा नहीं की गई है, उसे पूरी तरह से नकारा नहीं जा सकता। यदि ऐसा होता, तो किसी एक विषय पर लिखने में अनगिनत गलतियाँ होने की संभावना होती। यह पुस्तक पढ़ने के बारे में है, न कि हर विषय के बारे में। इसलिए संदर्भ से यह स्पष्ट होना चाहिए कि हम मुख्य रूप से बौद्धिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, न कि संपूर्ण शिक्षा पर।

अगर मुझसे पूछा जाता, जैसा कि मुझसे टाउन मीटिंग के प्रसारण की रात सदन में पूछा गया था,

"एक छात्र के लिए आप किसे सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं, तीन अंकगणित (आर) या अच्छे नैतिक चरित्र को? मैं वही उत्तर दूंगा जो मैंने तब दिया था:

बौद्धिक और नैतिक गुणों के बीच चुनाव करना एक कठिन काम है; लेकिन अगर मुझे चुनाव करना ही पड़े, तो मैं हमेशा नैतिक गुणों को ही चुनूंगा, क्योंकि नैतिक गुणों के बिना बौद्धिक गुणों का गलत इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसा कि ज्ञान और कौशल से लैस कोई भी व्यक्ति करता है, जिसे जीवन के उद्देश्य का ज्ञान नहीं होता।

इस जीवन में ज्ञान और बौद्धिक कौशल सबसे महत्वपूर्ण वस्तुएँ नहीं हैं। सही चीजों से प्रेम करना अधिक महत्वपूर्ण है। समग्र रूप से शिक्षा में मनुष्य की बुद्धि से कहीं अधिक पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए। मेरा कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि जहाँ तक बुद्धि का संबंध है, उसे सही ढंग

प्राचीन और मध्ययुगीन व्याकरणविदों और जॉन लॉक जैसे अठारहवीं शताब्दी के लेखकों ने समकालीन "शब्दार्थशास्त्रियों" को कई ऐसे सिद्धांत सिखाए हैं जिन्हें वे नहीं जानते, ऐसे सिद्धांत जिन्हें उन्हें खोजने की कोशिश करने की आवश्यकता नहीं है यदि वे कुछ किताबें पढ़ सकें और पढ़ सकें।

यह दिलचस्प है कि, ठीक उसी समय जब व्याकरण लगभग व्याकरण के स्कूलों से गायब हो चुका है, और जब तर्कशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसे कुछ ही कॉलेज के छात्र पढ़ते हैं, इन अध्ययनों को मौलिक खोज के बड़े धूमधाम के साथ स्नातकोत्तर विद्यालयों में पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।

भाषाशास्त्रियों द्वारा व्याकरण और तर्कशास्त्र के अध्ययन का पुनरुद्धार कलाओं के लुप्त होने के मेरे विचार को नहीं बदलता। किसी विषय के विज्ञान का अध्ययन करने और उस कला का अभ्यास करने में ज़मीन-आसमान का अंतर है। हम ऐसे रसोइए से सेवा लेना पसंद नहीं करेंगे जिसकी एकमात्र योग्यता खाना पकाने की किताब को सुनाना हो। यह एक पुरानी कहावत है कि कुछ तर्कशास्त्री सबसे कम तार्किक होते हैं। जब मैं कहता हूँ कि समकालीन शिक्षा और संस्कृति में भाषाई कलाएँ एक नए निम्न स्तर पर पहुँच गई हैं, तो मेरा तात्पर्य व्याकरण और तर्कशास्त्र के अभ्यास से है, न कि इन विज्ञानों के ज्ञान से। मेरे कथन का प्रमाण यह है कि हम पूर्व युगों के लोगों की तरह लिख और पढ़ नहीं सकते, और न ही हम अगली पीढ़ी को ऐसा करना सिखा सकते हैं।

यह सर्वविदित तथ्य है कि यूरोपीय संस्कृति के वे कालखंड जिनमें पुरुष पढ़ने-लिखने में सबसे कम कुशल थे, उन कालखंडों में पहले लिखे गए सभी ग्रंथों की अपठनीयता को लेकर सबसे अधिक हंगामा हुआ। यही स्थिति पतनशील हेलेनिक काल और पंद्रहवीं शताब्दी में देखी गई, और आज भी यही हो रहा है। जब पुरुष पढ़ने-लिखने में अक्षम होते हैं, तो उनकी यह अक्षमता दूसरों के लेखन की अत्यधिक आलोचना करने के रूप में प्रकट होती है। एक मनोविश्लेषक इसे अपनी ही कमियों का दूसरों पर विकृत प्रक्षेपण समझेगा। हम शब्दों का जितना कम स्पष्ट रूप से प्रयोग कर पाते हैं, उतना ही अधिक हम दूसरों के अपठनीय भाषण के लिए उन्हें दोषी ठहराने लगते हैं। हम भाषा से संबंधित अपने बुरे सपनों को भी एक जुनून बना लेते हैं, और फिर हम भाषाविज्ञानी बन जाते हैं।

बेचारे शब्दार्थविद्! जब वे उन सभी पुस्तकों की सूची बनाते हैं जिन्हें वे समझ नहीं पाते, तो वे अपने बारे में क्या स्वीकार कर रहे होते हैं, यह उन्हें अब पता चल ही गया है। शब्दार्थ विद्या ने भी उनकी कोई मदद नहीं की है, क्योंकि इसके अभ्यास के बाद भी उन्हें कई अंश समझ में नहीं आते। इससे वे पहले से बेहतर पाठक नहीं बन पाए हैं, क्योंकि उन्होंने यह मान लिया था कि शब्दार्थ विद्या में कोई जादू है। अगर वे यह समझ लें कि समस्या अतीत और वर्तमान के महान लेखकों में नहीं, बल्कि पाठकों के रूप में उनमें है, तो वे शब्दार्थ विद्या को छोड़ सकते हैं या कम से कम इसका उपयोग पढ़ना सीखने के लिए कर सकते हैं। अगर वे थोड़ा बेहतर पढ़ पाते, तो उन्हें पता चलता कि दुनिया में उनकी सोच से कहीं अधिक समझने योग्य पुस्तकें मौजूद हैं। वर्तमान स्थिति में, उनके लिए ऐसी पुस्तकें लगभग न के बराबर हैं।

- 6 -

पुस्तकों को नहीं पढ़ते। क्योंकि हम इस प्रकार का पठन नहीं करते और इसे महत्वपूर्ण नहीं समझते, इसलिए हम कठिन पुस्तकों को पढ़ने का प्रयास भी नहीं करते। परिणामस्वरूप, हम अच्छी तरह से पढ़ना नहीं सीख पाते। हम वर्तमान की महान पुस्तकों को भी नहीं पढ़ पाते, भले ही हम उन्हें दूर से और लोकप्रिय प्रचार के सात पर्दों के माध्यम से सराहते हों। अभ्यास की कमी से सुस्ती आती है। अंततः हम अच्छी लोकप्रिय पुस्तकों को भी पढ़ने में असमर्थ हो जाते हैं।

इस दुष्चक्र पर गहराई से विचार करना आवश्यक है। जिस प्रकार आप केवल ऐसे विरोधियों के विरुद्ध खेलकर अपने टेनिस खेल में सुधार नहीं कर सकते जिन्हें आप आसानी से हरा सकते हैं, उसी प्रकार आप पढ़ने के कौशल में तब तक सुधार नहीं कर सकते जब तक आप किसी ऐसे कार्य पर ध्यान न दें जो आपके प्रयास को चुनौती दे और नए संसाधनों की मांग करे। अतः यह स्पष्ट है कि जैसे-जैसे महान पुस्तकें ज्ञान के प्रमुख स्रोतों के रूप में अपने पारंपरिक स्थान से हटती जा रही हैं, वैसे-वैसे छात्रों को पढ़ना सिखाना कम से कम संभव होता जा रहा है। आप उनके कौशल को उनके दैनिक अभ्यास के निम्न स्तर से ऊपर नहीं बढ़ा सकते। आप उन्हें अच्छी तरह से पढ़ना नहीं सिखा सकते यदि उन्हें अधिकतर इस कौशल का उच्चतम स्तर पर उपयोग करने का अवसर ही न मिले।

एक दिशा में बढ़ते दुष्चक्र का यही हाल है। अब, दूसरी तरफ देखें तो, उन छात्रों को महान पुस्तकें पढ़ाने का कोई खास फायदा नहीं है जिन्हें अपनी पिछली स्कूली शिक्षा में पढ़ने की कला का कोई प्रशिक्षण नहीं मिला है और न ही उनकी बाकी की शिक्षा में। मेरे समय में कोलंबिया विश्वविद्यालय के ऑनर्स पाठ्यक्रम में यही समस्या थी, और मुझे लगता है कि आज भी वहाँ दिए जाने वाले इसी तरह के पठन पाठ्यक्रमों में यही हाल है।

एक पाठ्यक्रम में, जो छात्रों के समय का एक छोटा सा हिस्सा लेता है, आप उनके साथ पुस्तकों पर चर्चा नहीं कर सकते और न ही उन्हें पढ़ना सिखा सकते हैं। यह बात विशेष रूप से तब लागू होती है जब वे प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर चुके हों और उन्हें पढ़ने के बुनियादी कौशल पर भी कम ध्यान दिया गया हो, और यदि कॉलेज में उनके द्वारा साथ-साथ लिए जा रहे अन्य पाठ्यक्रम उनकी ज्ञानवर्धक पठन क्षमता की मांग नहीं करते हों।

शिकागो में भी हमारा यही अनुभव रहा है। श्री हचिन्स और मैं पिछले दस वर्षों से छात्रों के साथ महान पुस्तकें पढ़ रहे हैं। अधिकतर मामलों में, यदि हमारा उद्देश्य इन छात्रों को उदार शिक्षा प्रदान करना था, तो हम असफल रहे हैं। उदार शिक्षा प्राप्त छात्र से मेरा तात्पर्य ऐसे छात्र से है जो महान पुस्तकों को पढ़ने में सक्षम हो और वास्तव में उन्हें अच्छी तरह से पढ़ चुका हो। यदि यही मानक है, तो हम शायद ही कभी सफल हुए हैं। बेशक, इसमें हमारी भी गलती हो सकती है, लेकिन मेरा मानना है कि हम कई पाठ्यक्रमों में से किसी एक में भी पूर्व और समवर्ती शिक्षा के कारण उत्पन्न जड़ता और अपर्याप्त तैयारी को दूर नहीं कर सके।

शिक्षा में सुधार कॉलेज स्तर से काफी नीचे से शुरू होना चाहिए और कॉलेज स्तर पर ही इसमें आमूलचूल परिवर्तन होना चाहिए, तभी स्नातक की डिग्री

प्रदान किए जाने तक पढ़ने की कला अच्छी तरह से विकसित हो पाएगी और पढ़ने का दायरा पर्याप्त हो पाएगा।

जब तक ऐसा नहीं होता, स्नातक की उपाधि उस उदार कला का मज़ाक बनी रहेगी जिससे इसका नाम लिया गया है। हम उदार कलाओं के नहीं, बल्कि अव्यवस्थित रूप से जानकारी रखने वाले और पूरी तरह से अनुशासनहीन दिमागों को स्नातक करते रहेंगे।

इस देश में मेरी जानकारी में केवल एक ही ऐसा कॉलेज है जो सही मायने में उदारवादी कलाकार तैयार करने का प्रयास कर रहा है। वह है मैरीलैंड के एनापोलिस में स्थित सेंट जॉन कॉलेज। वहाँ वे मानते हैं कि छात्रों को पढ़ने, लिखने, गणना करने और प्रयोगशाला में अवलोकन करने का प्रशिक्षण देने में चार साल लगने चाहिए, साथ ही उन्हें सभी क्षेत्रों की महान पुस्तकों का अध्ययन भी कराना चाहिए। वहाँ वे समझते हैं कि पुस्तकों को पढ़ने के लिए आवश्यक सभी कलाओं को विकसित किए बिना केवल पुस्तकें पढ़ने का कोई लाभ नहीं है, और इसी प्रकार इन मूलभूत बौद्धिक कौशलों को विकसित करना तब तक असंभव है जब तक कि उन्हें अभ्यास करने के लिए सही विषय-वस्तु प्रदान न की जाए।

सेंट जॉन कॉलेज में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन छात्रों में रुचि की कमी या उस काम को करने की अनिच्छा नहीं, जो आज किसी अन्य कॉलेज के छात्रों से अपेक्षित नहीं है। छात्रों को ऐसा नहीं लगता कि उनकी पवित्र स्वतंत्रता का हनन हो रहा है क्योंकि उन्हें वैकल्पिक विषयों को चुनने की स्वतंत्रता नहीं है। उनके लिए जो शैक्षिक रूप से अच्छा है, वही निर्धारित किया गया है। छात्र रुचि रखते हैं और काम कर रहे हैं। लेकिन एक बड़ी चुनौती यह है कि छात्र सेंट जॉन कॉलेज में ऐसे हाई स्कूलों से आते हैं जो उन्हें पूरी तरह से अप्रस्तुत कर देते हैं। एक और चुनौती यह है कि अमेरिकी जनता, माता-पिता और शिक्षक, सेंट जॉन कॉलेज द्वारा अमेरिकी शिक्षा के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना करने में असमर्थ हैं।

कुछ नेताओं के बयानों और कार्यक्रमों के बावजूद, आज अमेरिकी शिक्षा की यही दयनीय स्थिति है।

राष्ट्रपति बटलर ने अपनी वार्षिक रिपोर्टों और अन्य जगहों पर, अच्छे लेखन और पठन में प्रकट होने वाले बौद्धिक अनुशासनों के प्राथमिक महत्व के बारे में स्पष्ट रूप से लिखा है। उन्होंने ज्ञान की परंपरा के बारे में सच्चाई को एक ही पैराग्राफ में सारांशित किया है:

केवल विद्वान ही यह समझ सकते हैं कि आधुनिक जगत में जो कुछ कहा और सोचा जा रहा है, उसमें नयापन कितना कम है। यूनानियों, रोमनों और मध्य युग के महान विचारकों की यह विशाल उपलब्धि थी कि उन्होंने मानव स्वभाव से जुड़ी लगभग हर समस्या की गहराई को समझा और मानवीय विचारों और आकांक्षाओं की अद्भुत गहनता और अंतर्दृष्टि से व्याख्या की। दुर्भाग्य से, ये गहरे तथ्य, जो एक सभ्य समाज के जीवन को निर्देशित करने चाहिए, केवल कुछ ही लोगों को ज्ञात हैं, जबकि अनेक लोग कभी एक प्राचीन और सुस्थापित असत्य को तो कभी एक पुराने और सुस्थापित सत्य को इस प्रकार अपनाते हैं मानो दोनों में नवीनता का आकर्षण हो।

यदि विद्यालय और महाविद्यालय उन्हें पढ़ना सिखाते और उनकी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा बनने वाली पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करते, तो अनेकों लोग दुर्भाग्यशाली नहीं होते। परन्तु कोलंबिया या हार्वर्ड, प्रिंसटन, येल या कैलिफोर्निया में ऐसा नहीं हो रहा है, निश्चित रूप से किसी भी हद तक नहीं। डॉ. बटलर से अधिक इस विषय पर कोई बात नहीं करता, जिन्होंने उदार शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए महाविद्यालय पाठ्यक्रम में सुधार की अपनी योजना में निःसंदेह स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख किया है।

क्यों? इसके कई कारण हैं, जिनमें से कुछ जाने-माने कारण हैं जैसे निहित स्वार्थों की जड़ता; अधिकांश कॉलेज शिक्षकों का सामान्य या उदार शिक्षा के बजाय किसी विशिष्ट शोध क्षेत्र में दक्षता पर ध्यान देना; और वैज्ञानिक पद्धति और उसके नवीनतम निष्कर्षों का अत्यधिक महिमामंडन। लेकिन एक और कारण निश्चित रूप से पढ़ने के इस पूरे मामले के प्रति सामान्य उदासीनता है, एक ऐसी उदासीनता जो मेरे विचार से इसमें शामिल विषय की समझ की कमी से उत्पन्न होती है। मैंने अक्सर सोचा है कि क्या स्थिति तब तक बदल सकती है जब तक संकाय स्वयं महान पुस्तकों को पढ़ना न सीख लें और उन्हें पढ़ न लें— केवल उन कुछ पुस्तकों को नहीं जो उनके अपने अकादमिक क्षेत्र से संबंधित हैं, बल्कि उन सभी को।

- 7 -

मैंने जिस स्थिति का वर्णन किया है, वह न केवल स्कूल में बल्कि स्कूल के बाहर भी मौजूद है। जनता शिक्षा के लिए भुगतान कर रही है; उसे जो मिल रहा है उससे संतुष्ट होना ही चाहिए। जनता के विरोध न करने का एकमात्र कारण या तो यह हो सकता है कि या तो उन्हें परवाह नहीं है या वे वास्तव में यह नहीं समझते कि क्या गलत है। मैं पहले कारण पर विश्वास नहीं कर सकता। यह दूसरा कारण ही होना चाहिए। शिक्षा प्रणाली और जिस संस्कृति में यह मौजूद है, वे एक दूसरे को बढ़ावा देते हैं।

यहां भी एक दुष्चक्र चल रहा है। शायद इसे वयस्क शिक्षा के माध्यम से तोड़ा जा सकता है, वयस्कों को उन स्कूलों की कमियों से अवगत कराकर जिनमें वे स्वयं पढ़े हैं और जिनमें वे अब अपने बच्चों को भेज रहे हैं। सबसे पहले उन्हें यह समझाना होगा कि उदार शिक्षा का अर्थ क्या हो सकता है, जैसे पढ़ने-लिखने का कौशल और पढ़ने योग्य पुस्तकों से मिलने वाला लाभ। मैं शिक्षा क्षेत्र में अपने कुछ सहयोगियों से बात करने के बजाय उनकी उदासीनता को दूर करने का प्रयास करना चाहूंगा।

यह निर्विवाद है कि आम जनता भी पढ़ने के प्रति उदासीन है। आप यह जानते हैं, और आपको बताने की आवश्यकता नहीं है। प्रकाशक भी यह बात जानते हैं। प्रकाशकों की आपके बारे में, यानी आम जनता के बारे में, और उनके व्यवसाय के बारे में की गई बातचीत को सुनना शायद आपके लिए रुचिकर हो। यहाँ एक प्रकाशक अपने साप्ताहिक व्यापारिक पत्रिका में अपने साथी प्रकाशकों को संबोधित कर रहे हैं।

वे यह कहकर शुरुआत करते हैं कि "कॉलेज से स्नातक करने वाले जो पढ़ना नहीं जानते, वे अमेरिकी शिक्षा पद्धतियों पर एक बड़ा आरोप हैं, और देश के प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं के लिए एक निरंतर चुनौती हैं। बड़ी संख्या में कॉलेज शिक्षक पढ़ना जानते हैं, लेकिन ऐसे भी बहुत से शिक्षक हैं जिनकी पढ़ने के प्रति तीव्र उदासीनता को एक व्यावसायिक बीमारी के रूप में वर्णित किया जा सकता है।"

उन्हें समस्या की जड़ पता है: "छात्रों को ऐसे शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है जो स्वयं उसी शैक्षिक प्रक्रिया के शिकार हैं, और जो खुले तौर पर या अवचेतन रूप से अरुचि रखते हैं और नीरस पठन से घृणा करते हैं... स्नातक होने के बाद जीवन भर सीखने और पढ़ने की आशा रखने वाले, निरंतर शिक्षा के लिए उत्सुक उम्मीदवार के रूप में आगे आने के बजाय, हमें एक अपरिपक्व स्नातक मिलता है, जो मुश्किल से वयस्क होता है और शिक्षा से ऐसे दूर भागता है जैसे वह कोई बीमारी हो।"

वह प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं से राष्ट्र को पुस्तकों की ओर वापस लाने में अपना योगदान देने का आह्वान करते हैं और इस प्रकार निष्कर्ष निकालते हैं:

अगर इस देश के पाँच मिलियन कॉलेज स्नातकों ने अपना पुस्तक पढ़ने का समय मात्र दस प्रतिशत भी बढ़ा दिया, तो इसके परिणाम बेहद प्रभावशाली होंगे। अगर लोग नियमित रूप से अपनी बौद्धिक ऊर्जा को उसी तरह बढ़ाते रहें, जैसे वे हर हज़ार मील पर गाड़ी का तेल बदलते हैं या घिसे-पिटे ताश के पत्तों को बदलते हैं, तो शायद हमारे गणतंत्र में ज्ञान का पुनर्जन्म हो जाए... लेकिन अभी तो हम स्पष्ट रूप से पुस्तक पढ़ने वाला देश नहीं हैं। हम पत्रिकाओं में डूबे रहते हैं और फिल्मों में खो जाते हैं...

लोग कभी-कभी 'द आउटलाइन ऑफ हिस्ट्री', 'द स्टोरी ऑफ फिलॉसफी', 'द आर्ट ऑफ थिंकिंग' या 'वैन लून की ज्योग्राफी' जैसी शानदार बेस्टसेलर किताबों पर आश्चर्य जताते हैं—ये किताबें लाखों में बिकती हैं और कभी-कभी तो करोड़ों पाठकों तक पहुंच जाती हैं। मेरा कहना है, "काफी नहीं!" मैं जनगणना के आंकड़ों को देखता हूं और अधिकांश कॉलेज के छात्रों की बौद्धिक उदासीनता को देखकर कहता हूं, "देखो, स्नातक होने के बाद पढ़ना शुरू करते हैं!" मैं वाल्टर बी. पिटकिन की दीक्षांत समारोह के दिन दी गई सलाह की सराहना करता हूं। "अपनी किताबें बेचकर डिप्लोमा अपने पास मत रखो। अगर कोई उन्हें खरीदे तो अपना डिप्लोमा बेच दो और किताबें अपने पास रखो।"

संक्षेप में कहें तो, बहुत से पुरुष और महिलाएं अपनी कॉलेज की डिग्री को बौद्धिक रूप से एक ही ढर्रे पर चलने के लिए एक आधिकारिक लाइसेंस के रूप में इस्तेमाल करते हैं, एक सामाजिक स्वीकृति के रूप में जो उन्हें अपने विचार सोचने और अपनी किताबें खरीदने से छूट देती है।

एक अन्य प्रकाशक का कहना है, "लाखों लोग जो पढ़ सकते हैं और अखबार और पत्रिकाएँ पढ़ते हैं, वे कभी किताबें नहीं पढ़ते।" उनका मानना है कि अगर किताबों को पत्रिका लेखों की तरह थोड़ा और सरल बनाया जाए—यानी संक्षिप्त, सरल और पढ़ने के दौरान दौड़ने वालों के लिए उपयुक्त—तो शायद उन्हें किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके। इस परियोजना को 'पीपुल्स लाइब्रेरी' नाम दिया गया है और इसे "गंभीर पुस्तकों के पठन को बढ़ावा देने का एक वैज्ञानिक प्रयास" बताया गया है।

मुझे लगता है कि यह अपने घोषित उद्देश्य को ही विफल कर देता है। आप लोगों के स्तर तक गिरकर उन्हें ऊपर नहीं उठा सकते। अगर वे आपको उस स्तर तक गिराने में सफल हो जाते हैं, तो वे आपको वहीं रोके रखेंगे, क्योंकि आपको नीचे रखना उनके ऊपर उठने से कहीं ज्यादा आसान है।

किताबों को किताबों जैसा कम बनाकर नहीं, बल्कि लोगों को पाठकों जैसा बेहतर बनाकर ही बदलाव लाया जा सकता है। 'पीपल्स लाइब्रेरी' के पीछे की योजना उन समस्याओं के कारणों को लेकर उतनी ही अंधी है, जिन्हें इसके प्रायोजक ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं, जितनी कि हार्वर्ड के वे लोग जो अंधाधुंध ट्यूशन स्कूलों की शिकायत करते हैं, यह समझे बिना कि इस बुराई का निवारण हार्वर्ड की शिक्षा को उस स्तर से ऊपर उठाना है जहाँ ट्यूशन स्कूल शिक्षकों की तुलना में छात्रों को परीक्षा के लिए अधिक कुशलता से तैयार कर सकें।

प्रकाशकों को महान पुस्तकों के पठन की उतनी चिंता नहीं होती जितनी उन अच्छी नई पुस्तकों की होती है जिन्हें वे प्रकाशित करना चाहते हैं, बशर्ते उन्हें उनके पाठक मिल जाएं। लेकिन वे जानते हैं—या यदि नहीं जानते, तो उन्हें जानना चाहिए—कि ये दोनों बातें आपस में जुड़ी हुई हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए पढ़ने की क्षमता, और परिणामस्वरूप ऐसा करने की इच्छा, किसी भी गंभीर पठन की अनिवार्य शर्त है। हो सकता है कि यह कारण-कार्य संबंध दोनों ही दिशाओं में काम करे।

अच्छी और समकालीन पुस्तकों से शुरुआत करके, पाठक महान पुस्तकों की ओर अग्रसर हो सकता है, या इसके विपरीत भी हो सकता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि जो पाठक एक काम करेगा, वह अंततः दूसरा काम भी करेगा। मेरा अनुमान है कि ऐसा होने की संभावना तब अधिक होती है जब उसने कभी किसी महान पुस्तक को पूरी तरह से पढ़ा हो और विषय पर अपनी महारत का आनंद लेने के लिए पर्याप्त कौशल का प्रयोग किया हो।

- 8 -

यह एक लंबा विलाप रहा है। देश की स्थिति को लेकर बहुत रोना-धोना और निराशा व्यक्त की गई है। हो सकता है कि आपको ये शब्द पसंद न हों, इसलिए आप "नए समझौते" से निराश हों, या शायद आप उस निराशावादी किस्म के व्यक्ति हों जो कहते हैं, "ऐसा हमेशा से होता आया है।" इस दूसरे बिंदु पर मैं असहमत हूँ। यूरोपीय इतिहास में ऐसे भी समय रहे हैं जब पढ़ने-लिखने का स्तर आज की तुलना में कहीं अधिक था।

xxxxxx xx xxx, xxxx xxx xx xxxxxxxxx xxx xxx xxx xx xx xx xx xxxxxxxxxxx xxxxxx xx xx xxxxx xxx xxxx xxx xxxx, xx xx xx xx xx xxx xxxxx xxxx xxxxx xx xxxxxx xx xx, xxxx xxx xxxxx xx xxx xxxxxxx xx xx xxx, xx xx xxxxx xx xxxxx xx xxx xxx xxxxx xx xxxx xxxx xxxx xxxxxx xxx xxx xx, xxxxx xxx xx xx xx xxxxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxxx xx, xxxx xx xx xxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xxxx xx xxxxx xx xxxx xx xx xx xxxx xx xxxxxx xx xxxx xxxxxx x xxxx xxx xxxxx xx xxxxxx, xxxxx, xx xxxxxx; xxxxxx xx xxxxx; xxxxxx xx xxxxx; xx xxxxxxxxx xx xxxxx xx xxxx xxx xx xx xx, xxxxxxxx xxxxx xx xxx xx xx xxxx xx xxxxxx xxxx xx xxxx xxxx xx xxxx xxx xxx xxxx xxxxxxx

xxxx xxxx xxx xx xxxx xxx xxxx xxx xxxxxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxx xx xx xxx xxxx xxxxx xxxxxxxxxx xxxxxxxxxxx xx xxxxxxxxxx, xxxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxx, xxxx xxx xx xxxxxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxxxxx xx xxxxxxxxx xxx xxxx xxxx xx xxxx xxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxxxxx xx xxxxxxxxxxxxx xxx xxxx xxxxxx xxx, xxx xxxx xx xxxxxxx xx xxxx xxx xx xxxxx xxx xx xxxx xxx xx xxx xx xxxx xx, xxxx xxxxxxx xxx xxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xx xxxxxxx xxxx xxx xx xxxx xxx xxxxx xx xxx xxx, xx xxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxxx xxx xxxx xxxxx xx xxxxxxxxx xxxxxx xx xxxx xxxxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxx xxx

xxxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxx, xxxxxxx xxx xxx xx xxxxxx xxxxxxxxxx xx xxxxxx xxx xxxx xxx xx xxx xxxxxxxxx xx xx xxx xxx xx xx xx xxx xx xxx xx xxx xxxxxxx xxxx xx xxx xx xxxx xx xx xx xxx xx, xxxx, xxxx xxxxxx xxx xxxx xx xxxx xxxx xxxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxxx xxxx xx xxxx xxx, xxxxx xxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxx xxx xxxxx xx xxx xxxx xxx xx, xxx xxxxxxxxxx xxx xxxx xx xxx xx xxx xxxxx xx xxx xx, xxxxxxxxx xxx xxx xx xxxxxxxxx xxxxx xx xxx, xx xxxx xxxx xxx xxxxxxxx xx xxxxx

xxxxx xx xxxxxx xx xx xxxxxxxxxxx xxx xxx xx xxx xxxx xx xxxxxxx xxxxxx xx xx xxxx xx xxx xxxxx-xxxx xxx xxxx, xxxx xxxx xx xxx xxx xxxxx xxx xxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxx xx, xx xxxx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxxxxxxx xxxxxxxxxxx xxx xxxxxxxx xxxxxxxx xx xxx xxxxxxxx xx xxxx xxxx xxxx xxxx xxxxx xxxxx xx xxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xxx

xxxxxxx xx xxxxx xxxx xxx xx xxxxxxxxx xx xxxx xx xxxx, xxx xx xxxxxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxx, xxxxxxx xx xxxx xx xxx xxxxxxxx xx xx xxx xxx xx xx xxxxx xxx xx xxxxxxxxx xxxx xxxxxxx xxxx xxx xxxx xx xxxxxxxxxxxx xx xx xxxx xx xxxx xxx xx xxxxxx xx xxxxx, xxx xx xxxxx xxx, xxxx xxxxxx xxxxxxx xxxxxxx xx, xxxx xx xx xxx xxxxx xxxxxx xxxx xxx xxxxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxxx xxxx xxxx xxx xxxxx-xxxxx xxxxx xxx

हालांकि हमने सार्वजनिक शिक्षा को अठारहवीं शताब्दी की तुलना में अधिक व्यापक बनाने के लिए उचित प्रयास किए हैं, लेकिन शिक्षा को अधिक सार्वभौमिक बनाने के साथ-साथ उसकी उदारता को कम नहीं करना चाहिए। जनसंख्या के हर स्तर पर और हर वर्ग के लिए, उसी प्रकार की शिक्षा—अनुशासन के माध्यम से स्वतंत्रता—जिसने इस देश में लोकतंत्र को जड़ जमाने में सक्षम बनाया, उसे पुनः प्राप्त करना होगा यदि आज दुनिया भर में हिंसा की हवाओं से इसके विकास की रक्षा करनी है।

जॉन एडम्स और थॉमस जेफरसन, हैमिल्टन, मैडिसन और जे के लेखन को पढ़कर ही आप जान सकते हैं कि वे आज के हम या हमारे नेताओं से कहीं बेहतर पढ़-लिख सकते थे। औपनिवेशिक कॉलेजों के पाठ्यक्रम को देखें तो आपको पता चल जाएगा कि ऐसा कैसे हुआ। आपको पता चलेगा कि एक समय इस देश में उदार शिक्षा दी जाती थी। यह सच है कि सभी को यह उदार शिक्षा नहीं मिली। लोकतंत्र उस स्तर तक परिपक्व नहीं हुआ था कि व्यापक जन शिक्षा संभव हो सके।

आज भी यह सच हो सकता है कि आबादी के एक हिस्से को व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जबकि दूसरे हिस्से को उदार शिक्षा की। क्योंकि एक लोकतंत्र में भी नेताओं की आवश्यकता होती है, और उसकी सुरक्षा उनकी योग्यता, उनके उदारवाद पर निर्भर करती है। यदि हम ऐसे नेता नहीं चाहते जो अपने रक्त से सोचने का दावा करते हैं, तो बेहतर होगा कि हम उन लोगों को शिक्षित करें और उससे भी बढ़कर, उनके प्रति सम्मान की भावना विकसित करें जो अनुशासन से मुक्त अपने मस्तिष्क से सोच सकते हैं।

एक और बात। आज उदारवादी शिक्षाविदों के बीच, जो फासीवाद के उदय से भयभीत हैं, अनुशासन और विचारधारा थोपने के खतरों के बारे में बहुत चर्चा हो रही है। मैंने पहले ही बताया है कि उनमें से कई लोग अनुशासन को प्रशियाई अभ्यास और मार्चिंग स्टेप से जोड़कर देखते हैं।

वे अधिकार को, जो कि तर्क की आवाज़ के अलावा कुछ नहीं है, निरंकुशता या अत्याचार समझ बैठते हैं। लेकिन विचारधारा थोपने के बारे में उनकी सबसे बड़ी गलती यही है। वे और हममें से अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि आज्ञाकारिता क्या होती है।

विनम्र होना सीखने की क्षमता का प्रमाण है। सीखने की क्षमता के लिए सीखने की कला का ज्ञान होना और उसका सक्रिय अभ्यास करना आवश्यक है। शिक्षक, चाहे जीवित हो या मृत, से सीखने में व्यक्ति जितना अधिक सक्रिय होता है और जो कुछ वह सिखाता है उसे सीखने में जितनी अधिक कुशलता का प्रयोग करता है, व्यक्ति उतना ही विनम्र होता है।

संक्षेप में, आज्ञाकारिता निष्क्रियता और भोलेपन का ठीक विपरीत है। जिन लोगों में आज्ञाकारिता की कमी होती है—जैसे कक्षा में सो जाने वाले छात्र — उन पर विचारधारा थोपे जाने की संभावना सबसे अधिक होती है। सीखने की कला, चाहे वह सुनने का कौशल हो या पढ़ने का, न होने के कारण वे यह नहीं जानते कि उन्हें जो बताया जा रहा है उसे ग्रहण करने में सक्रिय कैसे रहें।

इसलिए, या तो उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता है या जो कुछ भी प्राप्त होता है उसे वे बिना सोचे-समझे स्वीकार कर लेते हैं।

शुरुआत में तीन अंकों (रीडिंग, राइटिंग, अरिथमेटिक) की उपेक्षा करने और अंत में उदार कलाओं को लगभग पूरी तरह से नज़रअंदाज़ करने के कारण, हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली मूलतः अनुदार है। यह अनुशासन और शिक्षा देने के बजाय विचारधारा थोपती है। हमारे छात्रों को हर तरह के स्थानीय पूर्वाग्रहों और रटी-रटाई बातों से भर दिया जाता है। उन्हें इतना मोटा और कमज़ोर बना दिया गया है कि लोकलुभावन नेता उन पर हमला कर सकें। दिखावटी सत्ता, जो कि केवल जनमत का दबाव है, के प्रति उनका प्रतिरोध कमज़ोर हो गया है। वे कुछ स्थानीय समाचार पत्रों की सुर्खियों में फैले कपटपूर्ण प्रचार को भी आसानी से मान लेते हैं।

भले ही उनके द्वारा थोपे गए सिद्धांत सही लोकतांत्रिक हों, फिर भी ये स्कूल अनुशासन का त्याग करने के कारण स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में विफल रहते हैं। वे अपने छात्रों को अधिक प्रभावशाली वक्ताओं द्वारा विपरीत विचारधाराओं से प्रभावित होने या इससे भी बदतर, अपनी ही बुरी भावनाओं के प्रभाव में आने के लिए खुला छोड़ देते हैं।

हमारी शिक्षा लोकतांत्रिक नहीं बल्कि लोकलुभावनवाद पर आधारित है। जो विद्यार्थी आलोचनात्मक चिंतन करना नहीं सीख पाया है, जिसने मानवीय सामान्यीकरणों में सत्य के एकमात्र निर्णायक के रूप में तर्क का सम्मान करना नहीं सीखा है, जो स्थानीय बोलचाल और रूढ़ियों के अंधमार्गों से बाहर नहीं निकल पाया है, उसे कक्षा का वक्ता बाद में मंच और प्रेस के वक्ताओं के प्रभाव में आने से नहीं बचा पाएगा।

उद्धार पाने के लिए, हमें कॉमन प्रेयर बुक के इस सिद्धांत का पालन करना चाहिए: "पढ़ो, ध्यान दो, सीखो और मन में आत्मसात करो।"

अध्याय छह

स्वयं सहायता पर

- 1 -

अब मेरे सारे पत्ते खुल चुके हैं। अब आप जान गए होंगे कि लोगों को पढ़ना सिखाने के उद्देश्य से लिखी गई इस किताब को लिखने के पीछे मेरा एक छिपा हुआ मकसद है। सालों से मैंने उस दुष्चक्र को देखा है जो चीजों को यथास्थिति में बनाए रखता है और सोचा है कि इसे कैसे तोड़ा जा सकता है। यह असंभव सा लगता था। आज के शिक्षकों को कल के शिक्षकों ने पढ़ाया है, और वे आने वाली पीढ़ियों को पढ़ाते हैं। आज की जनता ने कल और आज के स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की है; उनसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे कल स्कूलों में बदलाव की मांग करें। उनसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे मांग करें, जब तक कि वे अपने अनुभव से वास्तविक शिक्षा और वर्तमान धोखे के बीच का अंतर अच्छी तरह से न जान लें। इसी "अगर" ने मुझे संकेत दिया। क्यों न इसे लोगों के अनुभव का

विषय बनाया जाए, बजाय इसके कि उन्हें सुनी-सुनाई बातों और विशेषज्ञों के बीच की तमाम बहसों पर निर्भर रहना पड़े।

ऐसा हो सकता है। अगर किसी तरह स्कूल के बाहर और उसके बाद, लोगों को वह शिक्षा मिल जाए जो उन्हें स्कूल में नहीं मिली, तो शायद वे स्कूल व्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए प्रेरित हों, जैसा कि वे अभी नहीं हैं। और अगर वे पढ़-लिख सकें, तो उन्हें वह शिक्षा मिल सकती है जो उन्हें नहीं मिली। क्या आप इस तर्क को समझ रहे हैं? यह दुष्चक्र तब टूट जाएगा जब आम जनता स्कूलों और कॉलेजों के औसत छात्रों से बेहतर शिक्षित होगी। यह उस बिंदु पर टूटेगा जहां वे खुद जान पाएंगे कि वे अपने बच्चों को किस तरह की साक्षरता दिलाना चाहते हैं। शिक्षकों द्वारा फैलाई जाने वाली तमाम भ्रामक बातें उन्हें इस विचार से नहीं रोक सकतीं।

जो व्यक्ति स्वयं प्रयास करने को तैयार नहीं है, उसे पढ़ना या कोई अन्य कौशल सिखाना असंभव है। मेरी या मेरे जैसे किसी भी व्यक्ति की सहायता अपर्याप्त है। यह अधिक से अधिक दूरस्थ मार्गदर्शन मात्र है। इसमें नियम, उदाहरण और हर प्रकार की सलाह शामिल है। लेकिन आपको सलाह मानने और नियमों का पालन करने के लिए तैयार रहना होगा। आप स्वयं जितना आगे बढ़ेंगे, उतना ही आगे बढ़ पाएंगे। इसलिए, मेरी यह शातिर योजना शुरुआती चरणों में आपके सहयोग के बिना सफल नहीं होगी। एक बार जब आप पढ़ना शुरू कर देंगे, तो मैं प्रकृति को अपना काम करने दूंगा और अंतिम परिणाम के बारे में काफी आश्वस्त रहूंगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि जिस किसी ने भी श्री हचिन्स जिस प्रकार की शिक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं और सेंट जॉन विश्वविद्यालय जिस प्रकार की शिक्षा प्रदान करने का प्रयास कर रहा है, उसका थोड़ा सा भी अनुभव किया है, वह दूसरों के लिए भी यही चाहेगा। निश्चित रूप से, वह अपने बच्चों के लिए तो यही चाहेगा। यह विरोधाभासी नहीं है कि इस कार्यक्रम का सबसे कड़ा विरोध उन पेशेवर शिक्षकों की ओर से आ रहा है, जिनका अपने जीवन में इस प्रकार की शिक्षा से सबसे कम संबंध रहा है।

केवल शैक्षिक सुधार ही दांव पर नहीं है। लोकतंत्र और वे उदार संस्थाएँ जिन्हें हमने इस देश की स्थापना के बाद से संजोकर रखा है, वे भी खतरे में हैं। जब श्रीमान...

वाल्टर लिपमैन ने जब गणतंत्र के संस्थापक पिताओं की शिक्षा पर लिखी एक पुस्तक देखी, तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि "आधुनिक दुनिया का निर्माण करने वाले लोगों को इस पुराने तरीके से शिक्षित किया गया था।" यह पुराना तरीका पढ़ने-लिखने की कलाओं का तरीका है, महान ग्रंथों को पढ़ने का तरीका है।

हार्वर्ड से बहुत ही सराहनीय अंकों के साथ स्नातक होने वाले श्री लिपमैन ने अपने आश्चर्य का कारण इस तथ्य को बताया कि उन्होंने स्वाभाविक रूप से, अपनी पीढ़ी के मानकों को कभी चुनौती नहीं दी थी।

हालांकि, उनके पक्ष में यह कहना जरूरी है कि हार्वर्ड छोड़ने के बाद से उन्होंने बहुत सी किताबें पढ़ी हैं। इसका उनकी अंतर्दृष्टि पर कुछ प्रभाव पड़ता है।

मुझे यह सोचना शुरू हुआ कि शायद यह बहुत महत्वपूर्ण है कि इतने शिक्षित पुरुषों ने हमारी स्वतंत्रता की नींव रखी, और हम जो इतने शिक्षित नहीं हैं, अपनी स्वतंत्रता का कुप्रबंधन कर रहे हैं और उन्हें खोने के खतरे में हैं।

धीरे-धीरे मुझे यह विश्वास होने लगा है कि यह तथ्य हमारे युग की पहेली का मुख्य सुराग है, और मनुष्य स्वतंत्र होना बंद कर रहे हैं क्योंकि उन्हें अब स्वतंत्र मनुष्यों की कलाओं में शिक्षित नहीं किया जा रहा है।

क्या अब आप समझ रहे हैं कि मुझे क्यों लगता है कि पढ़ने में इतना विस्फोटक तत्व है, जो न केवल स्कूली व्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए पर्याप्त है, बल्कि हमारी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए शस्त्रागार प्रदान करने के लिए भी पर्याप्त है?

- 2 -

मैंने आत्म-सहायता के बारे में बात करने से पहले कुछ समय तक संकोच किया है। वास्तव में, मैंने इस पुस्तक को लिखने से पहले भी कुछ समय तक संकोच किया है, क्योंकि आत्म-सहायता पुस्तकों के प्रति मेरे मन में शायद एक अतार्किक पूर्वाग्रह है। वे मुझे हमेशा पेटेंट दवाओं के विज्ञापनों की तरह लगती हैं। बस आप इसे या उसे थोड़ी-थोड़ी मात्रा में नियमित रूप से लें, और आप अपनी सभी बीमारियों से ठीक हो जाएंगे। दुनिया बच जाएगी। इसका मतलब है आप। सब कुछ आप पर निर्भर करता है। अपनी अकादमिक शांति में, मैं कभी ऐसी तुच्छ बातों से ऊपर और अलग था। जब आप अपने विद्वान साथियों के लिए लिखते हैं, तो आप ऐसी अपील नहीं करते, शायद इसलिए कि आप उनसे स्वयं की सहायता करने की अपेक्षा कभी नहीं कर सकते।

दो बातों ने मुझे उस मीनार से नीचे उतार दिया। पहली बात तो यह है कि ऊपर भले ही शांति हो, लेकिन जब आपकी आँखें उस शांति को बनाए रखने वाले छल और भ्रम को जान लेती हैं, तो वह सन्नाटा किसी पागलखाने की खामोशी जैसा लगने लगता है। दूसरी बात यह है कि मैंने वयस्क शिक्षा के फल देख लिए हैं। यह संभव है।

और वयस्क शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाला हर व्यक्ति जानता है कि उसे स्वयं सहायता के लिए अपील करनी होगी।

वयस्कों को काम पर लगाए रखने के लिए कोई निगरानीकर्ता नहीं हैं। कोई परीक्षा या ग्रेड नहीं हैं, बाहरी अनुशासन की कोई व्यवस्था नहीं है। जो व्यक्ति स्कूल के बाहर कुछ सीखता है, वह स्व-अनुशासित होता है। वह अपनी

नज़र में योग्यता के लिए काम करता है, न कि रजिस्ट्रार से प्रशंसा पाने के लिए।

ईमानदारी बनाए रखने के लिए मैं केवल एक सावधानी जोड़ना चाहूंगा। वे स्व-सहायता पुस्तकें जो अपनी क्षमता से अधिक का वादा करती हैं, वे फर्जी हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, कोई भी पुस्तक आपको किसी कौशल को सीखने में उतनी कुशलता से मार्गदर्शन नहीं कर सकती जितना कि एक शिक्षक या प्रशिक्षक जो आपका हाथ पकड़कर आपको सही प्रक्रिया समझाता है।

अब मैं सरल और संक्षेप में उन स्थितियों को बताता हूँ जिनके तहत आप प्रभावी रूप से अपनी सहायता कर सकते हैं। कोई भी कला या कौशल उन्हीं के पास होता है जो उसके नियमों के अनुसार कार्य करने की आदत बना लेते हैं। वास्तव में, किसी भी क्षेत्र में कलाकार या शिल्पकार उन लोगों से इस प्रकार भिन्न होता है जिनमें उसका कौशल नहीं होता। उसके पास वह आदत होती है जो उनमें नहीं होती। आप जानते हैं कि यहाँ मेरा मतलब आदत से क्या है। मेरा मतलब नशे की लत से नहीं है। गोल्फ या टेनिस खेलने का आपका कौशल, कार चलाने या सूप पकाने की आपकी तकनीक, एक आदत है। आपने इसे उन कार्यों को करके प्राप्त किया है जो पूरी प्रक्रिया का हिस्सा हैं।

किसी कार्य को करने की आदत बनाने का एकमात्र तरीका उसे करना ही है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति करके ही सीखता है। आदत बनने से पहले और बाद में आपकी गतिविधि में अंतर उसकी दक्षता और तत्परता में होता है। आप वही काम पहले की तुलना में कहीं बेहतर तरीके से कर सकते हैं। इसका अर्थ है कि अभ्यास से ही निपुणता आती है। जो काम आप पहले बहुत अपूर्णता से करते हैं, धीरे-धीरे आप उसे लगभग स्वतःस्फूर्त पूर्णता के साथ करने लगते हैं, जैसे कि सहज क्रिया में होता है। आप कोई काम ऐसे करते हैं मानो वह जन्मजात गुण हो, मानो वह क्रिया आपके लिए चलने या खाने जितनी ही स्वाभाविक हो। इसका अर्थ है कि आदत हमारी दूसरी प्रकृति बन जाती है।

एक बात स्पष्ट है। किसी कला के नियमों को जानना और उस कला को करने की आदत होना एक ही बात नहीं है। जब हम किसी व्यक्ति को किसी भी कला में कुशल कहते हैं, तो हमारा मतलब यह नहीं होता कि वह किसी काम को करने के नियमों को जानता है, बल्कि यह कि उसे उस काम को करने की आदत है। बेशक, यह सच है कि नियमों को, कमोबेश स्पष्ट रूप से, जानना कौशल प्राप्त करने की एक शर्त है। आप उन नियमों का पालन नहीं कर सकते जिन्हें आप नहीं जानते। न ही आप किसी कलात्मक आदत—किसी भी शिल्प या कौशल—को हासिल कर सकते हैं।

नियमों का पालन किए बिना। कला, जिसे सिखाया जा सकता है, में पालन किए जाने वाले नियम शामिल होते हैं। कला, जिसे सीखा और आत्मसात किया जा सकता है, में नियमों के अनुसार कार्य करने से उत्पन्न होने वाली आदत शामिल होती है।

कौशल हासिल करने के बारे में मैंने अब तक जो कुछ भी कहा है, वह सब पढ़ने की कला पर भी लागू होता है।

लेकिन पढ़ने और कुछ अन्य कौशलों में एक अंतर है। किसी भी कला को सीखने के लिए आपको उसके नियमों का ज्ञान होना चाहिए ताकि आप उनका पालन कर सकें।

लेकिन हर मामले में नियमों को समझना ज़रूरी नहीं है, या कम से कम समान स्तर पर नहीं। उदाहरण के लिए, कार चलाना सीखने में आपको नियम तो पता होने चाहिए, लेकिन आपको उन नियमों को सही ठहराने वाले ऑटोमोटिव मैकेनिक्स के सिद्धांतों को जानना ज़रूरी नहीं है। दूसरे शब्दों में, नियमों को समझना नियमों से कहीं अधिक जानना है। यह उन वैज्ञानिक सिद्धांतों को जानना है जो नियमों के आधार हैं। यदि आप अपनी कार को चलाने के साथ-साथ उसकी मरम्मत भी करना चाहते हैं, तो आपको उसके यांत्रिक सिद्धांतों को जानना होगा, और आप ड्राइविंग के नियमों को अधिकांश ड्राइवरों से बेहतर समझेंगे। यदि ड्राइविंग लाइसेंस परीक्षा में नियमों को समझना भी शामिल होता, तो ऑटोमोबाइल उद्योग को ऐसी मंदी का सामना करना पड़ता जो पिछली मंदी को भी उसके सामने उछाल जैसा बना देती।

पढ़ने और गाड़ी चलाने में यह अंतर इसलिए है क्योंकि पढ़ना बौद्धिक कला है, जबकि गाड़ी चलाना शारीरिक कला। बेशक, कला के सभी नियम मन को उस गतिविधि में संलग्न करते हैं जिसे वे नियंत्रित करते हैं; लेकिन यह गतिविधि मुख्य रूप से मन की गतिविधि नहीं हो सकती, जैसा कि पढ़ना है। पढ़ना, लिखना, वैज्ञानिक अनुसंधान और संगीत रचना, बौद्धिक कलाएँ हैं। इसीलिए इनके अभ्यासकर्ताओं के लिए न केवल नियमों को जानना बल्कि उन्हें समझना भी अधिक आवश्यक है।

यह अधिक आवश्यक है, लेकिन पूर्णतः अनिवार्य नहीं है। यह कहना अधिक सटीक होगा कि यह मात्रा का मामला है। यदि आप इस बौद्धिक क्रिया को बुद्धिमानी से करने की आदत डालना चाहते हैं, तो आपको पढ़ने के नियमों की कुछ समझ होनी चाहिए, लेकिन आपको उन्हें पूरी तरह से समझने की आवश्यकता नहीं है। यदि पूर्ण समझ ही आवश्यक होती, तो यह पुस्तक एक धोखा होती। पढ़ने के नियमों को पूरी तरह से समझने के लिए, आपको व्याकरण, अलंकारशास्त्र और तर्कशास्त्र के विज्ञानों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। जिस प्रकार वाहन यांत्रिकी का विज्ञान कार चलाने और मरम्मत करने के नियमों का आधार है, उसी प्रकार मैंने जिन उदार विज्ञानों का अभी उल्लेख किया है, वे उदार कला के उन नियमों का आधार हैं जो पढ़ने और लिखने जैसी चीजों को नियंत्रित करते हैं।

आपने शायद गौर किया होगा कि कभी-कभी मैं पढ़ने-लिखने की कलाओं को उदार कलाएँ कहता हूँ, और कभी-कभी मैं कहता हूँ कि उदार कलाएँ व्याकरण, अलंकारशास्त्र और तर्कशास्त्र हैं। पहले मामले में, मेरा तात्पर्य उन क्रियाओं से है जिन्हें नियम हमें कुशलतापूर्वक करने का निर्देश देते हैं; दूसरे मामले में, मेरा तात्पर्य उन नियमों से है जो ऐसी क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं।

इसके अलावा, यह तथ्य कि व्याकरण और तर्क को कभी विज्ञान और कभी कला माना जाता है, इसका अर्थ यह है कि कला द्वारा निर्धारित संचालन के नियमों को उन सिद्धांतों के माध्यम से समझा जा सकता है, जिन पर विज्ञान चर्चा करता है।

पढ़ने-लिखने के नियमों को समझने योग्य बनाने वाले विज्ञानों की व्याख्या करने के लिए इस पुस्तक से दस गुना लंबी पुस्तक की आवश्यकता होगी। यदि आप केवल नियमों को समझने और आदतें विकसित करने के उद्देश्य से विज्ञान का

अध्ययन शुरू करते हैं, तो हो सकता है कि आप कभी नियमों तक न पहुँच पाएँ या आदतें विकसित न कर पाएँ। यही कई तर्कशास्त्रियों और व्याकरणविदों के साथ होता है जिन्होंने अपना जीवन विज्ञान का अध्ययन करने में व्यतीत किया है। वे पढ़ना-लिखना नहीं सीखते। यही कारण है कि तर्कशास्त्र को एक विज्ञान के रूप में पढ़ाने वाले पाठ्यक्रम, भले ही वे सभी महाविद्यालय छात्रों के लिए अनिवार्य कर दिए जाएँ, भी कारगर नहीं होंगे। मैं कई ऐसे छात्रों से मिला हूँ जिन्होंने तर्कशास्त्र के विज्ञान के प्रति वर्षों का सच्चा समर्पण दिखाया है, फिर भी वे ठीक से पढ़-लिख नहीं पाते; वास्तव में, उन्हें इस कला के नियम भी नहीं पता थे, नियमों के अनुसार अच्छा प्रदर्शन करने की आदत तो दूर की बात है।

इस पहेली का हल यहाँ बताया गया है। हम नियमों से शुरुआत करेंगे—वे सिद्धांत जो अच्छी तरह पढ़ने के लिए आवश्यक कार्यों को सीधे और गहराई से नियंत्रित करते हैं। मैं संक्षिप्त चर्चा में नियमों को यथासंभव सरल शब्दों में समझाने का प्रयास करूँगा, लेकिन मैं वैज्ञानिक व्याकरण या तर्कशास्त्र की पेचीदगियों में नहीं जाऊँगा। इतना समझना ही पर्याप्त है कि नियमों के बारे में इस पुस्तक से जो आप सीख रहे हैं उससे कहीं अधिक जानने को है, और आप उनके मूल सिद्धांतों को जितना अधिक जानेंगे, उतना ही बेहतर ढंग से उन्हें समझ पाएंगे। शायद, यदि आप इस पुस्तक को पढ़कर पढ़ना सीख जाते हैं, तो आप बाद में व्याकरण, अलंकारशास्त्र और तर्कशास्त्र से संबंधित पुस्तकें भी पढ़ पाएंगे।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह एक कारगर प्रक्रिया है। सामान्यतः ऐसा न हो, लेकिन पढ़ने के मामले में तो ऐसा ही होना चाहिए। यदि आप शुरुआत में ही अच्छी तरह से पढ़ना नहीं जानते, तो आप व्याकरण और तर्कशास्त्र की वैज्ञानिक पुस्तकों से पढ़ना नहीं सीख सकते, क्योंकि आप उन्हें न तो पूरी तरह से समझ पाएंगे और न ही अपने लिए नियम बनाकर उनका व्यावहारिक उपयोग कर पाएंगे। इस पहलू को स्पष्ट करने से बेईमानी या दिखावे की एक और संभावना समाप्त हो जाती है। मैं हमेशा आपको यह बताने का प्रयास करूंगा कि यदि किसी नियम की मेरी व्याख्या सतही या अपर्याप्त है, क्योंकि कुछ व्याख्याएँ ऐसी होंगी ही।

मैं आपको एक और बात के प्रति आगाह करना चाहता हूँ। आप इसे पढ़कर पढ़ना नहीं सीख जाएँगे, ठीक वैसे ही जैसे आप ड्राइविंग मैनुअल पढ़कर गाड़ी चलाना नहीं सीख सकते। मुझे पूरा यकीन है कि आप अभ्यास की आवश्यकता को समझते हैं। आप शायद यह सोच रहे हों कि नियम जानते ही आप पढ़ना शुरू कर देंगे। अगर आप ऐसा सोचते हैं, तो आपको निराशा होगी। मैं ऐसा होने से रोकना चाहता हूँ क्योंकि ऐसी निराशाएँ आपको हताशा में इस पूरे प्रयास को छोड़ने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

नियमों की सूची एक हाथ में और पढ़ने के लिए किताब दूसरे हाथ में लेकर, तुरंत ही ऐसा करने की कोशिश न करें जैसे कि आप उस कौशल में अभ्यस्त हों। यह आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए उतना ही खतरनाक होगा जितना कि पहली बार कार

में बैठना, एक हाथ में स्टीयरिंग व्हील और दूसरे हाथ में ड्राइविंग मैनुअल लेकर, आपके शारीरिक स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होगा। दोनों ही मामलों में, जो क्रिया पहले अटपटी, अव्यवस्थित, थकाऊ और दर्दनाक लगती है, वह कई घंटों के अभ्यास के बाद ही सहज, सरल और सुखद बन जाती है। यदि पहली बार में सफलता न मिले, तो अभ्यास के लाभ आपको फिर से प्रयास करने के लिए प्रेरित करेंगे। श्री आरोन कोपलैंड ने हाल ही में संगीत में क्या सुनना चाहिए, इस पर एक पुस्तक लिखी है। इसके शुरुआती अनुच्छेद में उन्होंने लिखा है:

संगीत को समझने पर लिखी गई सभी पुस्तकें एक बात पर सहमत हैं: केवल पुस्तक पढ़कर आप संगीत कला की बेहतर समझ विकसित नहीं कर सकते। यदि आप संगीत को बेहतर ढंग से समझना चाहते हैं, तो उसे सुनने से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। संगीत सुनने का कोई विकल्प नहीं है। इस पुस्तक में मैंने जो कुछ भी कहा है, वह एक ऐसे अनुभव के बारे में है जो आपको केवल इस पुस्तक के बाहर ही मिल सकता है।

इसलिए, अगर आप पहले से कहीं ज़्यादा संगीत सुनने का पक्का इरादा नहीं करते हैं, तो इसे पढ़ने में आपका समय शायद व्यर्थ ही जाएगा। हम सभी, चाहे पेशेवर हों या गैर-पेशेवर, कला की अपनी समझ को गहरा करने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं। किताब पढ़ना कभी-कभी मददगार साबित हो सकता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात—संगीत को सुनना—की कोई बराबरी नहीं कर सकता।

"संगीत" शब्द के स्थान पर "पुस्तकें" और "सुनना" के स्थान पर "पढ़ना" शब्द का प्रयोग करें, और आपको उन नियमों के उपयोग के बारे में पहली और आखिरी सलाह मिल जाएगी जिन पर मैं चर्चा करने जा रहा हूँ। नियमों को सीखना मददगार हो सकता है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात, यानी पुस्तकें पढ़ना, का कोई विकल्प नहीं है।

आप पूछ सकते हैं: मुझे कैसे पता चलेगा कि पढ़ते समय मैं वास्तव में नियमों का पालन कर रहा हूँ?

मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं निष्क्रिय और लापरवाह पठन की आदत से बाहर निकलने के लिए वाकई सही मात्रा में प्रयास कर रहा हूँ? वे कौन से संकेत हैं जो बताते हैं कि मैं अधिक समझदारी से पढ़ने की दिशा में प्रगति कर रहा हूँ?

ऐसे सवालों के जवाब देने के कई तरीके हैं। एक तो, आपको यह पता लगाना चाहिए कि क्या आपको उस चीज़ को समझने से मिलने वाली प्रेरणा मिल रही है जो पहले आपको समझ में नहीं आ रही थी। दूसरा, यदि आप नियमों को जानते हैं, तो आप हमेशा अपनी रीडिंग की जाँच कर सकते हैं, जैसे कोई संख्याओं के स्तंभ के योग की जाँच करता है। आपने नियमों द्वारा निर्धारित कितने चरणों का पालन किया है? आप अपनी उपलब्धि को उन तकनीकों के आधार पर माप सकते हैं जिनका उपयोग आपने किसी ऐसी पुस्तक पर काम करने के लिए किया है जो आपसे बेहतर है, जिससे आप स्वयं को उसके स्तर तक पहुँचा सकें।

पढ़ने का सबसे सीधा संकेत थकान है। पढ़ना, यानी पढ़ना, सबसे गहन मानसिक गतिविधि है। अगर आप थके हुए नहीं हैं, तो शायद आपने मेहनत ही नहीं की है। निष्क्रिय और आरामदेह होने के बजाय, मैंने हमेशा अपने थोड़े से पढ़ने को

याद करते रह सकते हैं—तो आप अपने पेंसिल और कागज़ के काम से यह बता पाएंगे कि आप सक्रिय रूप से पढ़ रहे हैं या नहीं।

कुछ लोगों को किताब के पिछले कवर या अंतिम पृष्ठों पर नोट्स बनाना अच्छा लगता है। उन्हें, मेरी तरह, यह पता चलता है कि इससे अक्सर उन्हें उन मुख्य बिंदुओं को दोबारा पढ़ने की परेशानी से मुक्ति मिल जाती है जिन्हें वे याद रखना चाहते थे। किताब पर निशान लगाना या उसके अंतिम पृष्ठों पर लिखना आपको अपनी किताबें उधार देने से हिचकिचाने पर मजबूर कर सकता है। ये आपकी बौद्धिक आत्मकथा के दस्तावेज़ बन जाते हैं, और आप शायद ऐसे रिकॉर्ड को अपने सबसे करीबी दोस्तों के अलावा किसी और को सौंपना नहीं चाहेंगे। मैं तो अपने बारे में इतना कुछ दोस्तों को भी बताने का मन नहीं करता। लेकिन पढ़ते समय नोट्स बनाना इतना महत्वपूर्ण है कि आपको संभावित सामाजिक परिणामों से घबराकर किताब में लिखने से पीछे नहीं हटना चाहिए।

यदि ऊपर बताए गए कारण या किसी अन्य कारण से आपको किताब पर निशान लगाने में झिझक होती है, तो पैड का इस्तेमाल करें। यदि आप किसी से उधार ली हुई किताब पढ़ते हैं, तो पैड का इस्तेमाल करना अनिवार्य है। फिर भविष्य में संदर्भ के लिए अपने नोट्स को सहेज कर रखने की समस्या आती है, बशर्ते आपने अपनी पढ़ाई का पर्याप्त रिकॉर्ड बना लिया हो। मुझे पहली बार पढ़ते समय किताब में ही लिखना सबसे कारगर और संतोषजनक तरीका लगता है, हालांकि बाद में अलग-अलग पन्नों पर विस्तृत नोट्स बनाना अक्सर आवश्यक हो जाता है। यदि आप किताब का विस्तृत सारांश तैयार कर रहे हैं, तो यह प्रक्रिया अनिवार्य है।

आप जो भी तरीका चुनें, आप पुस्तक पढ़ते समय अपने द्वारा लिखे गए नोट्स की जाँच करके एक पाठक के रूप में अपनी क्षमता का आकलन कर सकते हैं। याद रखें, यहाँ भी और अन्य जगहों पर भी, कि मात्रा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण कुछ और भी है। जिस प्रकार पढ़ना ही सब कुछ है, उसी प्रकार नोट्स बनाना भी बस नोट्स बनाने की ही बात है। मैं उन नोट्स की अनुशंसा नहीं कर रहा हूँ जो अधिकांश छात्र व्याख्यान के दौरान बनाते हैं। उनमें विचारों का कोई रिकॉर्ड नहीं होता।

सर्वोत्तम स्थिति में, ये सावधानीपूर्वक लिखे गए नोट्स होते हैं। बाद में ये उस चीज़ का आधार बन जाते हैं जिसे "कानूनी तौर पर नकल करना और स्कूली बच्चों द्वारा की गई साहित्यिक चोरी" के रूप में वर्णित किया गया है। परीक्षा समाप्त होने के बाद जब इन्हें फेंक दिया जाता है, तो कुछ भी खोता नहीं है। बुद्धिमानी से नोट्स बनाना शायद उतना ही कठिन है जितना बुद्धिमानी से पढ़ना। वास्तव में, यदि पढ़ते समय बनाए गए नोट्स विचारों का रिकॉर्ड हैं, तो एक दूसरे का एक पहलू होना चाहिए।

पढ़ने की हर अलग क्रिया के लिए चिंतन के एक अलग चरण की आवश्यकता होती है, इसलिए इस प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में बनाए गए नोट्स में किए गए बौद्धिक कार्यों की विविधता झलकनी चाहिए। यदि कोई पुस्तक की संरचना को समझने का प्रयास कर रहा है, तो संपूर्ण को समझने से पहले उसके मुख्य भागों की क्रमवार कई अस्थायी रूपरेखाएँ बना सकता है। सभी प्रकार की योजनाबद्ध रूपरेखाएँ और आरेख मुख्य बिंदुओं को सहायक और अप्रासंगिक बातों से अलग

करने में उपयोगी होते हैं। यदि संभव हो और आप पुस्तक को चिह्नित करना चाहें, तो महत्वपूर्ण शब्दों और वाक्यों को रेखांकित करना सहायक होता है जहाँ वे बार-बार आते हैं। इससे भी अधिक, महत्वपूर्ण शब्दों के विभिन्न अर्थों में क्रमिक रूप से उपयोग किए जाने वाले स्थानों को क्रमांकित करके अर्थ में परिवर्तन को नोट करना चाहिए। यदि लेखक स्वयं का खंडन करता प्रतीत होता है, तो असंगत कथनों के स्थानों को नोट किया जाना चाहिए, और इस विरोधाभास के संभावित संकेतों के लिए संदर्भ को चिह्नित किया जाना चाहिए कि यह केवल दिखावटी है।

यहां पर विभिन्न प्रकार के संकेतों या चिह्नों को गिनाने का कोई औचित्य नहीं है। जाहिर है, पढ़ने के दौरान जितने काम करने होते हैं, उतने ही संकेत या चिह्न भी होंगे। मुख्य बात यह है कि आप अपने द्वारा लिखे गए नोट्स या चिह्नों के आधार पर यह पता लगा सकते हैं कि आप सही दिशा में जा रहे हैं या नहीं।

यहां नोट्स लेने का एक उदाहरण मददगार हो सकता है। यदि मैं इस पुस्तक के पहले कुछ अध्याय पढ़ रहा होता, तो मैं "पढ़ने" और "सीखने" के अर्थ को स्पष्ट रखने और उन्हें एक दूसरे के साथ और अन्य चीजों के संबंध में देखने के लिए निम्नलिखित आरेख बना सकता था:

पठन के प्रकार:

I. मनोरंजन के लिए

II. ज्ञान के लिए

ए. जानकारी के लिए

बी. समझने के लिए

सीखने के प्रकार:

I. खोज के माध्यम से: शिक्षकों के बिना

II. निर्देश द्वारा: शिक्षकों की सहायता से

ए. प्रत्यक्ष शिक्षकों द्वारा: व्याख्यान; श्रवण

बी. मृत शिक्षकों द्वारा: पुस्तकें; पढ़ना

अतः पठन II (ए और बी) अधिगम II (बी) है। लेकिन पुस्तकें भी विभिन्न प्रकार की होती हैं:

पुस्तकों के प्रकार:

I. अन्य पुस्तकों के सारांश और पुनरावृति

II. मूल संचार

और ऐसा प्रतीत होता है कि:

पठन II(A) पुस्तक I से अधिक निकटता से संबंधित है। पठन II(B) पुस्तक II से अधिक निकटता से संबंधित है। इस प्रकार की योजना मुझे लेखक द्वारा बताए गए कुछ अन्य महत्वपूर्ण भेदों की प्रारंभिक समझ प्रदान करेगी। मैं पढ़ते समय इस प्रकार का आरेख अपने सामने रखूंगा, ताकि यह पता चल सके कि लेखक द्वारा भेदों को बढ़ाते हुए और इन भेदों के आधार पर निर्मित आधारों से निष्कर्ष निकालते हुए इसमें कितना और विस्तार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षकों के बीच के अंतर को दो प्रकार की पुस्तकों के साथ सहसंबंधित करके जोड़ा जा सकता है।

- 4 -

हम इस पुस्तक के अगले भाग पर जाने के लिए तैयार नहीं हैं, जिसमें पढ़ने के नियमों पर चर्चा की जाएगी। यदि आपने शुरू करने से पहले विषय-सूची का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है, तो आप जानते हैं कि आगे क्या है। यदि आप मेरे परिचित कई पाठकों की तरह हैं, तो आपने विषय-सूची पर ध्यान नहीं दिया होगा या अधिक से अधिक उस पर सरसरी नज़र डाली होगी। लेकिन विषय-सूची मानचित्रों की तरह होती है। किसी पुस्तक को पहली बार पढ़ते समय यह उतनी ही उपयोगी होती है जितनी किसी अनजान क्षेत्र में यात्रा करते समय सड़क का नक्शा।

मान लीजिए कि आप विषय-सूची को फिर से देखें। आपको क्या मिलता है? कि इस पुस्तक का पहला भाग, जिसे आप अब पूरा कर चुके हैं, पढ़ने पर एक सामान्य चर्चा है; कि दूसरा भाग पूरी तरह से नियमों को समर्पित है; कि तीसरा भाग पढ़ने के संबंध को जीवन के अन्य पहलुओं से जोड़ता है। (यह सब आपको प्रस्तावना में भी मिलेगा।) आप शायद यह भी अनुमान लगा लें कि अगले भाग में, पहले अध्याय को छोड़कर, प्रत्येक अध्याय एक या अधिक नियमों के कथन और व्याख्या, उनके अभ्यास के उदाहरणों के साथ, समर्पित होगा। लेकिन आप इन अध्यायों के शीर्षकों से यह नहीं बता सकते कि नियमों को उपसमूहों में कैसे बांटा गया है और विभिन्न अधीनस्थ समूहों का आपस में क्या संबंध है। वास्तव में, अगले भाग के पहले अध्याय में इसे स्पष्ट किया जाएगा। लेकिन मैं यहाँ इसके बारे में इतना बता सकता हूँ। नियमों के विभिन्न समूह पुस्तक को समझने के विभिन्न तरीकों से संबंधित हैं: इसके भागों की एक जटिल संरचना होने के संदर्भ में, जिसमें कुछ हद तक संगठनात्मक एकता होती है; इसके भाषाई तत्वों के संदर्भ में; लेखक और पाठक के बीच के संबंध को इस प्रकार दर्शाया गया है मानो वे आपस में बातचीत कर रहे हों।

अंत में, आपको यह जानकर शायद दिलचस्पी होगी कि पढ़ने के विषय में अन्य पुस्तकें भी हैं, और उनका इस पुस्तक से क्या संबंध है। श्री आई.ए. रिचर्ड्स ने एक लंबी पुस्तक लिखी है, जिसका उल्लेख मैं पहले ही कर चुका हूँ, जिसका नाम है 'इंटरप्रिटेशन इन टीचिंग'। यह मुख्य रूप से ऊपर वर्णित दूसरे प्रकार के नियमों से संबंधित है, और व्याकरण और तर्क के सिद्धांतों में इस

पुस्तक से कहीं अधिक गहराई तक जाने का प्रयास करती है। कॉर्नेल के प्रोफेसर टेनी, जिनका उल्लेख पहले भी किया जा चुका है, ने हाल ही में 'इंटेलिजेंट रीडिंग' नामक एक पुस्तक लिखी है, जो मुख्य रूप से दूसरे प्रकार के नियमों से संबंधित है, हालाँकि इसमें तीसरे प्रकार के नियमों पर भी कुछ ध्यान दिया गया है। उनकी पुस्तक में अपेक्षाकृत सरल व्याकरणिक कार्यों को करने के लिए विभिन्न अभ्यास सुझाए गए हैं।

इन दोनों पुस्तकों में से कोई भी प्रथम प्रकार के नियमों पर विचार नहीं करती, जिसका अर्थ है कि इनमें से कोई भी पूरी पुस्तक को पढ़ने की समस्या का समाधान नहीं करती। बल्कि ये पुस्तकें छोटे-छोटे अंशों और पृथक अनुच्छेदों की व्याख्या से संबंधित हैं।

कुछ लोग सुझाव दे सकते हैं कि हाल ही में प्रकाशित शब्दार्थ संबंधी पुस्तकें भी सहायक सिद्ध होंगी। इस पर मुझे कुछ संदेह है, जिसके कारण मैं पहले ही बता चुका हूँ। मैं लगभग यह कहूँगा कि उनमें से अधिकांश पुस्तकें केवल यह दिखाने में उपयोगी हैं कि पुस्तक को कैसे नहीं पढ़ना चाहिए। वे इस समस्या को इस तरह से देखते हैं मानो अधिकांश पुस्तकें पढ़ने योग्य नहीं हैं, विशेषकर अतीत की महान पुस्तकें, या यहाँ तक कि वर्तमान में उन लेखकों की पुस्तकें भी जिनका शब्दार्थ शुद्धिकरण नहीं हुआ है। यह मुझे गलत दृष्टिकोण लगता है। सही सिद्धांत वही है जो अपराधियों के मुकदमों में लागू होता है। हमें यह मान लेना चाहिए कि लेखक तब तक बोधगम्य है जब तक अन्यथा सिद्ध न हो जाए, न कि वह निरर्थक है और उसे अपनी निर्दोषता सिद्ध करनी होगी। और किसी लेखक के अपराध का निर्धारण करने का एकमात्र तरीका उसे समझने का भरसक प्रयास करना है।

जब तक आप अपनी हर संभव कुशलता का उपयोग करके ऐसा प्रयास नहीं कर लेते, तब तक आपको अंतिम निर्णय में उस पर पाप करने का अधिकार नहीं है। यदि आप स्वयं एक लेखक होते, तो आप समझ पाते कि उनके बीच संवाद का यह सुनहरा नियम क्यों है।

भाग II .

नियम

अध्याय सात

अनेक नियमों से एक आदत तक

- 1-

जब आप पढ़ना सीख रहे हों, तो आपको एक किताब को एक से अधिक बार पढ़ना चाहिए। अगर वह पढ़ने लायक है, तो कम से कम तीन बार पढ़ना जरूरी है।

xxxx xx xx xx xxxxxxxxx xxx xxxx xxxx xxx, xxxx xx xxxxxxxx xxx xx xxxx x xxxx, xxxxx xxx xx xxxx xxxxxxx xx xx xxxx xxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxx xx xxxx xxx

xxxxx xxxxxxx "xxx xxx" xxx xx, xxxxx xxxx xx xx xxx xx xxxxx xx xxx xxxx xxx xxx, xx xxx xxxxx xxxx xx xxxx xxxxxx xx xxxxx xx xxx xxx-xxx xxxxx xxxx xxxxx xxx xx xxxxx xx xxx, xxxxxxxx xxxxxx xx xx xxx xxxxx xxx xxxxxx xxx xxxxxx xx xxxx xxxx xxxxxx xxxx xxxxxx xx xxxxxxx xxx xx xxxxx xxx xxxx xx xxxx xx, xx xxxxx xxx xx xxxxxx xx xx xxxxx xxx xx xx xx, xx xxxx xx xxx xxx, xxxx xxxxxx xx xxx xx xxxxxx xxxx xxx

xxx xxx xxxxxxx xxx, xxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxx-xxx xxxx xxxxxx xxx xx xx xx xxxxx xxxxx xxxx xx xxxx, xx xx xx xx xxx-xxx xxxxxxxx xx xx xxxx, xxxxxxxxxxxxx xxxxxxxxx xxx xxxx xxxx xxxxx xx xxx xx xxxxxxx xxxxxxx xx xx xxx xx xxxx xxxx xxxx xx xx xxx xxx xxxxxx xxxx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxx xx xxxx xxx xxxx xxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xx xx xxxxx xx xxx-xxx xxxxxx xx xxxx xxx, xx xx x xxxx xxxxxxxx xx xxxx xxxxx xx xx xxxxx xx xxx xx xxxx xxx, xxxxx xxxx-xxxx xxxxxx xx xxxxxx xxx xx xxxx xxxx xxxxxxx xxx xxx xx xxxxxxx xx xxxx xxxx

xxx xxxx xxx xx xxx xxxx xx xxx xxx xx xxxx xxxx xxxx xx xxxxx xx xxxx xxx xx xxxxxxx x xxx xxx xx xx xxxxxxxxx xxxx xxxxx xxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xx xx xxxx xx xxxx xx xxxxx xxxx xxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxx xxxxx xxxx xx xxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxx xx xxxx xxx, xx xxxx xx xx xxxxxx xx xxxxx xxxx xxxxxx xxxxx xx xxxx xx xxxxx xx xxxxxx xx xx xxxx xxxx xxxxxx xxxx xxx

xxxxxxxxx xxxxxxxxxxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xx xxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxxxxx xxxx xxx xxxxxx xxxxxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxx xxxxxx xx xx xxxxx xxxx xxxx xxx, xx xxxxxx xx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xx xx xxxxxxxx xxx xx xxxxxxx xxxx xxx xxxx xxxxx xxxx xx xxxxxxxxx xx xx xxxxxxx xxxx xxxxx xxx

xxxx xxx xx "xxxxx xx xxxx" xxx xxxx xxx xx xxxxx xx xxxx xxxxxxxx, xxxx xxxxxxx xx xxxxxxxxxx xxx xx xxxxx xxx xxxxxxx xxxx, xx xxxxxx xxxx xx xxxxx, xxxx xxx xx xxxxxxxxx xxx xxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxx xxx

xxx xxxxx xxxxxx xxx xxxx xxx xxx xxxxx xx xxxxx xxxx xx xxxxxx xxx xxxx xxx xxxx xxxxx xx xxx xx xxxxxx xx xxx xxx xxx xxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxx xxxx xx, xx xxxx xxxxx xxx xxxxxx xxxx xxx xxx xxxxx xx xxxxx xxxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxx xxxxxx xxx xx xxx xxxxx xxxx xxx

xxxx xxxxxxxxxx xx xxxxxxx xxxx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxxx xxx xx xx xxxxxxx xx xx xxxx xxxx xx, xxxxxxx xxxx xxxxxx xx xxx xxxxx

धीमी हो जाती है, जब तक कि शिक्षार्थी एक और स्थिर अवस्था तक नहीं पहुंच जाता।

सभी अधिगम प्रक्रियाओं में पठार नहीं पाए जाते, बल्कि केवल उन्हीं प्रक्रियाओं में पाए जाते हैं जो किसी जटिल कौशल को प्राप्त करने में प्रगति को दर्शाती हैं। वास्तव में, सीखने के लिए कौशल जितना जटिल होता है, ऐसे स्थिर काल उतनी ही अधिक बार दिखाई देते हैं। हालांकि, मनोवैज्ञानिकों ने पाया है कि इन कालखंडों के दौरान अधिगम प्रक्रिया चल रही होती है, भले ही उस समय इसका कोई प्रत्यक्ष अभ्यास प्रभाव न दिखाई दे। कौशल की "उच्च इकाइयों" का निर्माण होना, मेरे द्वारा पहले उल्लेखित दो निष्कर्षों में से दूसरा है। जब अधिगमकर्ता एकल अक्षरों को टाइप करने में सुधार कर रहा होता है, तो वह गति और सटीकता में प्रगति करता है। लेकिन उसे शब्दांशों और शब्दों को इकाइयों के रूप में टाइप करने की आदत डालनी होती है, और फिर बाद में वाक्यांशों और वाक्यों को टाइप करने की।

जिस अवस्था में शिक्षार्थी कौशल की निम्न इकाई से उच्च इकाई की ओर अग्रसर होता है, वह दक्षता में कोई प्रगति नहीं दर्शाती, क्योंकि उस स्तर पर कार्य करने से पहले शिक्षार्थी को कुछ निश्चित "शब्द इकाइयों" का विकास करना आवश्यक होता है। जब वह पर्याप्त इकाइयों में निपुणता प्राप्त कर लेता है, तो वह प्रगति की एक नई गति प्राप्त करता है, जब तक कि उसे उच्च स्तर की क्रियाविधि में प्रवेश नहीं करना पड़ता। जो पहले अनेक एकल क्रियाओं— प्रत्येक अक्षर को टाइप करना—से मिलकर बनी थी, वह अंततः एक जटिल क्रिया— एक पूरे वाक्य को टाइप करना—में परिवर्तित हो जाती है। यह आदत पूर्णतः तभी बनती है जब शिक्षार्थी उच्चतम स्तर की क्रियाविधि तक पहुँच जाता है। जहाँ पहले अनेक आदतें प्रतीत होती थीं, जिन्हें एक साथ क्रियाशील बनाना कठिन था, वहीं अब सभी अलग-अलग क्रियाओं के सुचारू रूप से चलने वाले प्रदर्शन में संगठित होने के कारण एक ही आदत बन जाती है।

प्रयोगशाला के निष्कर्ष केवल उस बात की पुष्टि करते हैं जो मुझे लगता है कि हममें से अधिकांश लोग अपने अनुभव से पहले से ही जानते हैं, हालांकि हमने शायद पठार को उस अवधि के रूप में नहीं पहचाना होगा जिसमें गुप्त अधिगम चल रहा होता है। यदि आप टेनिस खेलना सीख रहे हैं, तो आपको गेंद को सर्व करना, अपने प्रतिद्वंदी की सर्विस या रिटर्न को ग्रहण करना, नेट पर खेलना, या मिड-कोर्ट और बेस लाइन पर खेलना सीखना होगा। इनमें से प्रत्येक संपूर्ण कौशल का हिस्सा है। शुरुआत में, प्रत्येक को अलग-अलग महारत हासिल करनी होगी, क्योंकि प्रत्येक को करने की एक तकनीक होती है। लेकिन इनमें से कोई भी अपने आप में टेनिस का खेल नहीं है। आपको इन निम्न इकाइयों से उस उच्च इकाई तक जाना होगा जिसमें सभी अलग-अलग कौशल एक साथ मिलकर एक जटिल कौशल बन जाते हैं। आपको एक क्रिया से दूसरी क्रिया में इतनी तेजी और सहजता से आगे बढ़ने में सक्षम होना होगा कि हमारा ध्यान खेल की रणनीति पर केंद्रित हो सके।

इसी तरह कार चलाना सीखने में भी यही प्रक्रिया लागू होती है। पहले आप स्टीयरिंग घुमाना, गियर बदलना और ब्रेक लगाना सीखते हैं। धीरे-धीरे इन क्रियाओं में महारत हासिल हो जाती है और गाड़ी चलाने की प्रक्रिया में ये

क्रियाएं एक-दूसरे से अलग नहीं रह जातीं। आप तब गाड़ी चलाना सीख जाते हैं जब आप इन सभी क्रियाओं को बिना सोचे-समझे एक साथ करना सीख जाते हैं।

किसी जटिल कौशल को सीखने का अनुभव प्राप्त कर चुके व्यक्ति को यह पता होता है कि सीखने की शुरुआत में सामने आने वाले नियमों के समूह से डरने की आवश्यकता नहीं है। वह जानता है कि उसे उन सभी अलग-अलग कार्यों के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, जिनमें उसे अलग-अलग निपुणता प्राप्त करनी होती है, क्योंकि वे सभी मिलकर काम करेंगे। यह जानना कि सीखने की प्रक्रिया में ठहराव के साथ-साथ अप्रत्यक्ष प्रगति भी होती है, निराशा को रोक सकता है। गतिविधि की उच्च इकाइयाँ विकसित होती रहती हैं, भले ही वे तुरंत दक्षता में वृद्धि न करें।

नियमों की विविधता एक आदत के निर्माण की जटिलता को दर्शाती है, न कि अलग-अलग आदतों की बहुलता को। जैसे-जैसे प्रत्येक क्रिया स्वचालित रूप से होने लगती है, वैसे-वैसे ये क्रियाएँ आपस में जुड़ती और समाहित होती जाती हैं। जब सभी अधीनस्थ क्रियाएँ कमोबेश स्वचालित रूप से की जा सकती हैं, तब आप संपूर्ण क्रिया की आदत बना लेते हैं। तब आप टेनिस में अपने प्रतिद्वंद्वी को हराने या अपनी कार से ग्रामीण इलाके में जाने के बारे में सोच सकते हैं। यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है। शुरुआत में, शिक्षार्थी स्वयं पर और अलग-अलग क्रियाओं में अपने कौशल पर ध्यान देता है। जब संपूर्ण क्रिया के कौशल में क्रियाएँ अपनी अलग पहचान खो देती हैं, तब शिक्षार्थी अंततः उस लक्ष्य पर ध्यान दे सकता है जिसे उसने अर्जित तकनीक के माध्यम से प्राप्त किया है।

- 2 -

जो बात टेनिस या ड्राइविंग के लिए सच है, वही बात पढ़ने के लिए भी सच है, न केवल व्याकरण की बुनियादी बातों के लिए, बल्कि समझ के लिए पढ़ने के उच्चतम स्तर के लिए भी। जो कोई भी यह मानता है कि ऐसा पढ़ना एक जटिल प्रक्रिया है, वह इस बात को स्वीकार करेगा। मैंने यह सब स्पष्ट रूप से इसलिए बताया है ताकि आप यह न सोचें कि यहाँ की अपेक्षाएँ सीखने के अन्य क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक कठिन या परेशान करने वाली हैं।

आप न केवल प्रत्येक नियम का पालन करने में निपुण हो जाएंगे, बल्कि धीरे- धीरे आप नियमों को अलग-अलग और उनके द्वारा नियंत्रित किए जाने वाले अलग-अलग कार्यों के रूप में देखना बंद कर देंगे।

आप एक बड़ा काम कर रहे होंगे, इस विश्वास के साथ कि बाकी सब अपने आप सुलझ जाएगा। पाठक के रूप में आप खुद पर उतना ध्यान नहीं देंगे और अपना पूरा ध्यान उस किताब पर लगा पाएंगे जिसे आप पढ़ रहे हैं।

लेकिन फिलहाल हमें अलग-अलग नियमों पर ध्यान देना होगा। ये नियम तीन मुख्य समूहों में विभाजित हैं, जिनमें से प्रत्येक पुस्तक को पढ़ने के तीन अनिवार्य तरीकों में से एक से संबंधित है। अब मैं यह समझाने का प्रयास करूंगा कि तीन प्रकार से पढ़ना क्यों आवश्यक है।

सबसे पहले, आपको यह समझना होगा कि ज्ञान के रूप में क्या प्रस्तुत किया जा रहा है। दूसरे, आपको यह तय करना होगा कि क्या प्रस्तुत किया जा रहा ज्ञान वास्तव में आपके लिए स्वीकार्य है। दूसरे शब्दों में, पहला कार्य पुस्तक को समझना है, और दूसरा कार्य उसकी आलोचना करना है। ये दोनों कार्य बिल्कुल अलग हैं, जैसा कि आप आगे और देखेंगे।

समझने की प्रक्रिया को आगे विभाजित किया जा सकता है। किसी पुस्तक को समझने के लिए, आपको पहले उसे एक समग्र रचना के रूप में देखना होगा, जिसमें भागों की एकता और संरचना हो; और दूसरे, उसके तत्वों, भाषा और विचार की इकाइयों के संदर्भ में देखना होगा।

इस प्रकार, तीन अलग-अलग व्याख्याएँ हैं, जिन्हें संक्षेप में निम्न प्रकार से नाम और वर्णित किया जा सकता है:

I. पहले पठन को संरचनात्मक या विश्लेषणात्मक कहा जा सकता है। यहाँ पाठक संपूर्ण से उसके भागों की ओर बढ़ता है।

II. दूसरे पठन को व्याख्यात्मक या संश्लेषणात्मक कहा जा सकता है। यहाँ पाठक भागों से शुरू करके संपूर्ण की ओर बढ़ता है।

III. तीसरे पठन को आलोचनात्मक या मूल्यांकनात्मक कहा जा सकता है। इसमें पाठक लेखक का मूल्यांकन करता है और यह तय करता है कि वह उससे सहमत है या असहमत।

इन तीनों मुख्य भागों में कई चरण हैं, और इसलिए कई नियम भी हैं। दूसरी बार पढ़ने के लिए चार नियमों में से तीन से आपका परिचय पहले ही हो चुका है: (1) आपको पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण शब्दों को खोजना और उनकी व्याख्या करनी होगी; (2) आपको सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों के लिए भी यही करना होगा, और (3) इसी प्रकार तर्कों को व्यक्त करने वाले अनुच्छेदों के लिए भी। चौथा नियम, जिसका मैंने अभी तक उल्लेख नहीं किया है, यह है कि आपको यह जानना होगा कि लेखक ने अपनी किन समस्याओं का समाधान किया और किनमें असफल रहा।

पहली बार पढ़ने के लिए आपको (1) यह जानना होगा कि पुस्तक किस प्रकार की है; अर्थात्, इसका विषय क्या है। आपको यह भी जानना होगा (2) कि पुस्तक समग्र रूप से क्या कहना चाहती है; (3) वह समग्र रूप से किन भागों में विभाजित है, और (4) लेखक किन मुख्य समस्याओं का समाधान करने का प्रयास कर रहा है। यहाँ भी, चार चरण और चार नियम हैं।

ध्यान दें कि पहले पठन में संपूर्ण पाठ का विश्लेषण करने पर जो भाग आपको प्राप्त होते हैं, वे दूसरे पठन में संपूर्ण पाठ की रचना के लिए उपयोग किए जाने वाले भागों से बिल्कुल भिन्न होते हैं। पहले मामले में, ये भाग लेखक द्वारा अपने विषय या समस्या के विवेचन के अंतिम विभाजन हैं। दूसरे मामले में, ये भाग शब्द, प्रस्ताव और तर्क हैं; अर्थात्, लेखक के विचार, दावे और तर्क।

तीसरी बार पढ़ने में भी कई चरण शामिल हैं। सबसे पहले, आलोचना करने के तरीके के बारे में कुछ सामान्य नियम हैं, और फिर आप चार महत्वपूर्ण बिंदु उठा सकते हैं। तीसरी बार पढ़ने के नियम आपको बताते हैं कि कौन से बिंदु उठाए जा सकते हैं और उन्हें कैसे उठाया जाना चाहिए।

इस अध्याय में, मैं सभी नियमों पर सामान्य रूप से चर्चा करूँगा। आगे के अध्यायों में इन नियमों पर अलग-अलग चर्चा की गई है। यदि आप इन सभी नियमों की एक संक्षिप्त सारणी देखना चाहते हैं, तो यह आपको पृष्ठ 266-7 पर, अध्याय चौदह के प्रारंभ में मिलेगी।

हालांकि आप इसे बाद में बेहतर ढंग से समझ पाएंगे, लेकिन यहां यह दिखाना संभव है कि ये विभिन्न पाठ, विशेषकर पहले दो, किस प्रकार परस्पर जुड़ेंगे। यह इस तथ्य से पहले ही कुछ हद तक स्पष्ट हो चुका है कि दोनों का संबंध किसी न किसी रूप में संपूर्ण और अंशों से है। पूरी पुस्तक का विषय और उसके मुख्य विभाजन जानना आपको इसके प्रमुख शब्दों और प्रस्तावों को समझने में मदद करेगा। यदि आप लेखक के मुख्य तर्कों और उनके समर्थन में तर्क और प्रमाणों का पता लगा लेते हैं, तो आपको उनकी विवेचन शैली और प्रमुख विभाजनों को निर्धारित करने में सहायता मिलेगी।

पहली बार पढ़ने का पहला चरण लेखक द्वारा हल किए जाने वाले समस्या या समस्याओं को परिभाषित करना है। दूसरी बार पढ़ने का अंतिम चरण यह तय करना है कि क्या लेखक ने इन समस्याओं को हल किया है, या किन समस्याओं को हल किया है और किनको नहीं। इस प्रकार आप देख सकते हैं कि पहले दो पाठ किस प्रकार आपस में घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं, और अंतिम चरण में एक दूसरे के निकट आकर मिलते हैं।

जैसे-जैसे आप अधिक कुशल होते जाएंगे, आप इन दोनों पाठों को एक साथ पढ़ सकेंगे। आप इन्हें जितना बेहतर ढंग से एक साथ पढ़ पाएंगे, उतना ही ये एक दूसरे को पूरा करने में सहायक होंगे। लेकिन तीसरा पाठ कभी भी, वास्तव में कभी भी, पहले दो पाठों के साथ एक साथ नहीं हो सकता। यहां तक कि सबसे कुशल पाठक को भी पहले दो पाठ और तीसरा पाठ कुछ अलग-अलग पढ़ना पड़ता है। किसी लेखक को समझना हमेशा उसकी आलोचना या मूल्यांकन करने से पहले आवश्यक है।

मैंने कई ऐसे "पाठकों" से मुलाकात की है जो तीसरी बार पढ़ना पहले ही शुरू कर देते हैं। इससे भी बुरा यह है कि वे पहली दो बार तो पढ़ते ही नहीं। वे किताब उठाते ही उसमें कमियां बताने लगते हैं। उनके पास राय का अंबार लगा रहता है, और किताब तो बस उसे व्यक्त करने का बहाना होती है। उन्हें तो मुश्किल से ही "पाठक" कहा जा सकता है। वे उन लोगों की तरह होते हैं जिन्हें बातचीत का मतलब सिर्फ बोलना होता है, सुनना नहीं। ऐसे लोगों से बात करना न सिर्फ बेकार है, बल्कि उन्हें सुनना भी आमतौर पर व्यर्थ होता है।

पहले दो पाठों के एक साथ विकसित होने का कारण यह है कि दोनों ही पुस्तक को समझने के प्रयास हैं, जबकि तीसरा पाठ अलग रहता है क्योंकि समझ प्राप्त होने के बाद वह आलोचना का कार्य करता है। लेकिन पहले दो पाठों के एक साथ मिल जाने के बाद भी, उनका विश्लेषणात्मक विश्लेषण किया जा सकता है। यह महत्वपूर्ण है। यदि आपको किसी पुस्तक के अपने पठन की जाँच करनी हो, तो आपको

पूरी प्रक्रिया को उसके भागों में विभाजित करना होगा। आपको अपने द्वारा उठाए गए प्रत्येक कदम की अलग-अलग जाँच करनी पड़ सकती है, भले ही आपने उस समय उन्हें अलग-अलग नहीं उठाया हो, क्योंकि पठन की प्रक्रिया इतनी अभ्यस्त हो चुकी होती है।

इसीलिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि विभिन्न नियम एक दूसरे से अलग-अलग नियम बने रहते हैं, भले ही वे आपके लिए अपनी विशिष्टता खोते चले जाएं और आपको एक जटिल आदत विकसित करने के लिए प्रेरित करें। जब तक आप उन्हें अलग-अलग नियमों के रूप में नहीं देखते, तब तक वे आपकी पठन-पाठन क्षमता की जाँच में आपकी सहायता नहीं कर सकते। अंग्रेजी रचना का शिक्षक, किसी छात्र के साथ उसके प्रश्नपत्र की समीक्षा करते हुए और उसके अंकों की व्याख्या करते हुए, छात्र द्वारा उल्लंघन किए गए किसी नियम की ओर इशारा करता है। उस समय, छात्र को विभिन्न नियमों की याद दिलाना आवश्यक है, लेकिन शिक्षक नहीं चाहता कि वह नियमों की पुस्तिका को अपने सामने रखकर लिखे।

वह चाहता है कि वह आदतन अच्छी तरह से लिखे, मानो लिखने के नियम उसके स्वभाव का हिस्सा हों। पढ़ने के मामले में भी यही बात लागू होती है।

- 3 -

अब एक और पेचीदगी सामने आती है। किसी किताब को तीन अलग-अलग तरीकों से पढ़ना ही काफी नहीं है (शुरुआत में इसका मतलब तीन बार पढ़ना भी हो सकता है), बल्कि किसी भी किताब को अच्छी तरह समझने के लिए आपको दो या दो से अधिक किताबों को आपस में जोड़कर पढ़ना आना चाहिए। मेरा मतलब यह नहीं है कि आपको किताबों का कोई भी संग्रह एक साथ पढ़ लेना चाहिए। मैं केवल उन किताबों की बात कर रहा हूँ जो एक ही विषय पर आधारित हैं या एक ही तरह की समस्याओं पर चर्चा करती हैं। अगर आप ऐसी किताबों को आपस में जोड़कर नहीं पढ़ सकते, तो शायद आप उनमें से किसी को भी अच्छी तरह नहीं पढ़ पाएंगे। अगर लेखक एक ही बात कह रहे हैं या अलग-अलग बातें कह रहे हैं, चाहे वे सहमत हों या असहमत, तो आप कैसे यकीन कर सकते हैं कि आप उनमें से किसी एक को समझ गए हैं, जब तक आप उन समानताओं और भिन्नताओं, उन सहमतियों और असहमतियों को पहचान नहीं लेते?

इस बिंदु पर आंतरिक और बाहरी पठन के बीच अंतर करना आवश्यक है। मुझे आशा है कि ये दोनों शब्द भ्रामक नहीं हैं। मुझे इस अंतर को नाम देने का कोई और तरीका नहीं पता।

"आंतरिक पठन" से मेरा तात्पर्य किसी पुस्तक को अन्य सभी पुस्तकों से अलग, अपने आप में एक पुस्तक के रूप में पढ़ना है।

"बाह्य पठन" से मेरा तात्पर्य अन्य पुस्तकों के संदर्भ में किसी पुस्तक को पढ़ना है। अन्य पुस्तकें कुछ मामलों में केवल संदर्भ पुस्तकें हो सकती हैं, जैसे कि शब्दकोश, विश्वकोश, पंचांग। वे सहायक पुस्तकें भी हो सकती हैं, जो उपयोगी टीकाएँ या सारांश हों।

वे अन्य बेहतरीन पुस्तकें भी हो सकती हैं। पढ़ने में सहायता करने वाला एक अन्य बाहरी कारक प्रासंगिक अनुभव है।

किसी पुस्तक को समझने के लिए जिन अनुभवों का सहारा लेना पड़ सकता है, वे या तो प्रयोगशाला में घटित होने वाले अनुभव हो सकते हैं, या फिर वे अनुभव जो मनुष्य अपने दैनिक जीवन में प्राप्त करता है। वास्तविक प्रक्रिया में आंतरिक और बाहरी पठन आपस में विलीन हो जाते हैं।

किसी पुस्तक को समझने या उसकी आलोचना करने की क्षमता।

मैंने पहले जो कहा था कि संबंधित पुस्तकों को एक दूसरे के संदर्भ में पढ़ना कितना ज़रूरी है, वह विशेष रूप से महान पुस्तकों पर लागू होता है। शिक्षा पर व्याख्यान देते समय मैं अक्सर महान पुस्तकों का ज़िक्र करता हूँ। श्रोता अक्सर बाद में मुझे पत्र लिखकर ऐसी पुस्तकों की सूची माँगते हैं। मैं उन्हें बताता हूँ कि वे या तो अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित सूची, जिसका शीर्षक है 'क्लासिक्स ऑफ़ द वेस्टर्न वर्ल्ड', या सेंट जॉन कॉलेज, एनापोलिस, मैरीलैंड द्वारा अपने विज्ञापन के भाग के रूप में प्रकाशित सूची प्राप्त कर लें। बाद में मुझे इन लोगों से पता चलता है कि उन्हें इन पुस्तकों को पढ़ने में बहुत कठिनाई होती है। जिस उत्साह ने उन्हें सूची मंगवाने और पढ़ना शुरू करने के लिए प्रेरित किया था, वह अब निराशाजनक अपर्याप्तता की भावना में तब्दील हो गया है।

इसके दो कारण हैं। पहला तो ज़ाहिर है कि उन्हें पढ़ना नहीं आता। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। दूसरा कारण यह है कि वे सोचते हैं कि वे पहली किताब को ही समझ लेंगे, भले ही उन्होंने उससे मिलती-जुलती दूसरी किताबें न पढ़ी हों।

वे संघवाद के अनुच्छेद और संविधान को पढ़े बिना ही फेडरलिस्ट पेपर्स पढ़ने का प्रयास कर सकते हैं। या वे मोंटेस्क्यू की 'द स्पिरिट ऑफ द लॉज़', रूसो की 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' और जॉन लॉक के निबंध 'ऑफ सिविल गवर्नमेंट' को पढ़े बिना ही इन सभी को पढ़ने का प्रयास कर सकते हैं।

कई महान पुस्तकें न केवल एक-दूसरे से संबंधित हैं, बल्कि वास्तव में उन्हें एक निश्चित क्रम में लिखा गया है जिसे अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। बाद के लेखक पहले के लेखक से प्रभावित हुए हैं। यदि आप पहले के लेखक की पुस्तक को पहले पढ़ते हैं, तो वह आपको बाद की पुस्तक को समझने में मदद कर सकता है। संबंधित पुस्तकों को एक दूसरे के संदर्भ में और ऐसे क्रम में पढ़ना जिससे बाद की पुस्तकें अधिक सुगम हों, बाह्य पठन का एक बुनियादी नियम है।

मैं चौदहवें अध्याय में पढ़ने में सहायक बाह्य साधनों पर चर्चा करूँगा। तब तक, हम केवल आंतरिक पठन के नियमों पर ही ध्यान देंगे। एक बार फिर, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि सीखने की प्रक्रिया में हमें इस प्रकार के अलगाव करने पड़ते हैं, भले ही सीखना तभी पूर्ण होता है जब ये अलगाव समाप्त

हो जाते हैं। एक कुशल पाठक किसी विशेष पुस्तक को पढ़ते समय, जिससे संबंधित अन्य पुस्तकें या प्रासंगिक अनुभव भी जुड़े होते हैं, अन्य पुस्तकों या अनुभवों को ध्यान में रखता है। लेकिन अभी के लिए, आपको एक ही पुस्तक को पढ़ने के चरणों पर ध्यान देना होगा, मानो वह पुस्तक अपने आप में एक संपूर्ण संसार हो। मेरा मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि किसी पुस्तक के अर्थ को समझने की प्रक्रिया से आपके अपने अनुभव को कभी भी अलग किया जा सकता है। जैसा कि हम देखेंगे, पुस्तक से परे बाह्य संदर्भों का इतना अधिक उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है। अंततः, आप अपने मन और अपने संपूर्ण पूर्व अनुभव को साथ लाए बिना किसी पुस्तक के संसार में प्रवेश नहीं कर सकते।

सहज पठन के ये नियम न केवल पुस्तक पढ़ने पर बल्कि व्याख्यानों के पाठ्यक्रम में भाग लेने पर भी लागू होते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि जो व्यक्ति पूरी पुस्तक को अच्छी तरह पढ़ सकता है, वह कॉलेज में या कॉलेज के बाहर अधिकांश लोगों की तुलना में व्याख्यानों के पाठ्यक्रम से अधिक लाभ उठा सकता है। दोनों स्थितियाँ काफी हद तक समान हैं, हालाँकि व्याख्यानों की एक श्रृंखला का अनुसरण करने के लिए स्मृति या नोट्स लेने के अधिक अभ्यास की आवश्यकता हो सकती है। व्याख्यानों के बारे में एक और कठिनाई है। आप एक पुस्तक को तीन बार पढ़ सकते हैं यदि आपको इसे तीन अलग-अलग तरीकों से पढ़ना हो। व्याख्यानों के साथ यह संभव नहीं है। व्याख्यान उन लोगों के लिए ठीक हो सकते हैं जो संचार को ग्रहण करने में कुशल हैं, लेकिन वे अप्रशिक्षित लोगों के लिए कठिन होते हैं।

इससे एक शैक्षिक सिद्धांत का पता चलता है: शायद यह एक बेहतर योजना होगी कि व्याख्यानों के पाठ्यक्रम में भाग लेने से पहले यह सुनिश्चित किया जाए कि लोग पूरी किताब पढ़ना जानते हों। कॉलेजों में अभी ऐसा नहीं होता। वयस्क शिक्षा में भी ऐसा नहीं होता। बहुत से लोग सोचते हैं कि व्याख्यानों का पाठ्यक्रम लेना उन चीजों को प्राप्त करने का एक आसान तरीका है जिन्हें वे किताबों में पढ़कर नहीं समझ पाते। लेकिन यह उसी लक्ष्य तक पहुँचने का आसान तरीका नहीं है।

दरअसल, वे मानो विपरीत दिशा में ही जा रहे हों।

- 4 –

इन नियमों की प्रयोज्यता पर एक सीमा है, जो स्पष्ट होनी चाहिए। मैंने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि इनका उद्देश्य आपको पूरी किताब पढ़ने में मदद करना है। कम से कम यही इनका प्राथमिक उद्देश्य है, और यदि इन्हें मुख्य रूप से अंशों या संदर्भ से बाहर के छोटे-छोटे हिस्सों पर लागू किया जाए तो इनका दुरुपयोग होगा। आप हार्वर्ड क्लासिक्स के साथ आने वाली मार्गदर्शिका में बताए गए तरीके से प्रतिदिन पंद्रह मिनट पढ़कर पढ़ना नहीं सीख सकते।

बात सिर्फ इतनी ही नहीं है कि दिन में पंद्रह मिनट कुछ हद तक

यह पर्याप्त नहीं है, लेकिन आपको गाइडबुक की सलाह के अनुसार थोड़ा-थोड़ा अंश नहीं पढ़ना चाहिए। फाइव-फुट शेल्फ में कई महान पुस्तकें हैं, हालांकि

इसमें कुछ ऐसी पुस्तकें भी शामिल हैं जो उतनी महान नहीं हैं। कई मामलों में, पूरी पुस्तकें शामिल हैं; अन्य में, काफी बड़े अंश। लेकिन आपको पूरी पुस्तक या उसका बड़ा हिस्सा पढ़ने के लिए नहीं कहा गया है। आपको यहाँ थोड़ा-थोड़ा रस चखने और वहाँ थोड़ा-थोड़ा शहद सूंघने का निर्देश दिया गया है। इससे आप एक साहित्यिक तितली तो बनेंगे, लेकिन एक कुशल पाठक नहीं।

उदाहरण के लिए, एक दिन आपको बेंजामिन फ्रैंकलिन की आत्मकथा के छह पृष्ठ पढ़ने हैं; अगले दिन मिल्टन के प्रारंभिक गीतों के ग्यारह पृष्ठ, और उसके अगले दिन सिसरो के मित्रता संबंधी दस पृष्ठ। एक अन्य क्रम में आपको हैमिल्टन के 'द फेडरलिस्ट पेपर्स' से आठ पृष्ठ पढ़ने हैं, फिर बर्क के स्वाद संबंधी पंद्रह पृष्ठ के विचार, और फिर रूसो के 'डिस्कोर्स ऑन इनइक्वलिटी' से बारह पृष्ठ पढ़ने हैं। क्रम का निर्धारण केवल पढ़ी जाने वाली सामग्री और महीने के किसी विशेष दिन के बीच के ऐतिहासिक संबंध से होता है। लेकिन कैलेंडर का इस पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता।

ये अंश न केवल पढ़ने के निरंतर प्रयास के लिए बहुत छोटे हैं, बल्कि जिस क्रम में एक के बाद एक अंश आते हैं, उससे न तो किसी संपूर्ण पाठ को समझना संभव है और न ही एक अंश को दूसरे के संदर्भ में समझना। हार्वर्ड क्लासिक्स को पढ़ने की यह योजना महान पुस्तकों को उतना ही अबोधगम्य बना देती है जितना कि ऐच्छिक पाठ्यक्रम के तहत कॉलेज का कोई कोर्स। शायद यह योजना ऐच्छिक पाठ्यक्रम और फाइव फुट शेल्फ दोनों के प्रायोजक डॉ. एलियट को सम्मान देने के लिए बनाई गई थी। किसी भी मामले में, यह हमें एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है कि यदि हम बौद्धिक उलझन से बचना चाहते हैं तो हमें क्या नहीं करना चाहिए।

- 5 –

इन नियमों के प्रयोग पर एक और सीमा है। हम यहाँ पढ़ने के प्रमुख उद्देश्यों में से केवल एक पर विचार कर रहे हैं, दूसरे पर नहीं—यानी सीखने के लिए पढ़ना, न कि मनोरंजन के लिए पढ़ना। उद्देश्य केवल पाठक का ही नहीं, बल्कि लेखक का भी होता है। हम उन पुस्तकों पर विचार कर रहे हैं जिनका उद्देश्य सिखाना और ज्ञान प्रदान करना है। प्रारंभिक अध्यायों में मैंने ज्ञान के लिए पढ़ने और मनोरंजन के लिए पढ़ने में अंतर बताया था और अपनी चर्चा को ज्ञान के लिए पढ़ने तक ही सीमित रखा था। अब हमें एक कदम आगे बढ़कर पुस्तकों के दो बड़े वर्गों में अंतर करना होगा, जो लेखक के उद्देश्य और पाठकों को मिलने वाली संतुष्टि के आधार पर भिन्न होते हैं। हमें ऐसा इसलिए करना होगा क्योंकि हमारे नियम केवल एक प्रकार की पुस्तक और पढ़ने के एक ही उद्देश्य पर सख्ती से लागू होते हैं।

इन दो प्रकार की पुस्तकों के लिए कोई मान्यता प्राप्त, प्रचलित नाम नहीं हैं। मेरा मन करता है कि एक प्रकार को कविता या कथा और दूसरे को व्याख्या या विज्ञान कहूँ। लेकिन आज "कविता" शब्द का प्रयोग आमतौर पर गीत-संगीत के लिए किया जाता है, न कि सभी प्रकार के कल्पनात्मक साहित्य या जिसे कभी-कभी ललित साहित्य भी कहा जाता है, के लिए। इसी प्रकार, "विज्ञान" शब्द में

इतिहास और दर्शन को शामिल नहीं किया जाता, हालाँकि ये दोनों ही ज्ञान की व्याख्याएँ हैं।

नामों को छोड़ दें तो, अंतर लेखक के इरादे से समझा जा सकता है: कवि, या कोई भी लेखक जो एक ललित कलाकार है, सुंदर रचनाएँ बनाकर श्रोताओं को प्रसन्न या आनंदित करने का लक्ष्य रखता है, ठीक उसी तरह जैसे संगीतकार और मूर्तिकार करते हैं। वहीं वैज्ञानिक, या कोई भी ज्ञानवान व्यक्ति जो एक उदार कलाकार है, सत्य बोलकर ज्ञान प्रदान करने का लक्ष्य रखता है।

काव्य रचनाओं को अच्छी तरह से पढ़ना सीखने की समस्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए पढ़ने की समस्या जितनी ही कठिन है। यह उससे बिल्कुल अलग भी है। जिन नियमों का मैंने संक्षेप में उल्लेख किया है और जिन पर मैं अभी विस्तार से चर्चा करूँगा, वे सीखने के लिए पढ़ने के निर्देश हैं, न कि किसी ललित कलाकृति का पर्याप्त आनंद लेने के लिए। कविता पढ़ने के नियम स्वाभाविक रूप से भिन्न होंगे। उन्हें समझाने और स्पष्ट करने के लिए इस पुस्तक जितनी लंबी पुस्तक की आवश्यकता होगी।

सामान्य तौर पर, ये वैज्ञानिक या व्याख्यात्मक रचनाओं को पढ़ने के नियमों के तीन भागों से मिलते-जुलते हो सकते हैं। इनमें संपूर्ण रचना को भागों की एकीकृत संरचना के रूप में समझने के नियम शामिल होंगे। कविता या कहानी के भाषाई और कल्पनात्मक तत्वों को पहचानने के नियम होंगे। रचना की अच्छाई या बुराई के बारे में आलोचनात्मक निर्णय लेने के नियम होंगे, जो सुबोध और विवेक विकसित करने में सहायक होते हैं। हालांकि, इसके बाद समानता समाप्त हो जाती है, क्योंकि कहानी और विज्ञान की संरचना बहुत भिन्न होती है; कल्पना को जगाने और विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषाई तत्वों का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है; जब सत्य के बजाय सौंदर्य का मूल्यांकन किया जाना हो तो आलोचना के मानदंड भी भिन्न होते हैं।

मन को प्रसन्न करने वाली या मनोरंजन करने वाली पुस्तकों की श्रेणी में भी उतनी ही गुणवत्ता के स्तर होते हैं जितने कि ज्ञानवर्धक पुस्तकों की श्रेणी में। जिन्हें "हल्की-फुल्की कथा" कहा जाता है, उन्हें पढ़ने के लिए उतनी ही कम पठन क्षमता, कौशल या प्रयास की आवश्यकता होती है जितनी कि केवल सूचनात्मक पुस्तकों के लिए, जिन्हें समझने के लिए हमें कोई प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होती है। हम एक साधारण पत्रिका में कहानियों को उतनी ही सहजता से पढ़ सकते हैं जितनी सहजता से हम उसके लेख पढ़ते हैं।

जैसे व्याख्यात्मक पुस्तकें होती हैं जो ज्ञान के प्राथमिक स्रोतों से प्राप्त ज्ञान को दोहराती या संक्षेप में प्रस्तुत करती हैं, वैसे ही अनेक प्रकार की परोक्ष कविताएँ भी होती हैं। मेरा तात्पर्य केवल बार-बार सुनाई गई कहानी से नहीं है, क्योंकि सभी अच्छी कहानियाँ कई बार सुनाई जाती हैं। मेरा तात्पर्य उस कथात्मक या काव्यात्मक रचना से है जो हमारी भावनाओं को नहीं बदलती और न ही हमारी कल्पना को आकार देती है। दोनों ही क्षेत्रों में, महान पुस्तकें, प्राथमिक पुस्तकें, मौलिक रचनाएँ होने के साथ-साथ हमारी श्रेष्ठ भी हैं। जैसे एक क्षेत्र में महान पुस्तक हमारी समझ को उन्नत करती है, वैसे ही दूसरे क्षेत्र में महान पुस्तक हमें प्रेरित करती है, सभी

मानवीय मूल्यों के प्रति हमारी संवेदनशीलता को गहरा करती है और हमारी मानवता को बढ़ाती है।

साहित्य के दोनों क्षेत्रों में, केवल वे पुस्तकें जो हमसे श्रेष्ठ हैं, उन्हें पढ़ने के लिए कौशल और सक्रियता की आवश्यकता होती है। बाकी को हम निष्क्रिय रूप से और कम तकनीकी दक्षता के साथ पढ़ सकते हैं। इसलिए, कल्पनात्मक साहित्य पढ़ने के नियम मुख्य रूप से लोगों को ललित साहित्य की महान कृतियों—महाकाव्य, नाटक, उपन्यास और गीत—को पढ़ने में मदद करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे सीखने के लिए पढ़ने के नियम मुख्य रूप से इतिहास, विज्ञान और दर्शन की महान कृतियों को पढ़ने के उद्देश्य से बनाए गए हैं।

मुझे खेद है कि नियमों के दोनों समूहों को एक ही पुस्तक में पर्याप्त रूप से नहीं समझाया जा सकता, न केवल इसलिए कि अच्छी साक्षरता के लिए दोनों प्रकार का पठन आवश्यक है, बल्कि इसलिए भी कि सर्वश्रेष्ठ पाठक वही होता है जिसमें दोनों प्रकार के कौशल होते हैं। पठन की ये दोनों कलाएँ एक दूसरे में समाहित हैं और एक दूसरे का समर्थन करती हैं। हम शायद ही कभी एक प्रकार का पठन करते हैं और साथ ही साथ दूसरे प्रकार का पठन भी करते हैं। पुस्तकें विज्ञान या कविता के सुव्यवस्थित और शुद्ध रूप में नहीं आतीं।

महानतम पुस्तकें अक्सर साहित्य के इन दो मूलभूत आयामों का संयोजन प्रस्तुत करती हैं। प्लेटो के संवाद, जैसे कि 'रिपब्लिक', को नाटक और बौद्धिक चर्चा दोनों के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। दांते की कविता 'द डाइव कॉमेडी' न केवल एक शानदार कहानी है, बल्कि एक दार्शनिक विवेचन भी है। कल्पना और भाव के बिना ज्ञान का संचार संभव नहीं है; और भावना और बिम्ब विचार से गहराई से जुड़े होते हैं।

हालांकि, यह बात अभी भी सच है कि पढ़ने की ये दोनों कलाएँ अलग-अलग हैं। यह मान लेना पूरी तरह से भ्रम पैदा करने वाला होगा कि जिन नियमों की व्याख्या हम करने जा रहे हैं, वे कविता और विज्ञान दोनों पर समान रूप से लागू होते हैं। वास्तव में, वे नियम केवल विज्ञान या ज्ञान प्रदान करने वाली पुस्तकों पर ही लागू होते हैं। पढ़ने के इस सीमित विवेचन की कमी को पूरा करने के दो तरीके हैं। एक तरीका यह है कि बाद में एक अध्याय काल्पनिक साहित्य पढ़ने की समस्या पर समर्पित किया जाए। शायद, जब आप गैर-काल्पनिक पुस्तकों को पढ़ने के विस्तृत नियमों से परिचित हो जाएँगे, तब मैं संक्षेप में कथा साहित्य और कविता पढ़ने के समान नियमों का संकेत दे पाऊँगा। मैं अध्याय पंद्रह में ऐसा करने का प्रयास करूँगा। वास्तव में, मैं इससे आगे बढ़कर वहाँ नियमों को सामान्यीकृत करने का प्रयास करूँगा ताकि वे किसी भी प्रकार के पठन पर लागू हो सकें। दूसरा उपाय कविता या कथा साहित्य पढ़ने पर पुस्तकों का सुझाव देना है। मैं यहाँ कुछ पुस्तकों के नाम बताऊँगा, और अध्याय पंद्रह में आगे और भी बताऊँगा।

कविता की सराहना या आलोचना से संबंधित पुस्तकें स्वयं वैज्ञानिक पुस्तकें होती हैं। ये एक विशेष प्रकार के ज्ञान का विवेचन होती हैं, जिसे

कभी-कभी "साहित्यिक आलोचना" कहा जाता है; अधिक व्यापक रूप से देखा जाए तो, ये इस पुस्तक की तरह ही एक कला का शिक्षण देने का प्रयास करती हैं—वास्तव में, एक ही कला के एक अलग पहलू, पठन कला का। अब यदि यह पुस्तक आपको किसी भी प्रकार की व्याख्यात्मक पुस्तक को पढ़ना सीखने में मदद करती है, तो आप इन अन्य पुस्तकों को स्वयं पढ़ सकते हैं और इनसे कविता या साहित्य पढ़ने में सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

इस श्रेणी की महान पारंपरिक पुस्तक अरस्तू की 'पोएटिक्स' है। हाल ही में प्रकाशित पुस्तकों में श्री टी. एस. एलियट के निबंध और श्री आई. ए. रिचर्ड्स की दो पुस्तकें, 'द प्रिंसिपल्स ऑफ क्रिटिसिज्म' और 'प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म' शामिल हैं। एडगर एलन पो के 'क्रिटिकल एसेज', विशेष रूप से 'द पोएटिक प्रिंसिपल', का अध्ययन करना उपयोगी है। फादर थॉमस गिल्बी ने 'द पोएटिक एक्सपीरियंस' के विश्लेषण में काव्य ज्ञान के उद्देश्य और शैली को स्पष्ट किया है। विलियम एम्सन ने 'सेवन टाइप्स ऑफ एम्बिगुइटी' के बारे में इस प्रकार लिखा है जो गीतात्मक कविता को पढ़ने में विशेष रूप से सहायक है। और हाल ही में गॉर्डन गेराउल्ड ने 'हाउ टू रीड फिक्शन' नामक पुस्तक प्रकाशित की है। यदि आप इन पुस्तकों को पढ़ेंगे, तो आपको अन्य पुस्तकों के बारे में भी जानकारी मिलेगी।

सामान्य तौर पर, आपको उन पुस्तकों से सबसे अधिक सहायता मिलेगी जो न केवल नियमों को प्रतिपादित करती हैं बल्कि साहित्य की सराहना और आलोचनात्मक चर्चा करके उन्हें व्यवहार में उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करती हैं। यहाँ, विज्ञान की तुलना में, आपको किसी ऐसे व्यक्ति के मार्गदर्शन की आवश्यकता है जो वास्तव में आपको पढ़कर दिखाए कि कैसे पढ़ा जाता है। श्री मार्क वैन डोरेन ने अभी-अभी 'शेक्सपियर' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है। इसमें शेक्सपियर के नाटकों का उनका अपना पठन-पाठन दिया गया है। इसमें पढ़ने के कोई नियम नहीं हैं, लेकिन वे आपको अनुसरण करने के लिए एक आदर्श प्रदान करते हैं। आप उन्हें व्यवहार में देखकर शायद उनके द्वारा अपनाए गए नियमों को भी समझ सकें। एक और पुस्तक है जिसका मैं उल्लेख करना चाहूँगा, क्योंकि यह कल्पनात्मक और व्याख्यात्मक साहित्य के पठन के बीच समानता को दर्शाती है। स्कॉट बुकानन की 'पोएट्री एंड मैथमेटिक्स' विज्ञान की संरचना और कथा साहित्य के स्वरूप के बीच समानता को स्पष्ट करती है।

- 6 -

आप इन सब बातों पर आपत्ति कर सकते हैं। आप कह सकते हैं कि मैंने बेवजह भेद किया है। आप कह सकते हैं कि सभी पुस्तकों को पढ़ने का केवल एक ही तरीका है, या यदि कई तरीके हैं तो किसी भी पुस्तक को हर तरीके से पढ़ा जाना चाहिए।

मैंने इस आपत्ति का पहले ही अनुमान लगा लिया है और यह भी बताया है कि अधिकांश पुस्तकों के कई आयाम होते हैं, जिनमें एक काव्यात्मक और एक वैज्ञानिक आयाम अवश्य शामिल हैं। मैंने तो यहाँ तक कहा है कि अधिकांश पुस्तकें, विशेषकर महान पुस्तकें, दोनों ही दृष्टिकोणों से पढ़ी जानी चाहिए। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि पढ़ने के इन दोनों तरीकों को भ्रमित

कर दिया जाए, या हमें किसी पुस्तक को पढ़ने के अपने प्राथमिक उद्देश्य या लेखक के उसे लिखने के मूल इरादे को पूरी तरह से अनदेखा कर देना चाहिए। मेरा मानना है कि अधिकांश लेखक जानते हैं कि वे मूल रूप से कवि हैं या वैज्ञानिक। महान लेखक तो निश्चित रूप से जानते हैं।

किसी भी अच्छे पाठक को इस बात का पता होना चाहिए कि वह किताब पढ़ने के लिए किस उद्देश्य से जाता है: मुख्य रूप से ज्ञान या आनंद।

इसका सीधा सा मतलब यह है कि व्यक्ति को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसी उद्देश्य से लिखी गई पुस्तक का सहारा लेना चाहिए। यदि कोई ज्ञान की तलाश में है, तो ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ना, कहानियाँ सुनाने वाली पुस्तकों की तुलना में अधिक बुद्धिमानीपूर्ण प्रतीत होता है। यदि कोई किसी विशेष विषय का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, तो उस विषय पर लिखी गई पुस्तकों को पढ़ना अन्य पुस्तकों की तुलना में बेहतर है। यदि खगोल विज्ञान सीखना हो, तो रोम का इतिहास पढ़ना अनुचित प्रतीत होता है।

इसका यह अर्थ नहीं है कि एक ही पुस्तक को अलग-अलग तरीकों से और अलग-अलग उद्देश्यों के अनुसार नहीं पढ़ा जा सकता। लेखक के एक से अधिक उद्देश्य हो सकते हैं, हालांकि मेरा मानना है कि उनमें से एक हमेशा प्राथमिक होता है और पुस्तक के स्पष्ट स्वरूप को निर्धारित करता है। जिस प्रकार एक पुस्तक का प्राथमिक और गौण स्वरूप हो सकता है—जैसे प्लेटो के संवाद प्राथमिक रूप से दार्शनिक और गौण रूप से नाटकीय हैं, और 'द डिवाइन कॉमेडी' प्राथमिक रूप से कथात्मक और गौण रूप से दार्शनिक है—उसी प्रकार पाठक भी पुस्तक को उसी प्रकार समझ सकता है। वह चाहे तो लेखक के उद्देश्यों के क्रम को उलट भी सकता है, और प्लेटो के संवादों को मुख्य रूप से नाटक के रूप में और 'द डिवाइन कॉमेडी' को मुख्य रूप से दर्शन के रूप में पढ़ सकता है। अन्य क्षेत्रों में भी ऐसा ही होता है। एक संगीत रचना जिसे ललित कला के रूप में आनंद लेने के लिए बनाया गया हो, उसका उपयोग बच्चे को सुलाने के लिए किया जा सकता है। एक कुर्सी जिस पर बैठने के लिए बनाया गया हो, उसे संग्रहालय में रस्सियों के पीछे रखकर सुंदरता की वस्तु के रूप में सराहा जा सकता है।

उद्देश्य की ऐसी दोहरी प्रकृति और प्राथमिक एवं गौण प्रकृति के ऐसे उलटफेर से मूल बात अपरिवर्तित रहती है। आप पढ़ने के लिए जो भी करें, चाहे आप किसी भी उद्देश्य को प्राथमिकता दें या गौण, आपको यह जानना आवश्यक है कि आप क्या कर रहे हैं और उस प्रकार के कार्य के नियमों का पालन करना चाहिए। किसी कविता को दर्शनशास्त्र की तरह पढ़ना या विज्ञान को कविता की तरह पढ़ना तब तक त्रुटिहीन है जब तक आप यह जानते हैं कि आप उस समय क्या कर रहे हैं और उसे अच्छी तरह से कैसे करना है। तब आप यह नहीं सोचेंगे कि आप कुछ और कर रहे हैं, या यह कि आप जो भी कर रहे हैं उसे करने का तरीका कोई मायने नहीं रखता।

हालांकि, दो गलतियाँ हैं जिनसे बचना आवश्यक है। उनमें से एक को मैं कहूँगा

"शुद्धतावाद।" यह इस धारणा की त्रुटि है कि किसी दी गई पुस्तक को केवल एक ही तरीके से पढ़ा जा सकता है।

यह एक त्रुटि है क्योंकि पुस्तकें अपने स्वरूप में शुद्ध नहीं होतीं, और इसका कारण यह है कि मानव मन, जो उन्हें लिखता या पढ़ता है, इंद्रियों और कल्पना में निहित होता है और भावनाओं और संवेदनाओं से प्रेरित होता है या उनसे प्रभावित होता है।

दूसरी त्रुटि को मैं "अंधविश्वास" कहता हूँ। यह इस धारणा की त्रुटि है कि सभी पुस्तकों को केवल एक ही तरीके से पढ़ा जा सकता है। इस प्रकार, एक चरम सौंदर्यवाद है, जो सभी पुस्तकों को कविता के समान मानता है और साहित्य के अन्य प्रकारों तथा पढ़ने के अन्य तरीकों में अंतर करने से इनकार करता है। दूसरा चरम बौद्धिकतावाद है, जो सभी पुस्तकों को शिक्षाप्रद मानता है, मानो पुस्तक में ज्ञान के सिवा कुछ और नहीं मिल सकता। ये दोनों त्रुटियाँ कीट्स की एक पंक्ति में समाहित हैं—"सौंदर्य ही सत्य है, सत्य ही सौंदर्य है"— जो उनकी कविता के प्रभाव को तो बढ़ा सकती है, लेकिन आलोचना के सिद्धांत के रूप में या पुस्तकों को पढ़ने के मार्गदर्शक के रूप में यह त्रुटिपूर्ण है।

अब आपको नियमों के बारे में पर्याप्त चेतावनी मिल चुकी है कि आगे के अध्यायों में विस्तार से चर्चा की गई है, कि उनसे क्या अपेक्षा की जानी चाहिए और क्या नहीं। आप इनका दुरुपयोग बहुत कम कर पाएंगे, क्योंकि आप पाएंगे कि ये अपने उचित और सीमित उपयोग क्षेत्र से बाहर काम नहीं करते। फ्राइंग पैन बेचने वाला व्यक्ति शायद ही कभी आपको यह बताता है कि आप इसे रेफ्रिजरेटर के रूप में इस्तेमाल नहीं कर सकते। वह जानता है कि आप यह बात खुद ही जान लेंगे।

अध्याय आठ

शीर्षक से लोकप्रियता हासिल करना

- 1-

सिर्फ शीर्षक देखकर, मेन स्ट्रीट और मिडिलटाउन के मामले में शायद आप यह नहीं बता पाएंगे कि कौन सी किताब सामाजिक विज्ञान पर आधारित है और कौन सी काल्पनिक। दोनों पढ़ने के बाद भी शायद आप दुविधा में पड़ जाएं। कुछ समकालीन उपन्यासों में इतना सामाजिक विज्ञान समाहित है, और समाजशास्त्र की अधिकांश किताबों में इतना काल्पनिक वर्णन है, कि उनमें अंतर करना मुश्किल है। (उदाहरण के लिए, हाल ही में यह घोषणा की गई थी कि द ग्रेप्स ऑफ रैथ को कई कॉलेजों के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रमों में अनिवार्य पठन सामग्री बना दिया गया है।) जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, किताबों को कई तरीकों से पढ़ा जा सकता है। यह समझना आसान है कि कुछ साहित्यिक आलोचक डॉस पासेस या स्टाइनबेक के उपन्यास की समीक्षा इस तरह क्यों करते हैं जैसे वे किसी वैज्ञानिक शोध या राजनीतिक भाषण का विश्लेषण कर रहे हों; या कुछ लोग फ्रायड की मूसा पर लिखी नवीनतम पुस्तक को एक प्रेम कहानी के रूप में पढ़ने

के लिए क्यों उत्सुक होते हैं। कई मामलों में, गलती किताब और लेखक की होती है।

लेखकों के इरादे कभी-कभी मिले-जुले होते हैं। अन्य मनुष्यों की तरह, उनमें भी एक साथ कई काम करने की चाहत की खामी हो सकती है। यदि वे अपने इरादों को लेकर असमंजस में हैं, तो पाठक को यह न समझ पाने के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता कि उसे किस तरह का चश्मा पहनना चाहिए। पढ़ने के सबसे अच्छे नियम भी खराब किताबों पर लागू नहीं होते—शायद, इससे आपको यह पता चल जाए कि किताब खराब है।

आइए उन समकालीन पुस्तकों के विशाल समूह को एक तरफ रख दें जो विज्ञान और कल्पना, या कल्पना और भाषण कला को आपस में मिला देती हैं। ऐसी पर्याप्त पुस्तकें हैं—अतीत की महान पुस्तकें और कई अच्छी समकालीन पुस्तकें—जो अपने उद्देश्य में पूर्णतः सार्थक हैं और इसलिए हमारे द्वारा विवेकपूर्ण पठन की पात्र हैं। पढ़ने का पहला नियम हमें विवेकशील होने की आवश्यकता बताता है। मैं कहूँ कि यह पहले पठन का पहला नियम है। इसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: आपको यह जानना चाहिए कि आप किस प्रकार की पुस्तक पढ़ रहे हैं, और आपको यह प्रक्रिया में जितना जल्दी हो सके, अधिमानतः पढ़ने से पहले ही जान लेना चाहिए।

उदाहरण के लिए, आपको यह जानना होगा कि आप कोई कथा पढ़ रहे हैं—जैसे कोई उपन्यास, नाटक, महाकाव्य या गीत—या कोई व्याख्यात्मक रचना—यानी ऐसी पुस्तक जो मुख्य रूप से ज्ञान प्रदान करती है। कल्पना कीजिए उस व्यक्ति की उलझन की जो किसी उपन्यास को पढ़ते-पढ़ते उसे दार्शनिक प्रवचन समझ ले; या उस व्यक्ति की जो किसी वैज्ञानिक ग्रंथ पर इस तरह मनन करे जैसे वह कोई गीत हो। आप ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि मैंने आपसे लगभग असंभव की कल्पना करने को कहा है। अधिकतर लोग पढ़ने से पहले ही जान लेते हैं कि वे किस प्रकार की पुस्तक पढ़ रहे हैं। उन्होंने उसे पढ़ने के लिए इसलिए चुना होता है क्योंकि वह उसी प्रकार की होती है। पुस्तकों के प्रकारों में मुख्य अंतर के बारे में यह बात बिल्कुल सही है। लोग जानते हैं कि उन्हें मनोरंजन चाहिए या ज्ञान, और वे अपनी ज़रूरत की चीज़ के लिए शायद ही कभी गलत दुकान पर जाते हैं।

दुर्भाग्यवश, कुछ अन्य भेद भी हैं जो इतने सरल और आसानी से पहचाने जाने वाले नहीं हैं। चूंकि हमने कल्पनात्मक साहित्य को फिलहाल विचार से बाहर रखा है, इसलिए हमारी समस्या व्याख्यात्मक पुस्तकों के क्षेत्र में गौण भेदों से संबंधित है। यह केवल यह जानने का प्रश्न नहीं है कि कौन सी पुस्तकें मुख्य रूप से शिक्षाप्रद हैं, बल्कि यह भी कि कौन सी पुस्तकें एक विशेष तरीके से शिक्षाप्रद हैं। इतिहास और दर्शन की पुस्तकों द्वारा दी जाने वाली जानकारी या ज्ञान का प्रकार एक जैसा नहीं होता। भौतिकी और नैतिकता पर लिखी गई पुस्तकों में जिन समस्याओं का समाधान किया गया है, वे भी एक जैसी नहीं हैं, और न ही लेखकों द्वारा इन भिन्न समस्याओं को हल करने के लिए अपनाई गई विधियाँ एक जैसी हैं।

आप इन भिन्न पुस्तकों को एक ही तरीके से नहीं पढ़ सकते। मेरा मतलब यह नहीं है कि पढ़ने के नियम यहाँ उतने ही अलग हैं जितने कि कविता और विज्ञान के

बीच मूलभूत अंतर होता है। इन सभी पुस्तकों में बहुत कुछ समान है। ये सभी ज्ञान से संबंधित हैं।

लेकिन वे भिन्न भी हैं, और उन्हें अच्छी तरह से समझने के लिए हमें उन्हें उनकी भिन्नताओं के अनुरूप ही पढ़ना चाहिए।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि इस समय मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं एक विक्रेता हूँ जिसने ग्राहक को यह समझा दिया है कि कीमत बहुत ज़्यादा नहीं है, लेकिन अतिरिक्त बिक्री कर का ज़िक्र किए बिना नहीं रह सकता। ग्राहक का उत्साह कम होने लगता है। विक्रेता कुछ और मीठी बातों से इस बाधा को पार कर लेता है, और फिर उसे यह कहना पड़ता है कि वह कई हफ़्तों तक डिलीवरी नहीं कर सकता। अगर खरीदार उस समय सौदा रद्द नहीं करता, तो वह भाग्यशाली है। खैर, मैंने अभी-अभी आपको यह समझाना समाप्त किया है कि कुछ भेद ध्यान देने योग्य हैं, और मुझे यह जोड़ना पड़ रहा है: "लेकिन अभी और भी हैं।" मुझे उम्मीद है कि आप मेरा सौदा रद्द नहीं करेंगे। मैं आपसे वादा करता हूँ कि पढ़ने के प्रकारों में भेद करने का सिलसिला यहीं समाप्त होता है। इस अध्याय में इसका अंत है।

मैं इस नियम को फिर से दोहराता हूँ: आपको यह जानना आवश्यक है कि आप किस प्रकार की (व्याख्यात्मक) पुस्तक पढ़ रहे हैं, और आपको यह जानकारी प्रक्रिया की शुरुआत में ही, अधिमानतः पढ़ने से पहले ही, प्राप्त कर लेनी चाहिए। अंतिम वाक्य को छोड़कर बाकी सब स्पष्ट है। आप पूछ सकते हैं कि पाठक से यह अपेक्षा कैसे की जा सकती है कि वह पढ़ने से पहले ही जान ले कि वह किस प्रकार की पुस्तक पढ़ रहा है?

क्या मैं आपको याद दिला दूं कि हर किताब का एक शीर्षक होता है, और उससे भी बढ़कर, आमतौर पर उसका एक उपशीर्षक, विषय-सूची, लेखक द्वारा लिखित प्रस्तावना या परिचय होता है? मैं प्रकाशक के विवरण को छोड़ रहा हूँ। आख़िरकार, आपको ऐसी किताब भी पढ़नी पड़ सकती है जिसका आवरण खो गया हो।

जिसे परंपरागत रूप से "प्रारंभिक भाग" कहा जाता है, वह आमतौर पर वर्गीकरण के लिए पर्याप्त होता है। प्रारंभिक भाग में शीर्षक, उपशीर्षक, विषय-सूची और प्रस्तावना शामिल होती है। ये वे संकेत हैं जो लेखक आपको यह बताने के लिए देता है कि विषयवस्तु किस दिशा में बह रही है। यदि आप रुककर ध्यान से नहीं देखेंगे और समझेंगे तो इसमें लेखक की कोई गलती नहीं है।

- 2 -

संकेतों पर ध्यान न देने वाले पाठकों की संख्या आपकी सोच से कहीं अधिक है, सिवाय उन लोगों के जो इसे स्वीकार करने के लिए पर्याप्त ईमानदार हैं। छात्रों के साथ मुझे यह अनुभव बार-बार हुआ है। मैंने उनसे पूछा है कि पुस्तक किस विषय पर है। मैंने उनसे पूछा है कि वे मुझे सामान्य शब्दों में बताएं कि यह किस प्रकार की पुस्तक है।

मैंने पाया है कि यह चर्चा शुरू करने का एक अच्छा तरीका है, लगभग एक अनिवार्य तरीका है।

कई छात्र पुस्तक के बारे में इस पहले और सबसे सरल प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ हैं।

कभी-कभी वे यह कहकर माफी मांगते हैं कि उन्होंने इसे अभी तक पूरा नहीं पढ़ा है, इसलिए उन्हें पता नहीं है। मैं उन्हें बताता हूँ, यह कोई बहाना नहीं है। क्या आपने शीर्षक देखा? क्या आपने विषय-सूची पढ़ी? क्या आपने प्रस्तावना या भूमिका पढ़ी? नहीं, उन्होंने नहीं पढ़ी।

किताब का शुरुआती भाग घड़ी की टिक-टिक की तरह होता है— एक ऐसी चीज जिसे आप तभी महसूस करते हैं जब वह मौजूद नहीं होती।

कई पाठकों द्वारा शीर्षक और प्रस्तावना को अनदेखा करने का एक कारण यह है कि वे पुस्तक को वर्गीकृत करना महत्वपूर्ण नहीं समझते। वे इस पहले नियम का पालन नहीं करते। यदि वे इसका पालन करने का प्रयास करते, तो वे लेखक के आभारी होते।

स्पष्टतः, लेखक को लगता है कि पाठक को यह जानना महत्वपूर्ण है कि वह किस प्रकार की पुस्तक पढ़ रहा है। इसीलिए वह प्रस्तावना में इसे स्पष्ट करने का प्रयास करता है, और आमतौर पर अपने शीर्षक को कमोबेश वर्णनात्मक बनाने की कोशिश करता है। इस प्रकार, आइंस्टीन और इन्फेल्ड ने अपनी पुस्तक 'भौतिकी का विकास' की प्रस्तावना में पाठक से कहा है कि वे उससे यह अपेक्षा करते हैं कि वह यह समझे कि "एक वैज्ञानिक पुस्तक, भले ही लोकप्रिय हो, उसे उपन्यास की तरह नहीं पढ़ा जाना चाहिए।"

अन्य लेखकों की तरह, वे भी एक विश्लेषणात्मक विषय-सूची तैयार करते हैं ताकि पाठक को अपने विषयवस्तु के विवरण की पूर्वसूचना मिल सके। किसी भी स्थिति में, प्रारंभ में सूचीबद्ध अध्याय शीर्षक मुख्य शीर्षक के महत्व को और अधिक स्पष्ट करने का कार्य करते हैं।

जो पाठक इन सभी बातों को नज़रअंदाज़ करता है, अगर वह इस सवाल से उलझन में है कि यह किस तरह की किताब है, तो इसके लिए वह स्वयं ही ज़िम्मेदार है। वह और भी ज़्यादा उलझन में पड़ जाएगा। अगर वह इस सवाल का जवाब नहीं दे पाता, और अगर वह खुद से यह सवाल कभी नहीं पूछता, तो वह किताब के बारे में कई अन्य सवालों को पूछने या उनका जवाब देने में असमर्थ रहेगा।

हाल ही में श्री हचिन्स और मैं छात्रों की एक कक्षा के साथ मिलकर दो किताबें पढ़ रहे थे।

एक मैकियावेली द्वारा लिखित थी, दूसरी थॉमस एक्विनास द्वारा। शुरुआती चर्चा में, श्रीमान...

हचिन्स ने पूछा कि क्या दोनों पुस्तकें एक ही प्रकार की हैं। संयोगवश उन्होंने एक ऐसे छात्र को चुना जिसने उन्हें पढ़ना पूरा नहीं किया था।

छात्र ने इसका बहाना बनाकर जवाब देने से बचने की कोशिश की। श्री हचिन्स ने कहा, "लेकिन उनके शीर्षकों के बारे में क्या?" छात्र यह ध्यान नहीं दे पाया था कि 'द प्रिंस' के बारे में मैकियावेली ने और 'द गवर्नेंस ऑफ प्रिंसेस' के बारे में लिखा था। जब बोर्ड पर 'प्रिंस' शब्द लिखा गया और उसे रेखांकित किया गया, तो छात्र ने अनुमान लगाया कि दोनों पुस्तकें एक ही समस्या के बारे में हैं।

''लेकिन यह किस तरह की समस्या है?'' श्री हचिन्स ने जोर देकर पूछा।

“ये किस तरह की किताबें हैं?” छात्र को अब लगा कि उसे कुछ सुराग मिल गया है, और उसने बताया कि उसने दोनों प्रस्तावनाएँ पढ़ ली हैं। “इससे क्या मदद मिलती है?” श्री हचिन्स ने पूछा। “ठीक है,”

छात्र ने कहा, "मैकियावेली ने तानाशाह बनने और उससे बच निकलने के तरीके पर अपनी छोटी सी मार्गदर्शिका लोरेंजो डी मेडिसी के लिए लिखी थी, और सेंट थॉमस ने साइप्रस के राजा के लिए अपनी मार्गदर्शिका लिखी थी।"

हमने इस कथन में हुई त्रुटि को सुधारने के लिए यहीं रुकने का निर्णय नहीं लिया। सेंट थॉमस तानाशाहों को उनके अत्याचारों से बचने में मदद नहीं कर रहे थे। हालाँकि, छात्र ने एक ऐसा शब्द प्रयोग किया था, जिससे लगभग प्रश्न का उत्तर मिल गया था। जब उससे पूछा गया कि वह कौन सा शब्द है, तो उसे पता नहीं था। जब उसे बताया गया कि वह शब्द "गाइडबुक" है, तो उसे अपने कहे का महत्व समझ नहीं आया। मैंने उससे पूछा कि क्या वह सामान्यतः जानता है कि गाइडबुक किस प्रकार की पुस्तक होती है? क्या खाना पकाने की पुस्तक गाइडबुक होती है? क्या नैतिकता पर लिखी पुस्तक गाइडबुक होती है? क्या कविता लेखन कला पर लिखी पुस्तक गाइडबुक होती है? उसने इन सभी प्रश्नों का उत्तर हाँ में दिया।

हमने उन्हें याद दिलाया कि कक्षा में पहले सैद्धांतिक और व्यावहारिक पुस्तकों के बीच अंतर बताया गया था। "ओह," उन्होंने चमकते हुए कहा, "ये दोनों ही व्यावहारिक पुस्तकें हैं, ऐसी पुस्तकें जो आपको बताती हैं कि क्या किया जाना चाहिए, न कि वास्तव में क्या हो रहा है।"

एक और विराम के अंत में, अन्य छात्रों के भी चर्चा में शामिल होने के बाद, हम अंततः दोनों पुस्तकों को राजनीति के व्यावहारिक कार्यों के रूप में वर्गीकृत करवाने में सफल रहे। शेष समय हमने यह पता लगाने में बिताया कि क्या दोनों लेखकों की राजनीति की समझ एक जैसी थी, और क्या उनकी पुस्तकें समान रूप से व्यावहारिक थीं या एक ही तरह से व्यावहारिक थीं।

मैं यह कहानी केवल शीर्षकों की व्यापक उपेक्षा के बारे में अपने कथन की पुष्टि करने के लिए ही नहीं, बल्कि एक और महत्वपूर्ण बात स्पष्ट करने के लिए बता रहा हूँ। दुनिया के सबसे स्पष्ट शीर्षक, सबसे सरल प्रारंभिक सामग्री भी आपको किसी पुस्तक को वर्गीकृत करने में मदद नहीं करेगी, भले ही आप इन संकेतों पर ध्यान दें, जब तक कि आपके मन में वर्गीकरण की व्यापक रूपरेखा पहले से मौजूद न हो।

यदि आप यह नहीं जानते कि मनोविज्ञान और ज्यामिति दोनों सैद्धांतिक विज्ञान हैं, तो आप यह नहीं समझ पाएंगे कि यूक्लिड की 'एलिमेंट्स ऑफ ज्योमेट्री' और विलियम जेम्स की 'प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी' एक ही प्रकार की पुस्तकें हैं; और जब तक आप यह नहीं जानते कि विज्ञान के विभिन्न प्रकार होते हैं, तब तक आप उन्हें भिन्न के रूप में भी नहीं पहचान पाएंगे।

इसी प्रकार, अरस्तू की 'पॉलिटिक्स' और एडम स्मिथ की 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' के मामले में, आप इन पुस्तकों की समानता और भिन्नता को तभी बता सकते हैं जब आपको पता हो कि व्यावहारिक समस्या क्या होती है और व्यावहारिक समस्याओं के विभिन्न प्रकार क्या होते हैं।

शीर्षकों से कभी-कभी पुस्तकों का वर्गीकरण आसान हो जाता है। यह सर्वविदित है कि यूक्लिड की 'एलिमेंट्स', डेसकार्टेस की 'ज्योमेट्री' और इल्बर्ट की 'फाउंडेशन्स ऑफ ज्योमेट्री' तीन गणितीय पुस्तकें थीं, जिनका विषयवस्तु लगभग एक दूसरे से संबंधित था। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता। सेंट ऑगस्टीन की 'सिटी ऑफ गॉड', हॉब्स की 'लेवियाथन' और रूसो की 'सोशल कॉन्ट्रैक्ट' को उनके शीर्षकों से राजनीतिक ग्रंथ बताना शायद इतना आसान न हो, हालांकि उनके अध्याय शीर्षकों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से इन तीनों पुस्तकों में निहित समस्या का पता चल जाता है।

किताबों को एक ही तरह की श्रेणी में रखना काफी नहीं है। पढ़ने के इस पहले नियम का पालन करने के लिए आपको यह जानना होगा कि वह किस तरह की किताब है। शीर्षक से, किताब के शुरुआती पन्नों से, या कभी-कभी पूरी किताब से भी आपको पता नहीं चलेगा, जब तक कि आपके पास कुछ श्रेणियां न हों जिनका उपयोग करके आप किताबों को समझदारी से वर्गीकृत कर सकें। दूसरे शब्दों में, इस नियम को समझदारी से पालन करने के लिए इसे आपके लिए थोड़ा और स्पष्ट करना होगा। यह केवल व्याख्यात्मक किताबों के मुख्य प्रकारों पर संक्षिप्त चर्चा के माध्यम से ही संभव है।

शायद आप साप्ताहिक साहित्यिक परिशिष्ट पढ़ते होंगे। उनमें उस सप्ताह प्राप्त पुस्तकों को कई शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है, जैसे: कथा और कविता, या साहित्य; इतिहास और जीवनी; दर्शन और धर्म; विज्ञान और मनोविज्ञान; अर्थशास्त्र और समाज विज्ञान; और आमतौर पर "विविध" के अंतर्गत एक लंबी सूची होती है। ये श्रेणियाँ मोटे तौर पर तो ठीक हैं, लेकिन ये कुछ बुनियादी भेदों को स्पष्ट नहीं करतीं और कुछ ऐसी पुस्तकों को भी एक साथ रखती हैं जिन्हें अलग-अलग रखा जाना चाहिए।

ये उतने बुरे नहीं हैं जितना मैंने कुछ किताबों की दुकानों में देखा है, जो उन अलमारियों को दर्शाते हैं जहाँ "दर्शन, धर्मशास्त्र और नए विचार" पर किताबें रखी हैं। ये पुस्तकालय की मानक वर्गीकरण प्रणाली जितनी अच्छी भी नहीं हैं, जो अधिक विस्तृत है, लेकिन वह भी हमारे उद्देश्य के लिए पूरी तरह उपयुक्त नहीं है। हमें एक ऐसी वर्गीकरण प्रणाली चाहिए जो पढ़ने की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए पुस्तकों को वर्गीकृत करे, न कि उन्हें बेचने या अलमारियों पर रखने के उद्देश्य से।

मैं सबसे पहले एक मुख्य भेद प्रस्तुत करूँगा, और फिर उस मुख्य भेद के अधीन कई अन्य भेदों का उल्लेख करूँगा। मैं आपको उन भेदों से परेशान नहीं करूँगा जो आपके पढ़ने के कौशल के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं।

- 3 -

मुख्य अंतर सैद्धांतिक और व्यावहारिक सिद्धांतों के बीच है। हर कोई "सैद्धांतिक" और "व्यावहारिक" शब्दों का प्रयोग करता है, लेकिन कुछ ही लोग इनका अर्थ जानते हैं, विशेष रूप से वे व्यावहारिक व्यक्ति जो सभी सिद्धांतकारों पर अविश्वास करते हैं, विशेषकर यदि वे सरकार में हों। कई लोगों के लिए, "सैद्धांतिक" का अर्थ दूरदर्शी या रहस्यवादी होता है, और "व्यावहारिक" का अर्थ...

इसका अर्थ है कुछ ऐसा जो कारगर हो, जिससे तत्काल आर्थिक लाभ मिले। इसमें कुछ हद तक सच्चाई है। व्यावहारिक का संबंध किसी न किसी रूप में, चाहे तुरंत हो या दीर्घकालिक रूप से, काम करने वाली चीज़ों से है। सैद्धांतिक का संबंध किसी ऐसी चीज़ से है जिसे देखा या समझा जा सके। यदि हम यहाँ समझी गई इस अधूरी सच्चाई को और स्पष्ट करें, तो हम ज्ञान और कर्म के बीच के अंतर को समझ पाते हैं, जो एक लेखक के दो मुख्य लक्ष्य हो सकते हैं।

लेकिन आप कह सकते हैं, क्या हम यहाँ ज्ञान प्रदान करने वाली पुस्तकों की बात नहीं कर रहे हैं? ऐसे में क्रिया का क्या महत्व है? आप यह भूल रहे हैं कि बुद्धिमानीपूर्ण क्रिया ज्ञान पर निर्भर करती है।

ज्ञान का उपयोग कई तरीकों से किया जा सकता है, न केवल प्रकृति को नियंत्रित करने और उपयोगी मशीनें बनाने के लिए, बल्कि मानव आचरण को निर्देशित करने और विभिन्न कौशल क्षेत्रों में मनुष्य के कार्यों को विनियमित करने के लिए भी। यहाँ मेरा तात्पर्य शुद्ध विज्ञान और अनुप्रयुक्त विज्ञान के बीच के अंतर से है, या जैसा कि कभी-कभी गलत तरीके से कहा जाता है, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बीच के अंतर से।

कुछ पुस्तकें और कुछ शिक्षक केवल उस ज्ञान में रुचि रखते हैं जिसे वे संप्रेषित करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि वे ज्ञान की उपयोगिता को नकारते हैं, या यह कि वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ज्ञान केवल अपने आप में ही अच्छा है। वे बस स्वयं को एक प्रकार की शिक्षा तक सीमित रखते हैं और दूसरे प्रकार की शिक्षा दूसरों के लिए छोड़ देते हैं। इन दूसरों की रुचि केवल ज्ञान तक ही सीमित नहीं होती। वे मानव जीवन की उन समस्याओं से चिंतित होते हैं जिन्हें ज्ञान के माध्यम से हल किया जा सकता है। वे भी ज्ञान का संचार करते हैं, लेकिन हमेशा उसके अनुप्रयोग पर ज़ोर देते हैं।

ज्ञान को व्यावहारिक बनाने के लिए हमें उसे क्रियाविधि में परिवर्तित करना होगा। किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें केवल यह जानने से आगे बढ़ना होगा कि स्थिति क्या है और उसके बारे में क्या करना है। मैं इसे संक्षेप में इस बात से समझा सकता हूँ कि आप इस पुस्तक में पहले ही इस अंतर से परिचित हो चुके हैं - 'यह जानना' और 'कैसे करना है' के बीच का अंतर।

सैद्धांतिक पुस्तकें आपको यह सिखाती हैं कि कोई बात सच है। व्यावहारिक पुस्तकें आपको वह करना सिखाती हैं जो आपको लगता है कि आपको करना चाहिए।

यह पुस्तक व्यावहारिक है, सैद्धांतिक नहीं। विद्यार्थी की भाषा में कहें तो, कोई भी "मार्गदर्शिका" व्यावहारिक पुस्तक होती है। कोई भी पुस्तक जो आपको यह बताती है कि आपको क्या करना चाहिए या कैसे करना चाहिए, वह व्यावहारिक है। इस प्रकार आप देख सकते हैं कि व्यावहारिक पुस्तकों की श्रेणी में कलाओं के सभी विवरण, इंजीनियरिंग, चिकित्सा या पाककला जैसे किसी भी क्षेत्र के सभी अभ्यास नियमावली और वे ग्रंथ शामिल हैं जिन्हें परंपरागत रूप से नैतिकता से संबंधित माना जाता है, जैसे कि आर्थिक, नैतिक या राजनीतिक समस्याओं पर पुस्तकें।

व्यावहारिक लेखन का एक और उदाहरण देना ज़रूरी है। एक भाषण—चाहे वह राजनीतिक भाषण हो या नैतिक उपदेश—निश्चित रूप से आपको यह बताने की कोशिश करता है कि आपको क्या करना चाहिए या किसी विषय पर आपको कैसा महसूस करना चाहिए। जो भी व्यक्ति किसी भी विषय पर व्यावहारिक रूप से लिखता है, वह न केवल आपको सलाह देने की कोशिश करता है, बल्कि आपको अपनी सलाह मानने के लिए भी प्रेरित करता है। इसलिए हर नैतिक ग्रंथ में वाक्पटुता का तत्व मौजूद होता है। यह उन पुस्तकों में भी पाया जाता है जो किसी कला को सिखाने का प्रयास करती हैं, जैसे कि यह पुस्तक। उदाहरण के लिए, मैंने आपको पढ़ने सीखने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की है।

हालांकि हर व्यावहारिक पुस्तक कुछ हद तक भाषण कला से भरपूर होती है—या शायद, जैसा कि हम आज कहते हैं, प्रचार का तड़का लगाती है—लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि भाषण कला और व्यावहारिकता एक ही अर्थ रखते हैं। आप राजनीतिक भाषण और राजनीति पर लिखे गए ग्रंथ, या आर्थिक प्रचार और आर्थिक समस्याओं के विश्लेषण में अंतर जानते हैं। कम्युनिस्ट घोषणापत्र एक भाषण कला का नमूना है, लेकिन दास कैपिटल उससे कहीं अधिक है।

कभी-कभी आप किसी पुस्तक के शीर्षक से ही उसकी व्यावहारिकता का पता लगा सकते हैं। यदि उसमें "कला" या "कैसे करें" जैसे वाक्यांश हों, तो आप उसे तुरंत पहचान सकते हैं। यदि शीर्षक में ऐसे क्षेत्रों का उल्लेख हो जिन्हें आप व्यावहारिक मानते हैं, जैसे अर्थशास्त्र या राजनीति, इंजीनियरिंग या व्यवसाय, कानून या चिकित्सा, तो आप पुस्तकों को आसानी से वर्गीकृत कर सकते हैं।

कुछ और संकेत भी हैं। एक बार मैंने एक छात्र से पूछा कि क्या वह जॉन लॉक की दो पुस्तकों के शीर्षकों से बता सकता है कि कौन सी व्यावहारिक है और कौन सी सैद्धांतिक। दोनों पुस्तकें थीं: मानव समझ पर निबंध और नागरिक सरकार की उत्पत्ति, विस्तार और अंत पर निबंध। छात्र ने शीर्षकों से ही समझ लिया था। उसने कहा कि सरकार की समस्याएं व्यावहारिक हैं, और समझ का विश्लेषण सैद्धांतिक है।

उन्होंने आगे बढ़कर कहा कि उन्होंने लॉक द्वारा समझ पर लिखी गई पुस्तक की प्रस्तावना पढ़ी है।

वहां लॉक ने अपने उद्देश्य को "मानव ज्ञान की उत्पत्ति, निश्चितता और सीमा" की जांच करना बताया। यह वाक्यांश शासन पर लिखी गई पुस्तक के शीर्षक से मिलता-जुलता था, लेकिन एक महत्वपूर्ण अंतर था। एक मामले में लॉक ज्ञान की निश्चितता या वैधता से चिंतित थे, जबकि दूसरे में शासन के उद्देश्य से।

छात्र ने कहा, किसी चीज की वैधता के बारे में प्रश्न सैद्धांतिक होते हैं, जबकि किसी भी चीज के उद्देश्य, उसके परिणाम के बारे में प्रश्न उठाना व्यावहारिक होता है।

उस छात्र के पास यह समझने के कई तरीके थे कि वह किस तरह की किताब पढ़ रहा है, और मैं यह भी कहना चाहूंगा कि वह अधिकांश छात्रों से बेहतर पाठक था। आइए, मैं उसके उदाहरण से आपको एक सामान्य सलाह दूं। सबसे पहले, किताब के शीर्षक और उसके शुरुआती पन्नों से ही उसका विश्लेषण करने का प्रयास करें। यदि यह पर्याप्त न हो, तो आपको मुख्य पाठ में दिए गए संकेतों पर निर्भर रहना होगा। शब्दों पर ध्यान देकर और बुनियादी श्रेणियों को ध्यान में रखकर, आप बिना ज्यादा पढ़े ही किताब को वर्गीकृत कर पाएंगे।

एक व्यावहारिक पुस्तक में "चाहिए", "होना चाहिए", "अच्छा" और "बुरा", "लक्ष्य" और "साधन" जैसे शब्दों का बार-बार प्रयोग होने से उसका स्वरूप शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है। एक व्यावहारिक पुस्तक की विशेषता यह कथन है कि कुछ किया जाना चाहिए; या यह कि किसी कार्य को करने का यह सही तरीका है; या यह कि एक लक्ष्य के रूप में या चुने जाने वाले साधन के रूप में एक चीज दूसरी से बेहतर है। इसके विपरीत, एक सैद्धांतिक पुस्तक बार-बार "है" कहती है, न कि

"चाहिए" या "होना चाहिए"। यह दिखाने की कोशिश करता है कि कोई बात सच है, कि ये तथ्य हैं; न कि यह कि अगर चीजें अलग होतीं तो बेहतर होतीं, और यही उन्हें बेहतर बनाने का तरीका है।

सैद्धांतिक पुस्तकों के उपविभाजन पर आगे बढ़ने से पहले, मैं आपको आगाह करना चाहता हूँ कि यह न समझें कि समस्या चाय या कॉफ़ी में अंतर बताने जितनी सरल है। मैंने केवल कुछ संकेत सुझाए हैं जिनसे आप इन भेदों को समझना शुरू कर सकते हैं। सैद्धांतिक और व्यावहारिक के बीच के अंतर को आप जितना बेहतर समझेंगे, उतना ही बेहतर आप इन संकेतों का उपयोग कर पाएंगे।

आप नामों और उपाधियों पर अविश्वास करना सीखेंगे। आप पाएंगे कि यद्यपि अर्थशास्त्र मुख्य रूप से और आमतौर पर एक व्यावहारिक विषय है, फिर भी अर्थशास्त्र पर ऐसी पुस्तकें भी हैं जो विशुद्ध रूप से सैद्धांतिक हैं। आपको ऐसे लेखक मिलेंगे जो सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर नहीं जानते, ठीक वैसे ही जैसे उपन्यासकार कल्पना और समाजशास्त्र के बीच अंतर नहीं जानते। आपको ऐसी पुस्तकें मिलेंगी जो आंशिक रूप से एक प्रकार की और आंशिक रूप से दूसरे प्रकार की प्रतीत होती हैं, जैसे स्पिनोज़ा की नीतिशास्त्र। फिर भी, एक पाठक के रूप में आपके लिए यह जानना लाभकारी होगा कि लेखक अपनी

दर्शनशास्त्र विज्ञान के समान है और इतिहास से इस मायने में भिन्न है कि यह विशिष्ट अतीत की घटनाओं का विवरण देने के बजाय सामान्य सत्यों की खोज करता है। लेकिन दार्शनिक वैज्ञानिक के समान प्रश्न नहीं पूछता, न ही वह उनके उत्तर देने के लिए समान पद्धति का प्रयोग करता है।

यदि आप इस विषय पर और अधिक अध्ययन करना चाहते हैं, तो मैं आपको जैक्स मैरिटेन की पुस्तक 'डिग्रीज़ ऑफ़ नॉलेज' पढ़ने की सलाह दूंगा, जो आधुनिक विज्ञान की पद्धति और उद्देश्य के साथ-साथ दर्शनशास्त्र के दायरे और प्रकृति की गहरी समझ प्रदान करती है। केवल एक समकालीन लेखक ही इस अंतर को पर्याप्त रूप से स्पष्ट कर सकता है, क्योंकि पिछले सौ वर्षों में ही हमने दर्शन और विज्ञान के बीच अंतर करने और उन्हें आपस में जोड़ने की समस्या की जटिलता को पूरी तरह से समझा है। और समकालीन लेखकों में, जैक्स मैरिटेन एक दुर्लभ लेखक हैं जो विज्ञान और दर्शन दोनों के साथ न्याय करने में सक्षम हैं।

चूंकि शीर्षक और विषय-वस्तु के नाम से यह पता लगाना मुश्किल है कि कोई पुस्तक दार्शनिक है या वैज्ञानिक, तो हम यह कैसे जान सकते हैं? मेरे पास एक मानदंड है जो मुझे लगता है कि हमेशा कारगर होगा, हालांकि इसे लागू करने से पहले आपको पुस्तक का काफी हिस्सा पढ़ना पड़ सकता है। यदि कोई सैद्धांतिक पुस्तक उन चीजों का जिक्र करती है जो आपके सामान्य, नियमित, दैनिक अनुभव से परे हैं, तो वह एक वैज्ञानिक कृति है। यदि नहीं, तो वह दार्शनिक है।

आइए इसे उदाहरण से समझते हैं। गैलीलियो की पुस्तक 'टू न्यू साइंसेज' में आपको झुके हुए तल के प्रयोग की कल्पना करनी होगी, या स्वयं प्रयोगशाला में इसे देखना होगा। न्यूटन की पुस्तक 'ऑप्टिक्स' में अंधेरे कमरों में प्रिज्म, दर्पण और विशेष रूप से नियंत्रित प्रकाश किरणों के साथ किए गए प्रयोगों का जिक्र है।

लेखक जिस विशेष अनुभव का जिक्र कर रहे हैं, वह शायद उन्हें किसी प्रयोगशाला में प्राप्त न हुआ हो। आपको भी इस तरह का अनुभव प्राप्त करने के लिए दूर-दूर तक यात्रा करनी पड़ सकती है।

डार्विन ने अपनी पुस्तक 'द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' में जिन तथ्यों का वर्णन किया है, वे उन्होंने कई वर्षों के क्षेत्र अध्ययन के दौरान देखे थे; फिर भी ये ऐसे तथ्य हैं जिनकी पुष्टि अन्य पर्यवेक्षकों द्वारा समान प्रयास करके की जा सकती है और की भी गई है। ये ऐसे तथ्य नहीं हैं जिनकी जाँच औसत व्यक्ति के सामान्य दैनिक अनुभव के आधार पर की जा सके।

इसके विपरीत, एक दार्शनिक पुस्तक किसी भी ऐसे तथ्य या अवलोकन का सहारा नहीं लेती जो आम आदमी के अनुभव से परे हो। एक दार्शनिक अपने विचारों की पुष्टि या समर्थन के लिए पाठक को उसके अपने सामान्य और आम अनुभव का हवाला देता है। इस प्रकार, लॉक की 'मानव समझ पर निबंध' मनोविज्ञान पर आधारित एक दार्शनिक रचना है, जबकि फ्रायड के लेखन वैज्ञानिक हैं। लॉक अपने हर विचार को आपके अपने मानसिक प्रक्रियाओं के अनुभव के आधार पर प्रस्तुत करते हैं। फ्रायड अपने अधिकांश विचारों को केवल मनोविश्लेषक के क्लिनिक की नैदानिक परिस्थितियों में अपने अवलोकनों के आधार पर ही व्यक्त कर पाते हैं—ऐसी

बातें जिनके बारे में अधिकांश लोग कभी सोचते भी नहीं, या यदि सोचते भी हैं, तो मनोविश्लेषक की दृष्टि से नहीं।

मैंने जिस अंतर का सुझाव दिया है, वह सर्वमान्य है जब हम कहते हैं कि विज्ञान प्रयोगात्मक है या विस्तृत अवलोकन संबंधी शोधों पर निर्भर करता है, जबकि दर्शनशास्त्र वास्तव में सैद्धांतिक चिंतन है। यह तुलना दुर्भावनापूर्ण इरादे से नहीं की गई है। कुछ समस्याएं ऐसी हैं जिन्हें सामान्य मानवीय अनुभव के प्रकाश में सोचने वाला व्यक्ति सैद्धांतिक रूप से हल कर सकता है। बेशक, कुछ अन्य समस्याएं ऐसी भी हैं जिन्हें सैद्धांतिक चिंतन से हल नहीं किया जा सकता। आवश्यकता है किसी प्रकार की जांच की— प्रयोगों या क्षेत्र में शोध की—ताकि अनुभव को सामान्य, रोजमर्रा की दिनचर्या से परे विस्तारित किया जा सके। विशेष अनुभव की आवश्यकता है।

मेरा मतलब यह नहीं है कि दार्शनिक केवल एक विचारक होता है और वैज्ञानिक मात्र एक प्रेक्षक। दोनों को ही अवलोकन और चिंतन करना पड़ता है, लेकिन वे अलग-अलग प्रकार के अवलोकन करते हैं। एक को समस्या का हल निकालने से पहले विशेष परिस्थितियों में विशेष अवलोकन करने पड़ते हैं। दूसरा अपने सामान्य अनुभव पर निर्भर रह सकता है।

पद्धति में यह अंतर दार्शनिक और वैज्ञानिक पुस्तकों में हमेशा स्पष्ट होता है, और इसी से आप जान सकते हैं कि आप किस प्रकार की पुस्तक पढ़ रहे हैं। यदि आप इस बात पर ध्यान दें कि किस प्रकार के अनुभव को समझने के लिए आवश्यक माना गया है, तो आप जान जाएंगे कि पुस्तक वैज्ञानिक है या दार्शनिक। वैज्ञानिक पुस्तकों के मामले में बाह्य पठन के नियम अधिक जटिल होते हैं। आपको वास्तव में किसी प्रयोग को देखना पड़ सकता है या किसी संग्रहालय में जाना पड़ सकता है, जब तक कि आप अपनी कल्पना का उपयोग करके कुछ ऐसा न बना लें जिसे आपने कभी नहीं देखा हो, और जिसे लेखक अपने सबसे महत्वपूर्ण कथनों का आधार बता रहा हो।

वैज्ञानिक और दार्शनिक पुस्तकों को पढ़ने के लिए बाहरी परिस्थितियाँ तो भिन्न होती ही हैं, साथ ही आंतरिक पठन के नियम भी दोनों ही मामलों में अलग-अलग तरह से लागू होते हैं। वैज्ञानिक और दार्शनिक एक ही तरह से नहीं सोचते। उनके तर्क देने के तरीके भी भिन्न होते हैं। आपको उन शब्दों और कथनों को पहचानना आना चाहिए जो इन विभिन्न प्रकार के तर्कों का आधार बनते हैं। इसीलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि आप किस प्रकार की पुस्तक पढ़ रहे हैं।

इतिहास के बारे में भी यही सच है। ऐतिहासिक कथन वैज्ञानिक और दार्शनिक कथनों से भिन्न होते हैं। एक इतिहासकार अलग तरह से तर्क देता है और तथ्यों की अलग तरह से व्याख्या करता है।

इसके अलावा, अधिकांश इतिहास की पुस्तकें कथात्मक शैली में लिखी जाती हैं। और कथा, चाहे तथ्य हो या कल्पना, कथा ही होती है। इतिहासकार को काव्यात्मक शैली में लिखना चाहिए, मेरा तात्पर्य है कि उसे एक अच्छी कहानी कहने के नियमों का पालन करना चाहिए। इसलिए, इतिहास पढ़ने के अंतर्निहित नियम विज्ञान और दर्शन की तुलना में अधिक जटिल होते हैं, क्योंकि आपको

कारण, दार्शनिकों को आमतौर पर उन छात्रों को पढ़ाना आसान लगता है जिन्हें उनके सहपाठियों ने पहले नहीं पढ़ाया होता, जबकि वैज्ञानिक उन छात्रों को प्राथमिकता देते हैं जिन्हें उनके सहपाठियों ने पहले से तैयार किया होता है। दार्शनिकों को आम तौर पर वैज्ञानिकों की तुलना में एक-दूसरे को पढ़ाना अधिक कठिन लगता है। मैं इन सुप्रसिद्ध तथ्यों का उल्लेख दर्शन और विज्ञान को पढ़ाने के अपरिहार्य अंतर को स्पष्ट करने के लिए कर रहा हूँ।

विभिन्न क्षेत्रों में अध्यापन कला में अंतर होने पर, सीखने की कला में भी उतना ही अंतर होना चाहिए। विद्यार्थी की क्रिया किसी न किसी रूप में शिक्षक की क्रिया के अनुरूप होनी चाहिए। पुस्तकों और उनके पाठकों के बीच वही संबंध है जो जीवित शिक्षकों और उनके विद्यार्थियों के बीच होता है। अतः, चूंकि पुस्तकें विभिन्न प्रकार के ज्ञान को संप्रेषित करती हैं, इसलिए वे हमें अलग-अलग तरीकों से शिक्षा प्रदान करती हैं; और यदि हमें उनका अनुसरण करना है, तो हमें प्रत्येक प्रकार की पुस्तक को उचित तरीके से पढ़ना सीखना होगा।

इस अध्याय में अपनी बात समझाने में इतनी मेहनत करने के बाद, अब मैं आपको निराश करने जा रहा हूँ। या शायद आपको यह जानकर राहत मिलेगी कि अगले अध्यायों में, जिनमें पढ़ने के शेष नियमों पर चर्चा की गई है, मैं ज्ञान प्रदान करने वाली और सूचना एवं ज्ञानोदय के लिए पढ़ी जाने वाली सभी पुस्तकों को एक ही प्रकार की मानूंगा। वे मूलतः एक ही प्रकार की हैं। वे सभी व्याख्यात्मक हैं, न कि काव्यात्मक। और व्याख्यात्मक साहित्य की अधीनस्थ श्रेणियों पर इन्हें लागू करने से पहले, इन नियमों से आपको पहले सामान्य रूप से परिचित कराना आवश्यक है।

सामान्य नियमों को समझने के बाद ही आपको ये योग्यताएँ समझ में आएँगी। इसलिए, मैं अध्याय चौदह तक गौण प्रकारों पर आगे की चर्चा को स्थगित करने का प्रयास करूँगा। तब तक आप पढ़ने के सभी नियमों का अध्ययन कर चुके होंगे और ज्ञान प्रदान करने वाली किसी भी प्रकार की पुस्तक पर उनके अनुप्रयोग को समझ चुके होंगे। तब यह सुझाव देना संभव होगा कि इस अध्याय में हमने जो भेद किए हैं, वे नियमों में योग्यताओं की आवश्यकता क्यों पैदा करते हैं।

जब आप इसे पूरा पढ़ लेंगे, तब शायद आपको पहले से बेहतर समझ में आ जाएगा कि किसी भी पुस्तक को पहली बार पढ़ने का पहला नियम यह जानना क्यों ज़रूरी है कि वह किस प्रकार की पुस्तक है। मुझे आशा है कि आप समझ जाएंगे, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि कुशल पाठक कई सूक्ष्म भेदों को समझने वाला व्यक्ति होता है।

अध्याय नौ

कंकाल को देखकर

- 1-

शेली के एडोनाइस या कीट्स की किसी कविता के साथ ऐसा करना मुझे बलात्कार और नरसंहार से कम नहीं लगता था। जब आप इस तरह की निर्मम हत्या को अंजाम दे देते हैं, तो सब कुछ

"कविता" का अर्थ ही लुप्त हो जाता। लेकिन मैंने अपना काम किया और एक साल के विश्लेषण के बाद पाया कि ऐसा नहीं था। कविता को पढ़ने की ऐसी विधियों से नष्ट नहीं किया जा सकता था। इसके विपरीत, इससे जो गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई, उससे कविता एक जीवंत जीव की तरह लगने लगी। एक अस्पष्ट धुंधली सी आकृति होने के बजाय, वह एक सजीव वस्तु की सुंदरता और संतुलन के साथ हमारे सामने प्रकट होने लगी।

पढ़ने का मेरा पहला पाठ यही था। इससे मैंने दो नियम सीखे, जो किसी भी पुस्तक को पहली बार पढ़ने के लिए दूसरे और तीसरे नियम हैं। मैं "किसी भी पुस्तक" कह रहा हूँ। ये नियम विज्ञान, कविता और किसी भी प्रकार के व्याख्यात्मक ग्रंथ पर लागू होते हैं। बेशक, जिस प्रकार की पुस्तक पर इनका प्रयोग किया जा रहा है, उसके अनुसार इनका प्रयोग कुछ भिन्न होगा। एक उपन्यास की एकता राजनीति पर लिखे गए ग्रंथ की एकता के समान नहीं होती; न ही उसके भाग एक ही प्रकार के होते हैं, न ही एक ही क्रम में व्यवस्थित होते हैं। लेकिन पढ़ने योग्य प्रत्येक पुस्तक में एक एकता और भागों का एक संगठन होता है। जिस पुस्तक में ये नहीं होते, वह अव्यवस्थित होती है। वह अपेक्षाकृत अपठनीय होती है, जैसा कि वास्तव में खराब पुस्तकें होती हैं।

- 2 –

मैं इन दोनों नियमों को यथासंभव सरल शब्दों में बताने जा रहा हूँ। फिर मैं इनकी व्याख्या करूँगा और उदाहरण देकर समझाऊँगा। (पहला नियम, जिसकी चर्चा हमने पिछले अध्याय में की थी, यह था: पुस्तक को उसके प्रकार और विषयवस्तु के अनुसार वर्गीकृत करें।)

दूसरा नियम—मैं इसे "दूसरा" इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं पढ़ने के पहले तरीके में शामिल चार नियमों की क्रमांकन को बनाए रखना चाहता हूँ—को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: पूरी किताब की एकता को एक वाक्य में, या अधिक से अधिक कुछ वाक्यों (एक छोटे पैराग्राफ) में बताएँ।

इसका अर्थ यह है कि आपको पूरी किताब का सार यथासंभव संक्षेप में बताने में सक्षम होना चाहिए। पूरी किताब का सार बताना और यह बताना कि वह किस प्रकार की किताब है, दोनों अलग-अलग बातें हैं। यहाँ "के बारे में" शब्द भ्रामक हो सकता है। एक अर्थ में, एक किताब किसी विशेष प्रकार के विषय पर आधारित होती है, जिसे वह एक विशेष तरीके से प्रस्तुत करती है। यदि आप यह जानते हैं, तो आप जानते हैं कि वह किस प्रकार की किताब है। लेकिन इसका एक और अर्थ भी है, जो शायद अधिक बोलचाल की भाषा में प्रचलित है।

"के बारे में।" हम किसी व्यक्ति से पूछते हैं कि वह किस बारे में है, वह क्या कर रहा है। इसी तरह हम यह जानने का प्रयास कर सकते हैं कि एक लेखक क्या

करने की कोशिश कर रहा है। इस अर्थ में किसी पुस्तक के विषय का पता लगाना ही उसके मुख्य बिंदु या विषयवस्तु को खोजना है।

मुझे लगता है कि हर कोई इस बात से सहमत होगा कि पुस्तक एक कलाकृति है। इसके अलावा, वे इस बात से भी सहमत होंगे कि पुस्तक और कलाकृति के रूप में जितनी अच्छी कोई रचना होती है, उसमें उतनी ही अधिक परिपूर्ण और व्यापक एकता होती है। वे जानते हैं कि यह बात संगीत और चित्रकला, उपन्यासों और नाटकों के लिए भी सच है। ज्ञान प्रदान करने वाली पुस्तकों के लिए भी यह बात उतनी ही सत्य है। लेकिन इस तथ्य को अस्पष्ट रूप से स्वीकार करना पर्याप्त नहीं है। आपको इस एकता को निश्चित रूप से समझना होगा। मेरी जानकारी में सफलता सुनिश्चित करने का केवल एक ही तरीका है। आपको स्वयं को या किसी और को यह बताने में सक्षम होना चाहिए कि यह एकता क्या है, और वह भी कुछ शब्दों में। उस एकता को केवल "महसूस करने" से संतुष्ट न हों जिसे आप व्यक्त नहीं कर सकते। जो विद्यार्थी कहता है, "मैं जानता हूँ कि यह क्या है, लेकिन मैं इसे व्यक्त नहीं कर सकता," वह किसी को मूर्ख नहीं बना सकता, यहाँ तक कि स्वयं को भी नहीं।

तीसरे नियम को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: पुस्तक के प्रमुख भागों को प्रस्तुत करें, और दिखाएँ कि ये एक दूसरे के साथ और संपूर्ण की एकता के साथ व्यवस्थित होकर एक संपूर्ण के रूप में कैसे संगठित होते हैं।

इस नियम का कारण स्पष्ट होना चाहिए। यदि कोई कलाकृति बिल्कुल सरल होती, तो उसमें कोई भाग नहीं होते। लेकिन ऐसा नहीं है। मनुष्य द्वारा अनुभव की जाने वाली कोई भी भौतिक वस्तु इस तरह से सरल नहीं है, न ही कोई मानवीय रचना। ये सभी जटिल इकाइयाँ हैं। यदि आप किसी जटिल इकाई के बारे में केवल इतना ही जानते हैं कि वह एक है, तो आपने उसे नहीं समझा है। आपको यह भी जानना होगा कि वह अनेक है, ऐसी अनेकता नहीं जो बहुत सी अलग-अलग चीजों से मिलकर बनी हो, बल्कि एक संगठित अनेकता। यदि भाग आपस में जैविक रूप से संबंधित न होते, तो उनसे बना संपूर्ण एक नहीं होता। वास्तव में, कोई संपूर्ण होता ही नहीं, बल्कि केवल एक संग्रह होता।

आप ईंटों के ढेर और उनसे बने एक घर के बीच का अंतर जानते हैं। आप एक घर और कई घरों के समूह के बीच का अंतर भी जानते हैं। एक किताब एक घर की तरह है। यह कई कमरों का एक महल है, अलग-अलग स्तरों पर बने कमरे, अलग-अलग आकार और आकृति के, अलग-अलग नज़ारों वाले, अलग-अलग कार्यों को पूरा करने वाले कमरे। ये कमरे आंशिक रूप से स्वतंत्र हैं। प्रत्येक की अपनी संरचना और आंतरिक सजावट है। लेकिन वे पूरी तरह से स्वतंत्र और अलग नहीं हैं। वे दरवाजों और मेहराबों, गलियारों और सीढ़ियों से जुड़े हुए हैं। क्योंकि वे जुड़े हुए हैं, इसलिए प्रत्येक का आंशिक कार्य पूरे घर की उपयोगिता में अपना योगदान देता है। अन्यथा, घर वास्तव में रहने योग्य नहीं होगा।

वास्तुकला की यह उपमा लगभग सटीक है। एक अच्छी किताब, एक अच्छे घर की तरह, भागों की एक व्यवस्थित रचना होती है। प्रत्येक प्रमुख भाग की अपनी एक निश्चित स्वतंत्रता होती है। जैसा कि हम आगे देखेंगे, इसकी अपनी एक आंतरिक संरचना हो सकती है। लेकिन इसका अन्य भागों से जुड़ाव भी आवश्यक है—

अर्थात, कार्यात्मक रूप से उनसे संबंधित होना चाहिए—अन्यथा यह संपूर्ण रचना की बोधगम्यता में अपना योगदान नहीं दे सकती।

जिस प्रकार घर कमोबेश रहने योग्य होते हैं, उसी प्रकार पुस्तकें भी कमोबेश पठनीय होती हैं। सबसे पठनीय पुस्तक लेखक की एक उत्कृष्ट रचना होती है। सर्वोत्तम पुस्तकें वे होती हैं जिनकी संरचना सबसे अधिक सुबोध और स्पष्ट होती है।

हालांकि वे आमतौर पर साधारण पुस्तकों की तुलना में अधिक जटिल होती हैं, लेकिन उनकी अधिक जटिलता किसी न किसी रूप में एक बड़ी सरलता भी है, क्योंकि उनके भाग बेहतर ढंग से व्यवस्थित और अधिक एकीकृत होते हैं।

यही एक कारण है कि महान पुस्तकें अत्यंत पठनीय होती हैं। कमतर रचनाएँ वास्तव में पढ़ने में अधिक कठिन होती हैं। फिर भी, उन्हें अच्छी तरह से पढ़ने के लिए—अर्थात् जितना अच्छा पढ़ा जा सकता है—आपको उनमें कोई योजना ढूँढ़ने का प्रयास करना होगा। यदि लेखक ने स्वयं उस योजना को थोड़ा और स्पष्ट रूप से देखा होता तो वे और भी बेहतर होतीं। लेकिन यदि वे किसी भी रूप में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, यदि वे किसी हद तक एक जटिल इकाई हैं, तो उनमें एक योजना अवश्य है और आपको उसे ढूँढ़ना होगा।

- 3 –

अब मैं दूसरे नियम पर लौटता हूँ, जिसमें एकता का उल्लेख करना आवश्यक है। इस नियम के कुछ उदाहरण आपको इसे व्यवहार में लाने में मार्गदर्शन कर सकते हैं। मैं एक प्रसिद्ध उदाहरण से शुरुआत करता हूँ। आप में से कई लोगों ने शायद स्कूल में होमर की ओडिसी पढ़ी होगी। निश्चित रूप से आप में से अधिकांश लोग यूलिसिस की कहानी जानते होंगे, वह व्यक्ति जिसे ट्रॉय की घेराबंदी से लौटने में दस साल लग गए और जहाँ उसने अपनी वफादार पत्नी पेनेलोप को कई विवाह प्रस्तावों से घिरा पाया। होमर द्वारा वर्णित यह एक विस्तृत कहानी है, जो भूमि और समुद्र पर रोमांचक कारनामों से भरी है, जिसमें हर तरह के प्रसंग और कथानक की कई जटिलताएँ हैं। एक अच्छी कहानी होने के नाते, इसमें क्रिया की एक ही एकता है, कथानक का एक मुख्य सूत्र है जो सब कुछ आपस में जोड़ता है।

अरस्तू ने अपनी कृति 'पोएटिक्स' में इस बात पर जोर दिया है कि यही हर अच्छी कहानी, उपन्यास या नाटक की पहचान है।

अपने तर्क को पुष्ट करने के लिए, वह आपको यह दिखाता है कि ओडिसी की एकता को कुछ वाक्यों में कैसे संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

एक व्यक्ति कई वर्षों तक घर से अनुपस्थित रहता है; नेपच्यून ग्रह उस पर ईर्ष्यापूर्वक नज़र रखता है और उसे अकेला छोड़ देता है। इस बीच, उसके घर की हालत दयनीय हो जाती है; कई लोग उसकी संपत्ति लूट रहे हैं और उसके बेटे के खिलाफ साजिश रच रहे हैं। अंततः, तूफ़ान से जूझते हुए वह स्वयं घर लौटता है;

वह कुछ लोगों से मिलता है; वह स्वयं उन लोगों पर हमला करता है और उन्हें नष्ट करते हुए स्वयं अपनी जान बचा लेता है।

अरस्तू कहते हैं, "यह कथानक का सार है; बाकी सब प्रसंग हैं।"

जब आप इस तरह से कथानक को जान लेते हैं, और इसके माध्यम से पूरी कहानी की एकता को समझ लेते हैं, तो आप उसके हिस्सों को उनकी सही जगह पर रख सकते हैं। आप इसे कुछ पढ़ी हुई उपन्यासों के साथ आज़माकर देख सकते हैं। कुछ बेहतरीन उपन्यासों पर इसे आजमाएं, जैसे टॉम जोन्स, क्राइम एंड पनिशमेंट या आधुनिक यूलिसिस। एक बार जब श्री क्लिफ्टन फैडिमन शिकागो आए थे, तो श्री हचिन्स और मैंने उनसे फील्डिंग के टॉम जोन्स पर हमारी कक्षा में चर्चा का नेतृत्व करने का अनुरोध किया। उन्होंने कथानक को एक परिचित सूत्र में समेट दिया: लड़का लड़की से मिलता है, लड़का लड़की को चाहता है, लड़का लड़की को पा लेता है। यही हर प्रेम कहानी का कथानक है। कक्षा ने सीखा कि दुनिया में कथानकों की संख्या बहुत कम है। एक ही मूल कथानक होने के बावजूद अच्छी और बुरी कहानियों में अंतर इस बात में निहित है कि लेखक उसे किस तरह से प्रस्तुत करता है, वह मूल ढांचे को किस प्रकार सजाता है।

एक और उदाहरण के लिए—जो कि गैर-काल्पनिक साहित्य से संबंधित होने के कारण अधिक उपयुक्त है—आइए इस पुस्तक के पहले छह अध्यायों को लें। मुझे आशा है कि आप इन्हें अब तक एक बार पढ़ चुके होंगे।

इन्हें एक संपूर्ण इकाई मानकर, क्या आप इनकी एकता बता सकते हैं? यदि मुझसे पूछा जाए, तो मैं इसे निम्नलिखित तरीके से करूँगा। यह पुस्तक सामान्य रूप से पढ़ने की प्रकृति, पढ़ने के विभिन्न प्रकारों और विद्यालय एवं विद्यालय के बाहर शिक्षण कला से पढ़ने की कला के संबंध के बारे में है। इसलिए, यह समकालीन शिक्षा में पढ़ने की उपेक्षा के गंभीर परिणामों पर विचार करती है और एक समाधान के रूप में यह सुझाव देती है कि यदि व्यक्ति स्वयं पढ़ना सीख लें, तो पुस्तकें जीवित शिक्षकों का स्थान ले सकती हैं।

मेरी समझ से दो वाक्यों में ही एकता स्पष्ट है। मैं आपसे पहले छह अध्यायों को दोबारा पढ़ने के लिए कहने में संकोच कर रहा हूँ ताकि आप देख सकें कि मैं सही हूँ या नहीं।

कभी-कभी लेखक शीर्षक पृष्ठ पर ही बता देते हैं कि पुस्तक का विषय क्या है। अठारहवीं शताब्दी में लेखकों की यह आदत थी कि वे विस्तृत शीर्षक बनाते थे जिनसे पाठक को पुस्तक का सार समझ आ जाता था। यहाँ जेरेमी कोलियर की पुस्तक का एक शीर्षक है, जो एक अंग्रेज धर्मगुरु थे और जिन्होंने पुनर्स्थापना काल के नाटकों की अश्लीलता पर, हाल ही में 'लीजन ऑफ डिसेंसी' द्वारा फिल्मों पर किए गए हमले से कहीं अधिक विद्वतापूर्ण ढंग से प्रहार किया था: "अंग्रेजी रंगमंच की अनैतिकता और अपवित्रता का संक्षिप्त अवलोकन, साथ ही इस तर्क पर प्राचीनता की भावना"। इससे आप समझ सकते हैं कि कोलियर सार्वजनिक नैतिकता के उल्लंघन के कई स्पष्ट उदाहरण देते हैं और अपने विरोध को उन प्राचीन विद्वानों के ग्रंथों के उद्धरणों से पुष्ट करने

वाले हैं जिन्होंने, प्लेटो की तरह, यह तर्क दिया था कि रंगमंच युवाओं को भ्रष्ट करता है, या, जैसा कि प्रारंभिक चर्च पिताओं ने कहा था, कि नाटक शरीर और शैतान के प्रलोभन हैं।

कभी-कभी लेखक अपनी प्रस्तावना में ही अपनी योजना की समग्रता बता देता है। इस लिहाज़ से व्याख्यात्मक पुस्तकें कथा साहित्य से बिलकुल भिन्न होती हैं। एक वैज्ञानिक या दार्शनिक लेखक के पास आपको सस्पेंस में रखने का कोई कारण नहीं होता। वास्तव में, ऐसा लेखक जितना कम सस्पेंस रखता है, उतनी ही अधिक संभावना होती है कि आप उसे पूरा पढ़ने का प्रयास जारी रखेंगे। किसी समाचार पत्र की खबर की तरह, एक व्याख्यात्मक पुस्तक अपने पहले पैराग्राफ में ही सारांश प्रस्तुत कर सकती है।

यदि लेखक सहायता प्रदान करे तो उसे स्वीकार करने में संकोच न करें, लेकिन प्रस्तावना में लिखी बातों पर पूरी तरह भरोसा न करें। लेखकों की बेहतरीन योजनाएँ भी, अन्य मनुष्यों और चूहों की तरह, अक्सर विफल हो जाती हैं। लेखक द्वारा दिए गए विवरण से कुछ हद तक मार्गदर्शन लें, लेकिन हमेशा याद रखें कि एकता को खोजना पाठक का दायित्व है, उतना ही जितना कि लेखक का। आप इस दायित्व को ईमानदारी से तभी निभा सकते हैं जब आप पूरी पुस्तक पढ़ें।

हेरोडोटस द्वारा लिखित यूनानियों और फारसियों के बीच युद्ध के इतिहास का पहला अनुच्छेद पूरे इतिहास का उत्कृष्ट सारांश प्रस्तुत करता है। इसमें लिखा है: "यह हेलिकार्नासस के हेरोडोटस का शोध है, ताकि मनुष्यों के कार्यों को समय के साथ भुलाया न जा सके, और यूनानियों और बर्बरों द्वारा प्रदर्शित महान और अद्भुत कारनामों की प्रसिद्धि कम न हो; और इसके अतिरिक्त, उन्होंने किस कारण से एक-दूसरे पर युद्ध छेड़ा।" पाठक के रूप में आपके लिए यह एक अच्छी शुरुआत है। यह आपको संक्षेप में बताता है कि पूरी पुस्तक किस विषय पर है।

लेकिन आपको यहीं नहीं रुकना चाहिए। नौ भागों को पढ़ने के बाद, आपको शायद इस कथन को और विस्तार से समझाने की आवश्यकता महसूस होगी ताकि पूरे विषय को सही ढंग से समझा जा सके। आप फारसी राजाओं - साइरस, डेरियस और ज़ेरक्सेस - सलामिस और थर्मोपाइले के यूनानी नायकों और प्रमुख घटनाओं - हेलेस्पोंट पार करना और युद्ध की निर्णायक लड़ाइयों - का उल्लेख करना चाहेंगे।

हेरोडोटस ने अपने कथानक के चरमोत्कर्ष के लिए जिन रोचक विवरणों से आपको भरपूर रूप से तैयार किया है, उन सभी को कथानक से बाहर रखा जा सकता है। ध्यान दें कि इतिहास की एकता कथानक के एक ही सूत्र में निहित होती है, ठीक वैसे ही जैसे कथा साहित्य में होता है। पिछले अध्याय में मैंने इतिहास को विज्ञान और काव्य का मिश्रण कहकर यही तात्पर्य व्यक्त किया था। एकता के संदर्भ में, पढ़ने का यह नियम इतिहास और कथा साहित्य दोनों में एक समान उत्तर देता है। लेकिन पढ़ने के कुछ अन्य नियम भी हैं जिनके लिए इतिहास में भी उसी प्रकार के विश्लेषण की आवश्यकता होती है जैसे विज्ञान और दर्शन में।

कुछ और उदाहरण पर्याप्त होंगे। मैं पहले एक व्यावहारिक पुस्तक लिखूंगा। अरस्तू का 'एथिक्स' मानव सुख की प्रकृति की पड़ताल करता है और उन परिस्थितियों का विश्लेषण करता है जिनके तहत सुख प्राप्त या खोया जा सकता

है। इसमें यह भी बताया गया है कि सुखी होने या दुख से बचने के लिए मनुष्य को अपने आचरण और चिंतन में क्या करना चाहिए। इसमें मुख्य जोर नैतिक और बौद्धिक सद्गुणों के विकास पर है, हालांकि धन, स्वास्थ्य, मित्र और एक न्यायपूर्ण समाज जैसे अन्य आवश्यक मूल्यों को भी मान्यता दी गई है।

एडम स्मिथ की 'वेल्थ ऑफ नेशंस' एक और व्यावहारिक पुस्तक है। यहाँ पाठक को लेखक द्वारा शुरुआत में ही "कार्य की योजना" का विवरण दिया गया है, जिससे उन्हें समझने में सहायता मिलती है। लेकिन इसमें कई पृष्ठ लग जाते हैं। संक्षेप में, इसकी समग्रता को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: यह श्रम विभाजन पर आधारित किसी भी अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय धन के स्रोतों की पड़ताल है, जिसमें श्रमिकों को दिए जाने वाले वेतन, पूंजी पर प्राप्त लाभ और जमींदार को देय किराए को वस्तुओं की कीमतों के प्रमुख कारकों के रूप में माना गया है। यह उन विभिन्न तरीकों पर चर्चा करती है जिनसे पूंजी को कम या ज्यादा लाभकारी रूप से नियोजित किया जा सकता है, और धन की उत्पत्ति और उपयोग को पूंजी के संचय और उपयोग से जोड़ती है। विभिन्न राष्ट्रों में और विभिन्न परिस्थितियों में समृद्धि के विकास का विश्लेषण करते हुए, यह राजनीतिक अर्थव्यवस्था की विभिन्न प्रणालियों की तुलना करती है, और मुक्त व्यापार के लाभों के लिए तर्क देती है। यदि कोई पाठक 'वेल्थ ऑफ नेशंस' की समग्रता को इस प्रकार समझ ले, और कार्ल मार्क्स की 'दास कैपिटल' के लिए भी ऐसा ही प्रयास करे, तो वह आधुनिक समय की दो सबसे प्रभावशाली पुस्तकों के बीच संबंध को समझने की दिशा में अग्रसर होगा।

डार्विन की 'ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' विज्ञान में सैद्धांतिक पुस्तकों की एकता का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। मैं इसे इस प्रकार कहूँगा: यह असंख्य पीढ़ियों के दौरान जीवित प्राणियों में होने वाले बदलावों और उनसे उत्पन्न होने वाले पौधों और जानवरों के नए समूहों का वर्णन है; यह पालतू जानवरों की विविधता और प्राकृतिक परिस्थितियों में होने वाली विविधता दोनों का विश्लेषण करती है, यह दर्शाती है कि अस्तित्व के लिए संघर्ष और प्राकृतिक चयन जैसे कारक किस प्रकार इन समूहों को उत्पन्न और बनाए रखते हैं; यह तर्क देती है कि प्रजातियाँ स्थिर और अपरिवर्तनीय समूह नहीं हैं, बल्कि वे केवल संक्रमणकालीन विविधताएँ हैं जो कम स्पष्ट से अधिक स्पष्ट और स्थायी स्थिति की ओर अग्रसर हैं, और इस तर्क का समर्थन पृथ्वी की पपड़ी में पाए जाने वाले विलुप्त जानवरों, जीवित प्राणियों के भौगोलिक वितरण और तुलनात्मक भ्रूणविज्ञान और शरीर रचना विज्ञान से प्राप्त प्रमाणों द्वारा करती है। यह आपको जटिल लग सकता है, लेकिन उन्नीसवीं सदी के लिए इस पुस्तक को समझना और आत्मसात करना उससे भी कहीं अधिक कठिन था।

अंत में, मैं लॉक के निबंध 'मानव समझ पर निबंध' को दर्शनशास्त्र की एक सैद्धांतिक पुस्तक के रूप में लूंगा। आपको पिछले अध्याय से याद होगा कि लॉक ने स्वयं अपने कार्य का सारांश देते हुए कहा था कि यह "मानव ज्ञान की उत्पत्ति, निश्चितता और सीमा के साथ-साथ विश्वास, राय और सहमति के आधार और स्तरों की पड़ताल" है। लेखक के इस उत्कृष्ट कथन से मुझे कोई आपत्ति नहीं है, सिवाय इसके कि निबंध के पहले और तीसरे भाग के साथ न्याय करने के लिए दो गौण स्पष्टीकरण जोड़ने होंगे: मैं कहना चाहूंगा कि यह दिखाया जाएगा कि कोई जन्मजात विचार नहीं होते बल्कि सभी मानवीय ज्ञान अनुभव से प्राप्त होता

है; और भाषा को विचार की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में, इसके उचित उपयोगों और सबसे आम दुरुपयोगों को इंगित करते हुए चर्चा की जाएगी।

आगे बढ़ने से पहले मैं चाहता हूँ कि आप दो बातों पर ध्यान दें। पहली बात यह है कि आप लेखक से, विशेषकर एक अच्छे लेखक से, कितनी बार यह उम्मीद कर सकते हैं कि वह आपको अपनी पुस्तक की योजना बताने में मदद करेगा।

इसके बावजूद, जब आप छात्रों से पूछते हैं कि पूरी किताब का सार संक्षेप में बताएं, तो उनमें से अधिकांश लगभग पूरी तरह से असमंजस में पड़ जाते हैं। इसका एक कारण शायद संक्षिप्त अंग्रेज़ी वाक्य बोलने में उनकी सामान्य अक्षमता हो सकती है। दूसरा कारण शायद पढ़ने के दौरान इस नियम की अनदेखी करना हो सकता है। लेकिन यह निश्चित रूप से दर्शाता है कि वे लेखक के परिचयात्मक शब्दों पर उतना ही कम ध्यान देते हैं जितना कि शीर्षक पर। मुझे यह निष्कर्ष निकालना गलत नहीं लगता कि जो बात स्कूली छात्रों के लिए सच है, वही जीवन के हर क्षेत्र के अधिकांश पाठकों के लिए भी सच है। इस तरह के पाठक, यदि उन्हें पाठक कहा जा सकता है, तो वे किताब को उसी रूप में सहेज कर रखना चाहते हैं, जैसा कि विलियम जेम्स के अनुसार, दुनिया एक शिशु को दिखाई देती है: एक विशाल, हलचल भरी, खिलती हुई उलझन।

दूसरा बिंदु मेरी आत्मरक्षा में की गई एक निवेदन है। कृपया मेरे द्वारा दिए गए नमूना सारांशों को इस प्रकार न लें मानो मैंने उन्हें पुस्तक की समग्रता का अंतिम और पूर्ण निरूपण मान लिया हो। समग्रता को विभिन्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है। इस विषय में सही और गलत का कोई सरल मापदंड नहीं है। एक कथन दूसरे से बेहतर होता है, बेशक, इस अनुपात में कि वह संक्षिप्त, सटीक और व्यापक हो। लेकिन बिल्कुल भिन्न कथन भी समान रूप से अच्छे या समान रूप से बुरे हो सकते हैं।

मैंने अक्सर किसी पुस्तक की समग्रता को लेखक की अभिव्यक्ति से बिल्कुल अलग तरीके से व्यक्त किया है, और इसके लिए मैं उनसे माफी नहीं मांगता। आप भी मुझसे इसी तरह असहमत हो सकते हैं। आखिरकार, प्रत्येक पाठक के लिए पुस्तक का अर्थ अलग होता है। यदि यह भिन्नता पाठक द्वारा पुस्तक की समग्रता को व्यक्त करने के तरीके में प्रकट हो तो आश्चर्य की बात नहीं होगी। इसका अर्थ यह नहीं है कि कुछ भी स्वीकार्य है। पाठक भले ही भिन्न हों, पुस्तक एक ही है, और इसके बारे में किसी के भी कथनों की सटीकता और विश्वसनीयता की वस्तुनिष्ठ जाँच की जा सकती है।

- 4 -

अब हम दूसरे संरचनात्मक नियम की ओर बढ़ते हैं, वह नियम जो हमें पुस्तक के प्रमुख भागों को उनके क्रम और संबंध में प्रस्तुत करने के लिए बाध्य करता है। यह तीसरा नियम दूसरे नियम से घनिष्ठ रूप से संबंधित है, जिसकी चर्चा हमने अभी की है। आपने शायद पहले ही ध्यान दिया होगा कि कैसे एक सुव्यवस्थित एकता उन प्रमुख भागों को इंगित करती है जो संपूर्ण का निर्माण करते हैं। आप किसी भी भाग को देखे बिना संपूर्ण को नहीं समझ सकते। लेकिन यह भी सच है कि जब तक आप उसके भागों की संरचना को नहीं समझते, तब तक आप संपूर्ण को व्यापक रूप से नहीं जान सकते।

इसलिए, आप सोच रहे होंगे कि मैंने यहाँ एक के बजाय दो नियम क्यों बनाए हैं। इसका मुख्य कारण सुविधा है। किसी जटिल और एकीकृत संरचना को एक चरण के बजाय दो चरणों में समझना आसान होता है। दूसरा नियम आपका ध्यान पुस्तक की एकता की ओर, और तीसरा नियम उसकी जटिलता की ओर केंद्रित करता है। इस विभाजन का एक और कारण भी है। पुस्तक के प्रमुख भाग उसकी एकता को समझने के क्षण में ही दिखाई दे सकते हैं। लेकिन ये भाग आमतौर पर स्वयं जटिल होते हैं और इनकी एक आंतरिक संरचना होती है जिसे आपको समझना होगा। इसलिए, तीसरा नियम केवल भागों की गणना से कहीं अधिक है। इसका अर्थ है भागों को ऐसे समझना जैसे वे अधीनस्थ इकाई हों, जिनमें से प्रत्येक की अपनी एकता और जटिलता हो।

मैं इस तीसरे नियम के अनुसार कार्य करने का सूत्र लिख सकता हूँ। क्योंकि यह एक सूत्र है, यह आपको सामान्य रूप से मार्गदर्शन कर सकता है। दूसरे नियम के अनुसार, जैसा कि आपको याद होगा, हमें कहना था: पूरी पुस्तक फलां-फलां विषय पर है। ऐसा करने के बाद, हम इस प्रकार आगे बढ़ सकते हैं: (1) लेखक ने इस योजना को पाँच मुख्य भागों में पूरा किया है, जिनमें से पहला भाग फलां-फलां विषय पर है, दूसरा भाग फलां-फलां विषय पर है, तीसरा भाग इस विषय पर है, चौथा भाग उस विषय पर है, और पाँचवाँ भाग किसी अन्य विषय पर है। (2) इन मुख्य भागों में से पहला भाग तीन खंडों में विभाजित है, जिनमें से पहला X, दूसरा Y और तीसरा Z पर विचार करता है। अन्य सभी मुख्य भागों को भी इसी प्रकार विभाजित किया गया है। (3) पहले भाग के पहले खंड में, लेखक चार बिंदु बनाता है, जिनमें से पहला A, दूसरा B, तीसरा C और चौथा D है। अन्य सभी खंडों का भी इसी प्रकार विश्लेषण किया गया है, और यही प्रक्रिया अन्य सभी मुख्य भागों के प्रत्येक खंड के लिए दोहराई गई है।

डरावना? मैं समझ सकता हूँ कि क्यों। आप कहेंगे कि इतना सब कुछ करना है, और वो भी किताब की पहली ही रीडिंग में। इस तरह से तो किताब पढ़ने में पूरी ज़िंदगी लग जाएगी। अगर आपको ऐसा लगता है, तो मैं यह भी समझ सकता हूँ कि मेरी सारी चेतावनियाँ बेकार गईं। जब इस नियम को एक कठोर और सटीक सूत्र में लिखा जाता है, तो ऐसा लगता है मानो इसके लिए आपसे असंभव मेहनत की ज़रूरत हो। लेकिन आप भूल गए हैं कि एक अच्छा पाठक इस तरह की चीज़ें आदतन करता है, और इसलिए आसानी से और स्वाभाविक रूप से कर लेता है। हो सकता है कि वह सब कुछ लिखकर न रखे। हो सकता है कि पढ़ते समय भी उसने सब कुछ बोलकर स्पष्ट न किया हो। लेकिन अगर उससे किसी किताब की संरचना का वर्णन करने को कहा जाए, तो वह कुछ ऐसा करेगा जो मेरे सुझाए गए सूत्र के लगभग समान होगा।

'अनुमान' शब्द से आपकी चिंता दूर हो जानी चाहिए। एक अच्छा नियम हमेशा आदर्श प्रदर्शन का वर्णन करता है। लेकिन एक व्यक्ति आदर्श कलाकार हुए बिना भी किसी कला में कुशल हो सकता है।

यदि वह नियम का मात्र अनुमान ही लगा ले तो वह एक अच्छा अभ्यासी बन सकता है। मैंने यहाँ आदर्श स्थिति के लिए नियम बताया है। मैं संतुष्ट रहूँगा, और आपको भी, यदि आप आवश्यक बातों का एक मोटा-मोटा अनुमान लगा लें। यहाँ तक कि जब आप अधिक कुशल हो जाएँगे, तब भी आप हर किताब को एक ही लगन से पढ़ना नहीं

चाहेंगे। कुछ किताबों पर अपनी सारी कुशलता खर्च करना आपके लिए लाभदायक नहीं होगा।

मैंने अपेक्षाकृत कम पुस्तकों के मामले में इस नियम की आवश्यकताओं के लगभग सटीक अनुमान लगाने का प्रयास किया है। अन्य मामलों में, यानी अधिकतर मामलों में, मैं पुस्तक की संरचना के मोटे तौर पर अनुमान से संतुष्ट हो जाता हूँ। आप भी पाएंगे, जैसा कि मैंने पाया है, कि आप जिस स्तर का अनुमान लगाना चाहते हैं, वह पुस्तक की प्रकृति और उसे पढ़ने के आपके उद्देश्य के अनुसार बदलता रहता है। इस भिन्नता के बावजूद, नियम वही रहता है। आपको यह जानना होगा कि इसका पालन कैसे करना है, चाहे आप इसका पूरी तरह और सख्ती से पालन करें या केवल मोटे तौर पर।

भागों के क्रम और संबंध को निर्धारित करने के सूत्र की जटिलता को कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझाया जा सकता है। दुर्भाग्यवश, एकता को दर्शाने वाले दूसरे नियम की तुलना में इसे समझाना अधिक कठिन है। एकता को एक या दो वाक्यों में, या ज़्यादा से ज़्यादा एक छोटे पैराग्राफ में समझाया जा सकता है। लेकिन किसी भी बड़ी और जटिल पुस्तक के मामले में, भागों, उनके भागों और उनके भागों का, यहाँ तक कि सबसे छोटी संरचनात्मक इकाइयों तक, सावधानीपूर्वक और पर्याप्त वर्णन लिखने में कई पृष्ठ लग जाएँगे।

अरस्तू की रचनाओं पर लिखी गई कुछ सबसे महान मध्यकालीन टीकाएँ मूल ग्रंथों से भी लंबी हैं। इनमें केवल संरचनात्मक विश्लेषण ही नहीं, बल्कि लेखक की रचना की वाक्य-दर-वाक्य व्याख्या भी शामिल है। यही बात कुछ आधुनिक टीकाओं पर भी लागू होती है, जैसे कि कांट की 'शुद्ध तर्क की आलोचना' पर लिखी गई महान टीकाएँ। यदि आप इस नियम का पूर्णतः पालन देखना चाहते हैं, तो मैं आपको इस प्रकार की किसी टीका का अध्ययन करने का सुझाव देता हूँ। उदाहरण के लिए, एक्विनास अपनी टीका के प्रत्येक भाग की शुरुआत अरस्तू द्वारा उस भाग में दिए गए बिंदुओं की सुंदर रूपरेखा से करते हैं; और वे हमेशा स्पष्ट रूप से बताते हैं कि वह भाग संपूर्ण रचना की संरचना में किस प्रकार समाहित है, विशेषकर उससे पहले और बाद में आने वाले भागों के संबंध में।

फिर सोचने पर, शायद बेहतर होगा कि आप उत्कृष्ट टीकाओं को न देखें। पढ़ने की शुरुआत करने वाला व्यक्ति उनकी पूर्णता से निराश हो सकता है। उसे वैसा ही महसूस हो सकता है जैसा पर्वतारोहण की शुरुआत करने वाला जंगफ्राउ की तलहटी में महसूस करता है। मेरे द्वारा किया गया एक संक्षिप्त और छोटा सा विश्लेषण शायद अधिक उत्साहवर्धक हो, हालांकि निश्चित रूप से उतना प्रेरणादायक नहीं। किसी तारे से जुड़ना ठीक है, लेकिन लगाम थामने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि वह अच्छी तरह से चिकनाईयुक्त हो।

- 5 -

इस नियम को समझाने में एक और कठिनाई है। मुझे ऐसी सामग्री चुननी होगी जिसे आपमें से अधिकांश ने पढ़ा हो। अन्यथा, नमूना विश्लेषण से आपको कोई खास लाभ नहीं होगा। इसलिए, शुरुआत के तौर पर, मैं इस पुस्तक के पहले छह अध्यायों को फिर से लेता हूँ। मैं आपको पहले ही बता देना चाहता हूँ कि यह कोई बहुत अच्छी पुस्तक नहीं है। इसके लेखक को मैं कोई महान विद्वान नहीं कहूँगा।

पुस्तक की संरचना बहुत ढीली है। इसके अध्याय पूरे विषय के मूल विभाजनों से मेल नहीं खाते। और अध्यायों के भीतर भी, बिंदुओं का क्रम अक्सर अव्यवस्थित है और अनावश्यक विषयांतरों से बाधित होता है। आपको शायद लगा हो कि यह पढ़ने में आसान पुस्तक है, लेकिन विश्लेषण से पता चलता है कि वास्तव में यह बहुत पठनीय नहीं है।

यहां प्रथम छह अध्यायों का विश्लेषण दिया गया है, जो भाग I को समग्र रूप से दर्शाते हैं: 1. यह पुस्तक (अर्थात भाग I) तीन प्रमुख भागों में विभाजित है: अ. पहला भाग पठन की प्रकृति और प्रकारों तथा शिक्षा में पठन के स्थान से संबंधित है।

बी. दूसरा भाग पढ़ने के संबंध में समकालीन शिक्षा की विफलता से संबंधित है।

सी. तीसरा भाग यह दिखाने का प्रयास करता है कि समकालीन शैक्षिक स्थिति को कैसे सुधारा जा सकता है।

2. पहला भाग (ए) निम्नलिखित खंडों में विभाजित है: ए. पहला खंड जो पठन क्षमता की विविधताओं और स्तरों से संबंधित है; बी. दूसरा खंड जो मनोरंजन के लिए पढ़ने और शिक्षाप्रद पढ़ने के बीच प्रमुख अंतरों से संबंधित है;

ग. तीसरा भाग, शिक्षण हेतु पठन में सूचना और समझ के बीच अंतर से संबंधित है;

घ. चौथा भाग सक्रिय और निष्क्रिय पठन के बीच के अंतर से इस अंतिम अंतर के संबंध से संबंधित है;

ई. पांचवां बिंदु जो चर्चा की जाने वाली पठन-पाठन शैली को ज्ञान संप्रेषित करने वाले संचारों के ग्रहण के रूप में परिभाषित करता है;

च. छठा भाग जो पढ़ने को सीखने से जोड़ता है, खोज द्वारा सीखने और निर्देश द्वारा सीखने के बीच अंतर करके;

जी. सातवां भाग पुस्तकों और शिक्षकों के संबंध पर चर्चा करता है, उन्हें मृत और जीवित के रूप में भेद करता है, और दर्शाता है कि पढ़ना मृत शिक्षकों से सीखना है; एच. आठवां भाग प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षकों, जीवित या मृत, के बीच अंतर करता है, और महान पुस्तकों को मूल रचनाएँ, और इसलिए प्राथमिक शिक्षक के रूप में परिभाषित करता है।

दूसरा भाग (बी) निम्नलिखित खंडों में विभाजित है: ए. पहला खंड जिसमें विभिन्न साक्ष्यों का वर्णन किया गया है, जो छात्रों की पढ़ने की अक्षमता के संबंध में लेखक के व्यक्तिगत अनुभवों को दर्शाता है;

ख. दूसरा भाग जिसमें वर्तमान शैक्षिक कमियों के संदर्भ में लेखन और बोलने जैसे अन्य कौशलों के साथ पठन के संबंध पर चर्चा की गई है; ग. तीसरा भाग जिसमें वैज्ञानिक शैक्षिक मापों के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं जो हमारे विद्यालयों के स्नातकों में इन कौशलों की कमी को दर्शाते हैं; घ. चौथा भाग

जिसमें अन्य प्रमाण, विशेष रूप से पुस्तक प्रकाशकों से प्राप्त प्रमाण, इन निष्कर्षों की पुष्टि के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

ई. पाँचवाँ भाग जिसमें यह समझाने का प्रयास किया गया है कि स्कूल क्यों असफल रहे।

तीसरा भाग (सी) निम्नलिखित अनुभागों में विभाजित है: ए. पहला भाग जिसमें यह दिखाया गया है कि कोई भी कला या कौशल उन लोगों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है जो नियमों के अनुसार अभ्यास करेंगे;

बी. दूसरा भाग जिसमें यह बताया गया है कि जो लोग स्कूल में पढ़ना नहीं सीख पाए, वे इस कला को कैसे सीख सकते हैं;

ग. तीसरा दृष्टिकोण जिसमें यह सुझाव दिया गया है कि पढ़ना सीखकर लोग अपनी शिक्षा की कमियों की भरपाई कर सकते हैं;

घ. चौथा बिंदु यह है कि यदि लोग पढ़ने और पढ़ने के माध्यम से यह समझ लें कि शिक्षा क्या होनी चाहिए, तो वे विफल हो रही स्कूली प्रणाली में सुधार के लिए गंभीर कदम उठाएंगे।

3. पहले भाग के पहले खंड में निम्नलिखित बिंदु बताए गए हैं: (1) कि इस पुस्तक के पाठकों को एक अर्थ में पढ़ने में सक्षम होना चाहिए, भले ही दूसरे अर्थ में न हो;

(2) व्यक्तियों की पढ़ने की क्षमता में उनके प्राकृतिक गुणों और शैक्षिक लाभों के अनुसार अंतर होता है;

(3) अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि पढ़ने की कला में क्या शामिल है।. . .

और कितना आगे और कितने पर।

मैं यहीं रुक जाता हूँ क्योंकि आप देख सकते हैं कि अगर मैं इस काम को विस्तार से करने लगूँ तो कितने पन्ने लग जाएँगे। मुझे प्रत्येक मुख्य भाग के प्रत्येक खंड में बताए गए बिंदुओं को सूचीबद्ध करना होगा। आप देखेंगे कि मैंने विश्लेषण के तीन मुख्य चरणों को यहाँ क्रमांकित किया है ताकि वे उस सूत्र के तीन भागों से मेल खाएँ जो मैंने आपको कुछ पन्ने पहले दिया था। पहला चरण मुख्य भागों का वर्णन है; दूसरा उनका खंडों में विभाजन है; तीसरा प्रत्येक खंड में बिंदुओं का विवरण है। मैंने विश्लेषण के पहले दो चरण पूरे कर लिए हैं, लेकिन तीसरा नहीं।

इसके अलावा, यदि आप मेरे द्वारा विश्लेषण किए गए छह अध्यायों पर एक नज़र डालें, तो आप पाएंगे कि वे उतने सुव्यवस्थित, उतने स्पष्ट और सुव्यवस्थित नहीं हैं जितना मैंने उन्हें बताया है। कुछ बिंदु क्रम से नहीं हैं। कुछ अध्याय एक ही बिंदु या एक ही विषय पर चर्चा करते हुए एक दूसरे से मिलते- जुलते हैं। संगठन में इन खामियों के कारण ही मैंने कहा था कि यह पुस्तक

बहुत अच्छी नहीं है। यदि आप मेरे द्वारा शुरू किए गए विश्लेषण को पूरा करने का प्रयास करेंगे, तो आपको स्वयं इसका पता चल जाएगा।

यदि मैं इस प्रक्रिया को विस्तार से समझाने का प्रयास न करूं, तो शायद मैं आपको इस नियम को लागू करने के कुछ और उदाहरण दे सकूं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका का संविधान लें। यह एक रोचक, व्यावहारिक दस्तावेज है, और वास्तव में एक बहुत ही सुव्यवस्थित रचना है।

इसके प्रमुख भागों को ढूंढने में आपको कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। वे काफी स्पष्ट रूप से दर्शाए गए हैं, हालांकि मुख्य विभाजनों को समझने के लिए आपको कुछ विश्लेषण करना होगा। मेरा सुझाव निम्नलिखित है:

प्रथम: प्रस्तावना, जो संविधान के उद्देश्य को निर्धारित करती है;

दूसरा: पहला अनुच्छेद, जो सरकार के विधायी विभाग से संबंधित है;

तीसरा: दूसरा अनुच्छेद, जो सरकार के कार्यकारी विभाग से संबंधित है;

चौथा: तीसरा अनुच्छेद, जो सरकार के न्यायिक विभाग से संबंधित है;

पांचवां: चौथा लेख, जो राज्य और संघीय सरकारों के बीच संबंधों से संबंधित है;

छठा: पाँचवाँ, छठा और सातवाँ अनुच्छेद, जो संविधान के संशोधन, देश के सर्वोच्च कानून के रूप में इसकी स्थिति और इसके अनुसमर्थन के प्रावधानों से संबंधित हैं;

सातवां: पहले दस संशोधन, जो अधिकार विधेयक का गठन करते हैं;

आठवां: वर्तमान समय तक के शेष संशोधन।

यह काम करने का सिर्फ एक तरीका है। इसके अलावा भी कई तरीके हैं। उदाहरण के लिए, पहले तीन अनुच्छेदों को एक ही भाग में रखा जा सकता है; या संशोधनों के संबंध में दो भागों के बजाय, और भी भाग बनाए जा सकते हैं, जिनमें संशोधनों को उनके द्वारा निपटाए गए मुद्दों के अनुसार वर्गीकृत किया जा सके। मेरा सुझाव है कि आप संविधान को उसके मुख्य भागों में विभाजित करने का प्रयास करें। मुझसे आगे बढ़कर, भागों के भागों को भी बताने की कोशिश करें। आपने शायद इससे पहले भी संविधान को कई बार पढ़ा होगा, लेकिन अगर आप इसे दोबारा पढ़ते समय इस नियम का पालन करेंगे, तो आपको इसमें बहुत कुछ ऐसा मिलेगा जो आपने पहले कभी नहीं देखा होगा।

मैं एक और उदाहरण को अत्यंत संक्षिप्त रूप से समझाने का प्रयास करूंगा। मैंने अरस्तू के नीतिशास्त्र की एकता का पहले ही उल्लेख कर दिया है। अब मैं आपको इसकी संरचना का एक प्रारंभिक अनुमान देता हूं।

संपूर्ण ग्रंथ को निम्नलिखित मुख्य भागों में विभाजित किया गया है: पहला भाग, जीवन के लक्ष्य के रूप में सुख पर चर्चा करता है और अन्य सभी व्यावहारिक सुखों के संदर्भ में इसकी व्याख्या करता है; दूसरा भाग, स्वैच्छिक क्रिया की प्रकृति और सद्गुण एवं दुर्गुणों के निर्माण से इसके संबंध पर चर्चा करता है; तीसरा भाग, नैतिक और बौद्धिक दोनों प्रकार के विभिन्न सद्गुणों और दुर्गुणों पर चर्चा करता है; चौथा भाग, ऐसी नैतिक अवस्थाओं पर चर्चा करता है जो न तो सद्गुणी हैं और न ही दुर्गुणी; पाँचवाँ भाग, मित्रता पर चर्चा करता है; और छठा एवं अंतिम भाग, आनंद पर चर्चा करता है और पहले भाग में शुरू किए गए मानव सुख के विवरण को पूर्ण करता है।

ये विभाजन स्पष्ट रूप से नीतिशास्त्र की दस पुस्तकों के अनुरूप नहीं हैं। इस प्रकार, पहला भाग पहली पुस्तक में पूरा हो जाता है; दूसरा भाग दूसरी पुस्तक और तीसरी पुस्तक के पहले आधे भाग तक चलता है; तीसरा भाग तीसरी पुस्तक के शेष भाग से लेकर छठी पुस्तक के अंत तक फैला हुआ है; आनंद की चर्चा सातवीं पुस्तक के अंत में और फिर दसवीं पुस्तक के प्रारंभ में होती है।

मैंने ये सब इसलिए बताया ताकि आपको यह समझ आ सके कि ज़रूरी नहीं कि आप किसी पुस्तक के अध्यायों में दिए गए विभाजन के अनुसार ही उसकी संरचना का पालन करें। बेशक, यह आपके द्वारा तैयार किए गए खाके से बेहतर हो सकता है, लेकिन यह उससे बुरा भी हो सकता है; किसी भी मामले में, मुख्य बात यह है कि आप अपना खुद का खाका तैयार करें।

लेखक ने अच्छी किताब लिखने के लिए अपनी योग्यता का इस्तेमाल किया। आपको इसे अच्छी तरह पढ़ने के लिए अपनी योग्यता का इस्तेमाल करना होगा। अगर वह एक परिपूर्ण लेखक होते और आप एक परिपूर्ण पाठक, तो स्वाभाविक रूप से दोनों एक समान होते। जैसे-जैसे आप दोनों में से कोई एक या दोनों ही पूर्णता से दूर होते जाते हैं, वैसे-वैसे हर तरह की विसंगतियां उत्पन्न होना तय हो जाती हैं।

मेरा मतलब यह नहीं है कि आप लेखक द्वारा दिए गए अध्याय शीर्षकों और अनुभागीय विभाजनों को पूरी तरह से अनदेखा कर दें। वे शीर्षकों और प्रस्तावनाओं की तरह ही आपकी सहायता के लिए हैं। लेकिन आपको उन्हें अपने अध्ययन के लिए मार्गदर्शक के रूप में उपयोग करना चाहिए, न कि उन पर निष्क्रिय रूप से निर्भर रहना चाहिए।

बहुत कम लेखक ऐसे होते हैं जो अपनी योजना को पूरी तरह से लागू कर पाते हैं, लेकिन एक महान पुस्तक में अक्सर पहली नज़र में दिखने से कहीं अधिक योजना छिपी होती है। सतह धोखा देने वाली हो सकती है। असली संरचना को जानने के लिए आपको गहराई में देखना होगा।

- 6 -

सामान्य तौर पर, पढ़ने के ये दो नियम, जिनकी हम चर्चा कर रहे हैं, देखने में ऐसे लगते हैं मानो वे लेखन के भी नियम हों। बेशक, वे हैं। लेखन और पठन परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं, जैसे शिक्षण और शिक्षा। यदि लेखक या शिक्षक

अपने संदेशों को व्यवस्थित न करें, यदि वे उन्हें एकीकृत करने और उनके भागों को क्रमबद्ध करने में विफल रहें, तो पाठकों या श्रोताओं को संपूर्णता की एकता खोजने और संरचना को उजागर करने के लिए निर्देशित करने का कोई अर्थ नहीं होगा।

हालांकि दोनों ही मामलों में नियम एक जैसे हैं, लेकिन उनका पालन एक ही तरीके से नहीं किया जाता। पाठक पुस्तक में छिपे रहस्य को उजागर करने का प्रयास करता है। लेखक भी उसी रहस्य से शुरुआत करता है और उसे छिपाने की कोशिश करता है। उसका उद्देश्य उस रहस्य को कलात्मक ढंग से छुपाना है, या दूसरे शब्दों में, उसे सारगर्भित रूप देना है। एक अच्छा लेखक किसी कमजोर रहस्य को चर्बी के ढेर के नीचे नहीं दबाता। जहां चर्बी पतली होती है, वहां जोड़ दिखाई नहीं देने चाहिए, लेकिन अगर चर्बी को छिपाया जाए, तो जोड़ दिखाई देंगे और अंगों की गति से उनकी बनावट का पता चल जाएगा।

कुछ साल पहले मैंने एक गलती की थी जिससे मुझे इस विषय में काफी सबक मिला। मैंने एक किताब की रूपरेखा तैयार की। मैं संरचना के महत्व को लेकर इतना जुनूनी था कि मैंने लेखन और पठन कलाओं को ही आपस में मिला दिया। मैंने किताब की रूपरेखा तैयार की और उसे प्रकाशित कर दिया।

स्वाभाविक रूप से, यह उन अधिकांश स्वाभिमानी पाठकों को अरुचिकर लगा जो सोचते थे कि अगर मैं अपना काम करूँ तो वे भी अपना काम कर सकते हैं। उनकी प्रतिक्रियाओं से मुझे यह समझ आया कि मैंने उन्हें एक ऐसी किताब पढ़कर सुनाई थी जिसे मैंने लिखा ही नहीं था। लेखकों को किताबें लिखनी चाहिए और उन पर टिप्पणी पाठकों पर छोड़ देनी चाहिए।

संक्षेप में, मैं आपको उस पुराने सिद्धांत की याद दिलाना चाहता हूँ कि किसी भी रचना में एकता, स्पष्टता और सुसंगति होनी चाहिए। यह अच्छी लेखन शैली का मूल सिद्धांत है। इस अध्याय में जिन दो नियमों पर हम चर्चा कर रहे हैं, वे इसी सिद्धांत का पालन करने वाली रचना पर लागू होते हैं। यदि रचना में एकता है, तो हमें उसे खोजना होगा। यदि रचना में स्पष्टता और सुसंगति है, तो हमें उसके विभिन्न भागों के बीच अंतर और क्रम को समझकर उसकी सराहना करनी होगी। जो स्पष्ट है, वह उसकी रूपरेखा की स्पष्टता से स्पष्ट होता है। जो सुसंगत है, वह भागों के व्यवस्थित क्रम से जुड़ा होता है।

मैं यह भी कहना चाहूंगा कि ये दो नियम किसी भी व्याख्यात्मक पुस्तक के महत्वपूर्ण भाग के साथ-साथ पूरी पुस्तक को पढ़ने में भी लागू होते हैं। यदि चुना गया भाग अपने आप में एक अपेक्षाकृत स्वतंत्र, जटिल इकाई है, तो उसे अच्छी तरह से समझने के लिए उसकी एकता और जटिलता को समझना आवश्यक है। ज्ञान प्रदान करने वाली पुस्तकों और काव्य रचनाओं, नाटकों और उपन्यासों में यहाँ एक महत्वपूर्ण अंतर है। पहली श्रेणी के भाग दूसरी श्रेणी के भागों की तुलना में कहीं अधिक स्वतंत्र हो सकते हैं। वह विद्यार्थी जिसने उपन्यास पढ़ा है और कहता है कि उसने "उम्मीद है कि उसे विषयवस्तु समझ आ गई है", वह वास्तव में कुछ नहीं जानता। यदि उपन्यास वास्तव में अच्छा है, तो उसका मूल विचार पूरी पुस्तक में निहित है, और पूरी पुस्तक पढ़े बिना उसे

नहीं समझा जा सकता। लेकिन अरस्तू के नीतिशास्त्र या डार्विन की 'द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' के कुछ भागों को ध्यानपूर्वक पढ़कर भी आप उसका मूल विचार समझ सकते हैं।

- 7 -

बहुत समय पहले, शायद आप भूल गए हों, मैंने पुस्तक पढ़ने के पहले तरीके को पूरा करने के लिए चौथे नियम का उल्लेख किया था। इसे संक्षेप में बताया जा सकता है। इसके लिए बहुत कम स्पष्टीकरण और उदाहरण की आवश्यकता है। यह वास्तव में उसी बात को दूसरे रूप में दोहराता है जो आपने दूसरे और तीसरे नियम को लागू करने के बाद पहले ही कर ली है। लेकिन यह एक उपयोगी दोहराव है क्योंकि यह संपूर्ण और उसके भागों को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है।

यह चौथा नियम आपको लेखक की समस्याओं का पता लगाने के लिए बाध्य करता है। यह नियम विशेष रूप से महान पुस्तकों पर लागू होता है। यदि आप यह याद रखें कि वे मौलिक रचनाएँ हैं, तो आप समझ पाएंगे कि उन्हें लिखने वाले व्यक्ति ने समस्याओं से शुरुआत की और अंत में उनके समाधान लिखे। समस्या एक प्रश्न है। पुस्तक में स्पष्ट रूप से उस प्रश्न के एक या अधिक उत्तर निहित होते हैं।

लेखक आपको प्रश्न बता भी सकता है और नहीं भी, साथ ही अपने काम के फलस्वरूप प्राप्त उत्तर भी दे सकता है। चाहे वह ऐसा करे या न करे, और विशेषकर यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो पाठक के रूप में आपका कर्तव्य है कि आप समस्या को यथासंभव सटीक रूप से परिभाषित करें।

आपको पुस्तक में वर्णित मुख्य समस्या या समस्याओं को बताने में सक्षम होना चाहिए, और यदि मुख्य प्रश्न जटिल और अनेक भागों वाले हों तो आपको गौण समस्याओं को भी बताने में सक्षम होना चाहिए। आपको न केवल सभी संबंधित प्रश्नों की पर्याप्त समझ होनी चाहिए, बल्कि आपको प्रश्नों को एक सुबोध क्रम में व्यवस्थित करने में भी सक्षम होना चाहिए। इनमें से कौन से प्रश्न प्राथमिक हैं और कौन से गौण? यदि अन्य प्रश्नों का उत्तर बाद में देना हो तो किन प्रश्नों का उत्तर पहले देना आवश्यक है?

आप देख सकते हैं कि यह चौथा नियम एक तरह से उस काम को दोहराता है जो आप पहले ही एकता को स्थापित करने और उसके भागों को खोजने में कर चुके हैं। हालांकि, यह वास्तव में उस काम को करने में आपकी मदद कर सकता है। दूसरे शब्दों में, चौथे नियम का पालन करना अन्य दो नियमों का पालन करने के साथ-साथ एक उपयोगी प्रक्रिया है।

यदि आप यह जानते हैं कि कोई भी व्यक्ति किसी भी विषय पर किस प्रकार के प्रश्न पूछ सकता है, तो आप लेखक की समस्याओं को पहचानने में निपुण हो जाएंगे। इन्हें संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: क्या कोई वस्तु अस्तित्व में है? वह किस प्रकार की वस्तु है? उसके अस्तित्व का कारण क्या है, या किन परिस्थितियों में वह अस्तित्व में आ सकती है, या वह अस्तित्व में क्यों है? उसका क्या उद्देश्य है? उसके अस्तित्व के क्या परिणाम हैं? उसकी विशिष्ट विशेषताएं, उसके विशेष लक्षण क्या हैं?

इसका समान या भिन्न प्रकार की अन्य वस्तुओं से क्या संबंध है? यह कैसा व्यवहार करता है? उपरोक्त सभी सैद्धांतिक प्रश्न हैं। निम्नलिखित व्यावहारिक प्रश्न हैं। किन लक्ष्यों की प्राप्ति की जानी चाहिए? किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कौन से साधन चुने जाने चाहिए? किसी विशेष उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए क्या-क्या करना चाहिए और किस क्रम में? इन परिस्थितियों में, सही कार्य क्या है, या बेहतर कार्य क्या है? किन परिस्थितियों में यह कार्य करना उस कार्य से बेहतर होगा?

प्रश्नों की यह सूची संपूर्ण या विश्लेषणात्मक रूप से परिष्कृत नहीं है, लेकिन यह सैद्धांतिक या व्यावहारिक ज्ञान की खोज में सबसे अधिक पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकारों को दर्शाती है। इससे आपको यह समझने में मदद मिल सकती है कि किसी पुस्तक ने किन समस्याओं को हल करने का प्रयास किया है।

इस अध्याय और पिछले अध्याय में बताए गए यात्रा नियमों का पालन करने के बाद, आप कुछ देर के लिए अपने हाथ में पकड़ी किताब को नीचे रख सकते हैं। आप राहत की सांस लेकर कह सकते हैं: "यहाँ पहला पाठ समाप्त होता है।"

अध्याय दस

समझौता करना

- 1 -

हम कहाँ हे?

हमने देखा है कि किसी भी अच्छी किताब को तीन बार पढ़ना चाहिए। जब हम पढ़ना सीख रहे होते हैं, तो इन्हें अलग-अलग और सचेत रूप से पढ़ना आवश्यक होता है, हालांकि जब हम पढ़ने में माहिर हो जाते हैं, तो इन्हें एक साथ और अचेतन रूप से भी पढ़ा जा सकता है। हमने पाया है कि पहले, या विश्लेषणात्मक, पठन के लिए चार नियम हैं। वे हैं: (i) पुस्तक को प्रकार और विषयवस्तु के अनुसार वर्गीकृत करें; (2) पूरी पुस्तक का सार अत्यंत संक्षिप्त रूप में बताएं;
(3) इसके प्रमुख भागों को उनके क्रम और संबंध में परिभाषित करें, और इन भागों का विश्लेषण उसी प्रकार करें जैसे आपने पूरी पुस्तक का विश्लेषण किया है; (4) लेखकों द्वारा हल किए जाने वाले समस्या या समस्याओं को परिभाषित करें।

अब आप दूसरी बार पढ़ने और उसके चार नियमों को समझने के लिए तैयार हैं। आप पहले नियम से कुछ हद तक परिचित हैं। इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में इसका उल्लेख किया गया था: लेखक द्वारा प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दों को पहचानें और समझें कि वह उनका उपयोग कैसे करता है। फिर हम "पढ़ना" और "सीखना" जैसे शब्दों के विभिन्न अर्थों को समझने के द्वारा इस नियम को व्यवहार में लाते हैं। जब आप किसी भी संदर्भ में इन शब्दों का उपयोग करते समय मेरे कहने का सटीक अर्थ समझ लेते हैं, तो आप मुझे समझ चुके होते हैं।

किसी भी सफल व्यापारिक सौदे में समझौता करना लगभग अंतिम चरण होता है। अंत में केवल समझौते पर हस्ताक्षर करना बाकी रह जाता है। लेकिन किसी पुस्तक को

पढ़ने में, समझौते को समझना व्याख्या का पहला चरण होता है। जब तक पाठक लेखक को नहीं समझ लेता, ज्ञान का आदान-प्रदान नहीं हो पाता। जैसा कि आप आगे देखेंगे, समझौता ही ज्ञान के संचार का मूल तत्व है।

लेकिन आप तुरंत समझ सकते हैं कि एक शब्द और एक पद का कोई सीधा संबंध नहीं होता—कम से कम, बिना किसी अतिरिक्त स्पष्टीकरण के मात्र एक पद तो नहीं। यदि एक पद और एक शब्द बिल्कुल एक समान होते, तो आपको किसी पुस्तक में केवल महत्वपूर्ण शब्दों को ही खोजना होता और आप उसके मूल शब्दों को तुरंत जान जाते।

लेकिन एक शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं, विशेषकर महत्वपूर्ण शब्द के। यदि लेखक किसी शब्द का प्रयोग एक अर्थ में करता है और पाठक उसे दूसरे अर्थ में समझता है, तो शब्दों का आदान-प्रदान तो हो जाता है, लेकिन उनका सामंजस्य नहीं हो पाता। जहाँ संवाद में अस्पष्टता बनी रहती है, वहाँ संवाद नहीं होता, या कम से कम वह अधूरा ही रहता है।

एक पल के लिए "संचार" शब्द को ही देख लीजिए। इसका मूल शब्द "संचार" से संबंधित है।

"सामान्य।" हम किसी समुदाय की बात तब करते हैं जब लोगों में कुछ समानता हो।

संचार एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के साथ कुछ साझा करने का प्रयास है: उसका ज्ञान, उसके निर्णय, उसकी भावनाएँ। यह तभी सफल होता है जब इसका परिणाम एक साझा निष्कर्ष हो, जैसे कि ज्ञान का कोई ऐसा पहलू जो दो व्यक्तियों में समान हो।

जब संवाद में अस्पष्टता होती है, तो केवल वही शब्द समान होते हैं जो एक व्यक्ति बोलता या लिखता है और दूसरा सुनता या पढ़ता है। जब तक अस्पष्टता बनी रहती है, लेखक और पाठक के बीच कोई समान अर्थ नहीं होता। इसलिए, संवाद के सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि दोनों पक्ष समान अर्थों वाले समान शब्दों का प्रयोग करें। जब ऐसा होता है, तभी संवाद होता है, जो दो मनों के एक ही विचार से जुड़ने का चमत्कार है।

किसी शब्द को स्पष्ट शब्द के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह पूरी तरह सटीक नहीं है, क्योंकि वास्तव में कोई भी शब्द स्पष्ट नहीं होता। मुझे कहना चाहिए था कि कोई शब्द वह होता है जिसका प्रयोग स्पष्ट रूप से किया जाता है। शब्दकोश शब्दों से भरा पड़ा है। उनमें से लगभग सभी अस्पष्ट होते हैं, इस अर्थ में कि उनके कई अर्थ होते हैं। किसी भी शब्द को खोजकर स्वयं इसका पता लगाएँ, यदि आपको लगता है कि इस सामान्यीकरण के कई अपवाद हैं। लेकिन एक शब्द जिसके कई अर्थ होते हैं, उसका प्रयोग एक समय में एक ही अर्थ में किया जा सकता है। जब आप और मैं, लेखक और पाठक के रूप में, किसी तरह कुछ समय के लिए किसी दिए गए शब्द का प्रयोग एक ही अर्थ में करने में सफल हो जाते हैं, तो उस स्पष्ट प्रयोग के दौरान, हम उस शब्द को समझ लेते हैं। मुझे लगता है कि हमने पढ़ने और सीखने के मामले में ऐसा ही किया है।

आप शब्दकोशों में वे शब्द नहीं ढूंढ सकते, हालांकि उन्हें बनाने के लिए आवश्यक सामग्री वहां मौजूद है।

xxxxxx xx xxxxxxxxxx xxx xx xxxx xxxxxxx xxxx xxxx xx xx xxxxxxx xxxx xxx xx xxxx xxxxxxxxxx xx xxxx xx xxxxxx xxxx xx xx xxxx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xxxx xxxx xxxxxx xxxx xxx xx xxxxxxxxxx xxx xxxxx xx xxxx xxxx xxxx xxxx xxxxxx xx xxx xxx xx xxxxx xx xxxxx xxxx xx xxxxx xxx xxxx xx xxxx xxxxx xx xxxxxx xxxx xxxxxx xxxxx xx xxxx xx xxx xxx xx xxxxxxxx xxxxxxxxxxx xxx xx xx xx, xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxxx, xxxxx xx xxxxx xx xxx xxxx xxxxxx xx xxx xxx xxx xxxx xxxx

xxx xxxx xxx xxxx xx xxx xx xxxxxx xx xxxx xxxx xxxx xx xxxxx xxx xxx xx xxx xx, xx xx: xxxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xx xxxx xxxx xxxxx xxxx xx xxx xxx xx xxx xxx xxxxx xx xxxx xx xxxxxxxxxxx xxx xx xx xxxx xxx: xxxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxx xx xxxx xxxxxx xx xxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xx xx xxxx xx xx xxx xxxx xxxx xxx xx xx xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxxxxx xxxx xxxxx xxx xx xxxx xxxxx xx xxxxxx xxxx xxxxxx xx xxxx xxx xx xxxxxxxxxx xxxxx

xx xxxxxxxxxxxxx xxx, xxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxxx xxxx xxx xxxx xxxxxx xxx xxxxx xxx xxxx xxxx xxxx xxxx, xx xxxxxxxxxx xxxx xxx xx xxxx xxxx xx xxxx xxxx

xxxx xxx xxxx xx xxx xxxxx xxxxx: xx xxx xxxx xx xxxxxxx xx, xx xxxxx xxx xxxx xx xxx xxxx xxxx xxxx xxxx xxxxx xx xxxxx xxx

xxx xxxx xxxxxxx xx xxxxx xx xxxxxxxx xxxxxx xxxx, xx xx xxx xxx-xxx xxxx xxxxx xxx xxxxxxxx xxxx xx xxxx xx xx xxxx xxxx, xxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xxx xx xxxx xxxx xx xxxx, xxx xxxxxxx xxx, xxxxxxxx xxxx xx xxxxx xxx xxxx, xx xxxx xx xxxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxx xxxx xx xxxxxx xx xx-xxx xxxx xx xx xxx xx xxxx xxx xxxxx xxx xxx xxxx, xx xxxxx xx xx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxxx xx xxxx xxxxx

xxxxxxxx xx xxxxxxxx xxxx xxxxx

xxxxx xx xxxxx xxx xx xxx xxxxxxx xxxx xxx xx xxxx xxx xxxx xx xxx xxxxx xxxx, xxxxx xxxx xx xxxxx xxxxxx xxxx xx xx xxx xxxxx xxxx, xxxx xx xxxxxxx xxxxxxx xx xxxx xxx xxxxxxxxx xx xxxx xx xxxxx xx xxx xxxxxx xxxx xxx xx xx xxxx xx xxxxxxx xxxxxxxxx xxxxx xxxx xxx, xx xxx xxxx xx xxxxxxx xxxxx xx xxxx xx xxxxxx xxxxxxxxxxxxx xxxxx xxxxx

xxxx xx xxxxxx xxxxxx xxxx xx xxxx xxxxx xxx xxxx xx xxxxxxx xxxx xxx xxxxxxxxxxx xxx xx xxxx xxx xxxx xx xxx xxxx xx xxx xxxx xx xxxx xx xx xxxxx xxxx xx xx xxxxxxx xx xxxx xxx xx xx xxxx xxxxxx xxxxxxx xxxxxx xx xxx xxxx xx xx xxxxxxx xx xxxx xxxxxx xxx, xxxxx xx xxxx xx xxxxxxx xxxx xx xxxxx xx xx xx xxx xx xx xxx xxxxxx xx xxx, xxxx xx xxxx xxx xxxx xxxxx xxxx xx xxx xxx, xxxx xx xxxx xx xx xx xxxx xx xxx xxxx xx xxxxxx xxxx xxxxx xxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx-xxxxxx xxx xxxx xx xx xxxx

और लेखक दोनों एक-दूसरे के प्रति सहयोग करने के लिए तत्पर हों। जिस प्रकार शिक्षण तभी सफल होता है जब सीखने की प्रक्रिया पारस्परिक हो, उसी प्रकार कोई भी लेखक, चाहे वह लेखन में कितना भी कुशल क्यों न हो, पाठकों के पारस्परिक कौशल के बिना संवाद स्थापित नहीं कर सकता। यहाँ पारस्परिकता इस तथ्य पर आधारित है कि अच्छे पठन और लेखन के नियम अंततः सिद्धांत रूप में एक ही हैं। यदि ऐसा न होता, तो लेखन और पठन के विविध कौशल, चाहे कितना भी प्रयास किया जाए, विचारों को एक साथ नहीं ला पाते, ठीक उसी प्रकार जैसे पहाड़ के विपरीत दिशाओं से सुरंग खोदने वाले लोग तब तक नहीं मिलते जब तक वे इंजीनियरिंग के समान सिद्धांतों के अनुसार अपनी गणना न करें।

आपने देखा होगा कि व्याख्यात्मक पठन के प्रत्येक नियम में दो चरण शामिल होते हैं। आइए, इंजीनियरिंग के उदाहरण से हटकर, इनके आपसी संबंध को समझाते हैं। इनकी तुलना एक जासूस द्वारा हत्यारे का पीछा करने के दो चरणों से की जा सकती है। अपराध स्थल के आसपास पड़ी सभी चीजों में से, उसे उन चीजों को चुनना होता है जिन्हें वह सुराग मानता है। फिर उसे इन सुरागों का उपयोग करके अपराधी तक पहुंचना होता है। किसी पुस्तक की व्याख्या करना एक प्रकार का जासूसी कार्य है। महत्वपूर्ण शब्दों को खोजना सुराग ढूंढना है। उनके माध्यम से समझना लेखक के विचारों को समझना है।

अगर मैं कुछ तकनीकी पहलुओं पर गौर करूं, तो मैं कहूंगा कि इन नियमों के दो पहलू हैं: व्याकरणिक और तार्किक। व्याकरणिक पहलू शब्दों से संबंधित है। तार्किक पहलू उनके अर्थों से, या अधिक सटीक रूप से कहें तो, पदों से संबंधित है। संचार के लिहाज से, ये दोनों पहलू अपरिहार्य हैं। यदि भाषा का प्रयोग बिना विचार के किया जाए, तो कुछ भी संप्रेषित नहीं होता। और विचार या ज्ञान का संचार भाषा के बिना संभव नहीं है। कला के रूप में, व्याकरण और तर्क का संबंध भाषा और विचार के बीच तथा विचार और भाषा के बीच के संबंध से है। इसीलिए मैंने पहले कहा था कि पढ़ने और लिखने का कौशल इन उदार कलाओं, विशेषकर व्याकरण और तर्क के माध्यम से प्राप्त होता है।

भाषा और विचार का यह विषय—विशेषकर शब्दों और पदों के बीच का अंतर—इतना महत्वपूर्ण है कि मैं मुख्य बिंदु को समझाने के लिए कुछ बातों को दोहराने का जोखिम उठा रहा हूँ। मुख्य बिंदु यह है कि एक शब्द अनेक पदों का माध्यम हो सकता है। आइए इसे निम्नलिखित तरीके से संक्षेप में समझते हैं। शब्द "पढ़ना"

हमारी चर्चा के दौरान इसका प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है। आइए तीन अर्थों पर विचार करें: (i) मनोरंजन प्राप्त करने के अर्थ में पढ़ना; (2) जानकारी प्राप्त करने के अर्थ में पढ़ना, और (3) अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के अर्थ में पढ़ना।

अब हम "पढ़ना" शब्द को अक्षर X से और इसके तीन अर्थों को अक्षर a, b और c से दर्शाते हैं। Xa, Xb और Xc से जो दर्शाया जा रहा है, वह तीन शब्द नहीं हैं, क्योंकि X हर जगह एक ही रहता है। लेकिन ये तीन पद हैं, बशर्ते कि आप और मैं यह जानते हों कि X का प्रयोग कब एक निश्चित अर्थ में हो रहा है और कब नहीं। यदि मैं किसी स्थान पर Xa लिखता हूँ और आप Xb पढ़ते हैं, तो हम एक ही शब्द

लिख और पढ़ रहे हैं, लेकिन एक ही तरीके से नहीं। यह अस्पष्टता संवाद में बाधा डालती है। जब आप शब्द को उसी तरह समझते हैं जैसे मैं समझता हूँ, तभी हमारे बीच एक विचार बनता है। हमारे विचार X पर नहीं मिल सकते, बल्कि केवल Xa, Xb या Xc पर ही मिल सकते हैं। इस प्रकार हम एक-दूसरे को समझते हैं।

- 2 -

मुझे उम्मीद है कि अब आप उस नियम पर विचार करने के लिए तैयार हैं जो पाठक को विषय को समझने के लिए प्रेरित करता है। वह पहला कदम कैसे उठाता है? वह पुस्तक में महत्वपूर्ण शब्दों को कैसे खोजता है?

एक बात तो पक्की है। लेखक द्वारा इस्तेमाल किए गए सभी शब्द महत्वपूर्ण नहीं होते। बल्कि, आप इस बात पर यकीन कर सकते हैं कि उनके अधिकांश शब्द महत्वपूर्ण नहीं होते। केवल वे शब्द महत्वपूर्ण होते हैं जिनका प्रयोग वे विशेष ढंग से करते हैं, और हमारे लिए, पाठकों के रूप में। यह कोई पूर्ण सत्य नहीं है, बल्कि महत्व का एक स्तर है। शब्द कम या ज्यादा महत्वपूर्ण हो सकते हैं। हमारा एकमात्र सरोकार इस बात से है कि पुस्तक में कुछ शब्द दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। एक तरफ वे शब्द हैं जिनका प्रयोग लेखक आम बोलचाल की भाषा में करता है। चूंकि लेखक इन शब्दों का प्रयोग आम बोलचाल में आम लोगों की तरह कर रहा है, इसलिए पाठक को इन्हें समझने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। वह इनकी अस्पष्टता से परिचित है और विभिन्न संदर्भों में इनके अर्थों में होने वाले बदलावों से अभ्यस्त हो चुका है।

उदाहरण के लिए, सर आर्थर एडिंगटन की भौतिक जगत की प्रकृति पर लिखी उत्कृष्ट पुस्तक में "पढ़ना" शब्द का प्रयोग मिलता है। वे वैज्ञानिक उपकरणों पर डायल और गेज की रीडिंग को "पॉइंटर-रीडिंग" कहते हैं। वे "पढ़ना" शब्द का प्रयोग इसके सामान्य अर्थों में से एक में कर रहे हैं। यह उनके लिए कोई तकनीकी शब्द नहीं है। वे पाठक को अपना अर्थ समझाने के लिए सामान्य प्रयोग पर भरोसा कर सकते हैं। यदि वे अपनी पुस्तक में कहीं और "पढ़ना" शब्द का प्रयोग किसी भिन्न अर्थ में भी करते—जैसे कि "प्रकृति को पढ़ना"—तो भी वे आश्वस्त हो सकते थे कि पाठक शब्द के दूसरे सामान्य अर्थ को समझ जाएगा। जो पाठक ऐसा नहीं कर पाता, वह अपने मित्रों से बात नहीं कर पाता और न ही अपने दैनिक कार्य कर पाता।

लेकिन सर आर्थर "कारण" शब्द का प्रयोग इतनी सहजता से नहीं कर सकते। यह आम बोलचाल का शब्द है, लेकिन जब वे कारण-कार्य संबंध के सिद्धांत पर चर्चा करते हैं तो सर आर्थर इसका प्रयोग एक विशेष अर्थ में करते हैं। इस शब्द को किस प्रकार समझा जाए, यह एक महत्वपूर्ण पहलू है जिस पर उन्हें और पाठक दोनों को ध्यान देना चाहिए। इसी कारण इस पुस्तक में "पढ़ना" शब्द का भी महत्व है। हम इसका प्रयोग सामान्य ढंग से नहीं कर सकते।

मैं दोहराता हूँ कि लेखक अधिकांश शब्दों का प्रयोग आम बोलचाल की भाषा में करता है, जिनमें अनेक अर्थ होते हैं, और संदर्भ के आधार पर अर्थों में बदलाव का पता चलता है। इस तथ्य को जानने से आपको महत्वपूर्ण शब्दों को

समझने में मदद मिलेगी। यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अलग-अलग समय और स्थानों पर एक ही शब्द दैनिक उपयोग में समान रूप से प्रचलित नहीं होते। एडिंगटन या मेरे जैसे समकालीन लेखक अधिकांश शब्दों का प्रयोग उनके वर्तमान सामान्य उपयोग के अनुसार ही करेंगे, और आप उन्हें जानते होंगे क्योंकि आप आज जीवित हैं। लेकिन अतीत की महान पुस्तकों को पढ़ते समय, लेखक द्वारा उन शब्दों को पहचानना कठिन हो सकता है जिनका प्रयोग उस समय और स्थान पर अधिकांश लोग करते थे। विदेशी भाषाओं से पुस्तकों का अनुवाद इस मामले को और भी जटिल बना देता है।

इसलिए, आप समझ सकते हैं कि सामान्य शब्दों को हटाना एक कठोर भेदभाव हो सकता है। फिर भी, यह सच है कि किसी भी पुस्तक के अधिकांश शब्दों को उसी तरह पढ़ा जा सकता है जैसे कोई अपने दोस्तों से बात करते समय उनका उपयोग करता है। इस पुस्तक का कोई भी पृष्ठ लें और उन शब्दों को गिनें जिनका हम इस तरह उपयोग कर रहे हैं: सभी पूर्वसर्ग, संयोजक और आर्टिकल, और निश्चित रूप से अधिकांश क्रिया, संज्ञा और विशेषण। इस अध्याय में अब तक, मैं कहूंगा कि केवल कुछ ही महत्वपूर्ण शब्द हैं: "शब्द," "पद,"

"अस्पष्टता," "संचार," "महत्वपूर्ण"; इनमें से "शब्द" स्पष्ट रूप से सबसे महत्वपूर्ण है। बाकी सभी शब्द इसके संदर्भ में ही महत्वपूर्ण हैं।

जिस वाक्य में महत्वपूर्ण शब्द आते हैं, उन्हें समझने का प्रयास किए बिना आप उन्हें खोज नहीं सकते। यह स्थिति कुछ विरोधाभासी है। यदि आप वाक्य को समझते हैं, तो निश्चित रूप से आपको पता होगा कि उसमें कौन से शब्द सबसे महत्वपूर्ण हैं। यदि आप वाक्य को पूरी तरह से नहीं समझते हैं, तो संभवतः इसका कारण यह है कि आप लेखक द्वारा कुछ शब्दों के प्रयोग के तरीके को नहीं जानते हैं। यदि आप उन शब्दों को चिह्नित करते हैं जो आपको परेशान करते हैं, तो आप शायद उन्हीं शब्दों तक पहुँच जाएँगे जिनका लेखक विशेष रूप से प्रयोग कर रहा है। ऐसा होने की संभावना इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि जिन शब्दों का लेखक सामान्य रूप से प्रयोग करता है, उन्हें समझने में आपको कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

एक पाठक के रूप में आपके दृष्टिकोण से, सबसे महत्वपूर्ण शब्द वे हैं जो आपको परेशानी देते हैं। जैसा कि मैंने कहा है, संभवतः ये शब्द लेखक के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

बेशक, इसका विपरीत भी संभव है। हो सकता है कि वे न हों।

यह भी संभव है कि लेखक के लिए महत्वपूर्ण शब्द आपको परेशान न करें, और इसका कारण यह है कि आप उन्हें समझते हैं। ऐसे में, आप लेखक के साथ तालमेल बिठा चुके हैं। केवल तभी आपको काम करना बाकी है जब आप तालमेल बिठाने में असफल हों।

- 3 -

अब तक हम सामान्य शब्दों को हटाकर नकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रहे थे। कुछ महत्वपूर्ण शब्द आपको इसलिए पता चलते हैं क्योंकि वे आपके लिए सामान्य नहीं होते।

इसीलिए वे आपको परेशान करते हैं। लेकिन क्या महत्वपूर्ण शब्दों को पहचानने का कोई और तरीका है? क्या कोई ऐसे सकारात्मक संकेत हैं जो उनकी ओर इशारा करते हों?

मैं कई सकारात्मक संकेत बता सकता हूँ। पहला और सबसे स्पष्ट संकेत यह है कि लेखक कुछ शब्दों पर विशेष बल देता है और कुछ पर नहीं। वह ऐसा कई तरीकों से कर सकता है। वह शब्द को स्पष्ट करने के लिए उद्धरण चिह्नों या इटैलिक्स जैसे टाइपोग्राफिकल उपकरणों का उपयोग कर सकता है। वह शब्द के विभिन्न अर्थों और उसके उपयोग के तरीके पर स्पष्ट रूप से चर्चा करके आपका ध्यान उस ओर आकर्षित कर सकता है। या वह उस शब्द को परिभाषित करके उस पर जोर दे सकता है जिसके लिए उस शब्द का प्रयोग किया गया है।

यूक्लिड को पढ़े बिना कोई भी व्यक्ति "बिंदु," "रेखा," "समतल," जैसे शब्दों को नहीं जान सकता।

"कोण," "आकृति," "समांतर," इत्यादि सर्वोपरि हैं। ये वे शब्द हैं जो यूक्लिड द्वारा परिभाषित ज्यामितीय आकृतियों को नाम देते हैं। अन्य महत्वपूर्ण शब्द भी हैं, जैसे "बराबर," "पूर्ण," और "भाग," लेकिन ये किसी भी परिभाषित वस्तु को नाम नहीं देते।

आप जानते हैं कि ये सिद्धांत मूलभूत सिद्धांतों में पाए जाते हैं, इसलिए ये महत्वपूर्ण हैं। यूक्लिड ने अपने प्राथमिक कथनों को शुरुआत में ही स्पष्ट करके आपकी सहायता की है। आप अनुमान लगा सकते हैं कि इन कथनों को बनाने वाले पद मूलभूत हैं, और इससे आपको उन शब्दों का महत्व समझ में आ जाता है जो इन पदों को व्यक्त करते हैं। आपको इन शब्दों को समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि ये आम बोलचाल के शब्द हैं, और यूक्लिड भी इन्हें इसी तरह इस्तेमाल करते प्रतीत होते हैं।

अगर सभी लेखक यूक्लिड की तरह लिखते, तो आप कह सकते हैं कि पढ़ना बहुत आसान हो जाता। दुर्भाग्य से, ऐसा संभव नहीं है, हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि किसी भी विषय को ज्यामितीय तरीके से समझाया जा सकता है। मैं यह समझाने की कोशिश नहीं करूंगा कि गणित में कारगर प्रक्रिया—व्याख्या और प्रमाण की विधि—ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में क्यों लागू नहीं होती। हमारे उद्देश्य के लिए, यह समझना पर्याप्त है कि हर प्रकार की व्याख्या में क्या समान है। ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी तकनीकी शब्दावली होती है। यूक्लिड इसे शुरुआत में ही स्पष्ट कर देते हैं। यही बात न्यूटन या गैलीलियो जैसे किसी भी लेखक पर लागू होती है, जो ज्यामितीय शैली में लिखते हैं। अलग-अलग तरीके से लिखी गई पुस्तकों में या अन्य क्षेत्रों में, तकनीकी शब्दावली को पाठक को स्वयं खोजना पड़ता है।

यदि लेखक ने स्वयं शब्दों की ओर इशारा नहीं किया है, तो पाठक विषयवस्तु के पूर्व ज्ञान के आधार पर उन्हें खोज सकता है। यदि डार्विन या एडम स्मिथ को

पढ़ने से पहले पाठक को जीव विज्ञान या अर्थशास्त्र का कुछ ज्ञान है, तो तकनीकी शब्दों को समझने में उसे निश्चित रूप से मदद मिलेगी। पहले पठन के विभिन्न चरण यहाँ सहायक हो सकते हैं। यदि आपको पता है कि पुस्तक किस प्रकार की है, उसका समग्र विषय क्या है और उसके प्रमुख भाग क्या हैं, तो तकनीकी शब्दावली को सामान्य शब्दों से अलग करने में आपको बहुत सहायता मिलेगी। इस संदर्भ में लेखक का शीर्षक, अध्याय शीर्षक और प्रस्तावना उपयोगी हो सकते हैं।

अब आप जानते हैं कि एडम स्मिथ के लिए "धन" एक तकनीकी शब्द है, और डार्विन के लिए "प्रजाति"। और जैसे-जैसे एक तकनीकी शब्द दूसरे तकनीकी शब्द की ओर ले जाता है, वैसे-वैसे आप अन्य तकनीकी शब्दों को भी खोजते चले जाते हैं। आप जल्द ही एडम स्मिथ द्वारा प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दों की एक सूची बना सकते हैं: श्रम, पूंजी, भूमि, मजदूरी, लाभ, किराया, वस्तु, मूल्य, विनिमय, उत्पादक, अनुत्पादक, धन, इत्यादि। और डार्विन के संदर्भ में आपको कुछ ऐसे शब्द अवश्य मिलेंगे: विविधता, वंश, चयन, उत्तरजीविता, अनुकूलन, संकर, योग्यतम, सृजन।

जहां किसी ज्ञान क्षेत्र में सुस्थापित तकनीकी शब्दावली होती है, वहां उस विषय से संबंधित पुस्तक में महत्वपूर्ण शब्दों का पता लगाना अपेक्षाकृत आसान होता है।

आप इस क्षेत्र से कुछ परिचित होने के कारण उन्हें सकारात्मक रूप से पहचान सकते हैं, या यह जानकर नकारात्मक रूप से पहचान सकते हैं कि कौन से शब्द तकनीकी होने चाहिए, क्योंकि वे सामान्य नहीं हैं।

दुर्भाग्यवश, ऐसे कई क्षेत्र हैं जिनमें तकनीकी शब्दावली अच्छी तरह से स्थापित नहीं है।

दार्शनिकों की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका दर्शनशास्त्र में एक विशिष्ट स्थान होता है। भले ही सभी लेखक उनका प्रयोग एक ही अर्थ में न करते हों, फिर भी कुछ समस्याओं के विश्लेषण में वे तकनीकी शब्द होते हैं। लेकिन दार्शनिकों को अक्सर नए शब्द गढ़ने या आम बोलचाल के किसी शब्द को तकनीकी शब्द बना देने की आवश्यकता महसूस होती है। यह प्रक्रिया उस पाठक को सबसे अधिक भ्रमित कर सकती है जो यह मानकर चलता है कि वह शब्द का अर्थ जानता है और इसलिए उसे एक सामान्य शब्द समझ लेता है।

इस संदर्भ में, किसी महत्वपूर्ण शब्द की पहचान करने का एक संकेत यह है कि लेखक उस शब्द को लेकर अन्य लेखकों से मतभेद रखता है। जब आप किसी लेखक को यह बताते हुए पाते हैं कि किसी विशेष शब्द का प्रयोग अन्य लेखकों द्वारा कैसे किया गया है, और वह स्वयं उस शब्द का प्रयोग अलग तरीके से क्यों करता है, तो आप निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वह शब्द उसके लिए बहुत मायने रखता है।

मैंने तकनीकी शब्दावली पर ज़ोर दिया है, लेकिन इसे संकीर्ण अर्थ में न लें। लेखक के मुख्य विचारों, उनकी प्रमुख अवधारणाओं को व्यक्त करने वाले अपेक्षाकृत सीमित शब्द ही उनकी विशेष शब्दावली बनाते हैं। ये वे शब्द हैं जो उनके विश्लेषण को व्यक्त करते हैं। यदि वे कोई मौलिक संदेश दे रहे हैं,

तो संभवतः वे इनमें से कुछ शब्दों का प्रयोग एक विशेष तरीके से करेंगे, जबकि अन्य शब्दों का प्रयोग उस क्षेत्र में प्रचलित परंपरा के अनुसार भी कर सकते हैं। दोनों ही मामलों में, ये शब्द उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। एक पाठक के रूप में ये शब्द आपके लिए भी महत्वपूर्ण होने चाहिए, लेकिन इसके अतिरिक्त, कोई भी अन्य शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट न हो, वह भी आपके लिए महत्वपूर्ण है।

- 4 -

अधिकांश पाठकों की समस्या यह है कि वे शब्दों पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते, जिससे वे अपनी कठिनाइयों को पहचान नहीं पाते। वे उन शब्दों में अंतर नहीं कर पाते जिन्हें वे अच्छी तरह समझते हैं। पुस्तक में महत्वपूर्ण शब्दों को खोजने में आपकी सहायता के लिए मैंने जो भी सुझाव दिए हैं, वे तब तक व्यर्थ होंगे जब तक आप जानबूझकर उन शब्दों को नोट नहीं करते जिन पर आपको ध्यान देना है ताकि आप उनके अर्थ को समझ सकें। जो पाठक उन शब्दों पर विचार नहीं करता, या कम से कम उन्हें चिह्नित नहीं करता, जिन्हें वह नहीं समझता, उसका हाल उस लोकोमोटिव इंजीनियर जैसा ही होगा जो लाल सिग्नल को अनदेखा करके यह सोचकर गाड़ी चला देता है कि ट्रैफिक जाम अपने आप ठीक हो जाएगा।

यदि आप कोई ऐसी पुस्तक पढ़ रहे हैं जिससे आपकी समझ बढ़ सकती है, तो यह स्वाभाविक है कि उसके सभी शब्द समान रूप से बोधगम्य नहीं होंगे। यदि आप उन्हें साधारण शब्दों की तरह समझकर पढ़ते हैं, जैसे किसी समाचार पत्र के शब्द, तो आप व्याख्यात्मक पठन की दिशा में पहला कदम भी नहीं बढ़ा पाएंगे। आप मानो कोई समाचार पत्र ही पढ़ रहे हों, क्योंकि यदि आप पुस्तक को समझने का प्रयास नहीं करेंगे तो वह आपको ज्ञान प्रदान नहीं कर पाएगी।

मैं जानता हूँ कि हममें से अधिकांश लोग निष्क्रिय पठन के कितने आदी हैं। निष्क्रिय पाठक की सबसे बड़ी कमी शब्दों पर ध्यान न देना है, जिसके परिणामस्वरूप वह लेखक को समझ नहीं पाता। कुछ वर्ष पूर्व, शिकागो विश्वविद्यालय के विधि विद्यालय के प्रोफेसर मैल्कम शार्प और मैंने विधि अध्ययन करने की योजना बना रहे छात्रों के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम चलाया था। हमारा एक मुख्य उद्देश्य उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाना था। एक वकील के लिए ये क्षमताएँ आवश्यक हैं। विधि विद्यालय के संकाय को यह संदेह होने लगा था कि कॉलेजों से इन कौशलों को विकसित करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। तृतीय वर्ष में पहुँच चुके इन छात्रों के साथ हमारे अनुभव ने उनके संदेह को सही साबित कर दिया।

हमें जल्द ही पता चल गया कि वे कितनी निष्क्रियता से पढ़ते थे। जॉन लॉक का दूसरा निबंध 'ऑफ सिविल गवर्नमेंट' पढ़ने के लिए दिया गया था, और उन्हें लगभग सौ पृष्ठ पढ़ने के लिए कई सप्ताह का समय मिला था। कक्षा शुरू हुई। श्री शार्प और मैंने लॉक के शासन संबंधी विचारों, प्राकृतिक और नागरिक अधिकारों के संबंध, स्वतंत्रता की प्रकृति आदि के बारे में अपेक्षाकृत सरल, मार्गदर्शक प्रश्न पूछे। उन्होंने इन प्रश्नों के उत्तर दिए, लेकिन इस तरह से नहीं कि लॉक के बारे में उनकी कोई जानकारी झलकती हो। अगर उन्होंने लॉक का निबंध कभी खोला भी न होता, तब भी वे यही उत्तर दे सकते थे।

xxxxx xxxxxxxxx xxxxxx xxxxx xx? xxxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxx xxx xx xxx xx xx xxx xxxxx xxxxx xxx xxx xx xx xx xx xxx xxx xx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xxx xx xxx xx xxxxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xx, xxxxxx xxxxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxx

xxx xxxxxx xx xxx xxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxx xx xx xx xxxxx xxxxxx xx xxx xx xxx xxxxx xxxxxxxxxxx xx xx xx xxxxxxxx xxxxxx xxx xxxxxxx xxxxxxx xx xxx xxx xxxxx xx xxx xxxxxxxxxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxx xx "xxxxxxxxxxx," "xxxxxxx," "xxxxxxxx," xx "xxxxxxx" xxxxx xxxxx xxxxx, xxx xx xxxxxxx xxxxx xx xxx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxx "xxxxxxxxxxx," "xxxxxxxxx" xxxxx xxxxx xxxxxx xxx

"xxxxxxxx xx xxxxxx", "xxxxxxx", "xxxxxx", xxxxxxxxx

xxx xxxxxx xx xxxxx, xxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxxx xxxxx xxx

xxxxx, xxxxxxxxx xxx xx xx xxx xxxxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxx xx xxx xxxxx xxxxxxxxxxx xx xxxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxx xxx xx xx xx xxxxxxxxxxx xx xx xxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxx xxx, xxxxxxx xxx xxxxxxxxx xxxxxxx xxxxxxxx xxx, xx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xxxxx, xxxxx "xxxxxxxxx," "xxxxxxx xxx," xx "xxxxxxxxxxxxx"

xxxxx xxxxxx xx xx xxx xx xxxxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xxx xxx xx xxxxx xxxxxxxxx xxxxx xxxxxx

xxx xxxxxx xxxxxx xxx xx xx xxx xx xxxxx xxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxxxxxx xx xx xxxxxxx xx xxxxxxxx xxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxxxxxx xxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxx xx xxx xxx xx xxxxxx xx xx xxxxxx xx xxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxx? xxxxx xxxxx xxxxx xx, xxxxxxxx xxx xx xxxxx, xxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx, xxxxxx xxx xx xxxxxxxxx xxxxxxxxx xxx, xx xx xxxxx xxxxxxxx xxxxxxxxxxx xxx xxx xx xxx xx xxxxxxx xxx xxxxx?

xxxxxx xxx xx xxxxxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxx xx, xxxxx-xxxxx xx xxxxxxx xxx xxxxxx xxxxx xx xxxxxx xx, xx xxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xx xxxxx xxxxxxxxx xxxxxx xxx xx xxxxxxxx xx xxxxxxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxxxxx...

xxxxx xxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xxx, xxxxxxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxx, xxxxxx xx xxxxxx "xxxxxxxxxxx" xx "xxxxxxx" xxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxx, xxxxx xxxxxxx xxx xxxxxxx xxxxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxx,

प्राकृतिक और नागरिक स्वतंत्रता, और प्राकृतिक और नागरिक अधिकारों के बीच किए गए अंतरों को समझाने का प्रयास किया।

एक घंटे के अंत में, मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें अब भी लगता है कि उन्होंने किताब पढ़ी है। थोड़ा शर्मिंदा होकर उन्होंने स्वीकार किया कि शायद उन्होंने नहीं पढ़ी थी। ज़ाहिर है, उन्होंने इसे उसी तरह पढ़ा था जैसे वे अखबार या पाठ्यपुस्तक पढ़ते हैं। उन्होंने इसे निष्क्रिय रूप से पढ़ा था, शब्दों और उनके अर्थों पर ध्यान दिए बिना। लॉक के विचारों को समझने के लिहाज़ से यह ठीक वैसा ही था जैसे किताब पढ़ी ही न हो। ये भावी वकीलों का एक समूह था जिन्हें स्वतंत्रता की घोषणा या संविधान की प्रस्तावना के मुख्य शब्दों का अर्थ भी नहीं पता था।

इस कहानी को सुनाने का मेरा उद्देश्य यह दिखाना है कि जब तक निष्क्रिय पठन की आदत नहीं छूटती, पाठक ऐसे पढ़ता है मानो उसे सभी शब्दों का अर्थ पहले से ही पता हो, विशेषकर तब जब वह ऐसी सामग्री पढ़ रहा हो जिसमें महत्वपूर्ण शब्द आम बोलचाल के हों। यदि इन छात्रों में सक्रिय पठन की आदत विकसित हो जाती, तो वे मेरे द्वारा बताए गए शब्दों पर ध्यान देते। सबसे पहले तो वे यह जान लेते कि ऐसे शब्द न केवल आम बोलचाल के हैं बल्कि राजनीतिक सिद्धांत की तकनीकी शब्दावली का हिस्सा भी हैं। यह जानकर वे उनके तकनीकी अर्थों के बारे में भी सोचते।

और अंत में, यदि उन्होंने इन शब्दों के महत्व को समझने का प्रयास किया होता, तो उन्हें पता चलता कि लॉक ने इन शब्दों का प्रयोग कई अर्थों में किया है। तब शायद उन्हें लेखक के साथ तालमेल बिठाने की आवश्यकता का एहसास होता।

मैं यह भी कहना चाहूंगा कि उन्होंने सबक सीख लिया था। इन्हीं छात्रों के साथ, हमने बाद में लॉक के निबंध से भी अधिक कठिन पुस्तकें पढ़ीं। वे चर्चा के लिए बेहतर तैयारी के साथ कक्षा में आए, क्योंकि उन्होंने उन शब्दों को चिह्नित कर लिया था जिनसे महत्वपूर्ण अंतर पैदा होता था। उन्होंने महत्वपूर्ण शब्दों के अर्थों में आए बदलावों को गहराई से समझा था। इतना ही नहीं, वे एक नए अनुभव का आनंद लेने लगे थे—पुस्तक का सक्रिय पठन। यह उनके कॉलेज जीवन में थोड़ा देर से आया, लेकिन उनमें से अधिकांश ने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया कि देर से आना, न आने से बेहतर था।

- 5 -

याद रखें कि महत्वपूर्ण शब्दों को पहचानना कार्य की केवल शुरुआत है। यह केवल पाठ में उन स्थानों को इंगित करता है जहाँ आपको गहन अध्ययन करना है। व्याख्यात्मक पठन के इस पहले नियम को पूरा करने में एक और चरण है। आइए अब उस पर ध्यान दें। मान लीजिए कि आपने उन शब्दों को चिह्नित कर लिया है जो आपको परेशान कर रहे हैं। अब आगे क्या?

दो मुख्य संभावनाएं हैं। या तो लेखक इन शब्दों का प्रयोग पूरे पाठ में एक ही अर्थ में कर रहा है, या फिर वह इनका प्रयोग दो या दो से अधिक अर्थों में कर रहा है, और जगह-जगह अर्थ बदल रहा है। पहली संभावना में, शब्द एक ही पद का

प्रतिनिधित्व करता है। महत्वपूर्ण शब्दों का इस प्रकार प्रयोग कि वे एक ही अर्थ तक सीमित रहें, यूक्लिड के लेखन में एक अच्छा उदाहरण मिलता है।
दूसरी संभावना में, शब्द कई पदों का प्रतिनिधित्व करता है। यह अधिक सामान्य स्थिति है। लॉक के निबंध में इसका प्रयोग स्पष्ट है।

इन विकल्पों को ध्यान में रखते हुए, आपकी प्रक्रिया इस प्रकार होनी चाहिए। सबसे पहले, यह निर्धारित करने का प्रयास करें कि शब्द के एक या अनेक अर्थ हैं। यदि अनेक अर्थ हैं, तो यह देखने का प्रयास करें कि क्या वे आपस में संबंधित हैं और कैसे। अंत में, उन स्थानों को नोट करें जहां शब्द का प्रयोग एक या दूसरे अर्थ में किया गया है, और देखें कि क्या संदर्भ आपको अर्थ में परिवर्तन के कारण का कोई सुराग देता है। यह आपको लेखक के प्रयोग की विशेषता के समान लचीलेपन के साथ शब्द के अर्थों में परिवर्तन का अनुसरण करने में सक्षम बनाएगा।

लेकिन, आप शिकायत कर सकते हैं कि मुख्य बात को छोड़कर सब कुछ स्पष्ट है। अर्थ कैसे पता करें? इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर है। मुझे डर है कि आपको यह उत्तर संतोषजनक न लगे। लेकिन धैर्य और अभ्यास से आपको पता चल जाएगा कि क्या है। उत्तर यह है कि जिस शब्द का अर्थ आपको समझ नहीं आता, उसका अर्थ समझने के लिए आपको उस संदर्भ में अन्य सभी शब्दों के अर्थों का उपयोग करना होगा, जिन्हें आप समझते हैं। यही तरीका है, भले ही यह शुरू में कितना भी अटपटा लगे।

इसे समझाने का सबसे सरल तरीका एक परिभाषा का उदाहरण लेना है। परिभाषा शब्दों में लिखी जाती है। यदि आप परिभाषा में प्रयुक्त किसी भी शब्द को नहीं समझते हैं, तो स्पष्टतः आप उस शब्द का अर्थ भी नहीं समझ पाएंगे जिससे परिभाषित की जा रही वस्तु का नाम लिया गया है। "बिंदु" ज्यामिति का एक मूलभूत शब्द है। आपको लग सकता है कि आप इसका अर्थ जानते हैं, लेकिन यूक्लिड यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आप इसका प्रयोग केवल एक ही अर्थ में करें। वे पहले उस वस्तु को परिभाषित करके अपना अर्थ स्पष्ट करते हैं जिसके लिए वे बाद में इस शब्द का प्रयोग करेंगे। वे कहते हैं: "बिंदु वह है जिसके कोई भाग नहीं होते।"

इससे आप उसके साथ कैसे समझौता कर पाते हैं? आप जानते हैं, वह वाक्य के हर दूसरे शब्द का अर्थ पर्याप्त सटीकता से समझ लेता है। आप जानते हैं कि जिसके भी भाग होते हैं वह एक जटिल संपूर्ण होता है। आप जानते हैं कि जटिल का विपरीत सरल होता है। सरल होना भागों का न होना के समान है। आप जानते हैं कि "है" और "जो" शब्दों का प्रयोग...

इसका अर्थ है कि संदर्भित वस्तु किसी न किसी प्रकार की इकाई होनी चाहिए। आप शायद यह भी जानते होंगे कि भागों के बिना कोई भौतिक वस्तु नहीं होती, और इसलिए यूक्लिड द्वारा वर्णित बिंदु भौतिक नहीं हो सकता।

यह उदाहरण अर्थों को प्राप्त करने की प्रक्रिया का एक विशिष्ट उदाहरण है। आप उन अर्थों के साथ काम करते हैं जो आपके पास पहले से मौजूद हैं। यदि किसी परिभाषा में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द को स्वयं परिभाषित किया जाए, तो किसी भी चीज़ को परिभाषित नहीं किया जा सकता। यदि आप जिस पुस्तक को पढ़ रहे हैं,

उसमें प्रत्येक शब्द आपके लिए पूरी तरह से अपरिचित हो (जैसे कि किसी विदेशी भाषा की पुस्तक के मामले में), तो आप बिल्कुल भी प्रगति नहीं कर पाएंगे।

मुझे लगता है कि लोग जब किसी किताब के बारे में कहते हैं कि वह उनके लिए पूरी तरह से समझ से परे है, तो उनका यही मतलब होता है।

उन्होंने इसे समझने की कोशिश ही नहीं की है। किसी भी अंग्रेज़ी किताब में ज़्यादातर शब्द परिचित होते हैं। ये शब्द अपरिचित शब्दों, तकनीकी शब्दों और उन शब्दों के बीच में होते हैं जो पाठक को कुछ परेशानी दे सकते हैं। ये शब्द ही उन शब्दों के संदर्भ का काम करते हैं जिनकी व्याख्या करनी होती है। पाठक के पास वह सारी सामग्री मौजूद है जिसकी उसे व्याख्या करने के लिए ज़रूरत है।

मैं यह दावा नहीं कर रहा कि यह काम आसान है। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि यह असंभव नहीं है। अगर ऐसा होता, तो कोई भी किताब पढ़कर ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता। किसी किताब से नई अंतर्दृष्टि प्राप्त होना या ज्ञान प्राप्त होना यह दर्शाता है कि उसमें शायद ऐसे शब्द हों जिन्हें आप आसानी से न समझ पाएं। यदि आप अपने प्रयासों से इन शब्दों को नहीं समझ पाते, तो जिस प्रकार के पठन की हम बात कर रहे हैं, वह असंभव हो जाता। किसी किताब को पढ़कर कम ज्ञान से अधिक ज्ञान की ओर बढ़ना असंभव हो जाता।

यदि यह असंभव नहीं है—और यह असंभव नहीं है—तो एकमात्र समाधान वही है जो मैंने बताया है।

क्योंकि आप शुरुआत में कुछ समझते हैं, इसलिए आप अपने ज्ञान का उपयोग करके उन शब्दों की व्याख्या कर सकते हैं जो आपको चुनौती देते हैं। जब आप सफल हो जाते हैं, तो आप समझ के स्तर में ऊपर उठ जाते हैं। आप उस समझ के करीब पहुँच जाते हैं या उसे प्राप्त कर लेते हैं जिससे लेखक ने शुरुआत की थी।

इसे करने का कोई निश्चित नियम नहीं है। यह प्रक्रिया कुछ-कुछ जिगसॉ पज़ल को जोड़ने के ट्रायल-एंड-एरर तरीके जैसी है। जितने ज़्यादा हिस्से आप जोड़ते हैं, बाकी के हिस्से उतने ही आसानी से जुड़ते जाते हैं। एक किताब आपके सामने आती है जिसमें पहले से ही कई शब्द अपनी जगह पर मौजूद होते हैं। एक शब्द जो अपनी जगह पर मौजूद होता है, वह एक टर्म होता है। यह निश्चित रूप से उस अर्थ से जुड़ा होता है जिसे आप और लेखक मिलकर इस्तेमाल करते हैं। बाकी के शब्दों को उनकी जगह पर रखना होता है। आप उन्हें अलग-अलग तरीकों से फिट करने की कोशिश करके ऐसा करते हैं। अब तक मौजूद शब्दों से जो चित्र अधूरा सा दिखता है, उसे आप जितना बेहतर समझ पाते हैं, बाकी के शब्दों को टर्म बनाकर चित्र को पूरा करना उतना ही आसान हो जाता है। हर सही जगह पर रखा गया शब्द अगले समायोजन को आसान बना देता है।

इस प्रक्रिया में आपसे गलतियाँ होना स्वाभाविक है। आपको लगेगा कि आपने किसी शब्द का स्थान और उसकी उपयुक्तता निर्धारित कर ली है, लेकिन बाद में पता चलेगा कि किसी दूसरे शब्द के स्थान में बदलाव करने के लिए आपको कई बार

फेरबदल करना पड़ेगा। गलतियाँ सुधर जाएँगी क्योंकि जब तक उन्हें खोजा नहीं जाता, तब तक चित्र पूरा नहीं हो सकता।

एक बार जब आपको इस प्रक्रिया में थोड़ा-बहुत अनुभव हो जाएगा, तो आप जल्द ही खुद को परखने में सक्षम हो जाएंगे। आपको पता चल जाएगा कि आप सफल हुए हैं या नहीं। जब आप नहीं समझे होंगे, तब भी आप यह सोचकर निश्चिंत नहीं हो जाएंगे कि आप समझ गए हैं।

किसी पुस्तक की तुलना जिगसॉ पज़ल से करते समय, मैंने एक ऐसी धारणा बनाई है जो सर्वमान्य या सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है। एक अच्छी पज़ल वह होती है जिसके सभी भाग सही बैठते हैं। चित्र पूर्ण रूप से पूरा हो सकता है। यही बात आदर्श रूप से अच्छी पुस्तक पर भी लागू होती है। लेकिन ऐसी पुस्तकें बहुत कम हैं। अच्छी पुस्तकों की तुलना में, उनके शब्दों का चयन और संयोजन इतना कुशल होता है कि पाठक उनका अर्थ आसानी से समझ सकता है।

यहां, पढ़ने के अन्य सभी नियमों की तरह, खराब किताबें अच्छी किताबों की तुलना में कम पठनीय होती हैं। ये नियम उन पर लागू नहीं होते, सिवाय इसके कि वे आपको उनकी खराब गुणवत्ता का पता लगाने में मदद करते हैं। यदि लेखक शब्दों का अस्पष्ट प्रयोग करता है, तो आप यह ठीक से नहीं समझ सकते कि वह क्या कहना चाह रहा है।

आपको केवल यही पता चल सकता है कि वह सटीक नहीं था।

लेकिन आप पूछ सकते हैं, क्या एक लेखक जो किसी शब्द का एक से अधिक अर्थों में प्रयोग करता है, वह अस्पष्टता का प्रयोग नहीं करता? और क्या आपने यह नहीं कहा था कि लेखकों द्वारा शब्दों का, विशेषकर उनके सबसे महत्वपूर्ण शब्दों का, कई अर्थों में प्रयोग करना सामान्य बात है?

दूसरे प्रश्न का उत्तर है, पहले प्रश्न का उत्तर है नहीं। किसी शब्द का अस्पष्ट रूप से प्रयोग करना, उसे अनेक अर्थों में प्रयोग करना है, बिना इन अर्थों में भेद किए या उन्हें आपस में जोड़े। (उदाहरण के लिए, मैंने इस अध्याय में शायद "महत्वपूर्ण" शब्द का अस्पष्ट रूप से प्रयोग किया है, यह स्पष्ट नहीं किया कि मेरा मतलब लेखक के लिए महत्वपूर्ण है या आपके लिए।) ऐसा करने वाला लेखक ऐसे शब्द गढ़ता नहीं है जिन्हें पाठक समझ सके। लेकिन जो लेखक किसी महत्वपूर्ण शब्द के विभिन्न अर्थों में भेद करता है और पाठक को उचित भेद करने में सक्षम बनाता है, वह शब्द प्रस्तुत कर रहा होता है।

यह न भूलें कि एक शब्द अनेक भावों को व्यक्त कर सकता है। इसे याद रखने का एक तरीका यह है कि लेखक की तकनीकी शब्दावली और विश्लेषणात्मक शब्दावली में अंतर स्पष्ट किया जाए। यदि आप एक कॉलम में महत्वपूर्ण शब्दों की सूची बनाएं और दूसरे में उनके विभिन्न अर्थों की, तो आपको शब्दावली और विश्लेषणात्मक शब्दावली के बीच संबंध स्पष्ट हो जाएगा।

- 6 -

इसमें कई और जटिलताएं हैं। पहली बात तो यह है कि एक शब्द जिसके कई अलग-अलग अर्थ होते हैं, उसे एक ही अर्थ में या कई अर्थों के संयोजन में प्रयोग किया जा सकता है। आइए, फिर से "पढ़ना" शब्द का उदाहरण लें। कुछ जगहों पर मैंने इसका प्रयोग किसी भी प्रकार की पुस्तक पढ़ने के लिए किया है। अन्य जगहों पर मैंने इसका प्रयोग उन पुस्तकों को पढ़ने के लिए किया है जो मनोरंजन के बजाय ज्ञान प्रदान करती हैं। और कुछ अन्य जगहों पर मैंने इसका प्रयोग उन पुस्तकों को पढ़ने के लिए किया है जो जानकारी देने के बजाय ज्ञानवर्धन करती हैं।

अब यदि हम यहाँ, जैसा कि हमने पहले किया था, "पढ़ना" के तीन अलग-अलग अर्थों को Xa, Xb और Xc से दर्शाते हैं, तो आप देख सकते हैं कि पहला प्रयोग Xabc है, दूसरा Xbc है और तीसरा Xc है। दूसरे शब्दों में, यदि तीन अर्थ संबंधित हैं, तो एक शब्द का प्रयोग उन सभी के लिए, उनमें से कुछ के लिए या एक समय में केवल एक के लिए किया जा सकता है। जब तक प्रत्येक प्रयोग निश्चित है, तब तक प्रयुक्त शब्द एक पद है।

दूसरे स्थान पर, समानार्थी शब्दों की समस्या आती है। आप जानते ही हैं कि समानार्थी शब्द वे शब्द होते हैं जिनका अर्थ एक समान होता है या अर्थ में काफी समानता होती है। समानार्थी शब्दों का एक जोड़ा, एक ही शब्द के दो उपयोगों के ठीक विपरीत होता है।

समानार्थी शब्द वे दो शब्द होते हैं जिनका प्रयोग एक ही तरीके से किया जाता है। इसलिए, एक ही शब्द को दो या दो से अधिक समानार्थी शब्दों द्वारा दर्शाया जा सकता है।

हम इसे प्रतीकात्मक रूप से इस प्रकार दर्शा सकते हैं। मान लीजिए X और V दो अलग-अलग शब्द हैं, जैसे "ज्ञानोदय" और "अंतर्दृष्टि"। अक्षर 'a' दोनों के समान अर्थ को दर्शाता है, अर्थात् समझ में वृद्धि। तब Xa और Ya एक ही शब्द का प्रतिनिधित्व करते हैं, भले ही वे अलग-अलग शब्द हों। जब मैं "अंतर्दृष्टि के लिए" पढ़ने और "ज्ञानोदय के लिए" पढ़ने की बात करता हूँ, तो मेरा तात्पर्य एक ही प्रकार के पठन से है, क्योंकि दोनों वाक्यांशों का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जा रहा है। शब्द अलग-अलग हैं, लेकिन पाठक के रूप में आपको समझने के लिए यहाँ केवल एक ही शब्द है।

आप समझ सकते हैं कि यह क्यों महत्वपूर्ण है। यदि आप यह मान लें कि जब भी कोई लेखक अपने शब्दों को बदलता है, तो वह अपने शब्दों का प्रयोग बदल रहा होता है, तो आप उतनी ही बड़ी गलती करेंगे जितनी यह मान लेना कि जब भी वह एक ही शब्दों का प्रयोग करता है, तो शब्द वही रहते हैं। लेखक की शब्दावली और शब्दकोश को अलग-अलग कॉलम में सूचीबद्ध करते समय इस बात को ध्यान में रखें। आपको दो संबंध मिलेंगे। एक ओर, एक शब्द कई शब्दों से संबंधित हो सकता है।

दूसरी ओर, एक ही शब्द कई शब्दों से संबंधित हो सकता है।

यह बात आम तौर पर सच होती है, और इसका कारण विचार के संबंध में भाषा की प्रकृति है।

शब्दकोश शब्दों के प्रयोग का अभिलेख होता है। यह दर्शाता है कि मनुष्य एक ही शब्द का प्रयोग विभिन्न वस्तुओं के लिए और एक ही वस्तु के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग कैसे करते हैं। पाठक की समस्या यह समझना है कि पुस्तक में किसी भी स्थान पर लेखक शब्दों का प्रयोग किस प्रकार कर रहा है। शब्दकोश कभी-कभी सहायक हो सकता है, लेकिन यदि लेखक सामान्य प्रयोग से जरा भी हटकर शब्द प्रयोग करता है, तो पाठक को उसका अर्थ स्वयं समझना पड़ता है।

तीसरे स्थान पर, और अंत में, वाक्यांशों का विषय आता है। जैसा कि आप जानते हैं, वाक्यांश शब्दों का एक समूह होता है जो वाक्य की तरह पूर्ण विचार व्यक्त नहीं करता। यदि वाक्यांश एक इकाई है, यानी यदि यह एक ऐसा संपूर्ण है जो वाक्य का कर्ता या विधेय हो सकता है, तो यह एक शब्द के समान है। एक शब्द की तरह, यह किसी विषय को किसी न किसी रूप में संदर्भित कर सकता है।

अतः यह स्पष्ट है कि किसी पद को शब्द के साथ-साथ वाक्यांश द्वारा भी व्यक्त किया जा सकता है। और शब्दों और पदों के बीच जो संबंध होते हैं, वे पदों और वाक्यांशों के बीच भी लागू होते हैं। दो वाक्यांश एक ही पद को व्यक्त कर सकते हैं, और एक वाक्यांश अपने घटक शब्दों के प्रयोग के अनुसार कई पदों को व्यक्त कर सकता है।

सामान्यतः, एक शब्द की तुलना में एक वाक्यांश के अस्पष्ट होने की संभावना कम होती है। क्योंकि यह शब्दों का एक समूह होता है, जिनमें से प्रत्येक शब्द दूसरे के संदर्भ में होता है, इसलिए एकल शब्दों के अर्थ सीमित होने की संभावना अधिक होती है। यही कारण है कि यदि कोई लेखक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि पाठक उसका अर्थ समझ जाए, तो वह एक शब्द के स्थान पर एक विस्तृत वाक्यांश का प्रयोग करता है।

एक उदाहरण ही काफी होगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप पढ़ने के बारे में मेरी बात को अच्छी तरह समझ लें, मैं एक शब्द के स्थान पर "ज्ञान प्राप्ति के लिए पढ़ना" वाक्यांश का प्रयोग करता हूँ।

"पढ़ना।" पूरी तरह से सुनिश्चित करने के लिए, मैं एक अधिक विस्तृत वाक्यांश का भी प्रयोग कर सकता हूँ, जैसे कि

"किसी पुस्तक पर मनन करने से समझ कम से अधिक होने की प्रक्रिया।" यहाँ केवल एक ही शब्द है, 'हर्ज़', यानी उस प्रकार के पठन का संदर्भ जिसके बारे में मैं बात करने का प्रयास कर रहा हूँ। लेकिन उस एक शब्द को एक शब्द, एक संक्षिप्त वाक्यांश और एक लंबे वाक्यांश द्वारा व्यक्त किया गया है।

यह अध्याय शायद अब तक आपके लिए सबसे कठिन रहा होगा। मुझे पता है कि इसे लिखना मेरे लिए सबसे कठिन रहा है। मुझे लगता है कि मैं इसका कारण जानता हूँ। पढ़ने के जिस नियम पर हम चर्चा कर रहे हैं, उसे शब्दों और शब्दावली के बारे में व्याकरणिक और तार्किक व्याख्याओं के बिना पूरी तरह से समझाना संभव नहीं है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने बहुत कम व्याख्या की है। इन विषयों का पर्याप्त विवरण देने के लिए कई अध्याय लिखने पड़ेंगे। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ ताकि आपको आगाह कर सकूँ कि मैंने केवल सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं को ही छुआ है। मुझे आशा है कि मैंने नियम को व्यवहार में उपयोगी मार्गदर्शक बनाने के लिए पर्याप्त बातें कह दी हैं। आप इसे जितना अधिक व्यवहार में लाएँगे, समस्या की पेचीदगियों को उतना ही अधिक समझ पाएँगे। आप शब्दों के शाब्दिक और लाक्षणिक प्रयोग के बारे में जानना चाहेंगे। आप अमूर्त और मूर्त शब्दों के बीच, या व्यक्तिवाचक और सामान्य नामों के बीच अंतर जानना चाहेंगे। आप परिभाषाओं के पूरे विषय में रुचि लेंगे: परिभाषित शब्दों और परिभाषित वस्तुओं के बीच अंतर; कुछ शब्द अपरिभाषित क्यों होते हैं, फिर भी उनके निश्चित अर्थ होते हैं, इत्यादि। आप "शब्दों के भावनात्मक प्रयोग" पर प्रकाश डालना चाहेंगे, अर्थात् ज्ञान के संचार से भिन्न, भावनाओं को जगाने, लोगों को कार्य करने के लिए प्रेरित करने या उनके विचारों को बदलने के लिए शब्दों का प्रयोग।

यदि पढ़ने के अभ्यास से आपकी रुचि और भी जागृत होती है, तो आप इन विशेष विषयों पर पुस्तकें पढ़कर उन्हें संतुष्ट कर सकते हैं। और ऐसी पुस्तकों को पढ़ने से आपको अधिक लाभ होगा, क्योंकि आप उन्हें अपने पढ़ने के अनुभव से उत्पन्न प्रश्नों के साथ पढ़ेंगे। व्याकरण और तर्कशास्त्र का अध्ययन, जो व्याख्या के इन नियमों के आधार हैं, तभी व्यावहारिक है जब आप इसे व्यवहार से जोड़ सकें।

अध्याय ग्यारह

प्रस्ताव क्या है और क्यों?

- 1 -

व्यापारियों के बीच और किताबों की दुनिया में भी, न केवल समझौते करना बल्कि प्रस्ताव रखना भी आम बात है। खरीदार या विक्रेता के लिए प्रस्ताव का मतलब किसी प्रकार का प्रस्ताव, पेशकश या स्वीकृति होता है। ईमानदारी से किए गए लेन-देन में, जो व्यक्ति इस अर्थ में प्रस्ताव रखता है, वह किसी विशेष तरीके से कार्य करने के अपने इरादे की घोषणा कर रहा होता है। सफल बातचीत के लिए ईमानदारी से कहीं अधिक आवश्यक है। प्रस्ताव स्पष्ट और आकर्षक होना चाहिए। तभी व्यापारी समझौते पर पहुँच सकते हैं।

किसी पुस्तक में दिया गया कथन भी एक घोषणा ही होता है। यह किसी विषय पर लेखक के निर्णय की अभिव्यक्ति है। वह किसी ऐसी बात की पुष्टि करता है जिसे वह सत्य मानता है, या किसी ऐसी बात का खंडन करता है जिसे वह असत्य मानता है। वह किसी तथ्य को तथ्य के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार का कथन ज्ञान की घोषणा होता है, न कि इरादों की। लेखक अपने इरादों को शुरुआत में प्रस्तावना में बता सकता है। व्याख्यात्मक पुस्तक में, वह आमतौर पर हमें किसी विषय के बारे में जानकारी देने का वादा करता है। यह जानने के लिए कि क्या वह अपने वादे पूरे करता है, हमें उसके कथनों पर ध्यान देना होगा।

पढ़ने का क्रम कुछ हद तक काम के क्रम को उलट देता है। व्यापारी प्रस्ताव को समझने के बाद ही समझौता करते हैं। लेकिन पाठक को आमतौर पर लेखक के विचारों या निर्णयों को समझने से पहले ही उसे समझना पड़ता है। इसीलिए व्याख्या का पहला नियम शब्दों और पदों से संबंधित है, और दूसरा, जिसकी चर्चा हम आगे करने वाले हैं, वाक्यों और प्रस्तावों से संबंधित है।

व्याख्या का तीसरा नियम दूसरे नियम से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। लेखक तथ्यों या ज्ञान के मामलों में अपनी बात स्पष्ट रूप से कह सकता है। हम आमतौर पर इसी विश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं। लेकिन केवल ईमानदारी ही पर्याप्त नहीं है। जब तक हमारी रुचि केवल लेखक के व्यक्तित्व में न हो, हमें केवल उसके विचारों को जानकर संतुष्ट नहीं होना चाहिए। उसके कथन केवल राय की अभिव्यक्ति मात्र हैं, जब तक कि उनके पीछे कोई तर्क न हो। यदि हमारी रुचि पुस्तक के विषय में है, न कि केवल लेखक में, तो हम न केवल कथनों को जानना चाहते हैं, बल्कि उनके पीछे के कारणों को भी जानना चाहते हैं।

अतः तीसरा नियम सभी प्रकार के तर्कों से संबंधित है। तर्क-वितर्क के अनेक प्रकार होते हैं, अपनी बात को सिद्ध करने के अनेक तरीके होते हैं। कभी-कभी किसी बात को सत्य सिद्ध करना संभव होता है; कभी-कभी केवल संभाव्यता को ही सिद्ध किया जा सकता है। परन्तु प्रत्येक प्रकार का तर्क अनेक कथनों से मिलकर बनता है जो एक निश्चित तरीके से संबंधित होते हैं। यह इसलिए कहा गया है क्योंकि वह। यहाँ "क्योंकि" शब्द किसी कारण को दर्शाने का संकेत देता है।

तर्कों की उपस्थिति उन अन्य शब्दों द्वारा इंगित की जाती है जो कथनों को आपस में जोड़ते हैं, जैसे: यदि ऐसा है, तो वैसा होगा; या, चूंकि ऐसा है, इसलिए वैसा होगा; या, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ऐसा है। पिछले अध्यायों में, ऐसे क्रम आए थे। मैंने कहा था कि यदि चिंतन हमारे मन का उपयोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए है, और यदि हम अपने मन का उपयोग केवल दो तरीकों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए करते हैं, या तो शिक्षा प्राप्त करके या शोध करके, तो हमने कहा था कि हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि हमारा सारा चिंतन इन दो गतिविधियों में से किसी एक के दौरान होता है।

तर्क हमेशा कथनों का एक समूह होता है, जिनमें से कुछ कथन निष्कर्ष के आधार या कारण प्रदान करते हैं। इसलिए, एक तर्क को व्यक्त करने के लिए एक पैराग्राफ, या कम से कम वाक्यों का एक संग्रह आवश्यक होता है। तर्क के आधार या सिद्धांत हमेशा पहले नहीं बताए जाते, लेकिन वे निष्कर्ष का स्रोत होते हैं। यदि तर्क वैध है, तो निष्कर्ष आधारों से निकलता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि निष्कर्ष सत्य ही हो, क्योंकि इसे समर्थन देने वाले आधार असत्य हो सकते हैं, एक या सभी।

शायद आपने इन तीनों नियमों के क्रम के बारे में पहले ही कुछ देख लिया होगा।

हम शब्दों (और वाक्यांशों) से वाक्यों और वाक्यों या अनुच्छेदों के संग्रह तक जाकर, पदों से प्रस्तावों और फिर तर्कों तक पहुंचते हैं।

जब स्कूलों में व्याकरण पढ़ाया जाता था, तब हर कोई इन इकाइयों से परिचित था। एक स्कूली छात्र जानता था कि वाक्यों का एक क्रमबद्ध समूह मिलकर एक पैराग्राफ बनाता है।

पिछले दस वर्षों में कॉलेज के छात्रों के साथ मेरे अनुभव से मुझे संदेह होता है कि यह सरल ज्ञान अब भी आम बात है या नहीं। वे वाक्य और अनुच्छेद लिख या बोल नहीं पाते हैं, और इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा है कि क्या वे अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों में इन्हें पहचान भी पाते हैं।

आप यह भी देखेंगे कि अब हम सरल से जटिल इकाइयों की ओर बढ़ रहे हैं। किसी पुस्तक का सबसे छोटा महत्वपूर्ण तत्व, बेशक, एक शब्द होता है। यह कहना सत्य होगा, परन्तु पर्याप्त नहीं, कि पुस्तक शब्दों से बनी होती है। यह शब्दों के समूहों से भी बनी होती है, जिन्हें एक इकाई के रूप में लिया जाता है, और इसी प्रकार वाक्यों के समूहों से भी, जिन्हें एक इकाई के रूप में लिया जाता है। पाठक, जो निष्क्रिय नहीं बल्कि सक्रिय होता है, न केवल शब्दों पर, बल्कि वाक्यों और अनुच्छेदों पर भी ध्यान देता है। लेखक के शब्दों, कथनों और तर्कों को जानने का कोई और तरीका नहीं है। इस दूसरे या व्याख्यात्मक पठन की गति पहले या संरचनात्मक पठन की गति के विपरीत प्रतीत होती है। पहले पठन में हम पुस्तक को समग्र रूप से उसके प्रमुख भागों और फिर उनके अधीनस्थ विभाजनों की ओर बढ़े। जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, ये दोनों गतियाँ कहीं न कहीं मिलती हैं। पुस्तक के प्रमुख भागों और यहाँ तक कि उनके मुख्य विभाजनों में भी अनेक कथन और आमतौर पर अनेक तर्क होते हैं। परन्तु यदि आप पुस्तक को उसके भागों में विभाजित करते रहें, तो अंत में आपको कहना ही पड़ेगा: "इस भाग में निम्नलिखित बिंदु प्रस्तुत किए गए हैं।" अब इनमें से प्रत्येक बिंदु एक प्रस्ताव होने की संभावना है, और इनमें से कुछ को एक साथ लेने पर संभवतः एक तर्क बनता है।

इस प्रकार, जिन दो प्रक्रियाओं को हमने पहली और दूसरी रीडिंग कहा है, वे आपस में मिलती हैं।

पुस्तक को उसके भागों में बाँटकर आप कथनों और तर्कों तक पहुँचते हैं। आप यह देखकर तर्कों तक पहुँचते हैं कि वे कथनों और अंततः पदों से कैसे बने हैं। इन दो चरणों को पूरा करने के बाद, आप वास्तव में कह सकते हैं कि आप पुस्तक की विषयवस्तु को जानते हैं।

- 2 -

इस अध्याय में हम जिन नियमों पर चर्चा करने जा रहे हैं, उनके बारे में एक और बात ध्यान देने योग्य है। शब्दों और पदों से संबंधित नियम की तरह, यहाँ भी हम भाषा और विचार के संबंध पर विचार कर रहे हैं। वाक्य और अनुच्छेद व्याकरणिक इकाइयाँ हैं।

वे भाषा की इकाइयाँ हैं। प्रस्ताव और तर्क तार्किक इकाइयाँ हैं, या विचार और ज्ञान की इकाइयाँ हैं।

यदि आपको याद हो कि पिछले अध्याय में हमारी मुख्य समस्या क्या थी, तो आप यहाँ भी वैसी ही समस्या का सामना करने के लिए तैयार होंगे। क्योंकि भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का एक परिपूर्ण माध्यम नहीं है, क्योंकि एक शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं और दो या दो से अधिक शब्दों का एक ही अर्थ हो सकता है, हमने देखा कि लेखक की शब्दावली और उसके शब्दों के बीच संबंध कितना जटिल होता है। एक शब्द अनेक पदों का प्रतिनिधित्व कर सकता है, और एक पद का प्रतिनिधित्व अनेक शब्दों द्वारा किया जा सकता है।

गणितज्ञ एक अच्छी तरह से बने कोट पर लगे बटनों और बटनहोल के बीच के संबंध को पूर्ण एक-से-एक संबंध के रूप में वर्णित करते हैं। हर बटनहोल के लिए एक बटन होता है, और हर बटन के लिए एक छेद होता है। लेकिन असल बात यह है कि शब्द और पद एक-से-एक संबंध में नहीं होते। इन नियमों को लागू करने में सबसे बड़ी गलती यह मान लेना है कि भाषा और विचार या ज्ञान के तत्वों के बीच एक-से-एक संबंध होता है।

आइए, वाक्यों और कथनों के उदाहरण से इसे तुरंत समझ लेते हैं। पुस्तक का हर वाक्य कथन व्यक्त नहीं करता। उदाहरण के लिए, कुछ वाक्य प्रश्नवाचक होते हैं। वे उत्तरों के बजाय समस्याओं को बताते हैं। कथन प्रश्नों के उत्तर होते हैं। वे ज्ञान या राय की घोषणा होते हैं। इसीलिए हम ऐसे वाक्यों को कथनात्मक कहते हैं जो इन्हें व्यक्त करते हैं, और प्रश्न पूछने वाले वाक्यों को प्रश्नवाचक कहते हैं। अन्य वाक्य इच्छाओं या इरादों को व्यक्त करते हैं। वे हमें लेखक के उद्देश्य की कुछ जानकारी दे सकते हैं, लेकिन वे उस ज्ञान को व्यक्त नहीं करते जिसे लेखक समझाना चाहता है।

इसके अलावा, सभी घोषणात्मक वाक्यों को इस प्रकार नहीं पढ़ा जा सकता है कि प्रत्येक वाक्य एक ही कथन को व्यक्त करता हो। इसके कम से कम दो कारण हैं। पहला कारण यह है कि शब्द अस्पष्ट होते हैं और उनका प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जा सकता है। इसलिए, यदि शब्दों के अर्थ में बदलाव किया जाए तो एक ही वाक्य अलग-अलग कथनों को व्यक्त कर सकता है।

"पढ़ना सीखना है" यह वाक्य बेशक सरल है। लेकिन अगर मेरा मतलब एक जगह से है

"सीखना" का अर्थ है सूचना का अधिग्रहण, और दूसरे में मेरा तात्पर्य समझ के विकास से है। दोनों कथन एक जैसे नहीं हैं, क्योंकि शब्द भिन्न हैं। फिर भी वाक्य शाब्दिक रूप से समान है।

दूसरा कारण यह है कि सभी वाक्य उतने सरल नहीं होते जितना कि "पढ़ना सीखना है"। यदि आप पिछली पीढ़ी के हैं, तो आपको व्याकरण विद्यालय से सरल वाक्यों और जटिल या संयुक्त वाक्यों के बीच का अंतर याद होगा। जब शब्दों का प्रयोग स्पष्ट रूप से किया जाता है, तो एक सरल वाक्य आमतौर पर एक ही कथन को व्यक्त करता है। लेकिन भले ही शब्दों का प्रयोग स्पष्ट रूप से किया गया हो, एक संयुक्त वाक्य दो या दो से अधिक कथनों को व्यक्त करता है। एक संयुक्त वाक्य वास्तव में वाक्यों का एक संग्रह होता है, जो "और" या "यदि" जैसे शब्दों से जुड़ा होता है।

और "तब," या "न केवल" और "बल्कि भी।" आप शायद यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि एक लंबे संयुक्त वाक्य और एक छोटे पैराग्राफ के बीच अंतर करना मुश्किल हो सकता है। एक संयुक्त वाक्य तर्क के रूप में संबंधित कई प्रस्तावों को व्यक्त कर सकता है।

जटिल वाक्यों की व्याख्या करना सबसे कठिन होता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि संयुक्त वाक्य कई संबंधित कथनों को व्यक्त करते हैं। लेकिन एक जटिल वाक्य एक या अनेक कथनों को व्यक्त कर सकता है। आइए, मैं आपको अपनी बात समझाने के लिए मैकियावेली की रचना 'द प्रिंस' से एक रोचक वाक्य लेता हूँ: एक राजकुमार को इस प्रकार भय उत्पन्न करना चाहिए कि यदि वह प्रेम न पाए, तो घृणा से बच सके; क्योंकि वह घृणा न किए जाने पर भी भयभीत होना अच्छी तरह सहन कर सकता है, और घृणा तब तक बनी रहेगी जब तक वह अपने नागरिकों की संपत्ति और उनकी स्त्रियों से दूर रहता है।

व्याकरण की दृष्टि से यह एक ही वाक्य है, हालांकि यह संयुक्त और जटिल दोनों है। अर्धविराम और "क्योंकि" उस प्रमुख विराम को दर्शाते हैं जो वाक्य को संयुक्त बनाता है। पहला प्रस्ताव यह है कि एक राजकुमार को एक निश्चित तरीके से भय उत्पन्न करना चाहिए।

"क्योंकि" शब्द से शुरू करते हुए, हमारे पास एक जटिल वाक्य है। इसे इस प्रकार स्वतंत्र बनाया जा सकता है: "इसका कारण यह है कि वह सहन कर सकता है," इत्यादि। यह जटिल वाक्य कम से कम दो कथनों को व्यक्त करता है: (1) राजकुमार को एक निश्चित तरीके से भय उत्पन्न करने का कारण यह है कि जब तक उससे घृणा नहीं की जाती, तब तक वह भय सहन कर सकता है; (a) वह केवल अपने नागरिकों और उनकी महिलाओं की संपत्ति से परहेज करके ही घृणा से बच सकता है।

आप समझ सकते हैं कि एक लंबे, मिश्रित और जटिल वाक्य में निहित विभिन्न कथनों में अंतर करना क्यों महत्वपूर्ण है। मैकियावेली से सहमत या असहमत होने के लिए, आपको पहले यह समझना होगा कि वह क्या कहना चाह रहे हैं। लेकिन वह इस एक वाक्य में तीन बातें कह रहे हैं। आप उनमें से एक से असहमत हो सकते हैं और बाकी से सहमत हो सकते हैं। आप सोच सकते हैं कि मैकियावेली किसी भी आधार पर राजकुमार को आतंकवाद की सलाह देने में गलत हैं; लेकिन आप उनकी इस बात को उनकी चतुराई से स्वीकार कर सकते हैं कि राजकुमार को भय के साथ-साथ घृणा भी नहीं जगानी चाहिए, और आप इस बात से भी सहमत हो सकते हैं कि उनकी संपत्ति और महिलाओं से दूर रहना घृणा से बचने की एक अनिवार्य शर्त है। जब तक आप एक जटिल वाक्य में अलग-अलग कथनों को नहीं पहचानते, तब तक आप लेखक के कथन का सटीक मूल्यांकन नहीं कर सकते।

वकीलों को यह बात अच्छी तरह पता होती है। उन्हें वाक्यों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना पड़ता है ताकि वे समझ सकें कि वादी क्या आरोप लगा रहा है और प्रतिवादी क्या खंडन कर रहा है। एक वाक्य, "जॉन डो ने 24 मार्च को पट्टा पर हस्ताक्षर किए," देखने में तो सरल लगता है, लेकिन फिर भी इसमें कई बातें छिपी हैं, जिनमें से एक सच हो सकती है और दूसरी झूठ। हो सकता है जॉन डो ने पट्टा पर हस्ताक्षर किए हों, लेकिन 24 मार्च को नहीं, और यह

तथ्य महत्वपूर्ण हो सकता है। संक्षेप में, व्याकरण की दृष्टि से सरल वाक्य भी कभी-कभी दो या दो से अधिक कथनों को व्यक्त कर देता है।

- 3 -

मैंने वाक्यों और कथनों के बीच अंतर को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त शब्द कह दिए हैं। वे एक दूसरे से सीधे तौर पर संबंधित नहीं हैं। एक ही वाक्य अस्पष्टता या जटिलता के माध्यम से कई कथनों को व्यक्त कर सकता है, और एक ही कथन को दो या दो से अधिक भिन्न वाक्यों द्वारा भी व्यक्त किया जा सकता है। यदि आप मेरे द्वारा पर्यायवाची रूप से प्रयुक्त शब्दों और वाक्यांशों के माध्यम से मेरी बात को समझेंगे, तो आप जान जाएंगे कि जब मैं कहता हूं, "सिखाना और सीखना सहसंबंधी क्रियाएं हैं," तो मेरा अर्थ एक ही है।

"संचार शुरू करना और प्राप्त करना संबंधित प्रक्रियाएं हैं।"

मैं व्याकरण और तर्क से जुड़े बिंदुओं को समझाना बंद कर रहा हूँ और नियमों की ओर बढ़ रहा हूँ। इस अध्याय में, पिछले अध्याय की तरह ही, मुश्किल यही है कि समझाना बंद कर दिया जाए। शायद बेहतर होगा कि मैं मान लूँ कि जिस स्कूल में आप पढ़े हैं, वहाँ कुछ व्याकरण पढ़ाया गया होगा। अगर पढ़ाया गया था, तो अब आप समझ सकते हैं कि वाक्य रचना, वाक्यों का विश्लेषण और आरेखण करने का सारा झंझट पुराने ज़माने के शिक्षकों द्वारा युवाओं का मनोबल तोड़ने के लिए बनाई गई एक निरर्थक रस्म क्यों नहीं थी।

यह सब लेखन और पठन कौशल विकसित करने में सहायक होता है।

वास्तव में, मुझे कहना चाहिए कि यह लगभग अपरिहार्य है। जब तक आप भाषा की सतह के नीचे नहीं उतर सकते, तब तक आप शब्दों, प्रस्तावों और तर्कों—विचार के तत्वों—से निपटना शुरू नहीं कर सकते। जब तक शब्द, वाक्य और अनुच्छेद अस्पष्ट और विश्लेषणरहित हैं, तब तक वे संचार का माध्यम नहीं, बल्कि बाधा हैं।

आप शब्द तो पढ़ेंगे लेकिन ज्ञान प्राप्त नहीं करेंगे।

ये रहे नियम। पहला नियम, जैसा कि आपको पिछले अध्याय से याद होगा, यह है: महत्वपूर्ण शब्दों को खोजें और उनका अर्थ समझें। दूसरा नियम यह है: पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों को चिह्नित करें और उनमें निहित कथनों का पता लगाएं। तीसरा नियम यह है: वाक्यों के संबंध में बुनियादी तर्कों को खोजकर उन्हें खोजें या उनका निर्माण करें। आप आगे देखेंगे कि मैंने इस नियम को बनाते समय "पैराग्राफ" शब्द का प्रयोग क्यों नहीं किया।

आपको दूसरे और तीसरे नियम से पहले ही परिचित कराया जा चुका है। शुरुआती अध्यायों में, हमने "पढ़ना ही सीखना है" वाक्य को महत्वपूर्ण बताया था, क्योंकि यह इस चर्चा के मूल सिद्धांत को व्यक्त करता है। हमने कई प्रकार के तर्कों पर भी ध्यान दिया: एक प्रमाण कि महान पुस्तकें सबसे अधिक पठनीय होती हैं, और साक्ष्यों का संग्रह यह दर्शाता है कि स्कूल पढ़ने-लिखने की कला सिखाने में विफल रहे हैं।

हैं। हो सकता है कि आप उनके कथनों को न समझें। हो सकता है कि आप उनके तर्कों को न समझ पाएँ।

लेकिन, अगर आपके दिमाग में आंखें हैं, तो आप प्रमाणों के कथन के लिए महत्वपूर्ण वाक्यों या वाक्यों के समूह को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। वह सब आपके लिए पहले से ही किया हुआ है।

सेंट थॉमस एक्विनास की सुम्मा थियोलॉजिका एक और ऐसी पुस्तक है जिसकी व्याख्या शैली में मुख्य वाक्यों को प्रमुखता दी गई है। यह प्रश्न उठाकर आगे बढ़ती है।

प्रत्येक खंड की शुरुआत एक प्रश्न से होती है। सेंट थॉमस जिस उत्तर का बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं, उसके कई संकेत मिलते हैं। उत्तर के विरोध में कई आपत्तियां भी दी गई हैं। जहां से सेंट थॉमस अपना तर्क प्रस्तुत करना शुरू करते हैं, वहां "मैं इसका उत्तर देता हूं" लिखा होता है। ऐसी पुस्तक में महत्वपूर्ण वाक्यों, कारणों और निष्कर्षों को व्यक्त करने वाले वाक्यों को न ढूंढ पाने का कोई बहाना नहीं है, फिर भी मुझे यह कहना होगा कि जो छात्र हर चीज को समान रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं, उनके लिए यह सब कुछ धुंधला सा हो जाता है। इसका आमतौर पर मतलब यह होता है कि सब कुछ समान रूप से महत्वहीन है।

- 4 -

उन पुस्तकों को छोड़कर जिनकी शैली या प्रारूप पाठक द्वारा व्याख्या किए जाने वाले मुख्य बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करता है, वाक्यों को पहचानना एक ऐसा काम है जो पाठक को स्वयं करना होता है। वह कई चीजें कर सकता है। मैंने पहले ही एक का उल्लेख किया है। यदि वह उन अंशों के बीच अंतर को समझने में सक्षम है जिन्हें वह आसानी से समझ सकता है और जिन्हें वह नहीं समझ सकता, तो वह संभवतः उन वाक्यों को ढूंढ पाएगा जिनमें अर्थ का मुख्य भार निहित है। शायद अब आप यह समझने लगे हैं कि पढ़ने में उलझन और उसे समझना कितना आवश्यक है। जिज्ञासा ही पुस्तकों और प्रकृति से सीखने में ज्ञान का आरंभ है। यदि आप किसी अंश के अर्थ के बारे में स्वयं से कोई प्रश्न नहीं पूछते हैं, तो आप पुस्तक से ऐसी कोई अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की अपेक्षा नहीं कर सकते जो आपके पास पहले से मौजूद न हो।

महत्वपूर्ण वाक्यों को समझने का एक और सुराग उन शब्दों में मिलता है जिनसे वे वाक्य बने हैं। यदि आपने महत्वपूर्ण शब्दों को चिह्नित कर लिया है, तो वे आपको उन वाक्यों तक ले जाएंगे जिन पर और ध्यान देने की आवश्यकता है। इस प्रकार व्याख्यात्मक पठन का पहला चरण दूसरे चरण की तैयारी कराता है। लेकिन इसका उल्टा भी हो सकता है। ऐसा हो सकता है कि आप किसी वाक्य के अर्थ को समझने में उलझन में पड़ने के बाद ही कुछ शब्दों को चिह्नित करें। मैंने इन नियमों को एक निश्चित क्रम में बताया है, इसका यह अर्थ नहीं है कि आपको इनका पालन उसी क्रम में करना है। पद मिलकर कथन बनाते हैं। कथनों में पद होते हैं। यदि आप उन पदों को जानते हैं जिन्हें शब्द व्यक्त करते हैं, तो आपने वाक्य में निहित कथन को समझ लिया है। यदि आप किसी वाक्य द्वारा व्यक्त किए गए कथन को समझते हैं, तो आप उन पदों तक भी पहुँच गए हैं।

इससे मुख्य प्रस्तावों के स्थान के बारे में एक और सुराग मिलता है। वे पुस्तक के मुख्य तर्कों से संबंधित होने चाहिए। वे या तो आधार वाक्य या निष्कर्ष होने चाहिए।

इसलिए, यदि आप उन वाक्यों का पता लगा सकते हैं जो एक क्रम बनाते हुए प्रतीत होते हैं, एक ऐसा क्रम जिसमें एक शुरुआत और एक अंत होता है, तो संभवतः आपने उन वाक्यों को पहचान लिया है जो महत्वपूर्ण हैं।

मैंने एक ऐसे क्रम की बात की जिसमें शुरुआत और अंत होता है। हर तर्क जिसे मनुष्य शब्दों में व्यक्त कर सकता है, उसे व्यक्त करने में समय लगता है, एक वाक्य की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट रूप से। आप एक वाक्य एक ही सांस में बोल सकते हैं, लेकिन तर्क में विराम होते हैं। आपको पहले एक बात कहनी होती है, फिर दूसरी, और फिर तीसरी। एक तर्क कहीं से शुरू होता है, कहीं जाता है, और अंत में कहीं पहुंचता है। यह विचारों का प्रवाह है। यह वास्तव में निष्कर्ष से शुरू हो सकता है और फिर उसके कारणों को प्रस्तुत कर सकता है। या यह प्रमाणों और कारणों से शुरू हो सकता है और आपको उससे निकलने वाले निष्कर्ष तक पहुंचा सकता है।

बेशक, यहाँ भी और अन्य जगहों पर भी, संकेत तब तक काम नहीं करेगा जब तक आप उसका उपयोग करना नहीं जानते। आपको तर्क को पहचानना होगा। शिक्षण में कुछ निराशाजनक अनुभवों के बावजूद, मैं अब भी इस राय पर कायम हूँ कि मानव मन तर्कों के प्रति उतना ही स्वाभाविक रूप से संवेदनशील होता है जितना कि आँख रंगों के प्रति। आँख तब तक नहीं देख पाएगी जब तक वह खुली न रहे, और मन तब तक तर्क को नहीं समझ पाएगा जब तक वह जागृत न हो। इस संबंध में छात्रों से अपनी निराशा का कारण मैं यह कहकर समझाता हूँ कि वे किताब पढ़ते समय या कक्षा में चल रही बातों को सुनते समय ज्यादातर सोए रहते हैं।

कुछ साल पहले, श्री हचिन्स और मैंने छात्रों के एक नए समूह के साथ कुछ किताबें पढ़ना शुरू किया। उन्हें पढ़ने का लगभग कोई प्रशिक्षण नहीं था और जब हम उनसे पहली बार मिले थे, तब उन्होंने बहुत कम पढ़ा था। हमने जो पहली किताबें पढ़ीं, उनमें से एक लुक्रेटियस की 'द नेचर ऑफ थिंग्स' थी। हमें लगा कि यह उनके लिए रुचिकर होगी। हमारे अधिकांश छात्र शुरू से ही अति भौतिकवादी हैं। और लुक्रेटियस की यह रचना अति भौतिकवादी दृष्टिकोण का एक सशक्त प्रतिपादन है। यह प्राचीन यूनानी परमाणुवादियों के दृष्टिकोण का सबसे विस्तृत विवरण है जो हमारे पास उपलब्ध है।

क्योंकि वे पढ़ने में शुरुआती दौर में थे (हालाँकि उनमें से ज़्यादातर कॉलेज के जूनियर और सीनियर छात्र थे), हमने किताब को धीरे-धीरे पढ़ा, लगभग तीस पन्ने एक बार में। फिर भी, उन्हें यह समझने में कठिनाई हो रही थी कि किन शब्दों को चिह्नित करना है, किन वाक्यों को रेखांकित करना है। लुक्रेटियस की कही हर बात उन्हें समान महत्व की लग रही थी। श्री हचिन्स ने फैसला किया कि उनके लिए यह एक अच्छा अभ्यास होगा कि वे अगले भाग में लुक्रेटियस द्वारा निकाले गए या सिद्ध करने का प्रयास किए गए निष्कर्षों को लिखें। उन्होंने कहा, "हमें यह मत बताइए कि लुक्रेटियस देवताओं या महिलाओं के

बारे में क्या सोचते हैं, या आप लुक्रेटियस के बारे में क्या सोचते हैं। हमें तर्क का सार चाहिए, और इसका मतलब है कि पहले निष्कर्ष निकालना।"

उन्हें जिस भाग को पढ़ना था, उसमें मुख्य तर्क यह दिखाने का प्रयास था कि परमाणु केवल आकार, आकृति, भार और गति में भिन्न होते हैं। उनमें कोई गुण नहीं होते, न रंग, न गंध, न बनावट। हम जिन गुणों का अनुभव करते हैं, वे पूरी तरह से व्यक्तिपरक होते हैं—वस्तुओं में नहीं, बल्कि हममें होते हैं।

निष्कर्षों को कुछ ही कथनों में लिखा जा सकता था। लेकिन उन्होंने हर तरह के कथन शामिल कर दिए। हर बात से निष्कर्ष निकालने में उनकी असमर्थता तर्कशास्त्र के प्रशिक्षण की कमी के कारण नहीं थी। एक बार जब उन्हें कोई तर्क प्रस्तुत किया जाता था, तो उसे समझने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती थी। लेकिन उन्हें वह तर्क पाठ से निकालकर देना पड़ता था। वे अभी इतने अच्छे पाठक नहीं थे कि स्वयं ऐसा कर सकें।

जब श्री हचिन्स ने यह काम संभाला, तो उन्होंने देखा कि बोर्ड पर लिखे कथन किस प्रकार एक तर्क का निर्माण करते हैं। वे आधार वाक्यों—कारणों या प्रमाणों—और उनसे समर्थित निष्कर्षों के बीच अंतर देख सकते थे। संक्षेप में, उन्हें पढ़ना सिखाना था, तर्क करना नहीं।

मैं फिर से दोहराता हूं, हमें उन्हें तर्कशास्त्र सिखाने या तर्क क्या होता है, इसे विस्तार से समझाने की जरूरत नहीं पड़ी।

बोर्ड पर कुछ सरल वाक्यों में लिखे जाने के तुरंत बाद वे इसे पहचान सकते थे।

लेकिन वे किसी पुस्तक में तर्क नहीं ढूंढ पाते थे क्योंकि उन्होंने अभी तक सक्रिय रूप से पढ़ना, महत्वपूर्ण वाक्यों को बाकी वाक्यों से अलग करना और लेखक द्वारा स्थापित संबंधों को समझना नहीं सीखा था। लुक्रेटियस को अखबार की तरह पढ़ते हुए, वे स्वाभाविक रूप से इस तरह का भेद नहीं कर पाते थे।

- 5 -

मान लीजिए कि आपने मुख्य वाक्य ढूंढ लिए हैं। नियम के अनुसार एक और चरण आवश्यक है। आपको प्रत्येक वाक्य में निहित कथन या कथनों का पता लगाना होगा। इसका सीधा सा अर्थ है कि आपको वाक्य का अर्थ समझना होगा। आप किसी शब्द के विशेष प्रयोग में उसके अर्थ का पता लगाकर शब्दों का पता लगाते हैं। इसी प्रकार, आप वाक्य बनाने वाले सभी शब्दों, विशेषकर उसके मुख्य शब्दों की व्याख्या करके कथनों का पता लगाते हैं।

ज़ाहिर है, आप यह तभी कर सकते हैं जब आपको व्याकरण का थोड़ा-बहुत ज्ञान हो। आपको विशेषण और क्रियाविशेषण की भूमिका, संज्ञाओं के संबंध में क्रियाओं का कार्य, संशोधक शब्द और उपवाक्य उनके अर्थ को कैसे सीमित या विस्तारित करते हैं, आदि का ज्ञान होना चाहिए। आपको वाक्य रचना के नियमों के अनुसार वाक्य का विश्लेषण करने में सक्षम होना चाहिए। मैंने पहले कहा था कि मैं मानकर चल रहा हूँ कि आपको व्याकरण का इतना ज्ञान है। मुझे विश्वास नहीं हो

रहा कि आपको नहीं है, हालाँकि पढ़ने की बुनियादी कला का अभ्यास न होने के कारण शायद आपका ज्ञान थोड़ा कमज़ोर हो गया हो।

शब्दों द्वारा व्यक्त किए गए भावों को खोजने और वाक्यों में निहित कथनों को खोजने में केवल दो अंतर हैं। पहला यह कि दूसरे मामले में आप एक व्यापक संदर्भ का उपयोग करते हैं। आप सभी संबंधित वाक्यों को उस वाक्य पर लागू करते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे आप किसी विशेष शब्द की व्याख्या करने के लिए संबंधित शब्दों का उपयोग करते हैं। दोनों ही मामलों में, आप जो समझते हैं उससे शुरू करके धीरे-धीरे उस बात को स्पष्ट करते हैं जो पहले अपेक्षाकृत अस्पष्ट लगती है।

दूसरा अंतर इस तथ्य में निहित है कि जटिल वाक्य आमतौर पर दो या दो से अधिक कथनों को व्यक्त करते हैं। किसी महत्वपूर्ण वाक्य की व्याख्या तब तक पूर्ण नहीं होती जब तक आप उसमें निहित सभी विभिन्न, यद्यपि संभवतः संबंधित, कथनों को अलग नहीं कर लेते। ऐसा करने का कौशल आसानी से विकसित किया जा सकता है। इस पुस्तक में दिए गए कुछ जटिल वाक्यों को लें और उनमें से प्रत्येक कथन को अपने शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास करें।

इन्हें क्रमांकित करें और इनके बीच संबंध स्थापित करें।

"अपने शब्दों में बताइए!" यह वाक्य में निहित कथन को समझने का सबसे अच्छा तरीका है। यदि आपसे किसी विशेष वाक्य के माध्यम से लेखक के आशय को समझाने के लिए कहा जाए और आप केवल उनके शब्दों को थोड़े-बहुत बदलाव के साथ दोहरा सकें, तो समझ लीजिए कि आप उनका अर्थ नहीं समझ पा रहे हैं। आदर्श रूप से, आपको वही बात बिल्कुल अलग शब्दों में कहनी आनी चाहिए। बेशक, आदर्श स्थिति को कुछ हद तक प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन यदि आप लेखक के शब्दों से बिल्कुल भी अलग नहीं हो पा रहे हैं, तो यह दर्शाता है कि उनसे आप तक केवल शब्द ही पहुंचे हैं, विचार या ज्ञान नहीं। आप उनके शब्द जानते हैं, उनका मन नहीं। वे ज्ञान संप्रेषित करने का प्रयास कर रहे थे, और आपको केवल शब्द ही प्राप्त हुए।

विदेशी भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद करने की प्रक्रिया मेरे द्वारा सुझाए गए परीक्षण के लिए प्रासंगिक है। यदि आप किसी फ्रांसीसी वाक्य को अंग्रेजी वाक्य में व्यक्त नहीं कर सकते, तो आप समझ जाइए कि आप फ्रांसीसी वाक्य का अर्थ नहीं समझते। ऐसा अनुवाद पूरी तरह से शाब्दिक स्तर पर होता है, क्योंकि भले ही आपने एक सटीक अंग्रेजी अनुवाद बना लिया हो, फिर भी आप यह नहीं समझ सकते कि फ्रांसीसी वाक्य के लेखक का क्या अर्थ था। मैंने ऐसे कई अनुवाद पढ़े हैं जो इस तरह की अज्ञानता को उजागर करते हैं।

एक अंग्रेज़ी वाक्य का दूसरे अंग्रेज़ी वाक्य में अनुवाद करना मात्र शाब्दिक नहीं होता। नया वाक्य मूल वाक्य की हूबहू नकल नहीं होता। यदि अनुवाद सटीक है, तो वह केवल मूल भाव को ही दर्शाता है। इसीलिए, यदि आप यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आपने मूल विचार को सही ढंग से समझा है, न कि केवल शब्दों को आत्मसात किया है, तो ऐसे अनुवाद करना आपके लिए सबसे अच्छा परीक्षण है। मैंने इसे अनगिनत बार छात्रों पर आजमाया है। यह समझने की बनावटीपन को हमेशा उजागर करता है। जो छात्र कहता है कि वह लेखक का अर्थ

समझता है, लेकिन केवल लेखक के वाक्य को दोहराकर यह साबित कर सकता है कि वह समझता है, वह लेखक के मूल भाव को दूसरे शब्दों में भी न पहचान पाएगा।

लेखक स्वयं लेखन के दौरान एक ही कथन को अलग-अलग शब्दों में व्यक्त कर सकता है। जो पाठक शब्दों के अंतर्निहित अर्थ को नहीं समझ पाता, वह संभवतः समान वाक्यों को अलग-अलग कथनों के रूप में समझेगा। कल्पना कीजिए एक ऐसे व्यक्ति की जिसे यह नहीं पता कि "24-2== 4" और "4-2=2" एक ही अंकगणितीय संबंध के लिए अलग-अलग संकेत हैं—यानी चार, दो का दुगुना है या दो, चार का आधा है।

आपको यही निष्कर्ष निकालना होगा कि उस व्यक्ति को समीकरण समझ में नहीं आया।

यही निष्कर्ष आप पर या किसी अन्य व्यक्ति पर भी लागू होता है जो यह नहीं बता सकता कि कब एक ही प्रस्ताव के समतुल्य कथन दिए जा रहे हैं, या जो स्वयं एक समतुल्य कथन प्रस्तुत नहीं कर सकता जब वह दावा करता है कि वह एक वाक्य में निहित प्रस्ताव को समझता है।

ये टिप्पणियाँ एक ही विषय पर लिखी गई दो पुस्तकों को पढ़ने की समस्या से संबंधित हैं। अक्सर अलग-अलग लेखक एक ही बात को अलग-अलग शब्दों में कहते हैं, या लगभग एक जैसे शब्दों का प्रयोग करके अलग-अलग बातें कहते हैं। जो पाठक भाषा के अंतर्निहित अर्थों और कथनों को नहीं समझ पाता, वह कभी भी इन संबंधित रचनाओं की तुलना नहीं कर पाएगा। शाब्दिक अंतरों के कारण, वह लेखकों को असहमत समझ सकता है, या उनके कथनों में शाब्दिक समानता के कारण उनके वास्तविक अंतरों को अनदेखा कर सकता है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि जो व्यक्ति दो संबंधित पुस्तकों को विवेकपूर्ण ढंग से नहीं पढ़ सकता, वह उनमें से किसी को भी अकेले नहीं पढ़ सकता।

आपने जो वाक्य पढ़ा है, उसमें निहित कथन को समझने का एक और तरीका है। क्या आप अपने किसी ऐसे अनुभव का उल्लेख कर सकते हैं जो उस कथन से संबंधित हो या जिससे वह कथन किसी भी तरह से प्रासंगिक हो? क्या आप उस सामान्य सत्य को किसी विशेष उदाहरण से सिद्ध कर सकते हैं? किसी संभावित स्थिति की कल्पना करना अक्सर वास्तविक स्थिति को बताने के बराबर होता है। यदि आप कल्पना के माध्यम से या वास्तविक अनुभवों के संदर्भ से उस कथन को उदाहरण देकर या स्पष्ट करके सिद्ध नहीं कर सकते, तो आपको यह संदेह होना चाहिए कि आप वह बात नहीं समझ पा रहे हैं जो कही जा रही है।

सभी प्रस्ताव इस कसौटी पर समान रूप से खरे नहीं उतरते। कुछ वैज्ञानिक प्रस्तावों को पूरी तरह समझने के लिए प्रयोगशाला में किए गए विशेष अनुभव की आवश्यकता हो सकती है। वैज्ञानिक पुस्तकों को पढ़ने की चर्चा में हम इस बिंदु पर बाद में फिर से विचार करेंगे। लेकिन यहाँ मुख्य बात स्पष्ट है। प्रस्ताव शून्य में अस्तित्व में नहीं होते। वे उस दुनिया से संबंधित होते हैं जिसमें हम रहते हैं। जब तक आप उन वास्तविक या संभावित तथ्यों से परिचित नहीं हो जाते जिनसे प्रस्ताव संबंधित है या किसी न किसी रूप में प्रासंगिक है, तब तक आप शब्दों से खेल रहे हैं, न कि विचार और ज्ञान से।

चलिए, मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। तत्वमीमांसा का एक मूलभूत सिद्धांत इन शब्दों में व्यक्त किया जाता है: "वास्तविकता के सिवा कुछ भी क्रियाशील नहीं होता।" कई छात्रों ने बड़ी संतुष्टि और ज्ञान के भाव से ये शब्द दोहराए हैं। उन्हें लगता था कि इतने सटीक शब्दों में दोहराकर वे मेरे और लेखक के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। लेकिन उनका यह दिखावा स्पष्ट था, इसलिए मैं पहले उनसे इस सिद्धांत को दूसरे शब्दों में बताने को कहता था।

वे शायद ही कभी यह कह पाते थे कि यदि कोई चीज अस्तित्व में नहीं है, तो वह कुछ भी नहीं कर सकती। फिर भी यह एक स्पष्ट अनुवाद है—कम से कम उन लोगों के लिए तो स्पष्ट है जो मूल वाक्य में निहित कथन को समझते हैं।

अनुवाद न मिलने पर, मैं उस प्रस्ताव का उदाहरण मांगूंगा। यदि उनमें से कोई मुझे यह बताए कि लोग मात्र संभव चीज़ों से नहीं भागते —

अगर बारिश की आशंका के चलते बेसबॉल मैच स्थगित नहीं किया जाता है, तो मैं तुरंत समझ जाऊंगा कि प्रस्ताव को समझ लिया गया है।

शब्दों के दुरुपयोग को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि शब्दों का प्रयोग उनके भावों और अनुभवों को ध्यान में रखे बिना किया जाता है। यह शब्दों के साथ खिलवाड़ है। जैसा कि मैंने अभी सुझाए गए दो परीक्षणों से स्पष्ट है, शब्दों का दुरुपयोग उन लोगों का सबसे बड़ा दोष है जो व्याख्यात्मक पठन में विफल रहते हैं। ऐसे पाठक शब्दों से आगे नहीं बढ़ पाते। वे जो पढ़ते हैं उसे एक शाब्दिक स्मृति के रूप में धारण कर लेते हैं जिसे वे निरर्थक रूप से दोहरा सकते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि प्रगतिशील शिक्षाविदों द्वारा उदार कलाओं पर लगाए जाने वाले आरोपों में से एक यह है कि वे शब्दों के दुरुपयोग की ओर प्रवृत्त होती हैं, जबकि तथ्य स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि प्रगतिशील शिक्षा द्वारा तीन अंकगणित (रीडिंग, राइटिंग और अरिथमेटिक) की उपेक्षा ही वास्तव में ऐसा करती है। व्याकरण और तर्कशास्त्र में प्रशिक्षित न होने वालों की पठन विफलता—यह दुष्चक्र—यह दर्शाती है कि इस प्रकार के अनुशासन का अभाव शब्दों पर महारत हासिल करने के बजाय उनकी गुलामी का कारण बनता है।

- 6 -

हमने प्रस्तावों पर पर्याप्त समय व्यतीत कर लिया है। अब हम तीसरे नियम की ओर बढ़ते हैं, जिसके अनुसार पाठक को वाक्यों के संग्रह से निपटना होगा। मैंने पहले कहा था कि इस तीसरे नियम को इस प्रकार सूत्रबद्ध न करने का एक कारण है कि पाठक को सबसे महत्वपूर्ण अनुच्छेदों को खोजना चाहिए। कारण यह है कि लेखकों के बीच अनुच्छेदों की संरचना को लेकर कोई निश्चित नियम नहीं हैं। मोंटेग्न और लॉक जैसे कुछ महान लेखक अत्यंत लंबे अनुच्छेद लिखते हैं;

मैकियावेली और हॉब्स जैसे अन्य लेखक अपेक्षाकृत छोटे पैराग्राफ लिखते हैं। हाल के समय में, अखबारों और पत्रिकाओं की शैली के प्रभाव में, अधिकांश लेखक अपने पैराग्राफ को संक्षिप्त और पढ़ने में आसान बनाने के लिए छोटा कर देते हैं। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि इस पुस्तक को लिखते समय मैंने

अक्सर एक पैराग्राफ को दो पैराग्राफ में बदल दिया है, क्योंकि मुझे बताया गया है कि अधिकांश पाठक छोटे पैराग्राफ पसंद करते हैं। उदाहरण के लिए, यह पैराग्राफ शायद बहुत लंबा है। अगर मैं अपने पाठकों को खुश करना चाहता, तो मैं "कुछ महान लेखक" शब्दों से एक नया पैराग्राफ शुरू कर सकता था।

यह महज़ लंबाई का मामला नहीं है। यहाँ जो बात पेचीदा है, वह भाषा और विचार के बीच के संबंध से जुड़ी है। तीसरा नियम जिस तार्किक इकाई की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है, वह है तर्क—प्रस्तावों का एक क्रम, जिनमें से कुछ दूसरे के लिए कारण बताते हैं। यह तार्किक इकाई लेखन की किसी भी पहचानी जाने वाली इकाई से विशिष्ट रूप से संबंधित नहीं है, जैसे कि शब्द, वाक्यांशों से और प्रस्ताव वाक्यों से संबंधित होते हैं। जैसा कि हमने देखा है, एक तर्क को एक जटिल वाक्य में व्यक्त किया जा सकता है। या इसे कई वाक्यों में व्यक्त किया जा सकता है जो केवल एक पैराग्राफ का हिस्सा हों। कभी-कभी एक तर्क एक पैराग्राफ के साथ मेल खाता है, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि एक तर्क कई पैराग्राफों में फैला हो।

एक और मुश्किल है। किसी भी किताब में कई ऐसे पैराग्राफ होते हैं जो किसी तर्क को व्यक्त नहीं करते—शायद उसका एक हिस्सा भी नहीं। इनमें ऐसे वाक्यों का संग्रह हो सकता है जो सबूतों का विवरण देते हैं या बताते हैं कि सबूत कैसे जुटाए गए हैं। जैसे कुछ वाक्य गौण महत्व के होते हैं, क्योंकि वे केवल विषयांतर या गौण टिप्पणी होते हैं, वैसे ही इस प्रकार के पैराग्राफ भी हो सकते हैं।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, मैं निम्नलिखित नियम सुझाता हूँ: यदि संभव हो तो पुस्तक में उन अनुच्छेदों को ढूँढ़ें जिनमें उसके महत्वपूर्ण तर्क बताए गए हों; लेकिन यदि तर्क इस प्रकार व्यक्त नहीं किए गए हैं, तो आपका कार्य है उन्हें बनाना। इसके लिए, इस अनुच्छेद से एक वाक्य लें और उस अनुच्छेद से एक वाक्य लेकर, इस प्रकार आगे बढ़ें जब तक कि आपको उन वाक्यों का क्रम न मिल जाए जो तर्क के मूल प्रस्तावों को बताते हों।

मुख्य वाक्यों का पता लगाने के बाद, पैराग्राफ बनाना अपेक्षाकृत आसान हो जाता है। इसके कई तरीके हैं। आप एक पैड पर उन कथनों को लिख सकते हैं जो मिलकर एक तर्क बनाते हैं। या आप हाशिये में एक संख्या लिख सकते हैं जो उन वाक्यों के स्थान को दर्शाती है जिन्हें क्रम में जोड़ना है।

अपने तर्कों को स्पष्ट करने के मामले में लेखक पाठकों की कमोबेश मदद करते हैं। अच्छे लेखक अपने विचारों को छिपाने के बजाय प्रकट करने का प्रयास करते हैं। फिर भी, सभी अच्छे लेखक एक ही तरीके से ऐसा नहीं करते। कुछ लेखक, जैसे यूक्लिड, गैलीलियो, न्यूटन (जो ज्यामितीय या गणितीय शैली में लिखते हैं), एक ही अनुच्छेद को तर्कपूर्ण इकाई बनाने के आदर्श के करीब पहुंचते हैं। यूक्लिड को छोड़कर, लगभग कोई भी ऐसा लेखक नहीं है जो हर अनुच्छेद को तर्कपूर्ण बनाता हो। विज्ञान के गैर-गणितीय क्षेत्रों में अधिकांश लेखन शैली में एक ही अनुच्छेद में दो या दो से अधिक तर्क प्रस्तुत करने या एक तर्क को कई अनुच्छेदों में फैलाने की प्रवृत्ति होती है।

जैसे-जैसे पुस्तक की संरचना ढीली होती जाती है, वैसे-वैसे उसके अनुच्छेद बिखरे हुए होते जाते हैं। किसी एक तर्क को व्यक्त करने वाले वाक्यों को खोजने के लिए अक्सर आपको अध्याय के सभी अनुच्छेदों को खंगालना पड़ता है। मैंने कुछ ऐसी पुस्तकें पढ़ी हैं जिनमें खोज व्यर्थ ही होती है, और कुछ ऐसी भी हैं जो खोज को प्रोत्साहित नहीं करतीं।

एक अच्छी किताब आमतौर पर अपने तर्कों को विकसित करते समय उनका सारांश प्रस्तुत करती है। यदि लेखक किसी अध्याय के अंत में, या किसी विस्तृत खंड के अंत में, अपने तर्कों का सारांश प्रस्तुत करता है, तो आपको पिछले पृष्ठों को पलटकर सारांश में संकलित सामग्री को आसानी से ढूंढ लेना चाहिए। 'द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' में, डार्विन ने अपने संपूर्ण तर्क का सारांश अंतिम अध्याय में प्रस्तुत किया है, जिसका शीर्षक है "पुनरावलोकन और निष्कर्ष"। पुस्तक को पूरा पढ़ने वाले पाठक को यह सहायता अवश्य मिलनी चाहिए। जिसने इसे पूरा नहीं पढ़ा है, वह इसका उपयोग नहीं कर सकता।

एक अच्छे और बुरे लेखक के बीच एक और अंतर तर्क के कुछ चरणों को छोड़ देने में होता है। कभी-कभी इन्हें छोड़ने से कोई नुकसान या असुविधा नहीं होती, क्योंकि छोड़े गए कथनों को पाठक अपने सामान्य ज्ञान से समझ सकते हैं। लेकिन कभी-कभी इन्हें छोड़ना भ्रामक होता है, और यहाँ तक कि जानबूझकर गुमराह करने का प्रयास भी हो सकता है। वक्ता या प्रचारक की सबसे आम चालों में से एक है कुछ ऐसी बातों को अनकहा छोड़ देना, जो तर्क के लिए अत्यंत प्रासंगिक होती हैं, लेकिन जिन्हें स्पष्ट रूप से बताने पर चुनौती दी जा सकती है। यद्यपि हम एक ईमानदार लेखक से, जिसका उद्देश्य हमें शिक्षित करना है, ऐसी युक्तियों की अपेक्षा नहीं करते, फिर भी सावधानीपूर्वक पढ़ने का एक अच्छा सिद्धांत यह है कि तर्क के प्रत्येक चरण को स्पष्ट किया जाए।

चाहे वह किसी भी प्रकार की पुस्तक हो, पाठक के रूप में आपका दायित्व एक समान रहता है। यदि पुस्तक में तर्क हैं, तो आपको उन्हें संक्षेप में जानना चाहिए। किसी भी अच्छे तर्क को संक्षेप में समझाया जा सकता है। बेशक, ऐसे तर्क भी होते हैं जो एक दूसरे पर आधारित होते हैं। एक विस्तृत विश्लेषण के दौरान, एक बात को सिद्ध करने के लिए दूसरी बात को सिद्ध किया जा सकता है, और इसका उपयोग आगे किसी और बात को सिद्ध करने के लिए किया जा सकता है। हालांकि, तर्क की इकाइयाँ एकल तर्क होती हैं। यदि आप इन्हें किसी भी पुस्तक में पा सकते हैं जिसे आप पढ़ रहे हैं, तो आप तर्कों की व्यापक श्रृंखला को समझने में असमर्थ नहीं होंगे।

आप आपत्ति कर सकते हैं कि यह कहना तो ठीक है, लेकिन जब तक कोई तर्कशास्त्री की तरह तर्क की संरचना को नहीं जानता, तब तक उससे यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि वह उन्हें किसी किताब में खोज पाएगा, या इससे भी बुरा, उनका निर्माण कर पाएगा जब लेखक उन्हें एक ही पैराग्राफ में संक्षेप में नहीं बताता है?

मैं आपको यह समझाकर उत्तर दे सकता हूँ कि यह बात स्पष्ट क्यों होनी चाहिए कि आपको तर्कशास्त्रियों की तरह तर्कों का ज्ञान होना आवश्यक नहीं है। चाहे अच्छा हो या बुरा, दुनिया में तर्कशास्त्रियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। ज्ञान प्रदान करने वाली और हमें शिक्षित करने वाली अधिकांश

पुस्तकों में तर्क शामिल होते हैं। ये पुस्तकें आम पाठकों के लिए लिखी गई हैं, न कि तर्कशास्त्र के विशेषज्ञों के लिए।

मैं तो यही मानता हूँ कि इन पुस्तकों को पढ़ने के लिए असाधारण तार्किक क्षमता की आवश्यकता नहीं होती। मैं अपनी पिछली बात दोहराता हूँ कि मानव मन की प्रकृति ऐसी है कि यदि वह पढ़ने की प्रक्रिया के दौरान थोड़ा भी काम करे, यदि वह लेखक को समझ पाए और उसके विचारों तक पहुँच पाए, तो वह उसके तर्कों को भी समझ लेगा।

हालांकि, कुछ बातें हैं जो इस तीसरे नियम का पालन करने में आपके लिए सहायक हो सकती हैं। सबसे पहले, याद रखें कि प्रत्येक तर्क में कई कथन शामिल होते हैं। इनमें से कुछ कथन यह बताते हैं कि आपको लेखक द्वारा प्रस्तावित निष्कर्ष को क्यों स्वीकार करना चाहिए। यदि आपको पहले निष्कर्ष मिल जाए, तो कारणों की तलाश करें। यदि आपको पहले कारण मिल जाएं, तो देखें कि वे किस ओर ले जाते हैं।

दूसरे स्थान पर, उस प्रकार के तर्क में अंतर स्पष्ट करें जो किसी सामान्यीकरण के प्रमाण के रूप में एक या अधिक विशिष्ट तथ्यों की ओर इशारा करता है और उस प्रकार के तर्क में जो किसी आगे के सामान्यीकरण को सिद्ध करने के लिए सामान्य कथनों की एक श्रृंखला प्रस्तुत करता है। सामान्य कथन जिन्हें स्वतः सिद्ध या स्वयंसिद्ध कहा जाता है, वे कथन होते हैं जिन्हें हम उनके शब्दों को समझते ही सत्य मान लेते हैं। ऐसे कथन अंततः विशिष्ट अनुभवों से ही प्राप्त होते हैं।

उदाहरण के लिए, जब आप किसी भौतिक इकाई को समझते हैं, और जब आप यह समझते हैं कि किसी इकाई का उस इकाई का हिस्सा होने का क्या अर्थ है, तो आप तुरंत जान जाते हैं कि इकाई अपने किसी भी हिस्से से बड़ी है। तीन शब्दों को समझने के माध्यम से—

संपूर्ण, अंश और से बड़ा—ये शब्द सुनते ही आप एक सत्य कथन को जान जाते हैं। इस सत्य तक पहुँचने का सबसे महत्वपूर्ण चरण है "संपूर्ण" शब्द के अर्थ को भौतिक विशेषण से सीमित करना। यह कथन कि संपूर्ण अंश से बड़ा होता है, हर प्रकार के संपूर्ण के लिए सत्य नहीं है। लेकिन जब आप इन शब्दों का सीमित अर्थों में प्रयोग करते हैं, तो आप ऐसे शब्दों तक पहुँचते हैं जो स्पष्ट रूप से किसी न किसी रूप में संबंधित होते हैं। इस प्रकार जो बात स्पष्ट हो जाती है, वह एक परिचित स्वयंसिद्ध सत्य है, एक ऐसा कथन जिसे मनुष्य कई शताब्दियों से सत्य मानते आए हैं।

कभी-कभी ऐसे कथनों को पुनरावृत्ति कहा जाता है। नाम से बहुत कम फर्क पड़ता है, सिवाय इसके कि यह उस कथन के बारे में आपके विचार को दर्शाता है जिसकी सत्यता बिना प्रमाण के स्पष्ट है—एक सामान्यीकरण जो विशेष तथ्यों से सीधे तर्कित होता है। आधुनिक समय में जब स्वतः सिद्ध सत्यों को "पुनरावृत्ति" कहा जाता है, तो इसके पीछे कभी-कभी तुच्छ बातों के प्रति तिरस्कार या चालाकी का संदेह होता है। मानो टोपी से खरगोश निकाला जा रहा हो। आप अपने शब्दों को परिभाषित करके सत्य को उसमें डालते हैं, और फिर उसे इस तरह निकालते हैं जैसे आप उसे वहाँ पाकर आश्चर्यचकित हों। हालाँकि,

ध्यान दें कि ऐसा नहीं है। किसी शब्द के अर्थ को सीमित करना किसी वस्तु को परिभाषित करना नहीं है। संपूर्ण और अंश वस्तुएँ हैं, शब्द नहीं। हमने उन्हें परिभाषित नहीं किया। वास्तव में, हम कर ही नहीं सकते। हमने जो किया वह यह था कि हमने अपने शब्दों को इस प्रकार सीमित किया कि वे एक निश्चित प्रकार की वस्तु को संदर्भित करें जिससे हम परिचित हैं।

जब यह हो गया, तो हमें पता चला कि हम कुछ ऐसा जानते हैं जिसे हमारे सीमित शब्द व्यक्त कर सकते हैं।

विज्ञान साहित्य में, किसी कथन को तर्क द्वारा सिद्ध करने और उसे प्रयोग द्वारा स्थापित करने में अंतर देखा जाता है। गैलीलियो ने अपनी पुस्तक 'दो नए विज्ञान' में गणितीय प्रमाणों द्वारा सिद्ध किए गए निष्कर्षों को प्रयोगों द्वारा उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने की बात कही है। और अपने अंतिम अध्याय में, महान शरीर क्रिया विज्ञानी हार्वे लिखते हैं: "तर्क और प्रयोग द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि रक्त निलय की धड़कन द्वारा फेफड़ों और हृदय से होकर बहता है और पूरे शरीर में पंप होता है।" कभी-कभी किसी कथन को अन्य सामान्य सत्यों के आधार पर तर्क द्वारा और प्रयोगात्मक प्रमाणों द्वारा भी सिद्ध किया जा सकता है। कभी-कभी तर्क की केवल एक ही विधि उपलब्ध होती है।

तीसरे बिंदु पर, ध्यान दें कि लेखक किन बातों को अनिवार्य मानता है, किन बातों को सिद्ध किया जा सकता है या जिनका प्रमाण दिया जा सकता है, और किन बातों को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे स्वतः स्पष्ट हैं। वह ईमानदारी से आपको अपनी सभी मान्यताएँ बता सकता है, या वह आपको स्वयं ही उनका पता लगाने के लिए छोड़ सकता है। स्पष्ट है कि हर चीज को सिद्ध नहीं किया जा सकता, ठीक वैसे ही जैसे हर चीज को परिभाषित नहीं किया जा सकता। यदि प्रत्येक कथन को सिद्ध करना आवश्यक होता, तो किसी भी प्रमाण की कोई शुरुआत ही नहीं होती। स्वयंसिद्ध कथन, या ऐसे कथन जो किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष अनुभव से लिए गए हों, और मान्यताएँ, या अभिधारणाएँ, अन्य कथनों के प्रमाण के लिए आवश्यक हैं। यदि ये अन्य कथन सिद्ध हो जाते हैं, तो निश्चित रूप से इनका उपयोग आगे के प्रमाणों में आधार के रूप में किया जा सकता है।

- 7 -

पढ़ने के ये तीन नियम—शब्दों, प्रस्तावों और तर्कों से संबंधित—एक चौथे और अंतिम नियम में समाहित हो सकते हैं। यह चौथा नियम किसी पुस्तक के दूसरे पठन के अंतिम चरण को नियंत्रित करता है। इससे भी बढ़कर, यह दूसरे पठन को पहले पठन से जोड़ता है।

आपको याद होगा कि पहले पठन का अंतिम चरण उन प्रमुख समस्याओं की खोज थी जिनका उत्तर लेखक ने अपनी पुस्तक में देने का प्रयास किया था। अब, जब आप लेखक को समझ चुके हैं और उनके प्रस्तावों और तर्कों को आत्मसात कर चुके हैं, तो आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर अपने निष्कर्षों की जाँच कर सकते हैं। लेखक ने जिन समस्याओं को हल करने का प्रयास किया, उनमें से किन समस्याओं को हल करने में वे सफल रहे? क्या इन समस्याओं को हल करने के दौरान

उन्हें कोई नई समस्या मिली? जिन समस्याओं को वे हल करने में असफल रहे, चाहे वे पुरानी हों या नई, उनमें से किसमें लेखक स्वयं अपनी असफलता को स्वीकार करते हैं? एक अच्छे लेखक को, एक अच्छे पाठक की तरह, यह पता होना चाहिए कि कोई समस्या हल हुई है या नहीं, हालाँकि मैं समझ सकता हूँ कि पाठक के लिए अपनी असफलता को स्वीकार करना अधिक कष्टदायी हो सकता है।

जब आप इन सवालों के जवाब दे पाते हैं, तो आप काफी हद तक आश्वस्त हो सकते हैं कि आपने किताब को समझ लिया है। अगर आपने ऐसी किताब से शुरुआत की जो आपकी समझ से परे थी—

और इसलिए, यह एक ऐसा अनुभव था जिसने आपको कुछ सिखाया - आपने काफी लंबा सफर तय किया है।

इससे भी बढ़कर, अब आप पुस्तक को पढ़ना पूरा कर सकते हैं।

इस कार्य का तीसरा और अंतिम चरण अपेक्षाकृत आसान होगा। अब तक आप अपनी आँखें और दिमाग खुले रखकर चुप रहे हैं। अब तक आप लेखक का अनुसरण कर रहे थे। अब आपको लेखक से बहस करने और अपने विचार व्यक्त करने का मौका मिलेगा।

अध्याय बारह

पलटकर जवाब देने का शिष्टाचार

- 1 -

और अब हम कहाँ हैं?

पिछले अध्याय के अंत में मैंने कहा था कि हमने बहुत लंबा सफर तय किया है। हमने सीखा है कि किसी पुस्तक को पहली बार पढ़ते समय हमसे क्या अपेक्षा की जाती है। यह वह पठन है जिसमें हम पुस्तक की संरचना का विश्लेषण करते हैं। हमने उसी पुस्तक को दूसरी बार पढ़ने के चार नियम भी सीखे हैं—एक व्याख्यात्मक पठन। ये चार नियम हैं: (i) लेखक के मूल शब्दों की व्याख्या करके उसे समझना; (2) उसके महत्वपूर्ण वाक्यों को खोजकर लेखक के मुख्य कथनों को समझना; (3) वाक्यों के अनुक्रमों में लेखक के तर्कों को खोजकर या उनका निर्माण करके उन्हें जानना; (4) यह निर्धारित करना कि लेखक ने अपनी किन समस्याओं का समाधान किया और किनका नहीं, और बाद वाली समस्याओं में से यह तय करना कि लेखक को पता था कि वह किन समस्याओं का समाधान करने में विफल रहा।

अब आप उसी पुस्तक को पढ़ने के तीसरे तरीके के लिए तैयार हैं। यहाँ आपको अपने पिछले सभी प्रयासों का फल मिलेगा।

किताब पढ़ना एक तरह की बातचीत है। आपको शायद लगे कि यह बातचीत है ही नहीं, क्योंकि लेखक ही सब कुछ बोलता है और आपको कुछ कहना नहीं होता। अगर आप ऐसा

सोचते हैं, तो आप एक पाठक के रूप में अपने अवसरों और दायित्वों को नहीं समझते।

असल में, अंतिम बात पाठक की ही होती है। लेखक अपनी बात कह चुका होता है, और अब पाठक की बारी होती है। एक किताब और उसके पाठक के बीच की बातचीत देखने में तो व्यवस्थित लगती है, जिसमें दोनों पक्ष बारी-बारी से बोलते हैं, कोई रुकावट नहीं होती, इत्यादि। लेकिन अगर पाठक अनुशासनहीन और असभ्य हो, तो यह बातचीत अव्यवस्थित हो सकती है। बेचारा लेखक अपना बचाव नहीं कर सकता। वह यह नहीं कह सकता, "देखो, मेरी बात पूरी होने तक रुको, फिर असहमति जताना शुरू करो।" वह यह कहकर विरोध नहीं कर सकता कि पाठक उसकी बात समझ नहीं पाया।

आमने-सामने बैठे व्यक्तियों के बीच सामान्य बातचीत तभी अच्छी होती है जब वह शालीनता से की जाए। मैं केवल सामाजिक शिष्टाचार के नियमों के अनुसार शालीनता की बात नहीं कर रहा हूँ। इसके अतिरिक्त, बौद्धिक शिष्टाचार का भी पालन करना आवश्यक है। इसके बिना, बातचीत सार्थक संवाद की बजाय विवाद बन जाती है। मैं यहाँ यह मानकर चल रहा हूँ कि बातचीत किसी गंभीर विषय पर हो रही है जिस पर लोग सहमत या असहमत हो सकते हैं। ऐसे में यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे सही ढंग से व्यवहार करें। अन्यथा, बातचीत का कोई लाभ नहीं। अच्छी बातचीत से जो लाभ मिलता है वह ज्ञानवर्धक होता है।

सामान्य बातचीत के बारे में जो बात सच है, वह उस विशेष परिस्थिति में और भी अधिक सच है जिसमें एक किताब पाठक से बात करती है और पाठक जवाब देता है। लेखक के अनुशासित होने को हम फिलहाल मानकर चलते हैं। महान पुस्तकों के मामले में, यह माना जा सकता है कि उन्होंने बातचीत में अपना हिस्सा बखूबी निभाया है। पाठक बदले में क्या कर सकता है? उसे अपना हिस्सा बखूबी निभाने के लिए क्या करना चाहिए?

पाठक के पास अपनी बात कहने का दायित्व और अवसर दोनों हैं। अवसर स्पष्ट है। पाठक को अपना निर्णय देने से कोई नहीं रोक सकता। हालांकि, दायित्व की जड़ें पुस्तकों और पाठकों के बीच के संबंध की प्रकृति में थोड़ी गहराई से निहित हैं।

यदि कोई पुस्तक ज्ञान प्रदान करने वाली है, तो लेखक का उद्देश्य शिक्षा देना रहा है। उसने सिखाने का प्रयास किया है। उसने अपने पाठक को किसी बात पर आश्वस्त या राजी करने की कोशिश की है। उसका प्रयास तभी सफल माना जाता है जब पाठक अंततः कहे, "मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ। आपने मुझे आश्वस्त कर दिया है कि फलां बात सत्य है, या मुझे यह विश्वास दिला दिया है कि यह संभव है।" लेकिन भले ही पाठक आश्वस्त या राजी न हो, लेखक के इरादे और प्रयास का सम्मान किया जाना चाहिए। पाठक का कर्तव्य है कि वह लेखक के प्रति विचारपूर्वक निर्णय ले। यदि वह "मैं सहमत हूँ" नहीं कह सकता, तो कम से कम उसके पास असहमत होने या प्रश्न पर अपना निर्णय स्थगित करने का आधार होना चाहिए।

मैं बस इतना ही कह रहा हूँ कि एक अच्छी किताब को सक्रिय रूप से पढ़ना चाहिए। पढ़ने की प्रक्रिया केवल किताब में कही गई बातों को समझने तक ही सीमित नहीं है। यह आलोचनात्मक विश्लेषण और मूल्यांकन से पूरी होनी चाहिए।

निष्क्रिय पाठक इस अनिवार्यता का उल्लंघन करता है, शायद विश्लेषण और व्याख्या के नियमों से भी अधिक।

वह न केवल समझने का कोई प्रयास नहीं करता, बल्कि पुस्तक को बस नीचे रख कर या भूलकर ही खारिज कर देता है। हल्की-फुल्की प्रशंसा से भी बदतर, वह बिना किसी आलोचनात्मक विचार के ही पुस्तक की निंदा करता है।

- 2 -

अब आप समझ सकते हैं कि प्रतिक्रिया देने से मेरा तात्पर्य पठन से अलग कुछ नहीं है। यह पुस्तक पढ़ने का तीसरा तरीका है। अन्य दो पठन विधियों की तरह यहाँ भी कुछ नियम हैं। इनमें से कुछ बौद्धिक शिष्टाचार के सामान्य सिद्धांत हैं। हम इस अध्याय में इन पर चर्चा करेंगे। अन्य कुछ आलोचना के बिंदुओं को परिभाषित करने के लिए अधिक विशिष्ट मानदंड हैं। इन पर अगले अध्याय में चर्चा की जाएगी।

अक्सर यह मान लिया जाता है कि एक अच्छी किताब आम पाठक की आलोचना से परे होती है। पाठक और लेखक एक समान नहीं होते। लेखक की समीक्षा केवल उसके समकक्षों द्वारा ही की जा सकती है। बेकन की पाठक को दी गई सलाह याद रखें: "खंडन और खंडन करने के लिए न पढ़ें; किसी बात पर विश्वास करने और उसे मान लेने के लिए न पढ़ें; न ही चर्चा और बहस करने के लिए पढ़ें; बल्कि उसका मूल्यांकन और विचार करने के लिए पढ़ें।" सर वाल्टर स्कॉट ने तो उन लोगों पर और भी कड़ी आलोचना की जो "संदेह करने या उपहास करने के लिए पढ़ते हैं।"

जैसा कि हम आगे देखेंगे, इसमें कुछ सच्चाई तो है, लेकिन मुझे किताबों के चारों ओर फैली इस तरह की पवित्रता की छवि और इससे पैदा होने वाली झूठी धार्मिकता पसंद नहीं है। पाठक बच्चों की तरह हो सकते हैं, इस मायने में कि महान लेखक उन्हें सिखा सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उनकी बात अनसुनी कर दी जाए। मुझे यकीन नहीं है कि सेर्वेंटेस का यह कहना सही था, "ऐसी कोई किताब नहीं है जो इतनी बुरी हो कि उसमें कुछ अच्छा न पाया जा सके।" हालांकि, मेरा मानना है कि ऐसी कोई किताब नहीं है जो इतनी अच्छी हो कि उसमें कोई कमी न निकाली जा सके।

यह सच है कि जो पुस्तक पाठकों को ज्ञान प्रदान कर सकती है और इस अर्थ में उनसे बेहतर है, उसकी आलोचना तब तक नहीं की जानी चाहिए जब तक पाठक उसे समझ न लें। जब वे उसे समझ लेते हैं, तो वे लगभग लेखक के समकक्ष बन जाते हैं। अब वे अपनी इस नई स्थिति के अधिकारों और विशेषाधिकारों का प्रयोग करने के योग्य हैं। यदि वे अब अपनी आलोचनात्मक क्षमता का प्रयोग नहीं करते हैं, तो वे लेखक के साथ अन्याय कर रहे हैं। लेखक ने उन्हें अपने बराबर लाने के लिए हर संभव प्रयास किया है। वह इस बात का हकदार है कि वे उसके समकक्षों की तरह व्यवहार करें, उससे बातचीत करें और उसे जवाब दें।

जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, विनम्रता को अक्सर अधीनता के साथ भ्रमित किया जाता है। (हम अक्सर भूल जाते हैं कि "विनम्र" शब्द लैटिन मूल से लिया गया है जिसका अर्थ है सिखाना या सीखना।) किसी व्यक्ति को निष्क्रिय और लचीला होने पर गलत तरीके से विनम्र माना जाता है। इसके विपरीत, विनम्रता

सीखने की अत्यंत सक्रिय क्षमता का गुण है। कोई भी व्यक्ति वास्तव में सीखने योग्य नहीं होता जो स्वतंत्र रूप से अपने विवेक का प्रयोग नहीं करता। इसलिए, सबसे विनम्र पाठक सबसे अधिक आलोचनात्मक होता है। वह पाठक होता है जो अंततः लेखक द्वारा चर्चा किए गए विषयों पर अपना स्वयं का मत बनाने के लिए सबसे अधिक प्रयास करके पुस्तक पर अपनी प्रतिक्रिया देता है।

मैं "अंततः" इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि आज्ञाकारिता के लिए यह आवश्यक है कि किसी शिक्षक का मूल्यांकन करने से पहले उसकी बात पूरी तरह सुनी जाए और उससे भी बढ़कर, उसे समझा जाए। मैं यह भी कहना चाहूँगा कि केवल प्रयास की मात्रा ही आज्ञाकारिता का पर्याप्त मापदंड नहीं है। पाठक को पुस्तक का मूल्यांकन करना आना चाहिए, ठीक उसी प्रकार जैसे उसे उसकी विषयवस्तु को समझना आना चाहिए। पढ़ने के नियमों का यह तीसरा समूह आज्ञाकारिता के अनुशासित अभ्यास के अंतिम चरण के लिए एक मार्गदर्शक है।

हमने हर जगह शिक्षण कला और शिक्षा कला के बीच, लेखक के कौशल (जो उसे एक विचारशील लेखक बनाता है) और पाठक के कौशल (जो उसे पुस्तक को विचारशील ढंग से पढ़ने में सक्षम बनाता है) के बीच एक निश्चित पारस्परिक संबंध पाया है। हमने देखा है कि व्याकरण और तर्क के वही सिद्धांत अच्छे लेखन और अच्छे पठन दोनों के नियमों का आधार हैं। जिन नियमों पर हमने अब तक चर्चा की है, वे लेखक द्वारा बोधगम्यता प्राप्त करने और पाठक द्वारा समझ प्राप्त करने से संबंधित हैं। नियमों का यह अंतिम समूह समझ से आगे बढ़कर आलोचनात्मक निर्णय तक जाता है। यहीं पर अलंकारिक भाषा का महत्व आता है।

वाक्पटुता के अनेक उपयोग हैं। हम आमतौर पर इसे वक्ता या प्रचारक के संदर्भ में देखते हैं। लेकिन अपने व्यापक अर्थ में, वाक्पटुता हर उस स्थिति में शामिल होती है जिसमें मनुष्यों के बीच संवाद होता है। यदि हम वक्ता हैं, तो हम न केवल यह चाहते हैं कि हमारी बात समझी जाए, बल्कि किसी न किसी रूप में हमसे सहमति भी व्यक्त की जाए। यदि संवाद करने का हमारा उद्देश्य गंभीर है, तो हम किसी को समझाना या राजी करना चाहते हैं—विशेष रूप से, सैद्धांतिक मामलों में समझाना और उन मामलों में राजी करना जो अंततः क्रिया या भावना को प्रभावित करते हैं।

इस तरह के संचार को गंभीरता से ग्रहण करने के लिए, व्यक्ति को न केवल प्रतिक्रियाशील बल्कि जिम्मेदार श्रोता भी होना चाहिए। आप तभी प्रतिक्रियाशील कहलाते हैं जब आप कही गई बातों को समझते हैं और उनके पीछे के उद्देश्य को ध्यान में रखते हैं। लेकिन आपको एक राय बनाने की जिम्मेदारी भी निभानी होती है। जब आप कोई राय बनाते हैं, तो वह आपकी होती है, न कि लेखक की। अपने निर्णय के लिए स्वयं के अलावा किसी और को जिम्मेदार ठहराना गुलामी है, न कि स्वतंत्रता।

वक्ता या लेखक के लिए, वाक्पटुता का कौशल किसी को समझाने या राजी करने की क्षमता है। चूंकि यही अंतिम लक्ष्य है, इसलिए संचार के अन्य सभी पहलू इसी की पूर्ति में सहायक होने चाहिए। स्पष्ट और सुबोध लेखन में व्याकरणिक और तार्किक कौशल अपने आप में एक गुण है, लेकिन यह लक्ष्य की प्राप्ति का एक साधन भी है। इसी प्रकार, पाठक या श्रोता के लिए, वाक्पटुता का कौशल किसी

ऐसे व्यक्ति के प्रति प्रतिक्रिया देने की क्षमता है जो हमें समझाने या राजी करने का प्रयास करता है। यहां भी, व्याकरणिक और तार्किक कौशल, जो हमें कही गई बात को समझने में सक्षम बनाता है, एक आलोचनात्मक प्रतिक्रिया के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

- 3 -

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि व्याकरण, तर्क और अलंकार की ये तीनों कलाएँ लेखन और पठन की जटिल प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने में किस प्रकार सहयोग करती हैं। पहले दो पठन कौशल व्याकरण और तर्क पर महारत से प्राप्त होते हैं। तीसरे पठन कौशल शेष कला पर निर्भर करते हैं।

इस तीसरे पाठ के नियम वाक्पटुता के सिद्धांतों पर आधारित हैं, जिन्हें व्यापक अर्थों में समझा गया है। हम इन्हें शिष्टाचार संहिता के रूप में समझेंगे, जो पाठक को न केवल विनम्र बनाएगी बल्कि प्रभावी ढंग से जवाब देने में भी सक्षम बनाएगी।

आप शायद समझ गए होंगे कि पहला नियम क्या होने वाला है। इसका संकेत पहले भी कई बार दिया जा चुका है। नियम बस इतना है कि जब तक आप ध्यान से सुन न लें और पूरी तरह समझ न लें, तब तक आपको पलटकर जवाब नहीं देना चाहिए। जब तक आप पूरी तरह संतुष्ट न हो जाएं कि आपने पहली दो बार पढ़ लिया है, तब तक आपको अपनी बात कहने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए। जब आप ऐसा कर लें, तब आप न केवल आलोचना करने के लिए स्वतंत्र होंगे, बल्कि आपको ऐसा करना भी चाहिए।

इसका अर्थ है कि तीसरा पाठ हमेशा पहले दो पाठों के बाद ही पढ़ा जाना चाहिए। आप पहले ही देख चुके हैं कि पहले दो पाठ एक दूसरे में किस प्रकार समाहित हैं। ये केवल नौसिखिए के लिए समय के हिसाब से अलग-अलग होते हैं, और उसे भी शायद इन्हें थोड़ा-बहुत मिलाकर पढ़ना पड़े।

निस्संदेह, एक कुशल पाठक किसी पुस्तक का उसके भागों में विश्लेषण करके और साथ ही साथ उसके विचार और ज्ञान के तत्वों, शब्दों, प्रस्तावों और तर्कों से संपूर्ण का निर्माण करके उसकी विषयवस्तु का पता लगा सकता है। लेकिन एक नौसिखिया की तरह ही, कुशल पाठक को भी आलोचना करने से पहले उसे समझने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए।

आइए, आलोचनात्मक पठन के इस पहले नियम को मैं निम्नलिखित रूप में दोहराता हूँ। "मैं समझता हूँ" कहने से पहले आपको उचित निश्चितता के साथ यह कहना आना चाहिए: "मैं सहमत हूँ," "मैं असहमत हूँ," या "मैं अपना निर्णय स्थगित करता हूँ।" ये तीन टिप्पणियाँ आपके द्वारा अपनाई जा सकने वाली सभी आलोचनात्मक स्थितियों को समाहित करती हैं। मुझे आशा है कि आपने यह भ्रम नहीं किया होगा कि आलोचना करना हमेशा असहमति ही होती है। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण, आम गलत धारणा है। सहमत होना भी उतना ही आलोचनात्मक निर्णय लेने का कार्य है जितना असहमत होना। आप असहमत होने की तरह ही सहमत होने में भी गलत हो सकते हैं। बिना समझे सहमत होना निरर्थक है। बिना समझे असहमत होना धृष्टता है।

हालांकि पहली नज़र में यह इतना स्पष्ट नहीं लगता, लेकिन निर्णय को स्थगित करना भी आलोचना का ही एक रूप है। इसका अर्थ है कि आप यह मान रहे हैं कि कोई बात साबित नहीं हुई है। आप यह कह रहे हैं कि आप किसी भी पक्ष से आश्वस्त या सहमत नहीं हैं।

यह नियम इतना स्पष्ट और स्वाभाविक लगता है कि आप सोच रहे होंगे कि मैंने इसे इतनी स्पष्टता से क्यों बताया है। इसके दो कारण हैं। पहला, बहुत से लोग वही गलती करते हैं जो मैंने ऊपर बताई है, यानी आलोचना को असहमति समझ लेते हैं। दूसरा, हालांकि यह नियम स्पष्ट रूप से सही लगता है, लेकिन मेरा अनुभव यह रहा है कि व्यवहार में बहुत कम लोग इसका पालन करते हैं। सुनहरे नियम की तरह, इसका पालन केवल दिखावे के लिए होता है, न कि समझदारी से।

मैंने भी वही अनुभव किया है जो सभी लेखकों को होता है, कि आलोचकों द्वारा की गई पुस्तक समीक्षाओं से मुझे परेशानी झेलनी पड़ी, जिन्होंने पहले पुस्तक को पढ़े बिना ही अपनी पुस्तक की समीक्षा की। आलोचक अक्सर यह सोचते हैं कि उन्हें एक पाठक होने के साथ-साथ एक निर्णायक भी होना आवश्यक नहीं है। मैंने विश्वविद्यालय और सार्वजनिक मंचों पर व्याख्यान देते समय भी ऐसे आलोचनात्मक प्रश्न सुने हैं जो मेरे कहे गए शब्दों की किसी समझ पर आधारित नहीं थे। (एक "आलोचनात्मक प्रश्न" से मेरा तात्पर्य यही है)

यहां मेरा तात्पर्य उस अलंकारिक युक्ति से है जिसके द्वारा श्रोताओं में से कोई व्यक्ति वक्ता को नीचा दिखाने का प्रयास करता है। और आपको शायद कोई ऐसा अवसर याद होगा जब किसी ने वक्ता से एक या अधिक से अधिक दो सांसों में कहा हो, "मुझे नहीं पता कि आपका क्या मतलब है, लेकिन मुझे लगता है कि आप गलत हैं।"

मैंने धीरे-धीरे यह सीख लिया है कि इस तरह के आलोचकों को जवाब देने का कोई फायदा नहीं है। एकमात्र शिष्ट तरीका यही है कि उनसे कहें कि वे आपके पक्ष को स्पष्ट करें, उस पक्ष को जिसे वे चुनौती देने का दावा कर रहे हैं। यदि वे इसे संतोषजनक ढंग से नहीं कर पाते, यदि वे आपके कहे को अपने शब्दों में दोहरा नहीं पाते, तो आप समझ जाइए कि वे समझते नहीं हैं, और उनकी आलोचनाओं को नज़रअंदाज़ करना पूरी तरह से उचित है। उनकी आलोचनाएँ अप्रासंगिक हैं, क्योंकि हर वह आलोचना अप्रासंगिक होती है जो ठोस समझ पर आधारित नहीं होती। जब आपको कोई ऐसा दुर्लभ व्यक्ति मिल जाए जो यह दर्शाता है कि वह आपकी बात को उतना ही समझता है जितना आप समझते हैं, तो आप उसकी सहमति से प्रसन्न हो सकते हैं या उसके असहमति से गंभीर रूप से विचलित हो सकते हैं।

छात्रों के साथ किताबें पढ़ते हुए कई वर्षों में मैंने पाया है कि इस नियम का पालन करने की अपेक्षा इसका उल्लंघन अधिक होता है। जो छात्र स्पष्ट रूप से लेखक की बात नहीं समझते, वे स्वयं को उसका न्यायाधीश मानने में संकोच नहीं करते। वे न केवल उस बात से असहमत होते हैं जिसे वे समझते नहीं, बल्कि उससे भी बुरी बात यह है कि वे अक्सर एक ऐसे विचार से सहमत हो जाते हैं जिसे वे अपने तरीके से स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पाते। उनकी चर्चा, उनके पढ़ने की तरह, केवल शब्दों का जाल होती है। जहाँ समझ नहीं होती, वहाँ

xxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxx xxxxx xx x xx xxxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xx xxx xxxxx xxxxxxxxxx xxxxx xx xx xx xxxxx xxxxxx xx xx xxx xxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxxxx xx xxx xxx

xx xxxxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xxx xxx xx xxxxxxxxxxx xxxxxx xxxxx xxx xx xxx xxxxx xxxxxxx xxx xxx xxx, xx "xxx xxx xxx" xxxxx xx xxxxx xxxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxxxxx xx xxxxxxxx xx xxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxx xxxxx, xx xxx xxx xx xxxxxxxxxxx xx xx xx xxxxxx xxx xxxxx xxx

"xxxxx xxx xxxxx xxx" xxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxxx xxxxxxxx xx, xxxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxx xxx xxx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxxx xxx xxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxx xxxxx xx xx xxx xx xxxxx xxx xxxxx xxx, xx xx xxxxx xx xx xxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxxxxx xxx xxxxxxxx, xx xxxxx xx xxxxx xx xx xxxxxx xx xxxxxx xx, xxxxxx xxx xx xxx xxxxx xxxxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxxx xxx, xxxxxx xxx xxxxxxxxx xxxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxx xxx xxxxxx, xxxxxx xxx xx xxxxxx xx xxxxx, xxxxx xx xxxxx xx xxx xxxxxx xxx xxxxx xxx xxxxxx xxxxxxx xx xx "xxxxx xxx xxxxx xxx" xxxxx, xx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxx xxxxx xx xxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxx

xx xxxxx xxxxxxxxxxxxx xxx xxxxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xxx xxx xx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xx xxx xxx xxx xxx, xx xx xxxxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xx xx xxx xxx xx xxx, xx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xxxxx xxx xxxxx xxxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxx-xxx xxx xxxxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xxxxxx xx xx xxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxxx xxx xx, xxxxx "xxx xxx xxx xxx" xxxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxx xxxxx xxxxxxx

xx xxxxxxx xxx xxxxxxxxx xx xxxxx xxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxxxxxx xxxxxxxx xxxxxxx xxxxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxxxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxx xx xx, xx xxxxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxxxxxx xx xxxxxx xxxxxxxxx xxxxxx xxx xx xxxxx xxxxx xxxxxxx, xxxxxxxxxxx, xxxxxxxxxxxx xx xxxxxxxxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxx xxx xxxxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxx xx xx xx xxx xxxxxxx xxxxx xxx

xxxxxxx, xxxxx, xxx xxxxxx xx xxxxxx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxx xx xxxxx xxx xx xxx xx xx, xx xxxxx xxx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xx xx xxxxx xxx xxxxxxx xxxxx xx xxx xxxxx xx xxx xxxxx xx 'xxxxxx xxxxx xx xxxxxxx' xx xxxxx 'xxxxxxxxxxxx xxxxx xx xxxxxxx' xxxxx xxxxx, xx xxx xxxxxx xx 'xxxxxxxxxxx xx xx' xx xxxxx 'xxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxxxx' xxxxx xxxxx, xx xxxxxxxx xx 'x xxxxxxx' xxxxx xxxxx 'xxxxxxxxxxx xxxxxxxxxx' xx xxxxxxxxxx xxxxx xxx, xx xxxxxx xxxxx xxx xxx xx xxxxx xx xxxxxx xx xxx xxx xxxxx xx xxxxx xxx xx xxxxx xxxxxx xxxxx

ही अटूट है जितना कि निजी संपत्ति का अधिकार। इस दृष्टिकोण से, यदि लाभ केवल ज्ञान में वृद्धि है, तो संवाद लाभदायक नहीं हो सकता। बातचीत विरोधी विचारों के पिंग-पोंग खेल से कुछ बेहतर नहीं है, एक ऐसा खेल जिसमें कोई स्कोर नहीं रखता, कोई जीतता नहीं है, और हर कोई संतुष्ट रहता है क्योंकि अंत में उसकी राय वही रहती है जो उसने शुरू में रखी थी।

मैं इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं हूँ। मेरा मानना है कि ज्ञान का संचार हो सकता है और चर्चा से ज्ञान प्राप्त हो सकता है। यदि विचार नहीं, बल्कि ज्ञान का प्रश्न है, तो या तो मतभेद केवल दिखावटी हैं—जिनका समाधान आपसी सहमति और विचारों के मेल से हो सकता है; या, यदि वे वास्तविक हैं, तो अंततः तथ्यों और तर्क के आधार पर वास्तविक मुद्दों का समाधान किया जा सकता है। मतभेदों के संबंध में तर्कसंगतता का मूलमंत्र है कि दीर्घकाल तक धैर्य रखा जाए। संक्षेप में, मेरा कहना है कि मतभेद तर्क-वितर्क के विषय हैं। और तर्क-वितर्क व्यर्थ और निष्फल है, जब तक कि यह इस धारणा पर आधारित न हो कि कोई ऐसा सत्य है जिसे सभी प्रासंगिक साक्ष्यों के आलोक में तर्क द्वारा प्राप्त करने पर मूल मुद्दे हल हो जाते हैं।

यह तीसरा सिद्धांत पाठक और लेखक के बीच संवाद पर कैसे लागू होता है? यह उस स्थिति से संबंधित है जिसमें पाठक किसी पुस्तक में किसी बात से असहमत होता है। इसके लिए उसे पहले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि असहमति किसी गलतफहमी के कारण तो नहीं है। मान लीजिए कि पाठक ने इस नियम का सावधानीपूर्वक पालन किया है कि उसे आलोचनात्मक पठन तब तक शुरू नहीं करना चाहिए जब तक वह उसे समझ न ले, और इसलिए वह संतुष्ट है कि यहाँ कोई गलतफहमी नहीं है। तो फिर क्या होगा?

इस सिद्धांत के अनुसार, उसे ज्ञान और राय के बीच अंतर करना चाहिए, और ज्ञान से संबंधित किसी भी मुद्दे को हल करने योग्य समझना चाहिए। यदि वह इस मामले को आगे बढ़ाता है, तो लेखक उसे ऐसे बिंदुओं पर मार्गदर्शन दे सकता है जो उसके विचार को बदल देंगे।

यदि ऐसा नहीं होता है, तो उनकी आलोचना जायज़ हो सकती है, और कम से कम लाक्षणिक रूप से, वे लेखक को कुछ सिखा सकते हैं। वे कम से कम यह आशा तो कर सकते हैं कि यदि लेखक जीवित और उपस्थित होते, तो उनका विचार बदल जाता।

आपको पिछले अध्याय में कही गई एक बात याद होगी। यदि कोई लेखक अपने कथनों के लिए तर्क नहीं देता, तो उन्हें केवल उसकी राय की अभिव्यक्ति ही माना जा सकता है। जो पाठक ज्ञान के तर्कपूर्ण कथन और राय की सतही अभिव्यक्ति के बीच अंतर नहीं कर पाता, वह सीखने के लिए नहीं पढ़ रहा होता। वह ज़्यादा से ज़्यादा लेखक के व्यक्तित्व में रुचि रखता है और पुस्तक को एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल कर रहा होता है। ऐसा पाठक, ज़ाहिर है, न तो सहमत होगा और न ही असहमत। वह पुस्तक का नहीं, बल्कि लेखक का मूल्यांकन करता है।

लेकिन अगर पाठक की मुख्य रुचि पुस्तक में है, न कि लेखक में—यानी सीखने की चाह में वह ज्ञान की तलाश करता है, न कि राय की—तो उसे अपने आलोचनात्मक दायित्वों को गंभीरता से निभाना चाहिए। ज्ञान और राय का अंतर पाठक पर भी उतना ही लागू होता है जितना लेखक पर। पाठक को केवल सहमति या असहमति का

निर्णय देने से कहीं अधिक करना चाहिए। उसे अपने कारणों को भी बताना चाहिए। पहले मामले में, बेशक, यह पर्याप्त है कि वह लेखक के उन कारणों से सक्रिय रूप से सहमत हो जिन पर वे सहमत हैं। लेकिन जब वह असहमत होता है, तो उसे अपनी असहमति के आधार भी बताने होंगे। अन्यथा, वह ज्ञान के विषय को राय की तरह मान रहा होगा।

अब मैं उन तीन सामान्य सिद्धांतों का सारांश प्रस्तुत करता हूँ जिन पर मैंने चर्चा की है। ये तीनों मिलकर आलोचनात्मक पठन की शर्तों और पाठक को प्रतिक्रिया देने के तरीके को स्पष्ट करते हैं।

पहले तरीके में पाठक को जल्दबाजी करने से पहले समझने का काम पूरा करना आवश्यक होता है।

दूसरा उसे वाद-विवाद या विवाद न करने की सलाह देता है। तीसरा उससे ज्ञान संबंधी मामलों में असहमति को सुलझाने योग्य समझने का आग्रह करता है। यह इससे भी आगे जाता है। यह उसे अपनी असहमति के कारण बताने का आदेश देता है ताकि मुद्दों को केवल बताया ही न जाए बल्कि परिभाषित भी किया जाए। समाधान की सारी आशा इसी में निहित है।

अध्याय तेरह

पाठक क्या कह सकता है

- 1 -

पाठक सबसे पहले यही कह सकता है कि उसे समझ आ गया है या नहीं। वास्तव में, उसे पहले यही कहना चाहिए कि उसे समझ आ गया है, तभी वह आगे कुछ कह सकता है।

यदि उसे समझ नहीं आया है, तो उसे चुप रहना चाहिए और पुस्तक के पहले दो पाठों को फिर से पढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

दूसरे विकल्प की कठोरता का एक अपवाद है। "मुझे समझ नहीं आया"

यह स्वयं में एक आलोचनात्मक टिप्पणी हो सकती है। इसे आलोचनात्मक बनाने के लिए, पाठक को इसे प्रमाणित करने में सक्षम होना चाहिए। यदि गलती पुस्तक में है न कि स्वयं पाठक में, तो पाठक को समस्या के स्रोतों का पता लगाना होगा।

उन्हें यह साबित करने में सक्षम होना चाहिए कि पुस्तक की संरचना अव्यवस्थित है, इसके भाग आपस में जुड़े हुए नहीं हैं, और इसका कुछ भाग अप्रासंगिक है। या शायद, लेखक महत्वपूर्ण शब्दों के प्रयोग में अस्पष्टता बरतता है, जिसके परिणामस्वरूप कई त्रुटियाँ उत्पन्न होती हैं। यदि कोई नेता यह साबित कर दे कि पुस्तक समझ से परे है, तो उसकी आगे कोई आलोचनात्मक ज़िम्मेदारी नहीं रह जाती।

मान लीजिए कि आप एक अच्छी किताब पढ़ रहे हैं। इसका मतलब है कि वह अपेक्षाकृत समझने योग्य है। और मान लीजिए कि आप अंत में कह पाते हैं, "मुझे समझ आ गया।" यदि किताब को समझने के साथ-साथ आप लेखक की बातों से पूरी तरह सहमत भी हैं, तो काम पूरा हो गया। पढ़ना पूरी तरह समाप्त हो गया। आपको ज्ञान प्राप्त हुआ, और आप आश्वस्त या सहमत हो गए। यह स्पष्ट है कि असहमति या निर्णय में अनिश्चितता की स्थिति में ही हमें अतिरिक्त चरणों पर विचार करना होगा। असहमति या असहमति की स्थिति अधिक सामान्य है। हम इस अध्याय में मुख्य रूप से इसी पर चर्चा करेंगे।

लेखक अपने पाठकों से जिस हद तक बहस करते हैं—और पाठकों से भी बहस की अपेक्षा रखते हैं—उतने ही अच्छे पाठक को तर्क-वितर्क के सिद्धांतों की जानकारी होनी चाहिए। उसे शालीनता के साथ-साथ बुद्धिमत्तापूर्ण बहस करने में सक्षम होना चाहिए। इसीलिए पठन-पाठन पर लिखी गई पुस्तक में इस प्रकार के अध्याय की आवश्यकता है। पाठक केवल लेखक के तर्कों का अनुसरण करके ही नहीं, बल्कि उनका सामना करके ही अंततः लेखक से सार्थक सहमति या असहमति तक पहुँच सकता है।

सहमति और असहमति के अर्थ पर एक क्षण और विचार करने की आवश्यकता है।

जो पाठक लेखक को समझ लेता है, उसके विचारों और तर्कों को आत्मसात कर लेता है, वह लेखक के मन से जुड़ जाता है। वास्तव में, व्याख्या की पूरी प्रक्रिया भाषा के माध्यम से विचारों के मिलन की ओर निर्देशित होती है।

किसी पुस्तक को समझना लेखक और पाठक के बीच एक प्रकार की सहमति है। वे विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा के प्रयोग पर सहमत होते हैं। इस सहमति के कारण ही पाठक लेखक की भाषा के माध्यम से उन विचारों को समझ पाता है जिन्हें वह व्यक्त करने का प्रयास कर रहा है।

यदि पाठक किसी पुस्तक को समझ लेता है, तो वह उससे असहमत कैसे हो सकता है? आलोचनात्मक पठन के लिए आवश्यक है कि पाठक स्वयं निर्णय ले। लेकिन पुस्तक को समझने में सफलता प्राप्त करने के कारण पाठक और लेखक का मन एक हो चुका है। ऐसे में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने के लिए उसके पास कौन सा मन शेष बचता है?

कुछ लोग ऐसी गलती करते हैं जिससे यह स्पष्ट समस्या उत्पन्न होती है। वे "सहमति" के दो अर्थों में अंतर नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप, वे गलत धारणा बना लेते हैं कि जहाँ मनुष्यों के बीच समझ होती है, वहाँ असहमति असंभव है।

उनका कहना है कि सभी मतभेद केवल गलतफहमी के कारण होते हैं।

यह त्रुटि तब दूर हो जाती है जब हमें याद आता है कि लेखक उस दुनिया के बारे में निर्णय दे रहा है जिसमें हम रहते हैं। वह दावा करता है कि वह हमें चीजों के अस्तित्व और व्यवहार के बारे में सैद्धांतिक ज्ञान दे रहा है, या फिर इस बारे में व्यावहारिक ज्ञान दे रहा है कि क्या किया जाना चाहिए।

स्पष्टतः, वह सही या गलत हो सकता है। उसका दावा तभी तक उचित है जब तक वह सच बोलता है, या साक्ष्यों के आधार पर जो संभावित है वही कहता है। अन्यथा, उसका दावा निराधार है।

उदाहरण के लिए, यदि आप कहते हैं कि "सभी मनुष्य समान हैं," तो मैं यह समझ सकता हूँ कि सभी मनुष्य जन्म से ही बुद्धि, शक्ति और अन्य क्षमताओं से समान रूप से संपन्न होते हैं। मेरे ज्ञान के अनुसार, मैं आपसे असहमत हूँ। मुझे लगता है कि आप गलत हैं। लेकिन मान लीजिए कि मैंने आपको गलत समझा है। मान लीजिए कि इन शब्दों से आपका तात्पर्य यह था कि सभी मनुष्यों को समान राजनीतिक अधिकार होने चाहिए। क्योंकि मैंने आपके अर्थ को गलत समझा, इसलिए मेरी असहमति निरर्थक हो जाती है। अब मान लीजिए कि गलती सुधर गई है। दो विकल्प अभी भी शेष हैं। मैं सहमत या असहमत हो सकता हूँ, लेकिन अब यदि मैं असहमत हूँ, तो हमारे बीच एक वास्तविक मुद्दा है। मैं आपकी राजनीतिक स्थिति को समझता हूँ लेकिन मेरी राय आपसे भिन्न है।

तथ्यात्मक या नीतिगत मामलों से संबंधित मुद्दे—स्थितियों के स्वरूप या स्वरूप से संबंधित मुद्दे—

कोई बात तभी वास्तविक होती है जब वह कही जा रही बात की सामान्य समझ पर आधारित हो।

शब्दों के प्रयोग पर सहमति, चर्चा किए जा रहे तथ्यों पर वास्तविक सहमति या असहमति के लिए अत्यंत अनिवार्य शर्त है। लेखक की पुस्तक की सही व्याख्या के माध्यम से उनके विचारों को समझने के कारण ही आप उनके द्वारा अपनाए गए दृष्टिकोण से सहमत या असहमत हो पाते हैं, न कि इसके बावजूद।

- 2 -

अब उस स्थिति पर विचार करें जिसमें, यह कहने के बाद कि आप समझ गए हैं, आप असहमति व्यक्त करते हैं। यदि आपने पिछले अध्याय में बताए गए सिद्धांतों का पालन करने का प्रयास किया है, तो आप इसलिए असहमत हैं क्योंकि आपको लगता है कि लेखक किसी बिंदु पर गलत साबित हो सकता है। आप केवल अपने पूर्वाग्रह या भावनाओं को व्यक्त नहीं कर रहे हैं।

अब मुझे ऐसा लगता है कि कई साल पहले मैंने 'द्वंद्वात्मकता' नाम की एक किताब लिखी थी। यह मेरी पहली किताब थी, और कई मायनों में गलत भी थी, लेकिन कम से कम यह अपने शीर्षक जितनी आडंबरपूर्ण नहीं थी। यह बुद्धिमानी भरी बातचीत की कला और वाद-विवाद के शिष्टाचार के बारे में थी।

मेरी सबसे बड़ी गलती यह सोचना था कि हर प्रश्न के दो पहलू होते हैं, यानी दोनों ही पहलू समान रूप से सही हो सकते हैं। उस समय मुझे ज्ञान और राय के बीच अंतर करना नहीं आता था। इस गलती के बावजूद, मुझे लगता है कि मैंने विवाद को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए आवश्यक तीन शर्तों का सही सुझाव दिया था।

चूंकि मनुष्य प्राणी होने के साथ-साथ तर्कशील भी है, इसलिए किसी विवाद में अपनी भावनाओं को, या विवाद के दौरान उत्पन्न होने वाली भावनाओं को स्वीकार करना आवश्यक है। अन्यथा आप केवल अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रहे होंगे, तर्क नहीं दे रहे होंगे। यहां तक कि आपको यह भी लग सकता है कि आपके पास तर्क हैं, जबकि वास्तव में आपके पास केवल प्रबल भावनाएं ही होंगी।

इसके अलावा, आपको अपनी मान्यताओं को स्पष्ट करना होगा। आपको अपने पूर्वाग्रहों—अर्थात, अपनी पूर्वधारणाओं—को जानना होगा। अन्यथा, आप यह स्वीकार नहीं करेंगे कि आपके विरोधी को भी भिन्न मान्यताएँ रखने का उतना ही अधिकार हो सकता है। अच्छी बहस मान्यताओं पर झगड़ा नहीं होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई लेखक आपसे किसी बात को मानकर चलने के लिए कहता है, तो इस तथ्य से कि विपरीत बात भी मानकर चली जा सकती है, आपको उसकी बात मानने से नहीं रोकना चाहिए। यदि आपके पूर्वाग्रह विपरीत पक्ष में हैं, और यदि आप उन्हें पूर्वाग्रह के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं, तो आप लेखक के पक्ष को निष्पक्ष रूप से नहीं सुन सकते।

अंत में, मैंने सुझाव दिया कि निष्पक्षता का प्रयास पक्षपात से उत्पन्न होने वाले अंधत्व का एक अच्छा उपाय है। पक्षपात के बिना विवाद तो निश्चित रूप से असंभव है। लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए कि विवाद में अधिक स्पष्टता आए और गरमाहट कम हो, विवाद करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करना चाहिए। यदि आप किसी पुस्तक को सहानुभूतिपूर्वक नहीं पढ़ पाए हैं, तो उससे आपका मतभेद संभवतः न्यायिक से अधिक विवादास्पद होगा।

मुझे अब भी लगता है कि ये तीनों शर्तें बुद्धिमान और सार्थक संवाद की अनिवार्य शर्तें हैं। ये स्पष्ट रूप से पढ़ने पर भी लागू होती हैं, क्योंकि पढ़ना भी पाठक और लेखक के बीच एक प्रकार का संवाद ही है। इनमें से

प्रत्येक में उन पाठकों के लिए उपयोगी सलाह निहित है जो असहमति के शिष्टाचार का सम्मान करने को तैयार हैं।

लेकिन 'डायलेक्टिक' लिखने के बाद से मैं बूढ़ा हो गया हूँ। और इंसानों से क्या उम्मीद की जा सकती है, इस बारे में मेरी उम्मीदें थोड़ी कम हो गई हैं। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि मेरी अधिकांश निराशा मेरी अपनी कमियों के ज्ञान से उपजी है। मैंने वाद-विवाद में बौद्धिक शिष्टाचार के अपने ही सारे नियमों का अक्सर उल्लंघन किया है। मैंने खुद को अक्सर किसी किताब की आलोचना करने के बजाय उस पर हमला करते हुए, बेबुनियाद तर्क देते हुए, जहाँ मैं खंडन का समर्थन नहीं कर सकता था, वहाँ निंदा करते हुए, अपने पूर्वाग्रहों का ऐलान करते हुए पाया है, मानो मेरे पूर्वाग्रह लेखक के पूर्वाग्रहों से बेहतर हों।

- 3 -

मैं अब भी इतना भोला हूँ कि मानता हूँ कि बातचीत और आलोचनात्मक पठन को अच्छी तरह से अनुशासित किया जा सकता है। बारह साल बाद, अब मैं द्वंद्वात्मकता के नियमों के स्थान पर कुछ ऐसे निर्देश प्रस्तुत करने जा रहा हूँ जिनका पालन करना शायद आसान हो। ये निर्देश उन चार तरीकों को दर्शाते हैं जिनसे किसी पुस्तक की प्रतिकूल आलोचना की जा सकती है। मेरी आशा है कि यदि पाठक केवल इन्हीं बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करे, तो वह भावनाओं या पूर्वाग्रहों को व्यक्त करने से बचेगा।

इन चारों बिंदुओं को संक्षेप में समझने के लिए, पाठक को लेखक से बातचीत करते हुए, यानी जवाब देते हुए समझना चाहिए। "मैं समझता हूँ, लेकिन असहमत हूँ" कहने के बाद, वह निम्नलिखित टिप्पणियाँ कर सकता है: (1) "आप अनभिज्ञ हैं"; (2) "आपको गलत जानकारी दी गई है"; (3) "आप तर्कहीन हैं, आपका तर्क ठोस नहीं है"; (4) "आपका विश्लेषण अधूरा है।"

ये संपूर्ण नहीं हो सकते, हालांकि मुझे लगता है कि ये संपूर्ण हैं। किसी भी स्थिति में, ये निश्चित रूप से वे मुख्य बिंदु हैं जिन्हें असहमति रखने वाला पाठक उठा सकता है। ये कुछ हद तक स्वतंत्र हैं।

इनमें से कोई एक टिप्पणी करने से दूसरी टिप्पणी करने में कोई बाधा नहीं आती। हर टिप्पणी की जा सकती है, क्योंकि जिन दोषों का जिक्र किया गया है वे परस्पर विरोधी नहीं हैं।

लेकिन, मैं यह कहना चाहूंगा कि पाठक लेखक की जानकारी के अधूरेपन, गलत जानकारी या तर्कहीनता के बारे में स्पष्ट और सटीक जानकारी दिए बिना इनमें से कोई भी टिप्पणी नहीं कर सकता। कोई पुस्तक हर बात से अनभिज्ञ या गलत जानकारी वाली नहीं हो सकती। यह पूरी तरह से तर्कहीन भी नहीं हो सकती। इसके अलावा, इनमें से कोई भी टिप्पणी करने वाले पाठक को न केवल स्पष्ट रूप से, यानी लेखक की जानकारी के अधूरेपन को बताते हुए, अपनी बात का समर्थन करना चाहिए। उसे अपने कथन के लिए कारण भी बताने चाहिए।

जैसा कि आप अभी देखेंगे, पहले तीन बिंदु चौथे बिंदु से कुछ भिन्न हैं। आइए हम उनमें से प्रत्येक पर संक्षेप में विचार करें, और फिर चौथे बिंदु पर चलें।

(1) किसी लेखक को अनभिज्ञ कहना यह कहना है कि उसे उस समस्या से संबंधित किसी महत्वपूर्ण जानकारी का अभाव है जिसका वह समाधान करने का प्रयास कर रहा है। ध्यान दें कि यदि लेखक के पास वह जानकारी होती, तो वह प्रासंगिक होती, तभी यह टिप्पणी करना व्यर्थ है। इस टिप्पणी का समर्थन करने के लिए, आपको स्वयं यह बताने में सक्षम होना चाहिए कि लेखक को किस ज्ञान का अभाव है और यह कैसे प्रासंगिक है, और इससे उसके निष्कर्षों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

कुछ उदाहरण ही पर्याप्त होंगे। डार्विन को आनुवंशिकी का वह ज्ञान नहीं था जो मेंडल और बाद के प्रयोगकर्ताओं के कार्यों से प्राप्त हुआ। वंशानुक्रम की प्रक्रिया के बारे में उनकी अज्ञानता 'द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' की प्रमुख कमियों में से एक है। गिब्बन को कुछ ऐसे तथ्यों का ज्ञान नहीं था जिनका रोम के पतन से संबंध बाद के ऐतिहासिक शोधों से सिद्ध हुआ। आमतौर पर, विज्ञान और इतिहास में, जानकारी की कमी का पता बाद के शोधों से चलता है। अवलोकन की उन्नत तकनीकें और लंबे समय तक चलने वाले शोध इसे अधिकांशतः एक सामान्य प्रक्रिया बना देते हैं। लेकिन दर्शनशास्त्र में, ऐसा नहीं होता। समय बीतने के साथ लाभ और हानि दोनों समान रूप से संभव हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन दार्शनिकों ने स्पष्ट रूप से उन चीजों में अंतर किया जो मनुष्य महसूस कर सकता है और कल्पना कर सकता है तथा जो वह समझ सकता है। फिर भी, अठारहवीं शताब्दी में, डेविड ह्यूम ने छवियों और विचारों के बीच इस अंतर के बारे में अपनी अज्ञानता प्रकट की, जबकि यह अंतर पूर्व के दार्शनिकों के कार्यों द्वारा अच्छी तरह से स्थापित किया जा चुका था।

(2) किसी लेखक को गलत जानकारी वाला कहना यह कहना है कि वह ऐसी बात कहता है जो सच नहीं है। उसकी यह गलती ज्ञान की कमी के कारण हो सकती है, लेकिन यह उससे कहीं अधिक है। इसका कारण चाहे जो भी हो, इसमें तथ्यों के विपरीत कथन शामिल हैं। लेखक ऐसी बात को सत्य या अधिक संभावित बता रहा है जो वास्तव में असत्य या कम संभावित है। वह ऐसे ज्ञान का दावा कर रहा है जो उसके पास नहीं है। इस प्रकार की त्रुटि को, निश्चित रूप से, तभी इंगित किया जाना चाहिए जब वह लेखक के निष्कर्षों से संबंधित हो। और इस टिप्पणी का समर्थन करने के लिए आपको लेखक के विपरीत किसी स्थिति की सत्यता या अधिक संभावना को साबित करने में सक्षम होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, एक राजनीतिक ग्रंथ में, स्पिनोज़ा ऐसा प्रतीत होता है कि

यह कहना कि लोकतंत्र राजतंत्र की तुलना में शासन का अधिक आदिम प्रकार है, राजनीतिक इतिहास के सुस्थापित तथ्यों के विपरीत है। इस संबंध में स्पिनोज़ा की त्रुटि उनके तर्क पर प्रभाव डालती है। अरस्तू को पशु प्रजनन में नर कारक की भूमिका के बारे में गलत जानकारी थी, और परिणामस्वरूप वे प्रजनन प्रक्रियाओं के बारे में निराधार निष्कर्षों पर पहुँचे। थॉमस

एक्विनास ने गलती से यह मान लिया था कि खगोलीय पिंड केवल अपनी स्थिति बदलते हैं, अन्यथा वे अपरिवर्तनीय हैं।

आधुनिक खगोल भौतिकी इस त्रुटि को सुधारती है और इस प्रकार प्राचीन और मध्यकालीन खगोल विज्ञान में सुधार लाती है। लेकिन यहाँ एक त्रुटि है जिसका महत्व सीमित है। इसे करने से सेंट थॉमस के उस आध्यात्मिक सिद्धांत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता जिसमें उन्होंने सभी इंद्रियगोचर वस्तुओं को पदार्थ और रूप से निर्मित बताया है।

आलोचना के ये पहले दो बिंदु कुछ हद तक संबंधित हैं। जैसा कि हमने देखा है, जानकारी की कमी गलत कथनों का कारण हो सकती है। इसके अलावा, जब भी कोई व्यक्ति गलत जानकारी से वाकिफ होता है, तो वह सत्य से भी अनभिज्ञ होता है। लेकिन यह मायने रखता है कि दोष केवल नकारात्मक है या सकारात्मक भी। प्रासंगिक ज्ञान की कमी से कुछ समस्याओं का समाधान करना या कुछ निष्कर्षों का समर्थन करना असंभव हो जाता है। हालांकि, गलत धारणाएं गलत निष्कर्षों और अस्थिर समाधानों की ओर ले जाती हैं। इन दोनों बिंदुओं को मिलाकर लेखक के आधार में कमियां पाई जाती हैं। उसे अपने पास मौजूद ज्ञान से अधिक ज्ञान की आवश्यकता है। उसके साक्ष्य और तर्क मात्रा और गुणवत्ता दोनों में पर्याप्त नहीं हैं।

(3) किसी लेखक को तर्कहीन कहना, उसके तर्क में त्रुटि होने का संकेत है। सामान्यतः, त्रुटियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक है तर्कहीनता, जिसका अर्थ है कि जो निष्कर्ष निकाला गया है वह दिए गए तर्कों से मेल नहीं खाता। दूसरी है असंगति, जिसका अर्थ है कि लेखक द्वारा कही गई दो बातें परस्पर विरोधी हैं। इन दोनों आलोचनाओं को करने के लिए, पाठक को यह स्पष्ट करना होगा कि लेखक के तर्क में किस प्रकार की त्रुटि है। इस त्रुटि पर तभी ध्यान दिया जाता है जब इससे मुख्य निष्कर्ष प्रभावित होते हैं। एक पुस्तक में अप्रासंगिक पहलुओं में भी त्रुटि हो सकती है।

इस तीसरे बिंदु को समझाना थोड़ा मुश्किल है, क्योंकि महान ग्रंथों में तर्क में स्पष्ट चूक होना दुर्लभ है। जब कभी चूक होती भी है, तो वह आमतौर पर बड़ी चतुराई से छिपी होती है, और उसे खोजने के लिए एक गहन पाठक की आवश्यकता होती है। लेकिन मैं आपको एक स्पष्ट त्रुटि दिखा सकता हूँ जो मुझे मैकियावेली की पुस्तक 'प्रिंस' के हालिया पठन में मिली: सभी राज्यों, चाहे नए हों या पुराने, की मुख्य नींव अच्छे कानून होते हैं। चूंकि जहाँ राज्य अच्छी तरह से सशस्त्र नहीं है, वहाँ अच्छे कानून नहीं हो सकते, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि जहाँ राज्य अच्छी तरह से सशस्त्र है, वहाँ अच्छे कानून हैं।

अब, इस तथ्य से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि अच्छे कानून पर्याप्त पुलिस बल पर निर्भर करते हैं, कि जहां पुलिस बल पर्याप्त है, वहां कानून भी अच्छे होंगे। मैं पहले तथ्य की अत्यधिक संदिग्ध प्रकृति को नजरअंदाज कर रहा हूं। मैं यहां केवल इस तर्कहीनता पर ध्यान दे रहा हूं। यह कहना अधिक सत्य है कि सुख स्वास्थ्य पर निर्भर करता है (बजाय इसके कि अच्छे कानून प्रभावी

पुलिस बल पर निर्भर करते हैं), लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि सभी स्वस्थ लोग सुखी होते हैं।

अपने ग्रंथ 'एलिमेंट्स ऑफ लॉ' में हॉब्स एक जगह तर्क देते हैं कि सभी पिंड गतिमान पदार्थ की मात्रा मात्र हैं। वे कहते हैं कि पिंडों के जगत में कोई गुण नहीं होते। फिर दूसरी जगह वे तर्क देते हैं कि मनुष्य स्वयं एक पिंड मात्र है, या गतिमान परमाणु पिंडों का समूह है। फिर भी, इंद्रियजन्य गुणों — रंग, गंध, स्वाद आदि—के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए वे निष्कर्ष निकालते हैं कि ये मस्तिष्क में परमाणुओं की गति मात्र हैं। यह निष्कर्ष उनके पहले के मत से असंगत है, अर्थात् गतिमान पिंडों का जगत गुणहीन है। गतिमान सभी पिंडों के बारे में जो कहा गया है, वह उनके किसी भी समूह पर लागू होना चाहिए, जिसमें मस्तिष्क के परमाणु भी शामिल हैं।

आलोचना का यह तीसरा बिंदु अन्य दो बिंदुओं से संबंधित है। एक लेखक अपने प्रमाणों या सिद्धांतों से निकलने वाले निष्कर्षों को निकालने में विफल हो सकता है। तब उसका तर्क अधूरा रह जाता है। लेकिन हम यहाँ मुख्य रूप से उस स्थिति पर विचार कर रहे हैं जिसमें वह ठोस आधारों से भी कमजोर तर्क देता है। यह दिलचस्प तो है, लेकिन कम महत्वपूर्ण है, कि ऐसे आधारों से तर्क करने में तर्कशक्ति की कमी का पता लगाया जाए जो स्वयं असत्य हों, या ऐसे प्रमाणों से जो अपर्याप्त हों।

जो व्यक्ति ठोस आधारों से गलत निष्कर्ष पर पहुँचता है, वह एक तरह से गलत जानकारी से ग्रस्त है। लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि गलत कथन किस प्रकार के तर्क दोष के कारण होते हैं और किस प्रकार के गलत कथन अन्य दोषों, विशेष रूप से प्रासंगिक विवरणों के अपर्याप्त ज्ञान के कारण होते हैं, इनमें अंतर करना आवश्यक है।

- 4 -

हमने अभी जिन तीन आलोचनात्मक बिंदुओं पर विचार किया है, वे लेखक के कथनों और तर्क की सत्यता से संबंधित हैं। आइए अब पाठक द्वारा की जा सकने वाली चौथी प्रतिकूल टिप्पणी पर ध्यान दें। यह लेखक द्वारा अपनी योजना के क्रियान्वयन की पूर्णता से संबंधित है—यानी उसने अपने द्वारा चुने गए कार्य को कितनी कुशलता से पूरा किया है।

चौथी टिप्पणी पर आगे बढ़ने से पहले, एक बात ध्यान देने योग्य है। चूंकि आपने कहा है कि आप समझते हैं, इसलिए इन पहली तीन टिप्पणियों में से किसी का भी समर्थन न करने का अर्थ है कि आप लेखक की बात से सहमत हैं। इस संबंध में आपके पास कोई स्वतंत्रता नहीं है। यह आपका विशेषाधिकार नहीं है कि आप सहमत हों या असहमत।

चूंकि आप यह साबित नहीं कर पाए हैं कि लेखक प्रासंगिक मामलों पर अनभिज्ञ, गलत जानकारी रखने वाला या तर्कहीन है, इसलिए आप असहमत नहीं हो सकते। आपको सहमत होना ही होगा। आप यह नहीं कह सकते, जैसा कि कई छात्र और अन्य लोग कहते

हैं, "मुझे आपकी बातों में कोई त्रुटि नहीं दिखती, और तर्क में भी कोई गलती नहीं है, लेकिन मैं आपके निष्कर्षों से सहमत नहीं हूं।" ऐसा कहने का आपका मतलब केवल यही हो सकता है कि आपको निष्कर्ष पसंद नहीं आए। आप असहमत नहीं हो रहे हैं। आप अपनी भावनाओं या पूर्वाग्रहों को व्यक्त कर रहे हैं। यदि आप आश्वस्त हैं, तो आपको इसे स्वीकार करना चाहिए। (यदि इन तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक या अधिक का समर्थन करने में आपकी विफलता के बावजूद, आप अभी भी ईमानदारी से आश्वस्त नहीं हैं, तो शायद आपको शुरू में यह नहीं कहना चाहिए था कि आप समझ गए हैं।)

पहली तीन टिप्पणियाँ लेखक के शब्दों, प्रस्तावों और तर्कों से संबंधित हैं।

ये वे तत्व हैं जिनका उपयोग उन्होंने उन समस्याओं को हल करने के लिए किया जिनसे उनके प्रयासों की शुरुआत हुई। चौथी टिप्पणी—कि पुस्तक अपूर्ण है— संपूर्ण संरचना पर प्रभाव डालती है।

(4) किसी लेखक के विश्लेषण को अपूर्ण कहना यह कहना है कि उसने अपने आरंभ में उठाए गए सभी मुद्दों को हल नहीं किया है, या उसने अपनी सामग्री का यथासंभव बेहतर उपयोग नहीं किया है, या उसने उनके सभी निहितार्थों और परिणामों को नहीं समझा है, या वह अपने कार्य से संबंधित प्रासंगिक भेदों को स्पष्ट करने में विफल रहा है। केवल यह कहना पर्याप्त नहीं है कि कोई पुस्तक अपूर्ण है। कोई भी किसी भी पुस्तक के बारे में ऐसा कह सकता है। मनुष्य सीमित हैं, और उनकी रचनाएँ भी, प्रत्येक रचना। इसलिए, यह टिप्पणी करने का कोई अर्थ नहीं है, जब तक कि पाठक स्वयं एक ज्ञाता के रूप में अपने प्रयासों से या अन्य पुस्तकों की सहायता से अपूर्णता को सटीक रूप से परिभाषित न कर सके।

आइए इस बात को संक्षेप में समझाते हैं। अरस्तू के 'पॉलिटिक्स' में शासन के प्रकारों का विश्लेषण अधूरा है। अपने समय की सीमाओं और दास प्रथा की गलत स्वीकृति के कारण, अरस्तू सार्वभौमिक पुरुष मताधिकार पर आधारित सच्चे लोकतांत्रिक संविधान पर विचार करने या उसकी कल्पना करने में भी विफल रहे; न ही वे प्रतिनिधि सरकार या आधुनिक संघीय राज्य की कल्पना कर सके। इन राजनीतिक वास्तविकताओं को समझने के लिए उनके विश्लेषण को विस्तारित करना होगा। यूक्लिड का 'एलिमेंट्स ऑफ ज्योमेट्री' एक अधूरा विवरण है क्योंकि उन्होंने समानांतर रेखाओं के संबंध में अन्य मान्यताओं पर विचार नहीं किया। आधुनिक ज्यामितीय रचनाएँ, इन अन्य मान्यताओं को शामिल करते हुए, इस कमी को पूरा करती हैं। ड्यूई की 'हाउ वी थिंक' (जैसा कि मैंने पहले बताया), चिंतन का एक अधूरा विश्लेषण है क्योंकि यह अन्वेषण और खोज के साथ-साथ पढ़ने या निर्देश द्वारा सीखने में होने वाले चिंतन को भी शामिल नहीं करता है। व्यक्तिगत अमरता में विश्वास करने वाले एक ईसाई के लिए, अरस्तू का 'एथिक्स' मानव सुख का एक अधूरा विवरण है क्योंकि यह केवल इस जीवन के सुख तक ही सीमित है।

यह चौथा बिंदु असहमति का आधार नहीं है। यह केवल इस हद तक आलोचनात्मक है कि यह लेखक की उपलब्धि की सीमाओं को दर्शाता है। यदि कोई पाठक किसी पुस्तक से

आंशिक रूप से सहमत है—क्योंकि उसे अन्य आलोचनाओं के बिंदुओं पर आपत्ति करने का कोई कारण नहीं मिलता—तो भी वह पुस्तक की अपूर्णता से संबंधित इस चौथे बिंदु के आलोक में समग्र रूप से अपना निर्णय स्थगित कर सकता है। पाठक द्वारा निर्णय स्थगित करना लेखक की अपनी समस्याओं को पूर्णतः हल करने में विफलता की प्रतिक्रिया है।

एक ही विषय पर लिखी गई संबंधित पुस्तकों की तुलना इन चार मानदंडों के आधार पर की जा सकती है। एक पुस्तक दूसरी से बेहतर तब होती है जब वह अधिक सत्य बोलती है और कम गलतियाँ करती है। यदि हम ज्ञान के लिए पढ़ रहे हैं, तो स्पष्ट रूप से वही पुस्तक सर्वोत्तम है जो किसी विषय को सबसे उपयुक्त ढंग से प्रस्तुत करती है। एक लेखक के पास जानकारी की कमी हो सकती है जबकि दूसरे के पास हो; एक लेखक कुछ गलत धारणाएँ बना सकता है जबकि दूसरा उनसे मुक्त हो सकता है; एक लेखक समान आधारों पर तर्क देने में दूसरे से कम प्रभावी हो सकता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण तुलना प्रत्येक लेखक द्वारा प्रस्तुत विश्लेषण की पूर्णता के संदर्भ में की जाती है। ऐसी पूर्णता का माप तुलना की जा रही पुस्तकों में निहित वैध और महत्वपूर्ण भेदों की संख्या में पाया जाता है। अब आप समझ सकते हैं कि लेखक की शब्दावली को समझना कितना उपयोगी है। विशिष्ट शब्दावली की संख्या भेदों की संख्या के साथ सहसंबंधित होती है।

आप यह भी देख सकते हैं कि चौथी आलोचनात्मक टिप्पणी किसी भी पुस्तक के तीनों पठनों को कैसे आपस में जोड़ती है। पहले पठन का अंतिम चरण उन समस्याओं को जानना है जिन्हें लेखक हल करने का प्रयास कर रहा है। दूसरे पठन का अंतिम चरण यह जानना है कि लेखक ने इनमें से किन समस्याओं का समाधान किया और किनका नहीं। आलोचना का अंतिम चरण पूर्णता से संबंधित है। यह पहले पठन को इस हद तक प्रभावित करता है कि यह विचार करता है कि लेखक ने अपनी समस्याओं को कितनी पर्याप्तता से व्यक्त किया है, और दूसरे पठन को इस हद तक प्रभावित करता है कि यह मापता है कि उसने उनका समाधान कितनी संतोषजनक ढंग से किया है।

- 5 -

अब हमने पढ़ने के नियमों की सूची और चर्चा को संक्षेप में पूरा कर लिया है। जब आप इन नियमों के अनुसार कोई पुस्तक पढ़ते हैं, तो आपने कुछ हासिल किया है। मुझे आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं है। आप स्वयं ऐसा महसूस करेंगे। लेकिन शायद मुझे आपको याद दिलाना चाहिए कि ये नियम एक आदर्श प्रदर्शन का वर्णन करते हैं। बहुत कम लोगों ने कभी किसी पुस्तक को इस आदर्श तरीके से पढ़ा है, और जिन्होंने पढ़ा भी है, उन्होंने शायद इस तरह से बहुत कम पुस्तकें पढ़ी हैं। फिर भी, आदर्श ही उपलब्धि का मापदंड बना रहता है। आप एक अच्छे पाठक हैं, जिस हद तक आप इसके करीब पहुंचते हैं।

जब हम किसी को "पढ़ा-लिखा" कहते हैं, तो हमें इस आदर्श को ध्यान में रखना चाहिए। मुझे डर है कि अक्सर हम इस वाक्यांश का प्रयोग पढ़ने की गुणवत्ता के बजाय पढ़ने की मात्रा के लिए करते हैं।

जिस व्यक्ति ने व्यापक पठन-पाठन किया हो लेकिन अच्छी तरह से नहीं किया हो, वह प्रशंसा के बजाय दया का पात्र है, क्योंकि उसका बहुत सारा प्रयास व्यर्थ और निरर्थक रहा है।

महान लेखक हमेशा से ही महान पाठक रहे हैं, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि उन्होंने वे सभी पुस्तकें पढ़ीं जो उनके समय में महान और अनिवार्य मानी जाती थीं। कई मामलों में, उन्होंने आज के कुछ प्रतिष्ठित कॉलेजों में अपेक्षित पुस्तकों की तुलना में कम पुस्तकें पढ़ीं, लेकिन जो भी उन्होंने पढ़ीं, उन्हें उन्होंने अच्छी तरह पढ़ा। इन पुस्तकों पर महारत हासिल करने के कारण वे इनके लेखकों के समकक्ष बन गए। वे स्वयं में विद्वान कहलाने के योग्य थे। स्वाभाविक रूप से, एक अच्छा विद्यार्थी अक्सर शिक्षक बन जाता है, और इसी प्रकार एक अच्छा पाठक लेखक बन जाता है।

मेरा उद्देश्य आपको पढ़ने से लेखन की ओर ले जाना नहीं है। बल्कि, मैं आपको यह याद दिलाना चाहता हूँ कि अच्छे पठन के आदर्श तक पहुँचने का एकमात्र तरीका उन नियमों का पालन करना है जो मैंने एक ही पुस्तक को पढ़ने में बताए हैं, न कि बहुत सारी पुस्तकों से सतही तौर पर परिचित होने का प्रयास करना। बेशक, कई पुस्तकें ऐसी हैं जिन्हें अच्छी तरह से पढ़ना चाहिए। लेकिन इससे कहीं अधिक पुस्तकें ऐसी हैं जिन्हें केवल सरसरी तौर पर पढ़ना ही उचित है। सही मायने में सुशिक्षित होने के लिए, व्यक्ति को अपने ज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग करना आना चाहिए—प्रत्येक पुस्तक को उसकी खूबियों के अनुसार पढ़ना चाहिए।

अध्याय चौदह

और भी नियम

- 1 -

उपदेशक कहते हैं, "अनेक पुस्तकें बनाने का कोई अंत नहीं है, और अधिक अध्ययन शरीर को थका देता है।" अब तक आप भी पुस्तकों को पढ़ने और उसके नियमों के बारे में शायद ऐसा ही महसूस करते होंगे। इसलिए मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि इस अध्याय में आपको जिन नियमों की चिंता करनी है, उनकी संख्या नहीं बढ़ेगी। सभी बुनियादी नियम संक्षेप में बता दिए गए हैं।

यहां मैं विभिन्न प्रकार की पुस्तकों पर लागू होने वाले नियमों पर विचार करके अधिक विस्तार से समझाने का प्रयास करूंगा। और मैं संक्षेप में बाह्य पठन की समस्या पर भी चर्चा करूंगा।

अब तक तो हम पूरी तरह से किताब में ही डूबे रहे हैं। लेकिन किताब को अच्छी तरह से पढ़ने के लिए, उससे बाहर की चीजों को देखना कितना उपयोगी होता है, इस बारे में कुछ बातें बताना जरूरी है।

इन दोनों मामलों पर विचार करने से पहले, सभी नियमों को एक ही तालिका में प्रस्तुत करना सहायक हो सकता है, जिनमें से प्रत्येक को एक सरल निर्देश के रूप में लिखा गया हो।
I. पुस्तक की संरचना का विश्लेषण
1. पुस्तक को उसके प्रकार और विषयवस्तु के अनुसार वर्गीकृत करें।
2. पूरी किताब किस बारे में है, इसे अत्यंत संक्षिप्त रूप में बताएं।
3. इसके प्रमुख भागों को उनके क्रम और संबंध के अनुसार सूचीबद्ध करें, और इन भागों का विश्लेषण उसी प्रकार करें जैसे आपने पूरे का विश्लेषण किया है।
4. लेखक जिन समस्याओं को हल करने का प्रयास कर रहा है, उन्हें परिभाषित करें।
II. पुस्तक की विषयवस्तु की व्याख्या
1. लेखक के मूल शब्दों की व्याख्या करके उनके विचारों को समझने का प्रयास करें।
2. लेखक के सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों को समझकर उनके प्रमुख प्रस्तावों को आत्मसात करें।
3. वाक्यों के अनुक्रमों में लेखक के तर्कों को खोजकर या उनका निर्माण करके उन्हें समझें।
4. यह निर्धारित करें कि लेखक ने अपनी किन समस्याओं का समाधान किया और किनका नहीं; और बाद वाली समस्याओं में से, यह तय करें कि लेखक को किन समस्याओं को हल करने में अपनी विफलता का पता था।
III. ज्ञान के संचार के रूप में पुस्तक की आलोचना A. सामान्य सिद्धांत
1. विश्लेषण और व्याख्या पूरी करने से पहले आलोचना शुरू न करें। (जब तक आप यह न कह सकें कि "मैं समझ गया/गई") तब तक सहमत, असहमत या निर्णय स्थगित न करें। 5. विवादपूर्ण या आक्रामक तरीके से असहमति व्यक्त न करें।
3. ज्ञान और राय के बीच के अंतर का सम्मान करें, और अपने द्वारा किए गए किसी भी आलोचनात्मक निर्णय के लिए तर्क प्रस्तुत करें।
बी. आलोचना के बिंदुओं के लिए विशिष्ट मानदंड
1. यह दर्शाइए कि लेखक को किस बात की जानकारी नहीं है।
2. यह दर्शाइए कि लेखक को कहाँ गलत जानकारी दी गई है।

3. लेखक की अतार्किकता को दर्शाइए।

4. यह दर्शाइए कि लेखक का विश्लेषण या विवरण कहाँ अपूर्ण है।

नोट: इनमें से पहले तीन असहमति के मानदंड हैं। यदि आप इन सभी मानदंडों पर खरे नहीं उतरते हैं, तो आपको कम से कम आंशिक रूप से सहमत होना होगा, हालांकि चौथे बिंदु के आलोक में आप समग्र निर्णय को स्थगित कर सकते हैं।

किसी भी कला या अभ्यास के क्षेत्र में, नियम अक्सर बहुत सामान्य होते हैं, जो निराशाजनक हो सकता है। नियम जितने सामान्य होंगे, उनकी संख्या उतनी ही कम होगी, और यह एक लाभ है। लेकिन यह भी सच है कि नियम जितने सामान्य होंगे, वे उस वास्तविक स्थिति की जटिलताओं से उतने ही दूर हो जाएंगे जिसमें आप उनका पालन करने का प्रयास करते हैं।

मैंने यहाँ कुछ नियम बताए हैं जो किसी भी ज्ञानवर्धक पुस्तक पर लागू हो सकते हैं। लेकिन आप किसी भी पुस्तक को सामान्य रूप से नहीं पढ़ सकते। आप या तो यह पुस्तक पढ़ते हैं या वह, और हर पुस्तक एक विशेष प्रकार की होती है। यह इतिहास की पुस्तक हो सकती है, गणित की, राजनीतिक लेख हो सकता है या प्राकृतिक विज्ञान की। इसलिए इन नियमों का पालन करते समय आपको कुछ लचीलापन और अनुकूलनशीलता रखनी होगी। मुझे लगता है कि आप धीरे-धीरे समझ जाएंगे कि ये नियम विभिन्न प्रकार की पुस्तकों पर कैसे लागू होते हैं, लेकिन कुछ संकेत देकर मैं इस प्रक्रिया को थोड़ा तेज कर सकता हूँ।

अध्याय सात में हमने उपन्यास, नाटक और गीत जैसी सभी साहित्यिक रचनाओं को विचार से बाहर रखा था। मुझे विश्वास है कि अब आप समझ गए होंगे कि पढ़ने के ये नियम कथा साहित्य पर लागू नहीं होते। (बेशक, इसके लिए भी कुछ समान नियम हैं जिन्हें मैं अगले अध्याय में समझाने का प्रयास करूंगा।) फिर, अध्याय आठ में हमने देखा कि व्याख्यात्मक पुस्तकों का मूल विभाजन व्यावहारिक और सैद्धांतिक में होता है—वे पुस्तकें जो क्रियात्मक समस्याओं से संबंधित हैं और वे पुस्तकें जो केवल ज्ञान से संबंधित हैं। अब मैं प्रस्ताव करता हूं कि हम व्यावहारिक पुस्तकों की प्रकृति का थोड़ा और गहराई से अध्ययन करें।

- 2 -

किसी भी व्यावहारिक पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कभी भी उन व्यावहारिक समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती जिनसे वह संबंधित है। एक सैद्धांतिक पुस्तक अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकती है।

किसी चीज़ के स्वरूप से जुड़े सवालों के जवाब किताब में पूरी तरह मिल सकते हैं। लेकिन व्यावहारिक समस्या का समाधान केवल कर्म से ही संभव है। जब आपकी व्यावहारिक समस्या जीविका कमाने की हो, तो मित्र बनाने और लोगों को प्रभावित करने के तरीकों पर लिखी किताब उसे हल नहीं कर सकती, भले ही उसमें

कुछ सुझाव दिए गए हों। समस्या का समाधान कर्म से ही संभव है। इसे केवल जीविका कमाने से ही हल किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, इस पुस्तक को ही लीजिए। यह एक व्यावहारिक पुस्तक है। यदि आपकी रुचि व्यावहारिक है, तो आप पढ़ने की समस्या का समाधान करना चाहते हैं। जब तक आप पढ़ना नहीं सीख लेते, तब तक आप इस समस्या को हल हुआ नहीं मानेंगे। यह पुस्तक आपकी समस्या का समाधान स्वयं नहीं कर सकती। यह केवल आपकी सहायता कर सकती है। आपको वास्तव में पढ़ने का प्रयास करना होगा, न केवल इस पुस्तक को, बल्कि अन्य पुस्तकों को भी। मेरा कहने का यही अर्थ है कि व्यावहारिक समस्याओं का समाधान केवल कर्म से ही होता है, और कर्म केवल दुनिया में ही होता है, पुस्तकों में नहीं।

हर क्रिया किसी विशेष परिस्थिति में घटित होती है, हमेशा वर्तमान क्षण में और विशेष परिस्थितियों के अंतर्गत। आप सामान्य रूप से कार्य नहीं कर सकते। क्रिया से ठीक पहले आवश्यक व्यावहारिक निर्णय अत्यंत विशिष्ट होना चाहिए। इसे शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है, लेकिन ऐसा कम ही होता है। यह पुस्तकों में लगभग न के बराबर पाया जाता है, क्योंकि व्यावहारिक पुस्तक का लेखक अपने पाठकों के सामने आने वाली ठोस व्यावहारिक परिस्थितियों की कल्पना नहीं कर सकता। चाहे वह कितना भी मददगार बनने का प्रयास करे, वह उन्हें वास्तव में ठोस व्यावहारिक सलाह नहीं दे सकता। केवल वही व्यक्ति जो ठीक उसी परिस्थिति में हो, ऐसा कर सकता है।

व्यावहारिक पुस्तकों में मोटे तौर पर सामान्य नियम बताए जा सकते हैं जो एक ही प्रकार की कई विशिष्ट परिस्थितियों पर लागू होते हैं। ऐसी पुस्तकों का उपयोग करने वाले व्यक्ति को नियमों को विशिष्ट मामलों पर लागू करना होगा और इसलिए ऐसा करते समय व्यावहारिक विवेक का प्रयोग करना होगा। दूसरे शब्दों में, पाठक को स्वयं पुस्तक में कुछ जोड़ना होगा ताकि वह व्यवहार में उपयोगी हो सके। उसे उस विशिष्ट परिस्थिति का अपना ज्ञान और उस मामले में नियम कैसे लागू होता है, इसका अपना विवेक जोड़ना होगा।

कोई भी पुस्तक जिसमें नियम हों—निर्देश, कहावतें या किसी भी प्रकार के सामान्य निर्देश—आप आसानी से एक व्यावहारिक पुस्तक के रूप में पहचान लेंगे। लेकिन एक व्यावहारिक पुस्तक में केवल नियम ही नहीं होते। यह नियमों के मूल सिद्धांतों को बताने और उन्हें समझने योग्य बनाने का प्रयास भी कर सकती है। उदाहरण के लिए, पढ़ने के बारे में इस व्यावहारिक पुस्तक में, मैंने व्याकरणिक और तार्किक सिद्धांतों की संक्षिप्त व्याख्याओं के माध्यम से नियमों को समझाने का प्रयास किया है। नियमों के मूल सिद्धांत आमतौर पर स्वयं में वैज्ञानिक होते हैं, अर्थात् वे सैद्धांतिक ज्ञान के भाग होते हैं। इन्हें एक साथ मिलाकर, विषय का सिद्धांत बनता है। इस प्रकार, हम पुल निर्माण के सिद्धांत या पुल पर सीटी बजाने के सिद्धांत की बात करते हैं।

हमारा तात्पर्य उन सैद्धांतिक सिद्धांतों से है जो सुचारु कार्यप्रणाली के नियमों को उनके स्वरूप में ढालते हैं।

व्यावहारिक पुस्तकें दो मुख्य श्रेणियों में आती हैं। कुछ, जैसे यह पुस्तक, खाना पकाने की किताब और ड्राइवर की नियमावली, मुख्य रूप से नियमों का प्रस्तुतीकरण होती हैं। इनमें जो भी अन्य चर्चा होती है, वह नियमों के महत्व को समझाने के लिए ही होती है। मुझे इस प्रकार की कोई महान पुस्तक ज्ञात नहीं है। दूसरी प्रकार की व्यावहारिक पुस्तकें मुख्य रूप से उन सिद्धांतों से संबंधित होती हैं जिनसे नियम उत्पन्न होते हैं। अर्थशास्त्र, राजनीति और नैतिकता की सभी महान पुस्तकें इसी श्रेणी में आती हैं।

मेरा मतलब यह नहीं है कि यह अंतर एकदम स्पष्ट और पूर्ण है। सिद्धांत और नियम दोनों एक ही पुस्तक में मिल सकते हैं। बात केवल सापेक्षिक महत्व की है। पुस्तकों को इन दो श्रेणियों में बाँटने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी। किसी भी क्षेत्र में नियमों की पुस्तक को देखते ही व्यावहारिक पुस्तक के रूप में पहचाना जा सकता है। व्यावहारिक सिद्धांतों की पुस्तक पहली नज़र में सैद्धांतिक पुस्तक लग सकती है। एक अर्थ में यह है भी, जैसा कि हमने देखा है। यह एक विशेष प्रकार के व्यवहार के सिद्धांत से संबंधित है। फिर भी, आप हमेशा यह बता सकते हैं कि यह व्यावहारिक है। इसकी समस्याओं की प्रकृति ही इसे स्पष्ट कर देती है। यह हमेशा मानव व्यवहार के ऐसे क्षेत्र से संबंधित होती है जिसमें मनुष्य बेहतर या बदतर प्रदर्शन कर सकता है।

किसी नियम-पुस्तिका को पढ़ते समय, सबसे महत्वपूर्ण बातें जो ध्यान में रखनी चाहिए, वे नियम ही होते हैं। नियम को प्रत्यक्ष रूप से आज्ञावाचक वाक्य द्वारा व्यक्त किया जाता है, न कि प्रत्यक्ष कथन द्वारा। यह एक आदेश होता है। जैसे: "समय रहते एक सिलाई करके नौ बचाओ।" इसे प्रत्यक्ष कथन के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है, जैसे हम कहते हैं, "समय रहते एक सिलाई करने से नौ बचते हैं।"

दोनों प्रकार के कथन यह सुझाव देते हैं—अनिवार्य कथन थोड़ा अधिक ज़ोर देकर—कि नौ टांके बचाने के लिए तुरंत कार्रवाई करना सार्थक है।

चाहे इसे स्पष्ट रूप से कहा जाए या सीधे आदेश के रूप में, आप किसी भी नियम को हमेशा पहचान सकते हैं क्योंकि यह किसी निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किसी कार्य को सार्थक बताता है। इस प्रकार, पढ़ने का वह नियम जो आपको किसी बात को समझने का आदेश देता है, उसे एक सुझाव के रूप में भी कहा जा सकता है: अच्छा पढ़ना किसी बात को समझने पर आधारित होता है। यहाँ "अच्छा" शब्द ही मुख्य बात है। यह निहित है कि ऐसा पढ़ना सार्थक है।

इस तरह की व्यावहारिक पुस्तक में दिए गए तर्क आपको यह साबित करने का प्रयास होंगे कि नियम सही हैं। लेखक को आपको यह विश्वास दिलाने के लिए सिद्धांतों का सहारा लेना पड़ सकता है, या वह ठोस उदाहरणों में उनके क्रियान्वयन को दिखाकर उनकी सार्थकता को स्पष्ट कर सकता है। दोनों प्रकार के तर्कों पर ध्यान दें। सिद्धांतों का सहारा लेना आमतौर पर कम प्रभावी होता है, लेकिन इसका एक लाभ है। यह नियमों के उपयोग के उदाहरणों की तुलना में उनके पीछे के कारण को बेहतर ढंग से समझा सकता है।

नियमों के अंतर्निहित सिद्धांतों से संबंधित दूसरी प्रकार की व्यावहारिक पुस्तक में, प्रमुख प्रस्ताव और तर्क बिल्कुल वैसे ही होंगे जैसे किसी विशुद्ध सैद्धांतिक पुस्तक में होते हैं। प्रस्ताव यह कहेंगे कि कोई बात सत्य है, और तर्क यह सिद्ध करने का प्रयास करेंगे कि वह सत्य है।

लेकिन ऐसी किताब पढ़ने और विशुद्ध सैद्धांतिक किताब पढ़ने में एक महत्वपूर्ण अंतर है। चूंकि हल की जाने वाली अंतिम समस्याएं व्यावहारिक होती हैं—क्रियात्मक समस्याएं—इसलिए "व्यावहारिक सिद्धांतों" पर लिखी ऐसी किताबों का एक बुद्धिमान पाठक हमेशा पंक्तियों के बीच या हाशिये में लिखी बातों को समझने की कोशिश करता है। वह उन नियमों को खोजने का प्रयास करता है जो भले ही स्पष्ट रूप से न लिखे गए हों, लेकिन सिद्धांतों से निकाले जा सकते हैं। वह इससे भी आगे जा सकता है। वह यह पता लगाने का प्रयास कर सकता है कि व्यवहार में इन नियमों को कैसे लागू किया जाना चाहिए।

जब तक किसी व्यावहारिक पुस्तक को व्यावहारिक दृष्टिकोण से नहीं पढ़ा जाता, तब तक उसे व्यावहारिक नहीं माना जा सकता। व्यावहारिक पुस्तक को व्यावहारिक दृष्टिकोण से न पढ़ना उसे ठीक से न समझने के समान है। आप वास्तव में उसे समझ नहीं पाते, और निश्चित रूप से किसी अन्य तरीके से उसकी सही आलोचना भी नहीं कर सकते। यदि नियमों की सुगमता सिद्धांतों में निहित है, तो यह भी उतना ही सत्य है कि व्यावहारिक सिद्धांतों का महत्व उन नियमों में निहित है जिनकी ओर वे ले जाते हैं, उन कार्यों में निहित है जिनकी वे अनुशंसा करते हैं।

इससे यह पता चलता है कि व्यावहारिक पुस्तकों को समझने के लिए आपको क्या करना चाहिए। साथ ही, इससे आलोचनात्मक मूल्यांकन के अंतिम मापदंड भी स्पष्ट होते हैं। विशुद्ध सैद्धांतिक पुस्तकों के मामले में, सहमति या असहमति के मापदंड कही गई बातों की सत्यता से संबंधित होते हैं। लेकिन व्यावहारिक सत्य सैद्धांतिक सत्य से भिन्न होता है। आचरण का कोई नियम दो शर्तों पर व्यावहारिक रूप से सत्य होता है: एक यह कि वह कारगर हो; दूसरा यह कि उसका कारगर होना आपको सही लक्ष्य तक ले जाए, एक ऐसा लक्ष्य जिसकी आप वास्तव में कामना करते हैं।

मान लीजिए कि लेखक जिस लक्ष्य की ओर बढ़ने की सलाह देता है, वह आपको सही नहीं लगता। भले ही उसकी सलाह व्यावहारिक रूप से सही हो, यानी आपको उस लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक हो, फिर भी आप अंततः उससे सहमत नहीं होंगे। और इसी के आधार पर आप उसकी पुस्तक को व्यावहारिक रूप से सही या गलत मानेंगे। यदि आप ध्यानपूर्वक और समझदारी से पढ़ना उचित नहीं समझते, तो इस पुस्तक में आपके लिए व्यावहारिक सत्यता का अभाव है, चाहे मेरे नियम कितने भी सही क्यों न हों।

इसका अर्थ समझें। किसी सैद्धांतिक पुस्तक का मूल्यांकन करते समय, पाठक को अपने स्वयं के मूलभूत सिद्धांतों या मान्यताओं और लेखक के सिद्धांतों या मान्यताओं के बीच समानता या अंतर का अवलोकन करना चाहिए। वहीं, किसी व्यावहारिक पुस्तक का मूल्यांकन करते समय, सब कुछ उसके उद्देश्यों पर

निर्भर करता है। यदि आप आर्थिक न्याय के प्रति कार्ल मार्क्स के उत्साह से सहमत नहीं हैं, तो उनका आर्थिक सिद्धांत और उसमें सुझाए गए सुधार आपको व्यावहारिक रूप से गलत या अप्रासंगिक लग सकते हैं। आप सोच सकते हैं कि यथास्थिति बनाए रखना पूंजीवाद की बुराइयों को दूर करने से अधिक वांछनीय उद्देश्य है। ऐसे में, आप संभवतः क्रांतिकारी ग्रंथों को पूरी तरह से गलत समझेंगे। आपका मुख्य निर्णय हमेशा उद्देश्यों के संदर्भ में होगा, न कि साधनों के संदर्भ में। जिन उद्देश्यों की हमें परवाह नहीं होती, उन्हें प्राप्त करने के लिए सबसे उपयुक्त साधनों में भी हमारा कोई व्यावहारिक हित नहीं होता।

- 3 -

यह संक्षिप्त चर्चा आपको किसी भी प्रकार की व्यावहारिक पुस्तक पढ़ते समय स्वयं से पूछे जाने वाले दो प्रमुख प्रश्नों का संकेत देती है। पहला प्रश्न है: लेखक के उद्देश्य क्या हैं? दूसरा प्रश्न है: वह किन साधनों का प्रस्ताव दे रहा है? सिद्धांतों पर आधारित पुस्तक के मामले में इन प्रश्नों का उत्तर देना नियमों पर आधारित पुस्तक की तुलना में अधिक कठिन हो सकता है। लक्ष्य और साधन शायद उतने स्पष्ट न हों। फिर भी, दोनों ही मामलों में इन प्रश्नों का उत्तर देना एक व्यावहारिक पुस्तक को समझने और उसकी आलोचना करने के लिए आवश्यक है।

यह आपको व्यावहारिक लेखन के उस पहलू की याद दिलाता है जिसका हमने पहले उल्लेख किया था। हर व्यावहारिक पुस्तक में भाषण कला या प्रचार का मिश्रण होता है। मैंने आज तक कोई ऐसी राजनीतिक पुस्तक नहीं पढ़ी है—चाहे वह कितनी भी सैद्धांतिक प्रतीत हो, चाहे उसमें वर्णित सिद्धांत कितने ही अमूर्त हों—जो पाठक को "सरकार के सर्वोत्तम स्वरूप" के बारे में समझाने का प्रयास न करती हो।

इसी प्रकार, नैतिक ग्रंथ पाठक को "अच्छे जीवन" के बारे में समझाने के साथ-साथ उसे जीने के तरीके भी सुझाते हैं।

आप समझ सकते हैं कि एक व्यावहारिक लेखक को हमेशा एक कुशल वक्ता या प्रचारक होना क्यों आवश्यक है। चूंकि उनके काम के बारे में आपका अंतिम निर्णय उस लक्ष्य के प्रति आपकी स्वीकृति पर निर्भर करेगा जिसके लिए वे साधन प्रस्तावित कर रहे हैं, इसलिए यह उनका दायित्व है कि वे आपको अपने लक्ष्य की ओर आकर्षित करें। इसके लिए, उन्हें इस तरह से तर्क देना होगा जो आपके दिल और दिमाग दोनों को छू ले। उन्हें आपकी भावनाओं से खेलना पड़ सकता है और आपकी इच्छाशक्ति को नियंत्रित करना पड़ सकता है। इसीलिए मैं उन्हें वक्ता या प्रचारक कहता हूँ।

इसमें कुछ भी गलत या दुर्भावनापूर्ण नहीं है। व्यावहारिक मामलों में यह स्वाभाविक है कि लोगों को एक निश्चित तरीके से सोचने और कार्य करने के लिए प्रेरित करना पड़ता है। व्यावहारिक चिंतन और क्रिया केवल मन का मामला नहीं है। इसमें आंतरिक प्रेरणा की भी भूमिका होती है। कोई भी व्यक्ति गंभीर व्यावहारिक निर्णय नहीं ले सकता या किसी कार्य में संलग्न नहीं हो सकता, जब तक कि वह आंतरिक प्रेरणा से प्रेरित न हो। व्यावहारिक पुस्तकों

लिखी गई पुस्तकें, या वे पुस्तकें पढ़नी पड़ सकती हैं जिन्हें उसने स्वयं पढ़ा और जिन पर उसने प्रतिक्रिया व्यक्त की।

किसी पुस्तक को पढ़ते समय उससे इतर मिलने वाली कोई भी सहायता बाह्य सहायता कहलाती है। आपको याद होगा कि मैंने अध्याय सात में आंतरिक नियमों और बाह्य सहायताओं के बीच अंतर बताया था। अन्य पुस्तकों का पठन किसी विशेष पुस्तक को पढ़ने में मिलने वाली सबसे स्पष्ट बाह्य सहायताओं में से एक है। मैं इस सहायता को "बाह्य पठन" कहना चाहूँगा। संक्षेप में, मैं यह कह सकता हूँ कि व्यावहारिक पुस्तकों की व्याख्या और आलोचना करने के लिए सैद्धांतिक पुस्तकों की तुलना में लेखक के बारे में बाह्य पठन कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

व्यावहारिक पुस्तकें पढ़ते समय मार्गदर्शन के लिए इसे एक अतिरिक्त नियम के रूप में याद रखें।

- 4 -

अब आइए सैद्धांतिक पुस्तकों के विशाल वर्ग पर ध्यान दें और देखें कि क्या वहाँ कोई अतिरिक्त नियम हैं। मुझे इस विशाल वर्ग को तीन प्रमुख भागों में बाँटना होगा, जिनका नाम मैंने अध्याय आठ में पहले ही ले लिया है और उन पर चर्चा की है: इतिहास, विज्ञान और दर्शन। इस जटिल विषय को संक्षेप में समझाने के लिए, मैं प्रत्येक प्रकार की पुस्तक के संबंध में केवल दो बातों पर चर्चा करूँगा। मैं पहले उस प्रकार की पुस्तक की समस्याओं से संबंधित विशिष्ट बातों—उसके शब्दों, प्रस्तावों और तर्कों—पर विचार करूँगा और फिर प्रासंगिक बाह्य सहायक तत्वों पर चर्चा करूँगा।

आप जानते ही होंगे कि इतिहास की किताब ज्ञान और कविता का संगम होती है। सभी महान ऐतिहासिक रचनाएँ कथात्मक हैं। वे एक कहानी सुनाती हैं। किसी भी कहानी में कथानक और पात्र होने चाहिए। उसमें घटनाएँ, घटनाओं की जटिलताएँ, चरमोत्कर्ष और परिणाम होने चाहिए। ये इतिहास के तत्व हैं, जिन्हें एक कथा के रूप में देखा जाता है—न कि शब्द, प्रस्ताव और तर्क। इसलिए, इतिहास को उसके काव्यात्मक पहलू में समझने के लिए, आपको कथा साहित्य पढ़ना आना चाहिए। मैंने अभी तक इसके नियमों पर चर्चा नहीं की है, लेकिन अधिकतर लोग इस तरह का पठन कौशल अच्छी तरह से कर सकते हैं। वे कहानी को समझना जानते हैं। वे अच्छी और बुरी कहानी के बीच का अंतर भी जानते हैं। इतिहास कल्पना से भी अधिक विचित्र हो सकता है, लेकिन इतिहासकार को फिर भी जो हुआ उसे विश्वसनीय बनाना होता है। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो वह एक बुरी, नीरस या यहाँ तक कि बेतुकी कहानी सुनाता है।

अगले अध्याय में मैं कथा साहित्य पढ़ने के नियमों पर चर्चा करूँगा। ये नियम आपको इतिहासों को उनके काव्यात्मक आयाम में कथा के रूप में व्याख्यायित और आलोचनात्मक रूप से समझने में सहायक हो सकते हैं। यहाँ मैं केवल उन्हीं तार्किक नियमों तक सीमित रहूँगा जिन पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। इतिहासों पर लागू होने पर, आपको दो प्रकार के कथनों में अंतर

करना होगा। सबसे पहले, विशिष्ट वस्तुओं—घटनाओं, व्यक्तियों या संस्थाओं — के बारे में सभी प्रस्ताव हैं। ये एक प्रकार से इतिहास का विषय हैं, जो कुछ भी कहा जा रहा है उसका सार हैं। जहाँ तक ऐसे कथन तर्क-वितर्क के अधीन हैं, लेखक अपने पाठ या फुटनोट्स में आपको यह विश्वास दिलाने के लिए प्रमाण देने का प्रयास कर सकता है कि घटनाएँ इस प्रकार घटीं, न कि किसी और प्रकार से।

दूसरे स्थान पर, इतिहासकार अपने द्वारा वर्णित तथ्यों की कुछ सामान्य व्याख्या कर सकता है। यह व्याख्या कहानी सुनाने के उसके तरीके में काव्यात्मक रूप से व्यक्त हो सकती है—कि वह किसे नायक बनाता है, चरमोत्कर्ष कहाँ रखता है, और परिणाम कैसे प्रस्तुत करता है। लेकिन यह उसके द्वारा व्यक्त किए गए कुछ सामान्यीकरणों में भी व्यक्त हो सकती है। आपको इस प्रकार के सामान्य कथनों को खोजना होगा। हेरोडोटस, फारसी युद्धों के अपने इतिहास में, शुरुआत में ही आपको बता देता है कि उसका मुख्य विचार क्या है।

जो शहर कभी महान थे, उनमें से अधिकांश अब महत्वहीन हो गए हैं; और जो वर्तमान में शक्तिशाली हैं, वे पुराने समय में कमजोर थे। इसलिए मैं दोनों के बारे में समान रूप से चर्चा करूंगा, क्योंकि मुझे विश्वास है कि समृद्धि कभी भी एक स्थान पर लंबे समय तक नहीं टिकती।

मैंने उस सामान्यीकरण को इटैलिक में लिखा है जिसे हेरोडोटस अपनी कहानी में बार-बार उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है। वह इस कथन को सिद्ध करने का प्रयास नहीं करता। वह आपको अनगिनत उदाहरण दिखाकर संतुष्ट हो जाता है जिनमें यह सत्य प्रतीत होता है। इतिहासकार आमतौर पर अपने सामान्यीकरणों के लिए इसी तरह तर्क देते हैं।

कुछ इतिहासकार मानव घटनाओं के क्रम के बारे में अपने सामान्य विचारों को तर्क के माध्यम से सही ठहराने का प्रयास करते हैं। मार्क्सवादी इतिहासकार न केवल इस तरह लिखते हैं कि वर्ग संघर्ष हमेशा स्पष्ट रूप से सामने आता है, बल्कि वे अक्सर यह तर्क भी देते हैं कि उनके "इतिहास के सिद्धांत" के अनुसार ऐसा होना ही चाहिए। वे यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि आर्थिक व्याख्या ही एकमात्र सही व्याख्या है। वहीं, कार्लाइल जैसे अन्य इतिहासकार यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि मानव घटनाएं नेताओं के कार्यों द्वारा नियंत्रित होती हैं। यह इतिहास का "महान व्यक्ति" सिद्धांत है।

इसलिए, इतिहास का आलोचनात्मक अध्ययन करने के लिए, आपको लेखक द्वारा तथ्यों की व्याख्या को समझना होगा। आपको उसका "सिद्धांत" जानना होगा, जिसका अर्थ है उसके सामान्यीकरण और, यदि संभव हो, तो उनके कारण। इसके अलावा किसी अन्य तरीके से आप यह नहीं बता सकते कि कुछ तथ्यों को क्यों चुना गया है और दूसरों को क्यों छोड़ा गया है, क्यों इस पर जोर दिया गया है और उस पर नहीं। इसे समझने का सबसे आसान तरीका है एक ही विषय पर लिखे गए दो अलग-अलग दृष्टिकोणों वाले इतिहासों को पढ़ना। (इतिहास और विज्ञान के बीच एक अंतर यह है कि एक ही घटना के दो या दो से अधिक अच्छे इतिहास हो सकते हैं - भले ही

वे एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हों, फिर भी समान रूप से विश्वसनीय और प्रामाणिक हों। किसी भी विषय पर, किसी भी समय केवल एक ही अच्छा वैज्ञानिक विवरण होता है।)

इस प्रकार, बाहरी पठन इतिहास की पुस्तकों को समझने और उनका मूल्यांकन करने में सहायक होता है। तथ्यों की पुष्टि के लिए आप अन्य इतिहासों या संदर्भ पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं। यहां तक कि आप इतिहासकार द्वारा साक्ष्य एकत्र करने वाले मूल दस्तावेजों को देखने में भी रुचि ले सकते हैं। अन्य पुस्तकों को पढ़ना इतिहास को समझने का एकमात्र बाहरी साधन नहीं है।

आप उन स्थानों का भी दौरा कर सकते हैं जहाँ घटनाएँ घटी थीं, या स्मारकों और अतीत के अन्य अवशेषों को देख सकते हैं। गेटिसबर्ग के युद्धक्षेत्र में घूमने के अनुभव ने मुझे यह एहसास दिलाया कि अगर मैंने कभी हाथी की पीठ पर बैठकर आल्प्स पर्वतमाला को पार किया होता, तो मैं हैनिबल के आक्रमण की कहानी को कितना बेहतर ढंग से समझ पाता।

मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि एक महान इतिहासकार के पूर्वाग्रह को समझने का सबसे अच्छा तरीका है उसी घटना के अन्य महान इतिहासों को पढ़ना। लेकिन इतिहास में अक्सर पूर्वाग्रह से कहीं अधिक पहलू होते हैं।

प्रचार तो होता ही है। किसी दूर के समय या स्थान का इतिहास भी अक्सर स्थानीय लोगों के लिए एक उपदेश या आलोचना होता है, जैसे कि टैसिटस का जर्मनों का वृत्तांत और गिबन का रोम के पतन का स्पष्टीकरण। टैसिटस ने अपने साथी रोमनों के पतन और कमजोरी को शर्मिंदा करने के लिए ट्यूटोनिक जनजातियों के आदिम गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर बताया। गिबन ने स्थापित चर्चवादियों के विरुद्ध अपने समय के स्वतंत्र विचारकों और पादरी-विरोधी लोगों का समर्थन करने के लिए, बढ़ते ईसाई धर्म की भूमिका पर जोर दिया, जिसने गिरते रोम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सैद्धांतिक पुस्तकों में, इतिहास की पुस्तकें इस मामले में व्यावहारिक पुस्तकों के सबसे समान होती हैं। इसलिए, पाठक को दी जाने वाली सलाह एक ही है: इतिहासकार के चरित्र और उन स्थानीय परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें जिन्होंने उन्हें प्रेरित किया होगा। इस प्रकार के तथ्य न केवल उनके पूर्वाग्रह को स्पष्ट करेंगे बल्कि आपको उन नैतिक शिक्षाओं के लिए भी तैयार करेंगे जो इतिहास आपको सिखाता है।

- 5 -

वैज्ञानिक रचनाओं को पढ़ने के अतिरिक्त नियम बताना सबसे आसान है। वैज्ञानिक रचना से मेरा तात्पर्य किसी शोध क्षेत्र में प्राप्त निष्कर्षों या परिणामों की रिपोर्ट से है, चाहे वह प्रयोगशाला में प्रयोगात्मक रूप से की गई हो या प्रकृति के प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा। वैज्ञानिक समस्या हमेशा घटनाओं का यथासंभव सटीक वर्णन करना और विभिन्न प्रकार की घटनाओं के बीच अंतर्संबंधों का पता लगाना है।

विज्ञान की महान रचनाओं में कोई भाषणबाज़ी या प्रचार नहीं होता, हालांकि प्रारंभिक मान्यताओं के रूप में पूर्वाग्रह हो सकता है। आप इसे पहचान सकते हैं और ध्यान में रख सकते हैं, लेखक द्वारा मानी गई बातों और तर्कों द्वारा सिद्ध की गई बातों में अंतर करके। एक वैज्ञानिक लेखक जितना अधिक "वस्तुनिष्ठ" होता है, उतना ही वह स्पष्ट रूप से आपसे किसी बात को मान लेने का आग्रह करेगा। वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता प्रारंभिक पूर्वाग्रह की अनुपस्थिति नहीं है। यह पूर्वाग्रह को खुलकर स्वीकार करने से प्राप्त होती है।

वैज्ञानिक शोध में प्रमुख शब्दों का प्रयोग आमतौर पर असामान्य या तकनीकी शब्दों द्वारा किया जाता है। इन्हें पहचानना अपेक्षाकृत आसान होता है और इनके माध्यम से मुख्य अवधारणाओं को आसानी से समझा जा सकता है। मुख्य अवधारणाएँ हमेशा सामान्य होती हैं। एक वैज्ञानिक, इतिहासकार के विपरीत, समय और स्थान की सीमाओं से परे जाकर, यह बताने का प्रयास करता है कि चीजें सामान्यतः कैसी होती हैं और उनका व्यवहार कैसा होता है।

मुख्य समस्या तर्कों को लेकर है। जैसा कि आप जानते हैं, विज्ञान मुख्यतः आगमनात्मक है। इसका अर्थ यह है कि इसके प्राथमिक तर्क वे हैं जो प्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर किसी सामान्य कथन को सिद्ध करते हैं—चाहे वह किसी प्रयोग द्वारा निर्मित एक मामला हो या धैर्यपूर्वक किए गए शोध द्वारा एकत्रित अनेक मामले। इसी प्रकार के अन्य तर्क निगमनात्मक कहलाते हैं। इनमें किसी कथन को अन्य स्थापित कथनों द्वारा सिद्ध किया जाता है। प्रमाण के मामले में विज्ञान और दर्शन में बहुत अधिक अंतर नहीं है। परन्तु आगमनात्मक तर्क केवल विज्ञान में ही पाया जाता है।

किसी वैज्ञानिक पुस्तक में दिए गए आगमनात्मक तर्कों को समझने और उनका मूल्यांकन करने के लिए, आपको वैज्ञानिक द्वारा प्रस्तुत प्रमाणों को समझने में सक्षम होना चाहिए। कभी-कभी वैज्ञानिक द्वारा किए गए प्रयोग का वर्णन इतना सजीव और स्पष्ट होता है कि आपको कोई परेशानी नहीं होती। कभी- कभी वैज्ञानिक पुस्तक में चित्र और आरेख होते हैं जो वर्णित घटनाओं से परिचित कराने में सहायक होते हैं।

यदि ये उपाय विफल हो जाते हैं, तो पाठक के पास केवल एक ही विकल्प बचता है। उसे स्वयं प्रत्यक्ष रूप से आवश्यक विशेष अनुभव प्राप्त करना होगा। उसे प्रयोगशाला में प्रदर्शन देखना पड़ सकता है।

उसे पुस्तक में वर्णित उपकरणों के समान उपकरणों को देखना और छूना पड़ सकता है। उसे किसी संग्रहालय में जाकर नमूनों या मॉडलों का अवलोकन करना पड़ सकता है।

यही कारण है कि एनापोलिस स्थित सेंट जॉन कॉलेज, जहाँ सभी छात्र महान ग्रंथों का अध्ययन करते हैं, सभी छात्रों के लिए चार वर्ष का प्रयोगशाला कार्य अनिवार्य करता है। छात्र को न केवल सटीक मापन और प्रयोगशाला निर्माण के लिए उपकरणों का उपयोग करना सीखना चाहिए, बल्कि प्रत्यक्ष

अनुभव के माध्यम से विज्ञान के इतिहास के महत्वपूर्ण प्रयोगों से भी परिचित होना चाहिए। यहाँ शास्त्रीय प्रयोग और शास्त्रीय पुस्तकें दोनों ही मौजूद हैं। वैज्ञानिक ग्रंथ उन लोगों के लिए अधिक सुगम हो जाते हैं जिन्होंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है और स्वयं अपने हाथों से उस प्रक्रिया का अभ्यास किया है जिसके द्वारा एक महान वैज्ञानिक ने अपने ज्ञानोदय तक पहुँचने की प्रक्रिया का वर्णन किया है।

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि वैज्ञानिक पुस्तकों को पढ़ने में सबसे महत्वपूर्ण बाह्य सहायता अन्य पुस्तकों को पढ़ना नहीं, बल्कि संबंधित घटनाओं से प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करना है। प्राप्त किया जाने वाला अनुभव जितना अधिक विशिष्ट होता है, उतना ही अधिक अनिवार्य और प्राप्त करना उतना ही कठिन हो जाता है।

मेरा मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि बाहरी पठन सामग्री सहायक नहीं हो सकती। उसी विषय पर अन्य पुस्तकें समस्याओं पर प्रकाश डाल सकती हैं और हमें वर्तमान पुस्तक की आलोचनात्मक समीक्षा करने में मदद कर सकती हैं। वे गलत सूचनाओं, प्रमाणों की कमी, विश्लेषण की अपूर्णता जैसे बिंदुओं को उजागर कर सकती हैं। लेकिन मेरा अब भी मानना है कि प्राथमिक सहायता वही है जो किसी भी वैज्ञानिक पुस्तक के मूल में निहित आगमनात्मक तर्कों पर प्रत्यक्ष प्रकाश डालती है।

- 6 -

दार्शनिक रचनाओं के अध्ययन के कुछ विशेष पहलू हैं जो दर्शन और विज्ञान के बीच के अंतर से संबंधित हैं। मैं यहाँ केवल सैद्धांतिक दर्शन की रचनाओं पर विचार कर रहा हूँ, जैसे कि तत्वमीमांसा संबंधी ग्रंथ या प्रकृति के दर्शन पर पुस्तकें, क्योंकि नैतिक और राजनीतिक ग्रंथों पर पहले ही चर्चा हो चुकी है। ये व्यावहारिक दर्शन हैं।

दार्शनिक समस्या का उद्देश्य वस्तुओं की प्रकृति का वर्णन करना नहीं, बल्कि उसकी व्याख्या करना है। यह घटनाओं के आपसी संबंध से कहीं अधिक गहन प्रश्न उठाती है। यह वस्तुओं के अस्तित्व और परिवर्तनशील स्वरूप के मूल कारणों और परिस्थितियों तक पहुंचने का प्रयास करती है। ऐसी समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब उनके उत्तर स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाएं।

यहां पाठक का मुख्य प्रयास शब्दावली और प्रारंभिक प्रस्तावों को समझने में होना चाहिए। हालांकि दार्शनिक की शब्दावली तकनीकी है, लेकिन उनके द्वारा व्यक्त किए गए शब्द अक्सर आम बोलचाल से लिए गए हैं और एक विशेष अर्थ में प्रयोग किए गए हैं। इसके लिए पाठक को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। यदि वह परिचित शब्दों को परिचित तरीके से प्रयोग करने की प्रवृत्ति पर काबू नहीं पाता है, तो संभवतः वह पुस्तक को निरर्थक और अर्थहीन बना देगा। मैंने कई लोगों को घृणा या झुंझलाहट में दार्शनिक पुस्तक फेंकते देखा है, जबकि गलती उनकी थी, लेखक की नहीं। उन्होंने समझने की कोशिश तक नहीं की।

दार्शनिक चर्चा के मूलभूत शब्द, निःसंदेह, अमूर्त होते हैं। विज्ञान के भी ऐसे ही होते हैं। सामान्य ज्ञान को अमूर्त शब्दों के अलावा किसी और रूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता। अमूर्त अवधारणाओं में कुछ भी विशेष रूप से कठिन नहीं है। हम इनका उपयोग अपने जीवन के हर दिन और हर प्रकार की बातचीत में करते हैं। यदि आप मूर्त और अमूर्त के बीच के अंतर के स्थान पर मूर्त और सामान्य के बीच का अंतर स्थापित कर लें, तो आपको अमूर्त अवधारणाओं से कम भय होगा।

जब भी आप किसी भी विषय पर सामान्य रूप से बात करते हैं, तो आप अमूर्त अवधारणाओं का उपयोग कर रहे होते हैं। जो कुछ आप अपनी इंद्रियों से अनुभव कर सकते हैं, वह ठोस और विशिष्ट होता है। जो कुछ आप अपने मन से सोचते हैं, वह हमेशा अमूर्त और सामान्य होता है। किसी "अमूर्त शब्द" को समझना, उस शब्द द्वारा व्यक्त विचार को समझना है। "विचार होना" का अर्थ है किसी चीज़ के एक सामान्य पहलू को जानना, जिसका संदर्भ मन ले सकता है। आप उस पहलू को देख, छू या कल्पना भी नहीं कर सकते। यदि ऐसा संभव होता, तो इंद्रियों और मन में कोई अंतर नहीं होता। जो लोग विचारों के अर्थ को समझने की कोशिश करते हैं, वे स्वयं को भ्रमित कर लेते हैं और अंततः अमूर्त अवधारणाओं के प्रति निराशावादी भावना से ग्रस्त हो जाते हैं।

जिस प्रकार वैज्ञानिक पुस्तकों के मामले में पाठक का मुख्य ध्यान आगमनात्मक तर्कों पर होना चाहिए, उसी प्रकार यहां आपको दार्शनिक के सिद्धांतों पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए।

"सिद्धांत" शब्द का अर्थ है आरंभ। दार्शनिक जिन कथनों से आरंभ करता है, वे उसके सिद्धांत कहलाते हैं। ये या तो वे बातें हो सकती हैं जिन्हें वह आपसे अपने साथ स्वीकार करने का आग्रह करता है, या वे बातें जिन्हें वह स्वयंसिद्ध मानता है।

धारणाओं को लेकर कोई समस्या नहीं है। धारणाएँ बनाएँ और देखें कि आगे क्या होता है, भले ही आपकी अपनी धारणाएँ इसके विपरीत हों। आप अपने पूर्वाग्रहों के बारे में जितने स्पष्ट होंगे, दूसरों के पूर्वाग्रहों को गलत समझने की संभावना उतनी ही कम होगी।

लेकिन दूसरे प्रकार का सिद्धांत आपको परेशानी में डाल सकता है। मुझे ऐसी कोई दार्शनिक पुस्तक नहीं पता जिसमें लेखक द्वारा कुछ ऐसे प्रारंभिक कथन न हों जिन्हें वह स्वयंसिद्ध मानता हो। ये कथन एक मायने में वैज्ञानिक के प्रेरणों के समान हैं। ये अन्य कथनों द्वारा सिद्ध किए जाने के बजाय सीधे अनुभव से प्राप्त होते हैं।

अंतर उन अनुभवों में निहित है जिनसे ये सिद्धांत प्रेरित होते हैं। दार्शनिक मानव जाति के सामान्य अनुभवों का सहारा लेता है। वह प्रयोगशालाओं में काम नहीं करता या जमीनी स्तर पर शोध नहीं करता। इसलिए, दार्शनिक के प्रमुख सिद्धांतों को समझने और परखने के लिए आपको विशेष अनुभवों की बाहरी सहायता की आवश्यकता नहीं होती। वह आपको आपकी सामान्य बुद्धि और आपके दैनिक जीवन में देखे गए संसार के अवलोकन पर निर्भर रहने के लिए कहता है।

एक बार जब आप किसी दार्शनिक के शब्दों और सिद्धांतों को समझ लेते हैं, तो उनकी पुस्तक को पढ़ने में बाकी का काम कोई विशेष कठिनाई पैदा नहीं करता है। बेशक, आपको प्रमाणों का अनुसरण करना होगा।

आपको उनके विश्लेषण की प्रगति में उठाए गए प्रत्येक कदम पर ध्यान देना चाहिए—उनकी परिभाषाएँ और भेद, शब्दों का क्रम। लेकिन यही बात एक वैज्ञानिक पुस्तक के मामले में भी लागू होती है।

एक मामले में साक्ष्यों से परिचित होना और दूसरे मामले में सिद्धांतों को स्वीकार करना, शेष सभी तर्कों का अनुसरण करने के लिए अपरिहार्य शर्तें हैं।

दर्शनशास्त्र की एक अच्छी सैद्धांतिक रचना उतनी ही अलंकारिक और प्रचार-प्रसार से मुक्त होती है जितनी कि एक अच्छी वैज्ञानिक कृति। आपको लेखक के व्यक्तित्व के बारे में चिंता करने या उसकी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि की जांच करने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी, किसी दार्शनिक पुस्तक के साथ-साथ अन्य संदर्भों का अध्ययन करना उपयोगी होता है। आपको उन महान दार्शनिकों की रचनाएँ पढ़नी चाहिए जिन्होंने उन्हीं समस्याओं पर विचार किया है।

दार्शनिकों ने विचार के इतिहास में एक-दूसरे के साथ लंबी बातचीत की है। बेहतर होगा कि आप उनमें से किसी की भी बात पर अपनी राय बनाने से पहले उनकी बातचीत को सुन लें।

दार्शनिकों के बीच मतभेद होना उन्हें अन्य मनुष्यों से अलग नहीं बनाता। दार्शनिक पुस्तकें पढ़ते समय, सबसे पहले आपको ज्ञान और मत के बीच अंतर का सम्मान करने के सिद्धांत को याद रखना चाहिए। मतभेद होने से यह नहीं समझना चाहिए कि सब कुछ केवल मत का मामला है। लगातार मतभेद कभी-कभी महान अनसुलझे और शायद अघुलनशील समस्याओं को उजागर करते हैं। वे रहस्यों की ओर इशारा करते हैं। लेकिन जहाँ समस्याओं का उत्तर वास्तव में ज्ञान से दिया जा सकता है, वहाँ आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि मनुष्य एक-दूसरे से पर्याप्त समय तक बात करें तो वे सहमत हो सकते हैं।

दूसरों के मतभेदों की चिंता न करें। आपकी ज़िम्मेदारी केवल अपने स्वयं के निर्णय लेने की है। दार्शनिकों ने अपनी पुस्तकों के माध्यम से जो लंबी चर्चाएँ की हैं, उनके आधार पर आपको सत्य और असत्य का निर्णय करना होगा। जब आप किसी दार्शनिक पुस्तक को अच्छी तरह पढ़ लेते हैं—और इसका अर्थ है पर्याप्त बाह्य पठन के साथ-साथ कुशल व्याख्या—तब आप निर्णय लेने की स्थिति में होते हैं।

दार्शनिक प्रश्नों की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को उनका उत्तर स्वयं ही देना होता है। दूसरों की राय लेना प्रश्नों का समाधान नहीं, बल्कि उनसे बचना है।

इन सवालों के जवाब सिर्फ ज्ञान से ही मिल सकते हैं, और वह ज्ञान आपका अपना होना चाहिए। आप विशेषज्ञों की गवाही पर निर्भर नहीं रह सकते, जैसा कि विज्ञान के मामले में करना पड़ सकता है।

दार्शनिक पुस्तकों के संदर्भ में बाह्य पठन के बारे में दो और महत्वपूर्ण बिंदु हैं। अपना सारा समय दार्शनिकों, उनके जीवन और विचारों से संबंधित पुस्तकों को पढ़ने में व्यतीत न करें। दार्शनिकों को एक दूसरे के संदर्भ में समझने का प्रयास करें। और प्राचीन एवं मध्यकालीन दार्शनिकों, या यहाँ तक कि प्रारंभिक आधुनिक दार्शनिकों को पढ़ते समय, उनकी पुस्तकों में प्रकट होने वाली वैज्ञानिक ज्ञान की त्रुटियों या कमियों से विचलित न हों।

दार्शनिक ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से सामान्य अनुभव पर आधारित होता है, न कि विज्ञान के निष्कर्षों पर, न ही विशिष्ट शोध के परिणामों पर। यदि आप तर्कों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करेंगे, तो आप पाएंगे कि वैज्ञानिक मामलों के बारे में गलत जानकारी या जानकारी का अभाव अप्रासंगिक है।

यह दूसरा बिंदु इस बात को महत्वपूर्ण बनाता है कि आप जिस दार्शनिक को पढ़ रहे हैं, उसकी तिथि पर ध्यान दें। इससे न केवल आप उन्हें अपने से पहले और बाद के दार्शनिकों के साथ सही संदर्भ में रख पाएंगे, बल्कि उनके द्वारा अपने कुछ विचारों को स्पष्ट करने के लिए उपयोग की जाने वाली वैज्ञानिक उपमाओं को भी समझ पाएंगे। जिस शिष्टाचार के कारण आप विदेशी भाषा बोलने वालों के प्रति उदार होते हैं, उसी शिष्टाचार के कारण आपको उन बुद्धिमान व्यक्तियों के प्रति भी सहिष्णुता विकसित करनी चाहिए जिन्हें वे सभी तथ्य ज्ञात नहीं थे जो अब हमारे पास हैं। दोनों के पास कुछ ऐसा कहने को हो सकता है जिसे केवल अपनी संकीर्ण सोच के कारण न सुनना मूर्खता होगी।

- 7 -

मैंने विशेष रूप से दो प्रकार की पुस्तकों का उल्लेख करने का निर्णय लिया है। एक गणित है, दूसरी धर्मशास्त्र। इसका कारण यह है कि एक स्तर पर पढ़ने में ये पुस्तकें कोई विशेष समस्याएँ उत्पन्न नहीं करतीं, जबकि दूसरे स्तर पर इनमें प्रस्तुत समस्याएँ इतनी जटिल और कठिन हैं कि मेरे लिए यहाँ उनका समाधान करना संभव नहीं है। हालाँकि, शायद मैं इनके बारे में कुछ सरल बातें कह सकूँ।

सामान्यतः, गणित की पुस्तकों में प्रस्तुत प्रस्ताव और तर्क वैज्ञानिक की बजाय दार्शनिक प्रकार के होते हैं। दार्शनिक की तरह गणितज्ञ भी एक सैद्धांतिक विचारक होता है। वह कोई प्रयोग नहीं करता, कोई विशेष अवलोकन नहीं करता। स्वयंसिद्ध या मान्यता प्राप्त सिद्धांतों के आधार पर वह अपने निष्कर्ष सिद्ध करता है और समस्याओं का समाधान निकालता है।

गणित की पुस्तकों को पढ़ने में कठिनाई का एक कारण गणितज्ञ द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों का प्रकार है। वे एक विशेष भाषा में लिखते हैं, जो आम

बोलचाल की भाषा नहीं है। इसकी एक विशेष व्याकरण, एक विशेष वाक्य रचना और विशेष नियम होते हैं। कुछ हद तक, गणितीय प्रमाण की सटीक विधि भी इसी विषय की विशेषता है। हम पहले भी कई बार देख चुके हैं कि यूक्लिड और अन्य गणितीय लेखकों की शैली अन्य लेखकों से बिल्कुल भिन्न है।

गणित की पुस्तकों का कुशल पाठक बनने के लिए आपको गणित के विशेष व्याकरण और तर्क का ज्ञान होना आवश्यक है। जिन सामान्य नियमों पर हमने चर्चा की है, उन्हें विशेष सिद्धांतों के प्रकाश में समझकर ही इस विषय पर बुद्धिमानी से लागू किया जा सकता है। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि वैज्ञानिक तर्क और दार्शनिक प्रमाण का तर्क न केवल गणित से, बल्कि एक दूसरे से भी भिन्न है।

मैं आपको यहाँ यह बताना चाहता हूँ कि पढ़ने के नियमों के विभिन्न प्रकार की पुस्तकों और विषयों पर लागू होने के जितने विशिष्ट अनुप्रयोग हैं, उतने ही विशिष्ट व्याकरण और तर्क भी हैं।

धर्मशास्त्र के बारे में एक बात। यह दर्शनशास्त्र से इस मायने में भिन्न है कि इसके मूल सिद्धांत किसी धर्म के अनुयायियों द्वारा माने जाने वाले आस्था के विषय होते हैं। तर्क-वितर्क, जो उन आधारों पर आधारित होता है जिन तक स्वयं तर्क पहुँच सकता है, दार्शनिक होता है, धर्मशास्त्रीय नहीं। एक धर्मशास्त्रीय पुस्तक हमेशा सिद्धांतों और उन्हें घोषित करने वाले चर्च के अधिकार पर निर्भर करती है।

यदि आप किसी धर्म को नहीं मानते, यदि आप किसी चर्च से संबंधित नहीं हैं, तब भी आप किसी धर्मशास्त्रीय पुस्तक को अच्छी तरह से पढ़ सकते हैं, बशर्ते आप उसके सिद्धांतों का उसी सम्मान के साथ पालन करें जिस सम्मान के साथ आप किसी गणितज्ञ की मान्यताओं का पालन करते हैं। लेकिन आपको यह याद रखना चाहिए कि आस्था का सिद्धांत वह नहीं है जिसे विश्वासी मान लेते हैं। आस्था रखने वालों के लिए, यह ज्ञान का सबसे निश्चित रूप है, न कि कोई अनिश्चित राय।

धर्मशास्त्रीय ग्रंथों में एक प्रकार का बाह्य पठन होता है। आस्था रखने वाले लोग ईश्वर के प्रकट वचन में विश्वास करते हैं, जैसा कि वह पवित्र ग्रंथ में निहित है।

इस प्रकार, यहूदी धर्मशास्त्र के लिए यह आवश्यक है कि उसके पाठक पुराने नियम से परिचित हों, ईसाई धर्मशास्त्र के लिए नए नियम से, मोहम्मद धर्मशास्त्र के लिए कुरान से, और इसी प्रकार।

मुझे यहीं रुकना होगा। पवित्र ग्रंथ को पढ़ना—यदि आप यह विश्वास रखते हैं कि यह ईश्वर का वचन है—पठन के संपूर्ण क्षेत्र में सबसे कठिन समस्या है। धर्मग्रंथ को पढ़ने के तरीके पर अन्य सभी पहलुओं की तुलना में कहीं अधिक पुस्तकें लिखी गई हैं। ईश्वर का वचन स्पष्ट रूप से सबसे कठिन रचना है जिसे मनुष्य पढ़ सकता है। विश्वासियों का प्रयास इस कार्य की कठिनाई के अनुरूप रहा है। मेरा मानना है कि यह कहना उचित होगा कि, कम से कम यूरोपीय परंपरा में, बाइबिल एक से अधिक अर्थों में सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह न केवल सबसे व्यापक रूप से पढ़ी गई है बल्कि सबसे सावधानीपूर्वक पढ़ी गई भी है।

- 8 -

आइए, इस अध्याय को पढ़ने में सहायक बाह्य साधनों के संक्षिप्त सारांश के साथ समाप्त करें। आप जो पुस्तक पढ़ रहे हैं, उसके अलावा और क्या है? मेरे विचार से तीन चीजें विशेष रूप से प्रासंगिक हैं: अनुभव—सामान्य या विशेष; अन्य पुस्तकें; और जीवंत चर्चा। बाह्य कारक के रूप में अनुभव की भूमिका, मेरे विचार से, पर्याप्त रूप से स्पष्ट है। अन्य पुस्तकें कई प्रकार की हो सकती हैं। वे संदर्भ पुस्तकें, द्वितीयक पुस्तकें, टीकाएँ या अन्य महान पुस्तकें हो सकती हैं, जो समान या संबंधित विषयों पर चर्चा करती हों।

आंतरिक पठन के सभी नियमों का पालन करना किसी भी पुस्तक को अच्छी तरह से पढ़ने के लिए पर्याप्त नहीं होता, चाहे वह व्याख्यात्मक हो या आलोचनात्मक। अनुभव और अन्य पुस्तकें अपरिहार्य बाहरी सहायक तत्व हैं। छात्रों के साथ पुस्तकें पढ़ते समय, मैं अक्सर इस बात से आश्चर्यचकित होता हूँ कि वे इन सहायक तत्वों का उपयोग नहीं करते, जितना कि वे स्वयं पुस्तक को पढ़ना नहीं जानते।

ऐच्छिक पाठ्यक्रम प्रणाली के तहत, एक छात्र किसी पाठ्यक्रम को इस तरह लेता है जैसे कि वह कोई बिल्कुल अलग विषय हो।

एक पाठ्यक्रम का दूसरे से कोई संबंध नहीं है, और न ही कोई पाठ्यक्रम उनके सामान्य जीवन, उनकी महत्वपूर्ण समस्याओं, उनके दैनिक अनुभवों से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। इस तरह से पाठ्यक्रम लेने वाले छात्र पुस्तकों को भी इसी तरह पढ़ते हैं। वे एक पुस्तक को दूसरी से जोड़ने का प्रयास नहीं करते, भले ही वे स्पष्ट रूप से संबंधित हों, या लेखक की बातों को अपने अनुभवों से जोड़ने की कोशिश नहीं करते। वे अखबारों में फासीवाद और साम्यवाद के बारे में पढ़ते हैं। वे रेडियो पर लोकतंत्र के समर्थन में भाषण सुनते हैं। लेकिन उनमें से अधिकांश को यह कभी समझ में नहीं आता कि जिस महान राजनीतिक ग्रंथ को वे पढ़ रहे हैं, वह भी इन्हीं समस्याओं से संबंधित है, भले ही उसकी भाषा थोड़ी अधिक सुरुचिपूर्ण हो।

पिछले साल ही श्री हचिन्स और मैंने कुछ छात्रों के साथ राजनीतिक ग्रंथों की एक श्रृंखला पढ़ी। शुरुआत में, वे हर किताब को अलग-थलग करके पढ़ते थे। हालांकि अलग-अलग लेखक एक ही बात पर बहस कर रहे थे, फिर भी उन्हें एक किताब का ज़िक्र दूसरी किताब से करना ज़रूरी नहीं लगा। लेकिन जब ज़रूरत पड़ी तो अच्छे छात्र सभी बातों को आपस में जोड़ पाए। हमारी कक्षा का एक सबसे रोमांचक समय तब बीता जब श्री हचिन्स ने पूछा कि क्या हॉब्स हिटलर का बचाव करते, जिसने पास्टर नीमोलर को यातना शिविर में रखा था? क्या स्पिनोज़ा उन्हें छुड़ाने की कोशिश करते? लॉक और जॉन स्टुअर्ट मिल क्या करते?

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अंतरात्मा की स्वतंत्रता के मुद्दों ने मृत लेखकों को भी जीवित मुद्दों पर बात करते हुए पाया। छात्रों ने नीमोलर के मामले पर अपना-अपना पक्ष लिया, और किताबों ने भी - मिल बनाम हॉब्स, और लॉक बनाम स्पिनोज़ा। भले ही छात्र पास्टर नीमोलर की मदद न कर सके, लेकिन उनके मामले ने उन्हें व्यावहारिक परिणामों के आलोक में राजनीतिक सिद्धांतों

के विरोध को समझने में मदद की। जो छात्र पहले हॉब्स और स्पिनोज़ा में कुछ भी गलत नहीं देखते थे, अब उन्हें अपने पूर्व निर्णयों पर संदेह होने लगा।

बाह्य पठन की उपयोगिता, किसी पुस्तक को स्वयं पढ़ने में संदर्भ के महत्व का ही विस्तार है। हमने देखा है कि शब्दों और वाक्यों की व्याख्या करने और भावार्थ और कथनों को समझने के लिए संदर्भ का उपयोग कैसे आवश्यक है। जिस प्रकार पूरी पुस्तक अपने किसी भी भाग के लिए एक संदर्भ होती है, उसी प्रकार संबंधित पुस्तकें एक व्यापक संदर्भ प्रदान करती हैं जो आपको वर्तमान पुस्तक की व्याख्या करने में सहायता करती हैं।

मुझे महान पुस्तकों को मानव जाति की मूलभूत समस्याओं पर एक लंबी चर्चा के रूप में देखना अच्छा लगता है। महान लेखक महान पाठक थे, और उन्हें समझने का एक तरीका यह है कि हम उनके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों को पढ़ें। पाठक के रूप में, वे अन्य लेखकों के साथ संवाद करते थे, ठीक उसी तरह जैसे हममें से प्रत्येक व्यक्ति उन पुस्तकों के साथ संवाद करता है जिन्हें हम पढ़ते हैं, भले ही हम अन्य पुस्तकें न लिखें।

इस संवाद में शामिल होने के लिए, हमें महान ग्रंथों को एक दूसरे के संदर्भ में और कालानुक्रम का ध्यान रखते हुए पढ़ना होगा। ग्रंथों का संवाद समय के संदर्भ में होता है। समय यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। ग्रंथों को वर्तमान से अतीत की ओर या अतीत से वर्तमान की ओर पढ़ा जा सकता है। हालाँकि मुझे लगता है कि अतीत से वर्तमान की ओर पढ़ने का क्रम अधिक स्वाभाविक होने के कारण कुछ लाभ प्रदान करता है, फिर भी कालानुक्रम का ध्यान दोनों ही तरीकों से रखा जा सकता है।

पढ़ने का संवादात्मक पहलू (लेखकों का आपस में संवाद करना, और किसी भी पाठक का अपने लेखक से संवाद करना) ऊपर बताए गए तीसरे बाह्य कारक, अर्थात् जीवंत चर्चा की व्याख्या करता है। जीवंत चर्चा से मेरा तात्पर्य उस वास्तविक बातचीत से है जो हम दोनों मिलकर किसी ऐसी पुस्तक के बारे में कर सकते हैं जिसे हमने एक साथ पढ़ा हो।

हालांकि यह पढ़ने के लिए कोई अनिवार्य साधन नहीं है, लेकिन इससे निश्चित रूप से बहुत मदद मिलती है। इसीलिए श्री हचिन्स और मैं छात्रों से मिलकर पुस्तकों पर चर्चा करके अपना पुस्तक पठन पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। जो पाठक अन्य पाठकों के साथ पुस्तक पर अच्छी तरह चर्चा करना सीख जाता है, वह संभवतः अपने अध्ययन कक्ष में लेखक से अकेले में बेहतर संवाद स्थापित कर पाता है। वह लेखकों के बीच हुए संवाद को भी बेहतर ढंग से समझ पाता है।

भाग III.

पाठक का शेष जीवन

[xxxxxx xxx] [xxxxx xxxxxxxxx] [xxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxxxx]

xxxxxxx xxxxxxx

xxxxx xxx

- 1 -

xx xxx xx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxx xx, xx xxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xx xx xx xxxxxx xxxxx xxxxxxxx xxxxxx xxxxxxx xxx xxxxx xxxxx xxx xx xxx xxx xx xx xxxxxxx xxxxx xxx xxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxx xxx xxx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xx xx xxx xxx xx xxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxxxx xxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xxx xx xxxxxxxxx xxx xxxxxxx xxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxxx xxx xxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxx xx xxxxxxxxx xx xxx xx, xxxxxx xx xxxxxxxx xxx xxx-xxx xxxxxxxx xx xxxxxx xxx xxx xxxxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxx xx xx xx xx xx xxxxxxxxxx xxxxxxxx xxxxxx xx xx xxxxxx xxx xxxxxxxx xxxxx xxx: xxx xxxxxxxx xx xxx-xxx xxxxxxxxx xxxxxx xxxxxxx xxx-xxx xxxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxxxxx xx, xxx xx xxxxx xxx xxxxx xxxxx xxxxxx xx xxxxx, xxxxxx xxxxxxx xx xxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxxx xx xxx xx xxx xxx-xxx xxxxxxxx xx xxxxxxxxx xxx, xxxxx xxxxxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxx xxx xx xxxxxxx xxxxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxx xx xxxxxxxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx

xxxxxx xxxxxx xxxxxxxxx xxx xxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxx xxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxx xxx xxx, xxxxxxx xx xxxxxxxx xxxxxx xxxxx xxxxx xx xxxxx, xxxxxx xxxxxxx xxxxx xx xx xxxxx xxxxxx xxx-xxxxxxxxx xxxxxxxxx xx xxxxxx xx xx xxxxxx xxxxx xxxxxx xxxxxxxxxxx xx xxxxxxxxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxx xx xxxxxxx xx xx xxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxxx, xx xxx-xxxxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxxxx xxx xxxxxx xxx xxx, xxxxx xx xxxxxx xxx xxx xxxxxxxx xx xxxxxx xxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxx xxx xx xxx xx xx xxxxx xxxxxx xx xxxxxxx xx: xx xx xx xxxxx xxxxx xxxxxxx xxxxxx, xxxxx xx xx xxxxxxx, xx xxxxxx xxxxxxx xxxxx xxxxx xxxxx xxx xxxxxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxx xxxxxxxxx xx xxx, xxxxxx xx xxxxxxx xx xxxxxx xxx xx xxxxxx xxx xxxxxx xxxxxxx xxxxxx xxxxxx xx, xx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxx xxx xx xxxxxx xxxxx xxx, xx xxx xxxxx xxxxxxx xx xxx xx xx xxxxxxx xxxxx xx xxxxxx xxx xx xxxxxxx xx xxx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxxx, xxx xx xxx xxxxxx xxx xx xxx xxxxxxx xx xxx xx xxxxxxxx xx xxxxxxx xxxxxxxxxx xxxxxx

xxx xxx xxxxx xx xxxxxx xxx xx xxx xx xxx xx xxxxx xxxxxxxx xxx xx, xx xx xxxxxx xxxxxxxx xxxxxx

xxxxx xx xxxxxxxx xxxxx xxxxx xx xx xxxxxxx xxx xxxxxxxxx xxxxxx xx xxx xxxxxxx xxxxxxxxx xxxxxxxx xxxxx xx, xxxxxxxx xxx xx xxxxx xxxxxxxx xx xxxxxxxxxxx

साहित्य को पढ़ना सीखना अपने आप में कहीं अधिक कठिन है। फिर भी, आप शायद यह सोचें कि कथा साहित्य पढ़ने के लिए नियम बनाने की आवश्यकता उतनी जरूरी नहीं है, क्योंकि गैर-कथा साहित्य की तुलना में अधिक लोग कथा साहित्य पढ़ना और उससे कुछ सीख पाना जानते हैं।

यहां विरोधाभास पर ध्यान दें। एक ओर, मैं कहता हूं कि उपन्यास पढ़ने की कुशलता का विश्लेषण करना अधिक कठिन है; दूसरी ओर, यह एक तथ्य प्रतीत होता है कि यह कुशलता विज्ञान, दर्शन, राजनीति, अर्थशास्त्र और इतिहास पढ़ने की कला की तुलना में कहीं अधिक व्यापक रूप से पाई जाती है। बेशक, यह संभव है कि लोग उपन्यासों को बुद्धिमानी से पढ़ने की अपनी क्षमता के बारे में खुद को धोखा दे रहे हों। यदि ऐसा नहीं है, तो मुझे लगता है कि मैं इस विरोधाभास को एक अन्य तरीके से समझा सकता हूं।

कल्पनाशील साहित्य मुख्य रूप से आनंद प्रदान करता है, न कि शिक्षा। आनंदित होना ज्ञान प्राप्त करने से कहीं अधिक आसान है, परन्तु आनंद का कारण जानना कहीं अधिक कठिन है। सत्य की तुलना में सौंदर्य विश्लेषणात्मक दृष्टि से कहीं अधिक मायावी है।

अपने अध्यापन अनुभव से मैं जानता हूँ कि जब लोगों से पूछा जाता है कि उन्हें किसी उपन्यास में क्या पसंद आया, तो वे कितने अवाक रह जाते हैं। उन्हें यह तो स्पष्ट होता है कि उन्हें उपन्यास अच्छा लगा, लेकिन वे अपने आनंद का विस्तृत वर्णन नहीं कर पाते या यह नहीं बता पाते कि पुस्तक में ऐसा क्या था जिससे उन्हें आनंद मिला। आप कह सकते हैं कि इससे यह संकेत मिलता है कि लोग अच्छे उपन्यासकार तो हो सकते हैं, लेकिन अच्छे आलोचक नहीं। मुझे संदेह है कि यह बात ज़्यादा से ज़्यादा आधी ही सच है। किसी भी चीज़ का आलोचनात्मक पठन उसकी गहरी समझ पर निर्भर करता है। जो लोग किसी उपन्यास में अपनी पसंद नहीं बता पाते, उन्होंने शायद उसे सतही तौर पर ही पढ़ा है।

इस अंतिम बिंदु को स्पष्ट करने के लिए काल्पनिक साहित्य पढ़ने के सभी नियमों का स्पष्ट निरूपण आवश्यक होगा। मेरे पास ऐसा करने के लिए न तो पर्याप्त स्थान है और न ही पर्याप्त क्षमता, इसलिए मैं आपको दो संक्षिप्त तरीके सुझाता हूँ। पहला तरीका निषेध के माध्यम से आगे बढ़ता है, जो स्पष्ट बात को बताता है।

रचनात्मक नियमों के बजाय "न करने योग्य" शब्दों का प्रयोग किया गया है। दूसरा भाग सादृश्य के माध्यम से आगे बढ़ता है, जिसमें गैर-काल्पनिक साहित्य पढ़ने के नियमों को संक्षेप में काल्पनिक साहित्य पढ़ने के नियमों में अनुवादित किया गया है। मैं "काल्पनिक साहित्य" शब्द का प्रयोग सभी प्रकार के कल्पनात्मक साहित्य के लिए करूँगा, जिसमें गीतात्मक कविता के साथ-साथ उपन्यास और नाटक भी शामिल हैं। गीतात्मक कविता वास्तव में एक अलग और विस्तृत चर्चा की हकदार है। वास्तव में, व्याख्यात्मक पुस्तकों की तरह, जहाँ सामान्य नियमों को इतिहास, विज्ञान और दर्शन के लिए विशिष्ट बनाना आवश्यक है, वैसे ही यहाँ भी उपन्यास, नाटक और गीतात्मक कविता को

पढ़ने में शामिल विशेष समस्याओं पर विचार करना आवश्यक होगा। लेकिन हमें इससे कम में ही संतोष करना होगा।

- 2 -

निषेध के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए, सर्वप्रथम व्याख्यात्मक और कल्पनात्मक साहित्य के मूलभूत अंतरों को समझना आवश्यक है। ये अंतर ही यह स्पष्ट करेंगे कि हम किसी उपन्यास को दार्शनिक तर्क की तरह या किसी गीत को गणितीय प्रमाण की तरह क्यों नहीं पढ़ सकते।

सबसे स्पष्ट अंतर, जिसका पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, लेखन के दोनों प्रकारों के उद्देश्यों से संबंधित है। व्याख्यात्मक पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य शिक्षा देना होता है, जबकि कल्पनात्मक पुस्तकों का उद्देश्य आनंद प्रदान करना होता है। पहली प्रकार की पुस्तकें ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करती हैं—ऐसा ज्ञान जो पाठक को या तो पहले से प्राप्त है या हो सकता है। दूसरी प्रकार की पुस्तकें स्वयं एक अनुभव को संप्रेषित करने का प्रयास करती हैं—ऐसा अनुभव जो पाठक केवल पढ़कर ही प्राप्त कर सकता है—और यदि वे सफल होती हैं, तो वे पाठक को आनंदित करने के लिए कुछ प्रदान करती हैं। अपने भिन्न उद्देश्यों के कारण, ये दोनों प्रकार की रचनाएँ बुद्धि और कल्पना को अलग-अलग तरह से आकर्षित करती हैं।

हम अपनी इंद्रियों और कल्पना के प्रयोग से चीजों का अनुभव करते हैं। किसी भी बात को जानने के लिए हमें अपनी विवेक और तर्क शक्ति का उपयोग करना पड़ता है, जो बौद्धिक होती है। मेरा मतलब यह नहीं है कि हम कल्पना का उपयोग किए बिना सोच सकते हैं, या यह कि इंद्रिय अनुभव कभी भी किसी तार्किक चिंतन से अलग होता है। बात केवल जोर देने की है। कथा साहित्य मुख्य रूप से कल्पना को आकर्षित करता है। यही कारण है कि इसे कल्पनात्मक साहित्य कहा जाता है, विज्ञान और दर्शन के विपरीत, जो बौद्धिक होते हैं।

हम पढ़ने को एक ऐसी गतिविधि के रूप में देख रहे हैं जिसके द्वारा हम दूसरों से संवाद प्राप्त करते हैं। यदि हम थोड़ा और गहराई से देखें, तो हम पाएंगे कि व्याख्यात्मक पुस्तकें वह संप्रेषित करती हैं जो स्पष्ट रूप से और अनिवार्य रूप से संप्रेषित करने योग्य है—वास्तविक ज्ञान; जबकि कल्पनात्मक पुस्तकें वह संप्रेषित करने का प्रयास करती हैं जो मूल रूप से और गहराई से असंप्रेषित करने योग्य है—वास्तविक अनुभव। इसमें कुछ रहस्यमय है। यदि वास्तविक अनुभव वास्तव में असंप्रेषित करने योग्य है, तो कवि या उपन्यासकार किस जादू से उस अनुभव को आप तक पहुँचाने की आशा करते हैं जिसका उन्होंने स्वयं आनंद लिया है?

इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले, मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि आप ठोस अनुभव की अव्यवहार्यता को पूरी तरह से समझते हैं।

हर कोई किसी न किसी तीव्र भावनात्मक संकट से गुजरा है— गुस्से की तीव्र लहर, आसन्न आपदा के बारे में लंबे समय तक चलने वाली चिंता, प्रेम में आशा और निराशा का चक्र।

क्या आपने कभी अपने दोस्तों को इसके बारे में बताने की कोशिश की है? आप उन्हें सारी बातें आसानी से बता सकते हैं, क्योंकि बाहरी और प्रत्यक्ष तथ्य आम जानकारी की बातें हैं और आसानी से समझाई जा सकती हैं। लेकिन क्या आप उन्हें उस अनुभव को, उसकी संपूर्ण आंतरिकता के साथ, बयां कर सकते हैं— वह अनुभव जिसे आप स्वयं भी पूरी तरह से और तीव्रता से याद नहीं कर पाते? यदि आपकी अपनी स्मृति धुंधली और खंडित है, तो आपके शब्दों से जो प्रभाव आप व्यक्त कर रहे हैं, वह कितना कमज़ोर होगा। जब आप अपने श्रोताओं के चेहरों को देखते हैं, तो आप समझ जाते हैं कि वे उस अनुभव को नहीं जी रहे हैं जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं। और तब आपको एहसास होता है कि इसके लिए आपके पास मौजूद कला से कहीं अधिक कथात्मक कौशल की आवश्यकता है—एक ऐसा कौशल जो महान कल्पनाशील लेखकों की विशेषता है।

एक अर्थ में, बेशक, महानतम लेखक भी अपने अनुभवों को व्यक्त नहीं कर सकता। वे अनुभव अनंत काल तक केवल उसी के होते हैं। मनुष्य अपना ज्ञान दूसरों के साथ साझा कर सकता है, लेकिन वह अपने जीवन की वास्तविक धड़कनों को साझा नहीं कर सकता। चूंकि अद्वितीय और ठोस अनुभव को व्यक्त नहीं किया जा सकता, इसलिए कलाकार दूसरा सबसे अच्छा तरीका अपनाता है। वह पाठक के मन में वह सृजन करता है जिसे वह व्यक्त नहीं कर सकता। वह शब्दों का प्रयोग करके पाठक के लिए एक ऐसा अनुभव उत्पन्न करता है जिसका पाठक आनंद ले सके, एक ऐसा अनुभव जिसे पाठक लेखक के अपने अनुभव के समान और समतुल्य तरीके से जी सके। उसकी भाषा प्रत्येक पाठक की भावनाओं और कल्पना पर इस प्रकार प्रभाव डालती है कि प्रत्येक पाठक को एक ऐसा अनुभव प्राप्त होता है जो उसने पहले कभी नहीं किया होता, भले ही इस प्रक्रिया में कुछ यादें ताजा हो जाएं। ये नए अनुभव, प्रत्येक पाठक के लिए उसकी व्यक्तिगत प्रकृति और यादों के अनुसार भिन्न होते हैं, फिर भी समान होते हैं, क्योंकि वे सभी एक ही आदर्श के अनुसार निर्मित होते हैं—वे अवर्णनीय अनुभव जिन पर लेखक आधारित होता है। हम उसके लिए कई वाद्ययंत्रों की तरह हैं जिन पर वह बजाता है, प्रत्येक की अपनी विशेष ध्वनि और प्रतिध्वनि होती है, लेकिन वह संगीत जो वह हममें से प्रत्येक पर अलग-अलग तरीके से बजाता है, एक ही धुन पर आधारित होता है। वह लय उपन्यास या कविता में रची-बसी होती है। जब हम उसे पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि वह संवाद कर रही है, लेकिन वास्तव में वह एक अनुभव का सृजन करती है। यही अच्छी कथा साहित्य का जादू है, जो कल्पनात्मक रूप से वास्तविक अनुभव की समानता उत्पन्न करता है।

मैं किसी पूरे उपन्यास या नाटक का हवाला देकर अपनी बात को प्रमाणित नहीं कर सकता। मैं केवल पाठक से यह अनुरोध कर सकता हूँ कि वह उस कथा को पढ़ते समय अपने अनुभवों को याद करे और उन पर विचार करे जिसने उसे गहराई से प्रभावित किया। क्या उसने दुनिया के बारे में कुछ तथ्य सीखे? क्या उसने तर्कों और प्रमाणों का अनुसरण किया? या क्या उसने अपने मन में रचे गए किसी अनोखे अनुभव को जिया?

पढ़ने की प्रक्रिया के दौरान कल्पनाशीलता?

हालांकि, मैं कुछ संक्षिप्त और सरल गीत के बोल उद्धृत कर सकता हूँ, जो व्यापक रूप से परिचित हैं। पहला गीत रॉबर्ट हेरिक द्वारा रचित है:

जब मेरी जूलिया रेशमी पोशाक में जाती है,
फिर, फिर, मुझे लगता है, कितनी मधुरता से बहता है
उसके कपड़ों का द्रवीकरण।

इसके बाद, जब मैं अपनी नज़रें घुमाता हूँ, और देखता हूँ वह साहसी कंपन, हर तरह से स्वतंत्र,
ओह, वो चमक मुझे कितना मोहित कर देती है!
दूसरी रचना पर्सी बाइसे शेली द्वारा लिखी गई है: संगीत, जब कोमल आवाजें मर जाती हैं,
स्मृति में कंपन उत्पन्न करता है-
जब मीठे वायलेट मुरझा जाते हैं, तो दुर्गंध आती है।
उनकी प्रेरणाओं के अनुरूप जियो।
गुलाब मुरझा जाने पर उसकी पत्तियां झड़ जाती हैं।
प्रेमिका के बिस्तर के लिए ढेर लगा दिए गए हैं;
और तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारे विचार भी वैसे ही रहेंगे।
प्रेम स्वयं ही सुप्त अवस्था में रहेगा।
तीसरी रचना जेरार्ड मैनली हॉपकिंस द्वारा की गई है:
चित्तीदार चीजों के लिए ईश्वर की महिमा हो—
चित्तीदार गाय के समान दो रंगों वाले आकाश के लिए;
तैरती हुई ट्राउट मछलियों पर धब्बेदार गुलाबी तिल; ताजे जलते कोयले जैसे शाहबलूत के टुकड़े; फिंच पक्षियों के पंख;
भूभाग को योजनाबद्ध और टुकड़ों में बांटा गया—फसल काटना, परती भूमि और हल चलाना; और सभी व्यवसायों, उनके उपकरण, साजो-सामान और साज-सामान।

सभी चीजें विपरीत, मौलिक, अतिरिक्त, विचित्र हैं;

जो भी चंचल और धब्बेदार है (पता नहीं कैसे?)

तेज, धीमा; मीठा, खट्टा; चकाचौंध, धुंधला;

वह पिता है जिसकी सुंदरता अपरिवर्तनीय है:

उसकी प्रशंसा करो।

अपने विषय और व्यक्त की गई भावनाओं की जटिलता में भिन्न होते हुए भी, ये गीत हम पर एक ही तरह से प्रभाव डालते हैं। ये अपने शब्दों के संगीत से हमारी इंद्रियों को सीधे तौर पर झकझोरते हैं, लेकिन इससे भी बढ़कर, ये कल्पनाओं और स्मृतियों को जगाते हैं जो एक सार्थक अनुभव के रूप में विलीन हो जाती हैं। प्रत्येक शब्द से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी भूमिका निभाए, न केवल संगीतमय रूप से ध्वनियों के क्रम में, बल्कि याद रखने या कल्पना करने के आदेश के रूप में भी। कवि ने हमारी इंद्रियों को इस प्रकार निर्देशित किया है कि, बिना जाने-समझे, हमने एक ऐसे अनुभव का आनंद लिया है, जो हमारा नहीं बल्कि उनका बनाया हुआ है। हमने उनसे कुछ प्राप्त नहीं किया है, जैसे हम किसी वैज्ञानिक लेखक से ज्ञान प्राप्त करते हैं। बल्कि हमने स्वयं को उनकी रचना का माध्यम बनने दिया है। उन्होंने शब्दों का प्रयोग हमारे दिलों और कल्पनाओं में प्रवेश करने और उन्हें एक ऐसे अनुभव तक ले जाने के लिए किया है जो उनके अपने अनुभव को प्रतिबिंबित करता है, जैसे एक सपना दूसरे सपने से मिलता-जुलता हो सकता है। वास्तव में, किसी विचित्र प्रवाह के कारण, कवि का सपना हममें से प्रत्येक द्वारा अलग-अलग तरीके से देखा जाता है।

व्याख्यात्मक और कल्पनात्मक साहित्य के बीच मूलभूत अंतर यह है कि एक साहित्य संवाद के माध्यम से शिक्षा देता है, जबकि दूसरा साहित्य उस चीज़ को फिर से रचकर आनंद देता है जिसे संप्रेषित नहीं किया जा सकता। इसी अंतर से एक और अंतर उत्पन्न होता है। अपने पूर्णतः भिन्न उद्देश्यों के कारण, ये दोनों प्रकार के लेखन भाषा का प्रयोग भी अलग-अलग तरीके से करते हैं। कल्पनात्मक लेखक शब्दों की अंतर्निहित अस्पष्टताओं का अधिकतम उपयोग करने का प्रयास करता है, जिससे वह उनके अनेक अर्थों में निहित समृद्धि और शक्ति को प्राप्त कर सके। वह रूपकों को अपनी रचना की इकाई के रूप में प्रयोग करता है, ठीक उसी प्रकार जैसे तार्किक लेखक शब्दों को एक ही अर्थ तक सीमित करके प्रयोग करता है। दांते ने 'द डिवाइन कॉमेडी' के बारे में जो कहा है कि इसे चार अलग-अलग, फिर भी संबंधित अर्थों में पढ़ा जाना चाहिए, वह सामान्यतः कविता और कथा साहित्य पर भी लागू होता है। व्याख्यात्मक लेखन का तर्क स्पष्टता और असंदिग्धता के आदर्श का लक्ष्य रखता है। कुछ भी अस्पष्ट नहीं छोड़ा जाना चाहिए। जो कुछ भी प्रासंगिक और कथनीय है, उसे यथासंभव स्पष्ट और सटीक रूप से कहा जाना चाहिए। इसके विपरीत, कल्पनात्मक लेखन कही गई बातों के बजाय निहित बातों पर निर्भर करता है। रूपकों की बहुलता शब्दों की तुलना में पंक्तियों के बीच अधिक अर्थ भर देती है। पूरी कविता या उपन्यास कुछ ऐसा कहता है जो उसके शब्दों में से कोई भी नहीं कह सकता या कह नहीं पाता: यह उस अवर्णनीय अनुभव को व्यक्त करता है जिसे इसने पाठक के लिए पुनः सृजित किया है।

गीतात्मक कविता और गणित को आदर्श मानकर, या शायद मुझे कहना चाहिए कि कल्पनात्मक और व्याख्यात्मक लेखन के दो चरम रूपों को मानकर, हम व्याकरण के काव्यात्मक और तार्किक आयामों के बीच एक और महत्वपूर्ण अंतर देख सकते हैं। एक गणितीय कथन को उसी सत्य को व्यक्त करने वाले अन्य कथनों में अनगिनत बार रूपांतरित किया जा सकता है। महान फ्रांसीसी वैज्ञानिक पोइंकेयर ने एक बार कहा था कि गणित एक ही बात को यथासंभव विभिन्न तरीकों से कहने की कला है। जिस किसी ने भी किसी समीकरण को अनगिनत परिवर्तनों से गुजरते हुए देखा है, वह इसे समझ जाएगा। प्रत्येक चरण में, वास्तविक प्रतीक भिन्न हो सकते हैं या भिन्न क्रम में हो सकते हैं, लेकिन वही गणितीय संबंध व्यक्त किया जा रहा है। इसके विपरीत, एक काव्यात्मक कथन बिल्कुल भी रूपांतरित नहीं किया जा सकता, न केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में, बल्कि एक ही भाषा के भीतर शब्दों के एक समूह से दूसरे समूह में भी। आप वह नहीं कह सकते जो किसी अन्य कथन द्वारा कहा गया है।

"जब मधुर स्वर थम जाते हैं, तो संगीत स्मृति में गूंजता रहता है" - अंग्रेजी के अन्य शब्दों में कहें तो, यह ऐसा कथन नहीं है जिसे अनेक समान वाक्यों में व्यक्त किया जा सके, जो सभी एक ही सत्य को समान रूप से प्रकट करते हों। यहाँ शब्दों का प्रयोग कल्पना को प्रेरित करने के लिए किया गया है, न कि मन को शिक्षित करने के लिए; इसलिए, केवल यही शब्द, और इसी क्रम में, कवि के उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं। शब्दों का कोई भी अन्य रूप एक अलग अनुभव उत्पन्न करेगा - बेहतर या बदतर, लेकिन किसी भी मामले में भिन्न।

आप शायद यह आपत्ति करें कि मैंने लेखन के दोनों प्रकारों के बीच बहुत स्पष्ट रेखा खींच दी है।

उदाहरण के लिए, आप यह तर्क दे सकते हैं कि कल्पनात्मक साहित्य से हमें आनंद के साथ-साथ ज्ञान भी प्राप्त हो सकता है। बेशक, ऐसा हो सकता है, लेकिन उस तरह से नहीं जिस तरह से वैज्ञानिक और दार्शनिक पुस्तकें हमें सिखाती हैं। हम अनुभव से सीखते हैं—वह अनुभव जो हमें अपने दैनिक जीवन में प्राप्त होता है। इसी प्रकार, हम उन अप्रत्यक्ष या कलात्मक रूप से निर्मित अनुभवों से भी सीख सकते हैं जो कथा साहित्य हमारी कल्पना में उत्पन्न करता है। इस अर्थ में, कविता और उपन्यास हमें ज्ञान के साथ-साथ आनंद भी देते हैं। विज्ञान और दर्शन जिस अर्थ में हमें सिखाते हैं वह भिन्न है। व्याख्यात्मक पुस्तकें हमें नए अनुभव प्रदान नहीं करतीं। वे उन अनुभवों पर टिप्पणी करती हैं जो हमारे पास पहले से हैं या जिन्हें हम प्राप्त कर सकते हैं। इसीलिए यह कहना उचित प्रतीत होता है कि व्याख्यात्मक पुस्तकें मुख्य रूप से सिखाती हैं, जबकि कल्पनात्मक पुस्तकें केवल आकस्मिक रूप से ही सिखाती हैं, यदि सिखाती भी हैं, तो ऐसे अनुभव सृजित करके जिनसे हम सीख सकते हैं। ऐसी पुस्तकों से सीखने के लिए, हमें अनुभव के बारे में स्वयं चिंतन करना होगा; वैज्ञानिकों और दार्शनिकों से सीखने के लिए, हमें पहले उनके चिंतन को समझने का प्रयास करना होगा।

मैंने इन विभिन्न अंतरों पर इसलिए ज़ोर दिया है ताकि कुछ नकारात्मक नियमों को स्पष्ट कर सकूँ। ये नियम आपको यह नहीं बताते कि कथा साहित्य कैसे पढ़ा जाए। ये केवल यह बताते हैं कि क्या नहीं करना चाहिए, क्योंकि कथा

साहित्य विज्ञान से भिन्न है। इन सभी "नियमों" का सार एक सरल बात में निहित है: कथा साहित्य को तथ्य मानकर न पढ़ें; किसी उपन्यास को वैज्ञानिक कृति मानकर न पढ़ें, यहाँ तक कि सामाजिक विज्ञान या मनोविज्ञान मानकर भी नहीं। इस एक बात को निम्नलिखित नियमों द्वारा और अधिक स्पष्ट किया गया है।

(1) उपन्यास, नाटक या कविता में कोई "संदेश" खोजने का प्रयास न करें। कल्पनात्मक लेखन मुख्य रूप से उपदेशात्मक नहीं होता। कोई भी महान कथा- रचना वह मीठी-मीठी प्रचार-प्रसार वाली रचना नहीं है जैसा कि कुछ हालिया आलोचक हमें विश्वास दिलाना चाहते हैं। (यदि अंकल टॉम्स केबिन और द ग्रेप्स ऑफ रैथ अच्छी कथा-रचना हैं, तो वे अपने उपदेशों के कारण नहीं, बल्कि उनके बावजूद अच्छी हैं।) मैं यहाँ कला और प्रचार-प्रसार के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि हम जानते हैं कि कथा-रचना लोगों को प्रेरित कर सकती है, अक्सर भाषणों से भी अधिक प्रभावी ढंग से। मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि कथा-रचना में यह शक्ति तभी होती है जब वह एक अच्छी कथा- रचना हो—न कि तब जब वह एक उपदेश या भाषण हो जिसे एक घटिया ढंग से सुनाई गई कहानी में लपेटा गया हो। यदि सामान्य सिद्धांत सही है—कि आपको पुस्तक को उसके स्वरूप में पढ़ना चाहिए—तो उन पुस्तकों में कहानी खोजें, न कि संदेश, जो स्वयं को कथा-रचना के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

शेक्सपियर के नाटकों का सदियों से विश्लेषण किया जाता रहा है ताकि उनके छिपे हुए संदेश को खोजा जा सके—मानो शेक्सपियर का कोई गुप्त दर्शन हो जिसे उन्होंने अपने नाटकों में रहस्यमय तरीके से छुपा रखा हो। यह खोज व्यर्थ रही है। इसकी विफलता कथा साहित्य की गलत व्याख्या के प्रति एक उत्कृष्ट चेतावनी होनी चाहिए। वह दृष्टिकोण कितना अधिक तर्कसंगत है जो प्रत्येक नाटक को एक नए अनुभव के संसार के रूप में देखता है जिसे शेक्सपियर हमारे लिए खोलते हैं। मार्क वैन डोरेन, शेक्सपियर पर अपनी हालिया पुस्तक में, बुद्धिमानी से यह कहकर शुरुआत करते हैं कि उन्हें नाटकों में रचनाएँ मिलती हैं, विचार या सिद्धांत नहीं।

शेक्सपियर का महान और केंद्रीय गुण चिंतन से प्राप्त नहीं हुआ, क्योंकि चिंतन से संसार का निर्माण नहीं हो सकता। यह केवल तभी संसार को समझ सकता है जब उसका निर्माण हो चुका हो।

शेक्सपियर ने एक ऐसी दुनिया से शुरुआत की जिसे किसी ने नहीं बनाया था, और वास्तव में उसे कभी नहीं छोड़ा, और उसी के भीतर कई दुनियाओं का निर्माण किया।... जब हम शेक्सपियर का कोई नाटक पढ़ते हैं, तो हम उसी में समा जाते हैं। हम तेज़ी से या धीरे-धीरे उसमें डूब सकते हैं—ज़्यादातर मामलों में तेज़ी से—लेकिन एक बार जब हम उसमें डूब जाते हैं, तो हम पूरी तरह से उसमें समा जाते हैं। यही रहस्य है, और आज भी शेक्सपियर की हमें आकर्षित करने की शक्ति का रहस्य है। वह हमें एक विशेष दुनिया के लिए तब तैयार कर देते हैं जब हमें उसके अस्तित्व का एहसास भी नहीं होता; फिर वह हमें उसकी बारीकियों में लीन कर देते हैं।

जिस तरह से श्री वैन डोरेन शेक्सपियर के नाटकों को पढ़ते हैं, वह किसी भी प्रशंसनीय कथा साहित्य को पढ़ने के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

(2) कल्पनात्मक साहित्य में शब्दों, प्रस्तावों और तर्कों की तलाश न करें। ऐसी चीजें तार्किक साधन हैं, काव्यात्मक नहीं। ये भाषा के उस प्रयोग के लिए उपयुक्त हैं जिसका उद्देश्य ज्ञान और विचारों का संचार करना है, लेकिन जब भाषा असंवाद योग्य चीजों के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करती है— जब इसका रचनात्मक रूप से उपयोग किया जाता है—तो ये पूरी तरह से पराकाष्ठा हो जाते हैं।

जैसा कि श्री वैन डोरेन कहते हैं, "कविता और नाटक में, कथन सबसे अस्पष्ट माध्यमों में से एक है।" मेरा मानना है कि मैं इससे आगे बढ़कर यह कहूँगा कि कथा साहित्य में तो कोई कथन ही नहीं होता, लेखक के विश्वासों की कोई शाब्दिक घोषणा नहीं होती। उदाहरण के लिए, एक गीतात्मक कविता जो "कथन" करती है, वह उसके किसी भी वाक्य में नहीं पाई जा सकती। और संपूर्ण रचना, जिसमें उसके सभी शब्द एक-दूसरे पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, कुछ ऐसा कहती है जिसे कभी भी कथनों की संकीर्ण सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता।

(3) ज्ञान के संचार पर लागू होने वाले सत्य और संगति के मानकों के आधार पर कथा साहित्य की आलोचना न करें। एक अच्छी कहानी का "सत्य" उसकी यथार्थता, उसकी अंतर्निहित संभाव्यता या औचित्य है। यह एक संभावित कहानी होनी चाहिए, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि यह जीवन या समाज के तथ्यों का इस प्रकार वर्णन करे जिसे प्रयोग या शोध द्वारा सत्यापित किया जा सके। सदियों पहले, अरस्तू ने टिप्पणी की थी कि "शुद्धता का मानक कविता में राजनीति के समान नहीं है," या भौतिकी या मनोविज्ञान के लिए भी यही बात लागू होती है। शरीर रचना विज्ञान के बारे में तकनीकी अशुद्धियाँ या भूगोल और इतिहास में त्रुटियाँ तब आलोचना का विषय होनी चाहिए जब वह पुस्तक जिसमें वे पाई जाती हैं, स्वयं को उन विषयों पर एक ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत करती है। लेकिन तथ्यों के गलत कथन कहानी को खराब नहीं करते यदि कथाकार उन्हें औचित्य से घेरने में सफल होता है। जब हम जीवनी पढ़ते हैं, तो हम किसी विशेष व्यक्ति के जीवन के बारे में सत्य जानना चाहते हैं। जब हम उपन्यास पढ़ते हैं, तो हम एक ऐसी कहानी चाहते हैं जो केवल इस अर्थ में सत्य हो कि वह उपन्यासकार द्वारा निर्मित पात्रों और घटनाओं की दुनिया में घटित हो सकती थी।

(4) सभी कल्पनात्मक पुस्तकों को एक समान समझकर न पढ़ें। व्याख्यात्मक साहित्य की तरह, यहाँ भी, प्रकार में अंतर हैं—गीत, उपन्यास, नाटक—जिनके लिए उपयुक्त रूप से अलग-अलग पठन की आवश्यकता होती है।

इन "नियमों" को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए, इन्हें रचनात्मक सुझावों से पूरक करना आवश्यक है। शिष्टाचार संबंधी पुस्तकों और काल्पनिक पुस्तकों को पढ़ने के बीच समानता विकसित करके, मैं आपको काल्पनिक पुस्तकों को पढ़ने के नियमों का एक और सरल तरीका बता सकता हूँ।

- 3 -

जैसा कि हमने देखा है, व्याख्यात्मक पुस्तकों को पढ़ने के लिए नियमों के तीन समूह हैं। पहला समूह एकता और अंश-पूर्ण संरचना को समझने के नियमों से बना है; दूसरा समूह संपूर्ण को उसके घटक पदों, प्रस्तावों और तर्कों में विश्लेषित करने के नियमों से बना है; तीसरा समूह लेखक के सिद्धांत की आलोचना करने के नियमों से बना है ताकि हम उससे विवेकपूर्ण सहमति या असहमति तक पहुँच सकें। हमने इन तीन समूहों को संरचनात्मक, व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक नियम कहा है। यदि व्याख्यात्मक और कल्पनात्मक पुस्तकों को पढ़ने में कोई समानता है, तो हमें बाद वाले मामले में मार्गदर्शन के लिए समान नियम समूह मिलने चाहिए।

सबसे पहले, कथा साहित्य पढ़ने के संरचनात्मक नियम क्या हैं? यदि आपको इस प्रकार के नियम याद हैं जिन पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं (और यदि आपको याद नहीं हैं, तो अध्याय चौदह के प्रारंभ में उनका सारांश दिया गया है), तो मैं अब उन्हें संक्षेप में उनके काल्पनिक अनुरूपों में अनुवादित करूँगा:

(1) आपको कल्पनात्मक साहित्य के किसी भी अंश को उसके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करना चाहिए। आपको यह जानना चाहिए कि वह उपन्यास है, नाटक है या गीत है। गीत मुख्य रूप से एक ही भावनात्मक अनुभव के माध्यम से अपनी कहानी कहता है, जबकि उपन्यास और नाटकों में कहीं अधिक जटिल कथानक होते हैं, जिनमें कई पात्र, उनके कार्य और एक-दूसरे पर उनकी प्रतिक्रियाएँ, साथ ही इस प्रक्रिया में उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली भावनाएँ शामिल होती हैं। इसके अलावा, यह सर्वविदित है कि नाटक उपन्यास से इस मायने में भिन्न होता है कि यह पूरी तरह से क्रियाओं और संवादों के माध्यम से वर्णन करता है। लेखक कभी भी स्वयं के दृष्टिकोण से नहीं बोल सकता, जैसा कि वह उपन्यास में कर सकता है, और अक्सर करता भी है। लेखन शैली में इन सभी अंतरों के कारण पाठक की ग्रहणशीलता में भी अंतर होता है। इसलिए, आपको तुरंत यह पहचान लेना चाहिए कि आप किस प्रकार का उपन्यास पढ़ रहे हैं।

(2) आपको संपूर्ण रचना की एकता को समझना होगा। आपने इसे समझा है या नहीं, इसका परीक्षण इस बात से किया जा सकता है कि क्या आप उस एकता को एक या दो वाक्यों में व्यक्त कर सकते हैं। व्याख्यात्मक पुस्तक की एकता अंततः उस मुख्य समस्या में निहित होती है जिसे वह हल करने का प्रयास करती है। अतः इसकी एकता को इस प्रश्न के निरूपण या इसके उत्तर देने वाले प्रस्तावों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। परन्तु कथा साहित्य की एकता सदा उसके कथानक में निहित होती है। व्याख्यात्मक और काल्पनिक लेखन में एकता के स्रोत के रूप में समस्या और कथानक के बीच के अंतर पर मैं कितना भी जोर दूं, कम है। आपने पूरी कहानी तब तक नहीं समझी है जब तक आप उसके कथानक को एक संक्षिप्त वर्णन में सारांशित नहीं कर सकते—किसी प्रस्ताव या तर्क में नहीं। यदि आपके पास शेक्सपियर का कोई पुराना संस्करण है, तो आप पाएंगे कि प्रत्येक नाटक की प्रस्तावना में एक अनुच्छेद होता है जिसे "तर्क" कहा जाता है। इसमें संक्षेप में कहानी के अलावा और कुछ नहीं होता—कथानक का सार। नाटक की एकता यहीं निहित है।

(3) आपको न केवल संपूर्ण को उसकी सरलतम इकाई में बदलना होगा, बल्कि यह भी पता लगाना होगा कि वह संपूर्ण अपने सभी भागों से कैसे निर्मित होता है। व्याख्यात्मक पुस्तक के भाग संपूर्ण समस्या के भागों से संबंधित होते हैं, जिनमें आंशिक समाधान संपूर्ण समस्या के समाधान में योगदान करते हैं। लेकिन कथा साहित्य के भाग वे विभिन्न चरण होते हैं जो लेखक अपनी कहानी को विकसित करने के लिए अपनाता है—चरित्र चित्रण और घटनाओं का विवरण। दोनों ही मामलों में भागों की व्यवस्था भिन्न होती है। विज्ञान और दर्शन में, उन्हें तार्किक रूप से व्यवस्थित किया जाना चाहिए। एक कहानी में, भागों को किसी न किसी प्रकार एक कालिक योजना में फिट होना चाहिए, एक शुरुआत से मध्य होते हुए अंत तक प्रगति। किसी कथा की संरचना को जानने के लिए, आपको यह जानना होगा कि वह कहाँ से शुरू होती है, किन-किन चरणों से गुजरती है और कहाँ समाप्त होती है। आपको उन विभिन्न संकटों को जानना होगा जो चरमोत्कर्ष तक ले जाते हैं, चरमोत्कर्ष कहाँ और कैसे घटित होता है, और उसके बाद क्या होता है।

मैंने अभी जो बातें कही हैं, उनसे अनेक निष्कर्ष निकलते हैं। एक बात तो यह है कि किसी व्याख्यात्मक पुस्तक के भाग या उप-भाग, किसी उपन्यास के भागों की तुलना में अधिक स्वतंत्र रूप से पठनीय होते हैं। यूक्लिड की तेरह पुस्तकों में से पहली पुस्तक—यद्यपि यह संपूर्ण कृति का एक भाग है—को स्वतंत्र रूप से पढ़ा जा सकता है। यही बात लगभग हर सुव्यवस्थित व्याख्यात्मक पुस्तक पर लागू होती है। इसके खंड या अध्याय, चाहे अलग-अलग पढ़े जाएं या उपसमूहों में, अर्थपूर्ण होते हैं। परन्तु किसी उपन्यास के अध्याय, या किसी नाटक के अंक, जब संपूर्ण कृति से अलग कर दिए जाते हैं तो अपेक्षाकृत अर्थहीन हो जाते हैं।

दूसरी बात यह है कि व्याख्यात्मक लेखक को आपको सस्पेंस में रखने की आवश्यकता नहीं है। वह अपनी प्रस्तावना या शुरुआती अनुच्छेदों में ही स्पष्ट रूप से बता सकता है कि वह क्या करने वाला है और कैसे करने वाला है। इस तरह की अग्रिम जानकारी से आपकी रुचि कम नहीं होती; बल्कि, आप मार्गदर्शन के लिए आभारी होते हैं। लेकिन कथा को रोचक होने के लिए सस्पेंस को बनाए रखना और उसे बढ़ाना आवश्यक है। यहाँ सस्पेंस का विशेष महत्व है। भले ही आपको कथानक की एकता पहले से पता हो, जैसा कि शेक्सपियर के नाटक की प्रस्तावना में बताया गया हो, फिर भी सस्पेंस पैदा करने वाली हर चीज़ छिपी रहनी चाहिए। आपको यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए कौन-कौन से चरण अपनाए गए हैं। मौलिक कथानकों की संख्या चाहे कितनी भी कम क्यों न हो, एक अच्छा लेखक पारिवारिक पृष्ठभूमि को समेटते हुए कथा में आने वाले मोड़ों को कुशलतापूर्वक छिपाकर नवीनता और सस्पेंस पैदा करता है।

दूसरा, कथा साहित्य पढ़ने के लिए व्याख्यात्मक नियम क्या हैं? भाषा के काव्यात्मक और तार्किक उपयोग के बीच अंतर पर पहले से विचार करने से हमें उन नियमों का अनुवाद करने में मदद मिलती है जो हमें शब्दों, कथनों और तर्कों को खोजने में मार्गदर्शन करते हैं। हम जानते हैं कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। लेकिन अगर हम कथा साहित्य का विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं तो हमें क्या देखना चाहिए?

(1) कथा साहित्य के तत्व उसके प्रसंग और घटनाएँ, उसके पात्र और उनके विचार, वाणी, भावनाएँ और क्रियाएँ हैं। इनमें से प्रत्येक लेखक द्वारा रचित संसार का मूलभूत भाग है। इन तत्वों का उपयोग करके लेखक अपनी कहानी कहता है। ये तार्किक संवाद के शब्दों के समान हैं। जिस प्रकार व्याख्यात्मक लेखक को समझना आवश्यक है, उसी प्रकार यहाँ भी आपको घटनाओं और पात्रों के विवरण से परिचित होना होगा। जब तक आप किसी कहानी के पात्रों से पूरी तरह परिचित नहीं हो जाते, जब तक आप उसकी घटनाओं को स्वयं अनुभव नहीं कर लेते, तब तक आप उसे पूरी तरह नहीं समझ पाते।

(2) कथनों में पद आपस में जुड़े होते हैं। कल्पना के तत्व उस समग्र दृश्य या पृष्ठभूमि से जुड़े होते हैं जिसके संदर्भ में वे स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आते हैं। हमने देखा है कि कल्पनाशील लेखक एक ऐसी दुनिया का निर्माण करता है जिसमें उसके पात्र "जीते हैं, चलते हैं और अपना अस्तित्व रखते हैं"। लेखक के कथनों को खोजने के लिए निर्देशित करने वाले नियम का काल्पनिक अनुरूप इस प्रकार कहा जा सकता है: इस काल्पनिक दुनिया में सहज हो जाएं; इसे ऐसे जानें जैसे आप दृश्य के एक प्रेक्षक हों; इसके निवासियों में से एक बन जाएं, इसके पात्रों से मित्रता करने के इच्छुक हों, और सहानुभूतिपूर्ण अंतर्दृष्टि से इसकी घटनाओं में भाग लेने में सक्षम हों, जैसे आप किसी मित्र के कार्यों और पीड़ाओं में करते हैं। यदि आप ऐसा कर सकते हैं, तो कल्पना के तत्व शतरंज की बिसात पर यंत्रवत रूप से चलने वाले अलग-थलग मोहरों की तरह नहीं रह जाएंगे। आप उन संबंधों को पा लेंगे जो उन्हें एक जीवंत समाज के सदस्यों में बदल देते हैं।

(3) यदि किसी व्याख्यात्मक पुस्तक में कोई गति होती है, तो वह तर्क की गति होती है, प्रमाणों और कारणों से उनके द्वारा समर्थित निष्कर्षों तक एक तार्किक संक्रमण। ऐसी पुस्तकों को पढ़ते समय, तर्क का अनुसरण करना आवश्यक है। अतः, इसके पदों और प्रस्तावों को जानने के बाद, आपको इसके तर्क का विश्लेषण करना होता है।

कथा साहित्य के व्याख्यात्मक पठन में भी इसी प्रकार का अंतिम चरण होता है। आप पात्रों से परिचित हो चुके हैं। आप उनके साथ उस काल्पनिक संसार में प्रवेश कर चुके हैं जिसमें वे रहते हैं, उनके समाज के नियमों को स्वीकार कर चुके हैं, उसकी हवा में सांस ले चुके हैं, उसका भोजन चख चुके हैं, उसकी सड़कों पर यात्रा कर चुके हैं। अब आपको उनके रोमांचक सफर में उनका अनुसरण करना होगा। दृश्य या पृष्ठभूमि, सामाजिक परिवेश, (प्रस्ताव की तरह) कथा साहित्य के तत्वों का एक स्थिर जुड़ाव है। कथानक का खुलना (तर्क या तर्क की तरह) गतिशील जुड़ाव है। अरस्तू ने कहा था कि कथानक कहानी की आत्मा है। यह उसका जीवन है। कहानी को अच्छी तरह पढ़ने के लिए आपको कथा की नब्ज़ को समझना होगा, उसकी हर धड़कन के प्रति संवेदनशील होना होगा।

पठन के व्याख्यात्मक नियमों की ओर बढ़ने से पहले, मैं आपको आगाह करना चाहूँगा कि आप सादृश्य की अधिक बारीकी से जाँच न करें। इस प्रकार का सादृश्य एक रूपक की तरह है जो अत्यधिक दबाव डालने पर बिखर जाएगा; मैंने

इसका प्रयोग केवल आपको यह समझाने के लिए किया है कि कथा साहित्य का विश्लेषणात्मक पठन कैसे किया जा सकता है। मैंने जो तीन चरण सुझाए हैं, वे उस तरीके की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं जिससे एक कल्पनाशील लेखक की कलात्मक उपलब्धि के प्रति उत्तरोत्तर जागरूकता बढ़ती है। ये चरण किसी उपन्यास या नाटक के आपके आनंद को कम करने के बजाय, आपके आनंद के स्रोतों को गहराई से जानकर आपके आनंद को और समृद्ध करेंगे।

आपको न केवल यह पता चलेगा कि आपको क्या पसंद है बल्कि यह भी पता चलेगा कि आपको वह क्यों पसंद है।

एक और सावधानी: उपर्युक्त नियम मुख्यतः उपन्यासों और नाटकों पर लागू होते हैं। जहाँ तक गीतात्मक कविताओं में कुछ कथात्मक प्रवाह होता है, वे नियम गीतों पर भी लागू होते हैं। परन्तु गीतात्मक कविता का सार कहीं और निहित है। वास्तव में, इसके रहस्य तक पहुँचने के लिए विशेष नियमों की आवश्यकता होती है। गीतात्मक कविता का व्याख्यात्मक पठन एक विशेष समस्या है जिस पर चर्चा करने के लिए मेरे पास न तो पर्याप्त ज्ञान है और न ही पर्याप्त स्थान। मैंने (अध्याय सात में) इस संदर्भ में सहायक कुछ पुस्तकों का उल्लेख किया है। उनमें मैं निम्नलिखित को जोड़ना चाहूँगा: वर्ड्सवर्थ की 'लिरिकल बैलाड्स' के प्रथम संस्करण की प्रस्तावना, मैथ्यू अर्नोल्ड की 'एस्सेज़ इन क्रिटिसिज्म', एडगर एलन पो के 'द पोएटिक प्रिंसिपल' और 'द फिलॉसफी ऑफ कम्पोजीशन' पर निबंध, टी. एस. एलियट की 'द यूज ऑफ पोएट्री', हर्बर्ट रीड की 'फॉर्म इन मॉडर्न पोएट्री' और मार्क वैन डोरेन की 'एन एंथोलॉजी ऑफ इंग्लिश एंड अमेरिकन पोएट्री' की प्रस्तावना।

जब मैं पुस्तकों की सिफ़ारिश कर रहा हूँ, तो शायद मुझे कुछ ऐसी पुस्तकों का भी ज़िक्र करना चाहिए जो उपन्यास पढ़ने में आपकी विश्लेषणात्मक क्षमता विकसित करने में सहायक हो सकती हैं: पर्सी लुबॉक की 'द क्राफ़्ट ऑफ़ फ़िक्शन', ई. एम. फ़ॉर्स्टर की 'एस्पेक्ट्स ऑफ़ द नोवेल', एडविन मुइर की 'द स्ट्रक्चर ऑफ़ द नोवेल' और हेनरी जेम्स की 'द आर्ट ऑफ़ द नोवेल' शीर्षक से संकलित प्रस्तावनाएँ। नाटक पढ़ने के लिए, अरस्तू के 'पोएटिक्स' में त्रासदी और कॉमेडी के विश्लेषण का कोई विकल्प नहीं है। जहाँ रंगमंच की आधुनिक विधाओं को समझने के लिए इसकी आवश्यकता हो, वहाँ जॉर्ज मेरेडिथ का निबंध 'ऑन कॉमेडी' और बर्नार्ड शॉ की 'द क्विंटेंसेंस ऑफ़ इब्सनिज़्म' जैसी पुस्तकों का संदर्भ लिया जा सकता है।

तीसरा और अंतिम प्रश्न यह है कि कथा साहित्य पढ़ने के महत्वपूर्ण नियम क्या हैं? आपको याद होगा कि हमने व्याख्यात्मक रचनाओं के संदर्भ में, आलोचना को नियंत्रित करने वाले सामान्य सिद्धांतों और कुछ विशिष्ट बिंदुओं—विशेष आलोचनात्मक टिप्पणियों—के बीच अंतर किया था। सामान्य सिद्धांतों के संदर्भ में, एक ही अनुवाद से पर्याप्त रूप से समानता स्थापित की जा सकती है।

व्याख्यात्मक रचनाओं के मामले में, सलाह यह थी कि किसी पुस्तक की आलोचना न करें—न ही यह कहें कि आप सहमत हैं या असहमत—जब तक आप यह न कह सकें कि आप उसे समझ गए हैं, इसलिए यहाँ सिद्धांत यह है: कल्पनात्मक लेखन की आलोचना तब

चीजों की ओर इशारा करके अपनी प्रतिक्रियाओं को वस्तुनिष्ठ बनाना होगा जिनके कारण वे प्रतिक्रियाएं उत्पन्न हुईं। आपको यह बताने से आगे बढ़ना होगा कि आपको क्या पसंद है या नापसंद है और क्यों, और फिर यह बताना होगा कि पुस्तक में क्या अच्छा है या बुरा है और क्यों।

यहां एक बड़ा अंतर है। किसी व्यक्ति की पसंद-नापसंद को लेकर कोई उससे असहमत नहीं हो सकता। अपनी पसंद पर पूर्ण अधिकार हर व्यक्ति का है। लेकिन कोई व्यक्ति किसी पुस्तक के अच्छे या बुरे होने पर उससे असहमत हो सकता है। पसंद पर शायद बहस न हो, लेकिन आलोचनात्मक मूल्यांकन पर सवाल उठाए जा सकते हैं और उसका बचाव किया जा सकता है। अपने आलोचनात्मक निर्णयों को सही ठहराने के लिए हमें सौंदर्यपरक या साहित्यिक आलोचना के सिद्धांतों का सहारा लेना होगा।

यदि साहित्यिक आलोचना के सिद्धांत सुदृढ़ रूप से स्थापित होते और उन पर आम सहमति होती, तो किसी रचना के रचनात्मक पहलू पर पाठक द्वारा की जा सकने वाली मुख्य आलोचनात्मक टिप्पणियों को संक्षेप में गिनाना आसान होता। दुर्भाग्यवश—या सौभाग्यवश—ऐसा नहीं है, और आप मेरी इस बात से सहमत होंगे कि मैं जल्दबाजी में कोई निष्कर्ष नहीं निकालना चाहता। फिर भी, मैं पाँच प्रश्न सुझाने का जोखिम उठाऊंगा जो किसी को भी कथा साहित्य पर आलोचनात्मक निर्णय लेने में मदद करेंगे: (i) रचना में एकता किस हद तक है? (2) वह एकता जिन भागों और तत्वों को समाहित और व्यवस्थित करती है, उनकी जटिलता कितनी है? (3) क्या यह एक विश्वसनीय कहानी है, यानी क्या इसमें काव्य सत्य की अंतर्निहित विश्वसनीयता है? (4) क्या यह आपकी भावनाओं को जगाकर और आपकी कल्पना को भर कर, आपको दैनिक जीवन की सामान्य अर्धचेतना से गहन जागरूकता की स्पष्टता तक ले जाती है? (5) क्या यह एक ऐसी नई दुनिया का निर्माण करती है जिसमें आप खिंचे चले जाते हैं और जिसमें आपको ऐसा भ्रम होता है कि आप जीवन को स्थिर और समग्र रूप से देख रहे हैं?

मैं इन सवालों का बचाव करने के लिए बस इतना ही कहूंगा कि इनका जितना अधिक सकारात्मक जवाब होगा, उतनी ही अधिक संभावना है कि वह किताब कला की एक महान कृति है। मुझे लगता है कि ये सवाल आपको अच्छी और बुरी कहानियों में फर्क करने में मदद करेंगे, साथ ही अपनी पसंद-नापसंद को बेहतर ढंग से समझाने में भी सहायक होंगे। हालांकि आपको इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए कि जो चीज अपने आप में अच्छी है और जो आपको पसंद है, उनमें अंतर हो सकता है, फिर भी आप इस बेतुके बयान से बच सकेंगे: "मुझे कला के बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन मुझे पता है कि मुझे क्या पसंद है।"

जितना बेहतर आप चिंतनशील होकर कथा साहित्य पढ़ने में मिलने वाले आनंद के कारणों को समझ पाएंगे, उतना ही आप साहित्यिक कृति के कलात्मक गुणों को जानने के करीब पहुंचेंगे। इस प्रकार आप धीरे-धीरे आलोचना का एक मानक विकसित कर लेंगे। और यदि आप पेशेवर साहित्यिक आलोचक नहीं हैं—जो हर पुस्तक के लिए अपने कुछ विचारों को अलग-अलग तरीके से व्यक्त करने की आवश्यकता से ग्रस्त हैं, और प्रतिस्पर्धा के कारण स्पष्ट बातों से बचने के

लिए बेताब रहते हैं—तो आपको समान रुचि वाले कई लोग मिलेंगे जो आपके आलोचनात्मक निर्णयों से सहमत होंगे। आप शायद यह भी जान पाएंगे, जो मुझे लगता है कि सच है, कि साहित्य में अच्छी रुचि हर उस व्यक्ति में विकसित हो जाती है जो पढ़ना सीखता है।

- 4 -

पठन कला को व्यापक रूप देने के लिए, व्याख्यात्मक नियमों को काल्पनिक समकक्षों में रूपांतरित करके, मैंने अब अंतिम चरण पूरा करने का निर्णय लिया है। अब आपके पास किसी भी पुस्तक को पढ़ने के नियम हैं। लेकिन मुद्रित होने योग्य किसी भी सामग्री को पढ़ने के नियमों के बारे में क्या? समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापन सामग्री, राजनीतिक प्रचार सामग्री को पढ़ने के बारे में क्या? क्या नियमों को इतना व्यापक रूप से बताया जा सकता है कि वे हर चीज़ पर लागू हों?

मुझे लगता है कि ऐसा हो सकता है। स्वाभाविक रूप से, जैसे-जैसे नियम अधिक सामान्य होते जाते हैं, उनकी संख्या कम होती जाती है और विषयवस्तु कम विशिष्ट होती जाती है। तीन या चार नियमों वाले तीन समूहों के स्थान पर, किसी भी चीज़ को पढ़ने के निर्देशों को चार प्रश्नों में संक्षेपित किया जा सकता है। किसी भी चीज़ को अच्छी तरह से पढ़ने के लिए, आपको उससे संबंधित इन चार प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होना चाहिए। पहले हुई चर्चा के आलोक में, प्रश्नों को अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है। आप पहले से ही जानते हैं कि इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आपको कौन से कदम उठाने होंगे।

लेकिन, सबसे पहले, मैं आपको पढ़ने के बुनियादी अंतर को याद दिलाना चाहता हूँ—जानकारी प्राप्त करने के लिए पढ़ना और समझने के लिए पढ़ना—जो पढ़ने के बारे में मेरी कही गई हर बात का आधार है। अधिकतर हम समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और यहाँ तक कि विज्ञापन सामग्री भी उनमें मौजूद जानकारी के लिए पढ़ते हैं। ऐसी सामग्री की मात्रा विशाल है, इतनी विशाल कि आज किसी के पास उपलब्ध सूचना स्रोतों के एक छोटे से हिस्से को भी पढ़ने का समय नहीं है।

इस तरह की पठन सामग्री के क्षेत्र में आवश्यकता ही कई अच्छे आविष्कारों की जननी रही है।

टाइम और न्यूज़वीक जैसी तथाकथित समाचार पत्रिकाएँ हममें से अधिकांश के लिए समाचार पढ़कर उसे सूचना के आवश्यक तत्वों में संक्षेपित करके एक अमूल्य कार्य करती हैं। इन पत्रिकाओं के लेखक मुख्य रूप से पाठक होते हैं। उन्होंने सूचना प्राप्त करने की कला को औसत पाठक की क्षमता से कहीं अधिक उन्नत स्तर तक पहुँचा दिया है।

यही बात रीडर्स डाइजेस्ट पर भी लागू होती है, जो वर्तमान पत्रिकाओं में प्रकाशित लगभग हर महत्वपूर्ण सामग्री को एक छोटे से खंड में समेटने में सक्षम है। बेशक, बेहतरीन लेखों को, बेहतरीन किताबों की तरह, संक्षिप्त करना संभव नहीं है। अगर मोंटेग्न या लैम्ब के निबंध किसी वर्तमान पत्रिका में प्रकाशित होते, तो हम शायद ही उनका सारांश पढ़कर संतुष्ट होते। यहाँ

सारांश तभी कारगर होगा जब वह हमें मूल लेख पढ़ने के लिए प्रेरित करे। हालांकि, औसत लेख के लिए, संक्षिप्त रूप आमतौर पर पर्याप्त होता है, और अक्सर मूल लेख से भी बेहतर होता है, क्योंकि औसत लेख मुख्य रूप से सूचनात्मक होता है। रीडर्स डाइजेस्ट को हर महीने प्रकाशित करने वाली कुशलता सबसे पहले पढ़ने की कुशलता है, और उसके बाद ही सरल और स्पष्ट लेखन की।

यह हमारे लिए वह काम करता है जो हममें से कुछ ही लोगों के पास खुद करने की तकनीक होती है—सिर्फ समय ही नहीं। यह कई पन्नों की कम महत्वपूर्ण सामग्री में से ठोस जानकारी का सार निकाल लेता है।

लेकिन, अंततः, हमें उन पत्रिकाओं को पढ़ना ही पड़ता है जो समसामयिक समाचारों और सूचनाओं का असाधारण सारांश प्रस्तुत करती हैं। यदि हम जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो हम पढ़ने के कार्य से बच नहीं सकते, चाहे सारांश कितने भी अच्छे क्यों न हों। और सारांश पढ़ने का कार्य, अंततः, वही कार्य है जो इन पत्रिकाओं के संपादक मूल सामग्री को अधिक संक्षिप्त रूप में उपलब्ध कराते समय करते हैं। उन्होंने हमारे पढ़ने की मात्रा के लिहाज से तो हमारी मेहनत बचाई है, लेकिन वे हमें पढ़ने की परेशानी से पूरी तरह मुक्त नहीं कर सकते। एक अर्थ में, उनका कार्य हमें तभी लाभ पहुँचाता है जब हम उनके सूचना सारांशों को उसी दक्षता से पढ़ सकें जिस दक्षता से उन्होंने हमें सारांश प्रदान करने के लिए पूर्व में पठन किया है।

अब मैं जिन चार प्रश्नों का उल्लेख करूंगा, वे किसी भी सामग्री को पढ़ने के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। ये प्रश्न सूचना या ज्ञान प्रदान करने वाली सामग्री पर समान रूप से लागू होते हैं। इन प्रश्नों को दिशा-निर्देशों के एक समूह के रूप में बुद्धिमानी से उपयोग करने के लिए, आपको यह जानना आवश्यक है कि आप क्या खोज रहे हैं—चाहे आप किसी उद्देश्य से पढ़ रहे हों या किसी अन्य उद्देश्य से। यदि आप समझदार हैं, तो आपका उद्देश्य पढ़ी जाने वाली सामग्री की प्रकृति के अनुरूप होगा। यहाँ चार प्रश्न और संक्षिप्त टिप्पणी दी गई है: I. सामान्यतः क्या कहा जा रहा है? (इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, आपको पहले से निर्धारित नियमों के अनुसार संरचनात्मक पठन के सभी चरणों का पालन करना होगा।) II. विशेष रूप से इसे कैसे कहा जा रहा है? (जब तक आप भाषा के भीतर छिपे विचार को नहीं समझ लेते, तब तक आप पूरी तरह से यह नहीं जान सकते कि क्या कहा जा रहा है। ऐसा करने के लिए, आपको यह देखना होगा कि भाषा का उपयोग कैसे किया जा रहा है और विचार किस प्रकार व्यवस्थित है। यहाँ, आपको व्याख्यात्मक पठन के सभी नियमों का पालन करना होगा।)

III. क्या यह सच है? (जब आप जान लें कि क्या कहा जा रहा है और कैसे, तभी आप विचार कर सकते हैं कि यह सच है या संभावित है। इस प्रश्न के लिए आलोचनात्मक निर्णय की आवश्यकता है।)

आपको दी जा रही जानकारी को स्वीकार या अस्वीकार करने का निर्णय लेना होगा। समाचारों के प्रस्तुतीकरण में दुष्प्रचार के प्रभावों को पहचानने के लिए आपको विशेष रूप से सतर्क रहना होगा। ज्ञानवर्धन के लिए पढ़ते समय, आपको यह

तय करना होगा कि आप जो कुछ भी समझ पाए हैं, उससे आप सहमत हैं या असहमत। यहां आपको जिन नियमों का पालन करना है, वे तीसरे या आलोचनात्मक पठन के नियम हैं।

IV. तो फिर क्या? (यदि आपने जो पढ़ा है वह किसी न किसी रूप में सत्य नहीं है, तो आपको आगे बढ़ने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन यदि यह सत्य है, तो आपको इस प्रश्न का सामना करना होगा। प्रस्तुत तथ्यों का क्या महत्व है, या होना चाहिए, यह निर्धारित किए बिना आप बुद्धिमानी से जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते। तथ्य शायद ही कभी किसी व्याख्या, चाहे वह स्पष्ट हो या निहित, के बिना हमारे सामने आते हैं।)

यह बात विशेष रूप से तब सच होती है जब आप सूचनाओं के सारांश पढ़ रहे होते हैं, जिनमें तथ्यों का चयन उनकी महत्ता के मूल्यांकन या व्याख्या के किसी सिद्धांत के आधार पर किया जाता है। और यदि आप ज्ञान प्राप्ति के लिए पढ़ रहे हैं, तो जिज्ञासा का कोई अंत नहीं है, जो सीखने के हर चरण में इस प्रश्न से नवगठित होती है, “इसका क्या अर्थ है?” ये चार प्रश्न एक पाठक के सभी दायित्वों का सार प्रस्तुत करते हैं। इसके अलावा, पहले तीन प्रश्न यह भी दर्शाते हैं कि किसी भी चीज़ को पढ़ने के तीन तरीके क्यों हैं। नियमों के ये तीन समूह मानवीय संवाद की मूल प्रकृति को दर्शाते हैं। यदि संचार जटिल न होता, तो संरचनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता न होती। यदि भाषा अपेक्षाकृत अस्पष्ट माध्यम होने के बजाय एक परिपूर्ण माध्यम होती, तो व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं होती। यदि त्रुटि और अज्ञान सत्य और ज्ञान को सीमित न करते, तो हमें आलोचनात्मक होने की आवश्यकता न होती।

चौथा प्रश्न सूचना और समझ के बीच के अंतर पर आधारित है।

जब आपने जो सामग्री पढ़ी है वह मुख्य रूप से सूचनात्मक है, तो आपको आगे बढ़कर ज्ञान की खोज करने की चुनौती मिलती है। यहां तक कि जब आपने जो पढ़ा है उससे आपको कुछ हद तक ज्ञान प्राप्त हो चुका हो, तब भी आपको अर्थ की खोज जारी रखने के लिए प्रेरित किया जाता है।

इन प्रश्नों को जानना ही काफी नहीं है। पढ़ते समय आपको इन्हें पूछना याद रखना होगा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको इनका सटीक और सही उत्तर देने में सक्षम होना चाहिए।

संक्षेप में, ऐसा करने की क्षमता ही पढ़ने की कला है।

- 5 -

किसी भी विषय को अच्छी तरह से पढ़ना लक्ष्य हो सकता है, लेकिन यह लक्ष्य इस कला को सीखने की शुरुआत करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं बताता। आप किसी भी प्रकार की सामग्री पढ़कर सही आदतें विकसित नहीं कर सकते; शायद मुझे कहना चाहिए कि कुछ प्रकार की सामग्री दूसरों की तुलना में इस अनुशासन को सीखना आसान बनाती हैं। उदाहरण के लिए, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और सारांशों से कुछ न कुछ जानकारी प्राप्त करना बहुत आसान है, भले ही कोई उन्हें लापरवाही से और निष्क्रिय रूप से पढ़े।

इसके अलावा, सतही पठन की हमारी सभी बुरी आदतें इन्हीं परिचित सामग्रियों से जुड़ी हुई हैं। इसीलिए, इस पूरी पुस्तक में मैंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि जानकारी प्राप्त करने के बजाय समझने के उद्देश्य से पढ़ना—क्योंकि यह अधिक कठिन और असामान्य है—आपके कौशल को विकसित करने का बेहतर अवसर प्रदान करता है।

इसी कारण से, अच्छी किताबें, या बेहतर कहें तो महान किताबें पढ़ना, पढ़ने की कला सीखने वालों के लिए सबसे कारगर उपाय है। यह कहना गलत होगा कि कठिन पठन-पाठन की कठिनाइयाँ लापरवाही की आदतों का दंड हैं; बल्कि, चिकित्सा की दृष्टि से, वे पुस्तकें जिन्हें सक्रिय रूप से पढ़े बिना समझा नहीं जा सकता, निष्क्रिय पठन से पीड़ित किसी भी व्यक्ति के लिए आदर्श उपचार हैं। और न ही मैं यह सोचता हूँ कि यह उपाय उन कठोर और कठिन उपचारों जैसा है जो या तो रोगी को मार डालते हैं या ठीक कर देते हैं। क्योंकि इस मामले में, रोगी खुराक स्वयं निर्धारित कर सकता है। वह धीरे-धीरे व्यायाम की मात्रा बढ़ा सकता है। उपचार शुरू होते ही अपना असर दिखाना शुरू कर देगा और जितना अधिक यह असर दिखाएगा, उतना ही अधिक वह सहन कर सकता है।

इसलिए, शुरुआत महान ग्रंथों से ही करनी चाहिए। वे इस उद्देश्य के लिए इतने उपयुक्त हैं कि ऐसा लगता है मानो उन्हें लोगों को पढ़ना सिखाने के लिए ही लिखा गया हो। वे पढ़ने की समस्या को सुलझाने में लगभग उसी तरह सहायक हैं जैसे तैरना सीखने के लिए पानी आवश्यक होता है। एक महत्वपूर्ण अंतर है। तैरने के लिए पानी अपरिहार्य है।

लेकिन महान ग्रंथों का अभ्यास करके पढ़ना सीख लेने के बाद, आप अपनी इस क्षमता को अच्छी किताबों को पढ़ने, किसी भी किताब को पढ़ने, किसी भी तरह की किताब को पढ़ने में लगा सकते हैं। जो व्यक्ति गहरे पानी में तैर सकता है, उसे उथले पानी की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन आपको यह पसंद आया या नहीं, इसके कारण बताएं। आपके द्वारा दिए गए कारण निश्चित रूप से पुस्तक से संबंधित होंगे, लेकिन शुरुआत में वे पुस्तक के बारे में कम और आपके विचारों—आपकी पसंद-नापसंद—के बारे में अधिक होंगे। इसलिए, आलोचना को पूरा करने के लिए, आपको पुस्तक में उन चीजों की ओर इशारा करके अपनी प्रतिक्रियाओं को वस्तुनिष्ठ बनाना होगा जिनके कारण वे प्रतिक्रियाएं उत्पन्न हुईं। आपको यह बताने से आगे बढ़ना होगा कि आपको क्या पसंद है या नापसंद है और क्यों, और फिर यह बताना होगा कि पुस्तक में क्या अच्छा है या क्या बुरा है और क्यों।

यहां एक बड़ा अंतर है। किसी व्यक्ति की पसंद-नापसंद को लेकर कोई उससे असहमत नहीं हो सकता। अपनी पसंद पर पूर्ण अधिकार हर व्यक्ति का है। लेकिन कोई व्यक्ति किसी पुस्तक के अच्छे या बुरे होने पर उससे असहमत हो सकता है। पसंद पर शायद बहस न हो, लेकिन आलोचनात्मक मूल्यांकन पर सवाल उठाए जा सकते हैं और उसका बचाव किया जा सकता है। अपने आलोचनात्मक निर्णयों को सही ठहराने के लिए हमें सौंदर्यपरक या साहित्यिक आलोचना के सिद्धांतों का सहारा लेना होगा।

यदि साहित्यिक आलोचना के सिद्धांत सुदृढ़ रूप से स्थापित होते और उन पर आम सहमति होती, तो किसी रचना के रचनात्मक पहलू पर पाठक द्वारा की जा सकने वाली मुख्य आलोचनात्मक टिप्पणियों को संक्षेप में गिनाना आसान होता। दुर्भाग्यवश—या सौभाग्यवश—ऐसा नहीं है, और आप मेरी इस बात से सहमत होंगे कि मैं जल्दबाजी में कोई निष्कर्ष नहीं निकालना चाहता। फिर भी, मैं पाँच प्रश्न सुझाने का जोखिम उठाऊंगा जो किसी को भी कथा साहित्य पर आलोचनात्मक निर्णय लेने में मदद करेंगे: (i) रचना में एकता किस हद तक है? (2) वह एकता जिन भागों और तत्वों को समाहित और व्यवस्थित करती है, उनकी जटिलता कितनी है? (3) क्या यह एक विश्वसनीय कहानी है, यानी क्या इसमें काव्य सत्य की अंतर्निहित विश्वसनीयता है? (4) क्या यह आपकी भावनाओं को जगाकर और आपकी कल्पना को भर कर, आपको दैनिक जीवन की सामान्य अर्धचेतना से गहन जागरूकता की स्पष्टता तक ले जाती है? (5) क्या यह एक ऐसी नई दुनिया का निर्माण करती है जिसमें आप खिंचे चले जाते हैं और जिसमें आपको ऐसा भ्रम होता है कि आप जीवन को स्थिर और समग्र रूप से देख रहे हैं?

मैं इन सवालों का बचाव करने के लिए बस इतना ही कहूंगा कि इनका जितना अधिक सकारात्मक जवाब होगा, उतनी ही अधिक संभावना है कि वह किताब कला की एक महान कृति है। मुझे लगता है कि ये सवाल आपको अच्छी और बुरी कहानियों में फर्क करने में मदद करेंगे, साथ ही अपनी पसंद-नापसंद को बेहतर ढंग से समझाने में भी सहायक होंगे। हालांकि आपको इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए कि जो चीज अपने आप में अच्छी है और जो आपको पसंद है, उनमें अंतर हो सकता है, फिर भी आप इस बेतुके बयान से बच सकेंगे: "मुझे कला के बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन मुझे पता है कि मुझे क्या पसंद है।"

जितना बेहतर आप चिंतनशील होकर कथा साहित्य पढ़ने में मिलने वाले आनंद के कारणों को समझ पाएंगे, उतना ही आप साहित्यिक कृति के कलात्मक गुणों को जानने के करीब पहुंचेंगे। इस प्रकार आप धीरे-धीरे आलोचना का एक मानक विकसित कर लेंगे। और यदि आप पेशेवर साहित्यिक आलोचक नहीं हैं—जो हर पुस्तक के लिए अपने कुछ विचारों को अलग-अलग तरीके से व्यक्त करने की आवश्यकता से ग्रस्त हैं, और प्रतिस्पर्धा के कारण स्पष्ट बातों से बचने के लिए बेताब रहते हैं—तो आपको समान रुचि वाले कई लोग मिलेंगे जो आपके आलोचनात्मक निर्णयों से सहमत होंगे। आप शायद यह भी जान पाएंगे, जो मुझे लगता है कि सच है, कि साहित्य में अच्छी रुचि हर उस व्यक्ति में विकसित हो जाती है जो पढ़ना सीखता है।

- 4 -

पठन कला को व्यापक रूप देने के लिए, व्याख्यात्मक नियमों को काल्पनिक समकक्षों में रूपांतरित करके, मैंने अब अंतिम चरण पूरा करने का निर्णय लिया है। अब आपके पास किसी भी पुस्तक को पढ़ने के नियम हैं। लेकिन मुद्रित होने योग्य किसी भी सामग्री को पढ़ने के नियमों के बारे में क्या? समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापन सामग्री, राजनीतिक प्रचार सामग्री को पढ़ने के बारे में क्या? क्या नियमों को इतना व्यापक रूप से बताया जा सकता है कि वे हर चीज़ पर लागू हों?

मुझे लगता है कि ऐसा हो सकता है। स्वाभाविक रूप से, जैसे-जैसे नियम अधिक सामान्य होते जाते हैं, उनकी संख्या कम होती जाती है और विषयवस्तु कम विशिष्ट होती जाती है। तीन या चार नियमों वाले तीन समूहों के स्थान पर, किसी भी चीज़ को पढ़ने के निर्देशों को चार प्रश्नों में संक्षेपित किया जा सकता है। किसी भी चीज़ को अच्छी तरह से पढ़ने के लिए, आपको उससे संबंधित इन चार प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम होना चाहिए। पहले हुई चर्चा के आलोक में, प्रश्नों को अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है। आप पहले से ही जानते हैं कि इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आपको कौन से कदम उठाने होंगे।

लेकिन, सबसे पहले, मैं आपको पढ़ने के बुनियादी अंतर को याद दिलाना चाहता हूँ—जानकारी प्राप्त करने के लिए पढ़ना और समझने के लिए पढ़ना—जो पढ़ने के बारे में मेरी कही गई हर बात का आधार है। अधिकतर हम समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और यहाँ तक कि विज्ञापन सामग्री भी उनमें मौजूद जानकारी के लिए पढ़ते हैं। ऐसी सामग्री की मात्रा विशाल है, इतनी विशाल कि आज किसी के पास उपलब्ध सूचना स्रोतों के एक छोटे से हिस्से को भी पढ़ने का समय नहीं है।

इस तरह की पठन सामग्री के क्षेत्र में आवश्यकता ही कई अच्छे आविष्कारों की जननी रही है।

टाइम और न्यूज़वीक जैसी तथाकथित समाचार पत्रिकाएँ हममें से अधिकांश के लिए समाचार पढ़कर उसे सूचना के आवश्यक तत्वों में संक्षेपित करके एक अमूल्य कार्य करती हैं। इन पत्रिकाओं के लेखक मुख्य रूप से पाठक होते हैं। उन्होंने सूचना प्राप्त करने की कला को औसत पाठक की क्षमता से कहीं अधिक उन्नत स्तर तक पहुँचा दिया है।

यही बात रीडर्स डाइजेस्ट पर भी लागू होती है, जो वर्तमान पत्रिकाओं में प्रकाशित लगभग हर महत्वपूर्ण सामग्री को एक छोटे से खंड में समेटने में सक्षम है। बेशक, बेहतरीन लेखों को, बेहतरीन किताबों की तरह, संक्षिप्त करना संभव नहीं है। अगर मोंटेग्न या लैम्ब के निबंध किसी वर्तमान पत्रिका में प्रकाशित होते, तो हम शायद ही उनका सारांश पढ़कर संतुष्ट होते। यहाँ सारांश तभी कारगर होगा जब वह हमें मूल लेख पढ़ने के लिए प्रेरित करे। हालांकि, औसत लेख के लिए, संक्षिप्त रूप आमतौर पर पर्याप्त होता है, और अक्सर मूल लेख से भी बेहतर होता है, क्योंकि औसत लेख मुख्य रूप से सूचनात्मक होता है। रीडर्स डाइजेस्ट को हर महीने प्रकाशित करने वाली कुशलता सबसे पहले पढ़ने की कुशलता है, और उसके बाद ही सरल और स्पष्ट लेखन की।

यह हमारे लिए वह काम करता है जो हममें से कुछ ही लोगों के पास खुद करने की तकनीक होती है—सिर्फ समय ही नहीं। यह कई पन्नों की कम महत्वपूर्ण सामग्री में से ठोस जानकारी का सार निकाल लेता है।

लेकिन, अंततः, हमें उन पत्रिकाओं को पढ़ना ही पड़ता है जो समसामयिक समाचारों और सूचनाओं का असाधारण सारांश प्रस्तुत करती हैं। यदि हम

जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो हम पढ़ने के कार्य से बच नहीं सकते, चाहे सारांश कितने भी अच्छे क्यों न हों। और सारांश पढ़ने का कार्य, अंततः, वही कार्य है जो इन पत्रिकाओं के संपादक मूल सामग्री को अधिक संक्षिप्त रूप में उपलब्ध कराते समय करते हैं। उन्होंने हमारे पढ़ने की मात्रा के लिहाज से तो हमारी मेहनत बचाई है, लेकिन वे हमें पढ़ने की परेशानी से पूरी तरह मुक्त नहीं कर सकते। एक अर्थ में, उनका कार्य हमें तभी लाभ पहुँचाता है जब हम उनके सूचना सारांशों को उसी दक्षता से पढ़ सकें जिस दक्षता से उन्होंने हमें सारांश प्रदान करने के लिए पूर्व में पठन किया है।

अब मैं जिन चार प्रश्नों का उल्लेख करूंगा, वे किसी भी सामग्री को पढ़ने के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। ये प्रश्न सूचना या ज्ञान प्रदान करने वाली सामग्री पर समान रूप से लागू होते हैं। इन प्रश्नों को दिशा-निर्देशों के एक समूह के रूप में बुद्धिमानी से उपयोग करने के लिए, आपको यह जानना आवश्यक है कि आप क्या खोज रहे हैं—चाहे आप किसी उद्देश्य से पढ़ रहे हों या किसी अन्य उद्देश्य से। यदि आप समझदार हैं, तो आपका उद्देश्य पढ़ी जाने वाली सामग्री की प्रकृति के अनुरूप होगा। यहाँ चार प्रश्न और संक्षिप्त टिप्पणी दी गई है: I. सामान्यतः क्या कहा जा रहा है? (इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, आपको पहले से निर्धारित नियमों के अनुसार संरचनात्मक पठन के सभी चरणों का पालन करना होगा।) II. विशेष रूप से इसे कैसे कहा जा रहा है? (जब तक आप भाषा के भीतर छिपे विचार को नहीं समझ लेते, तब तक आप पूरी तरह से यह नहीं जान सकते कि क्या कहा जा रहा है। ऐसा करने के लिए, आपको यह देखना होगा कि भाषा का उपयोग कैसे किया जा रहा है और विचार किस प्रकार व्यवस्थित है। यहाँ, आपको व्याख्यात्मक पठन के सभी नियमों का पालन करना होगा।)

III. क्या यह सच है? (जब आप जान लें कि क्या कहा जा रहा है और कैसे, तभी आप विचार कर सकते हैं कि यह सच है या संभावित है। इस प्रश्न के लिए आलोचनात्मक निर्णय की आवश्यकता है।)

आपको दी जा रही जानकारी को स्वीकार या अस्वीकार करने का निर्णय लेना होगा। समाचारों के प्रस्तुतीकरण में दुष्प्रचार के प्रभावों को पहचानने के लिए आपको विशेष रूप से सतर्क रहना होगा। ज्ञानवर्धन के लिए पढ़ते समय, आपको यह तय करना होगा कि आप जो कुछ भी समझ पाए हैं, उससे आप सहमत हैं या असहमत। यहां आपको जिन नियमों का पालन करना है, वे तीसरे या आलोचनात्मक पठन के नियम हैं।

IV. तो फिर क्या? (यदि आपने जो पढ़ा है वह किसी न किसी रूप में सत्य नहीं है, तो आपको आगे बढ़ने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन यदि यह सत्य है, तो आपको इस प्रश्न का सामना करना होगा। प्रस्तुत तथ्यों का क्या महत्व है, या होना चाहिए, यह निर्धारित किए बिना आप बुद्धिमानी से जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते। तथ्य शायद ही कभी किसी व्याख्या, चाहे वह स्पष्ट हो या निहित, के बिना हमारे सामने आते हैं।)

यह बात विशेष रूप से तब सच होती है जब आप सूचनाओं के सारांश पढ़ रहे होते हैं, जिनमें तथ्यों का चयन उनकी महत्ता के मूल्यांकन या व्याख्या के किसी सिद्धांत के आधार पर किया जाता है। और यदि आप ज्ञान प्राप्ति के लिए पढ़

रहे हैं, तो जिज्ञासा का कोई अंत नहीं है, जो सीखने के हर चरण में इस प्रश्न से नवगठित होती है, “इसका क्या अर्थ है?” ये चार प्रश्न एक पाठक के सभी दायित्वों का सार प्रस्तुत करते हैं। इसके अलावा, पहले तीन प्रश्न यह भी दर्शाते हैं कि किसी भी चीज़ को पढ़ने के तीन तरीके क्यों हैं। नियमों के ये तीन समूह मानवीय संवाद की मूल प्रकृति को दर्शाते हैं। यदि संचार जटिल न होता, तो संरचनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता न होती। यदि भाषा अपेक्षाकृत अस्पष्ट माध्यम होने के बजाय एक परिपूर्ण माध्यम होती, तो व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं होती। यदि त्रुटि और अज्ञान सत्य और ज्ञान को सीमित न करते, तो हमें आलोचनात्मक होने की आवश्यकता न होती।

चौथा प्रश्न सूचना और समझ के बीच के अंतर पर आधारित है।

जब आपने जो सामग्री पढ़ी है वह मुख्य रूप से सूचनात्मक है, तो आपको आगे बढ़कर ज्ञान की खोज करने की चुनौती मिलती है। यहां तक कि जब आपने जो पढ़ा है उससे आपको कुछ हद तक ज्ञान प्राप्त हो चुका हो, तब भी आपको अर्थ की खोज जारी रखने के लिए प्रेरित किया जाता है।

इन प्रश्नों को जानना ही काफी नहीं है। पढ़ते समय आपको इन्हें पूछना याद रखना होगा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको इनका सटीक और सही उत्तर देने में सक्षम होना चाहिए।

संक्षेप में, ऐसा करने की क्षमता ही पढ़ने की कला है।

- 5 -

किसी भी विषय को अच्छी तरह से पढ़ना लक्ष्य हो सकता है, लेकिन यह लक्ष्य इस कला को सीखने की शुरुआत करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं बताता। आप किसी भी प्रकार की सामग्री पढ़कर सही आदतें विकसित नहीं कर सकते; शायद मुझे कहना चाहिए कि कुछ प्रकार की सामग्री दूसरों की तुलना में इस अनुशासन को सीखना आसान बनाती हैं। उदाहरण के लिए, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और सारांशों से कुछ न कुछ जानकारी प्राप्त करना बहुत आसान है, भले ही कोई उन्हें लापरवाही से और निष्क्रिय रूप से पढ़े।

इसके अलावा, सतही पठन की हमारी सभी बुरी आदतें इन्हीं परिचित सामग्रियों से जुड़ी हुई हैं। इसीलिए, इस पूरी पुस्तक में मैंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि जानकारी प्राप्त करने के बजाय समझने के उद्देश्य से पढ़ना—क्योंकि यह अधिक कठिन और असामान्य है—आपके कौशल को विकसित करने का बेहतर अवसर प्रदान करता है।

इसी कारण से, अच्छी किताबें, या बेहतर कहें तो महान किताबें पढ़ना, पढ़ने की कला सीखने वालों के लिए सबसे कारगर उपाय है। यह कहना गलत होगा कि कठिन पठन-पाठन की कठिनाइयाँ लापरवाही की आदतों का दंड हैं; बल्कि, चिकित्सा की दृष्टि से, वे पुस्तकें जिन्हें सक्रिय रूप से पढ़े बिना समझा नहीं जा सकता, निष्क्रिय पठन से पीड़ित किसी भी व्यक्ति के लिए आदर्श उपचार हैं। और न ही मैं यह सोचता हूँ कि यह उपाय उन कठोर और कठिन उपचारों जैसा है जो या तो रोगी को मार डालते हैं या ठीक कर देते हैं। क्योंकि इस मामले में, रोगी

खुराक स्वयं निर्धारित कर सकता है। वह धीरे-धीरे व्यायाम की मात्रा बढ़ा सकता है। उपचार शुरू होते ही अपना असर दिखाना शुरू कर देगा और जितना अधिक यह असर दिखाएगा, उतना ही अधिक वह सहन कर सकता है।

इसलिए, शुरुआत महान ग्रंथों से ही करनी चाहिए। वे इस उद्देश्य के लिए इतने उपयुक्त हैं कि ऐसा लगता है मानो उन्हें लोगों को पढ़ना सिखाने के लिए ही लिखा गया हो। वे पढ़ने की समस्या को सुलझाने में लगभग उसी तरह सहायक हैं जैसे तैरना सीखने के लिए पानी आवश्यक होता है। एक महत्वपूर्ण अंतर है। तैरने के लिए पानी अपरिहार्य है।

लेकिन महान ग्रंथों का अभ्यास करके पढ़ना सीख लेने के बाद, आप अपनी इस क्षमता को अच्छी किताबों को पढ़ने, किसी भी किताब को पढ़ने, किसी भी तरह की किताब को पढ़ने में लगा सकते हैं। जो व्यक्ति गहरे पानी में तैर सकता है, उसे उथले पानी की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

अध्याय सोलह

महान पुस्तकें

जैसा कि मैंने प्रस्तावना में उल्लेख किया है, इस अध्याय को 'हाउ टू रीड अ बुक' के इस संस्करण के नए परिशिष्ट के अनुरूप बनाने के लिए इसमें संशोधन करना आवश्यक था। हालांकि, अध्याय में उतना व्यापक संशोधन नहीं किया गया है जितना किया जा सकता था। आइए मैं इसका कारण समझाता हूँ।

इस अध्याय का मूल उद्देश्य परिशिष्ट में सूचीबद्ध अनुशंसित महान पुस्तकों का परिचय देना था। इसमें महान पुस्तकों के सामान्य स्वरूप पर चर्चा की गई थी और उन मानदंडों को बताया गया था जिनसे यह निर्धारित किया जा सकता है कि कोई पुस्तक वास्तव में महान है या नहीं। उदाहरणों के माध्यम से यह दर्शाया गया था कि ये पुस्तकें किस प्रकार एक महान संवाद का हिस्सा हैं — किस प्रकार हमारे चिंतन के ताने-बाने में समाहित हैं। संशोधित अध्याय में भी यही उद्देश्य है, बस मैंने उदाहरणों को नए परिशिष्ट में सूचीबद्ध पुस्तकों और लेखकों के अनुरूप बदल दिया है।

जब मैंने मूल अध्याय लिखा था, तब से महान ग्रंथों के पठन और विवेचना में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। मैंने इस संस्करण की प्रस्तावना में इन परिवर्तनों की ओर ध्यान दिलाया है। ग्रेट बुक्स ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड और गेटवे टू द ग्रेट बुक्स के प्रकाशन और वितरण का इसमें बहुत बड़ा योगदान

है। इन संग्रहों, और विशेष रूप से सिंटोपिकॉन के अस्तित्व ने, इस अध्याय के संदर्भ को दो तरह से मौलिक रूप से बदल दिया है।

ग्रेट बुक्स ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड के खंड i में रॉबर्ट एम. का एक निबंध शामिल है।

श्री हचिन्स द्वारा लिखित "महान वार्तालाप" नामक लेख में, श्री हचिन्स ने उन सभी बातों को विस्तार से, अधिक सशक्त और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है जो मैंने अपने मूल अध्याय 16 में महान पुस्तकों के चरित्र के बारे में कही थीं। उन्होंने इन पुस्तकों के आपसी संबंध का वर्णन मुझसे कहीं बेहतर किया है। इसलिए, एक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मुझे इस अध्याय में संशोधन करने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। श्री हचिन्स ने इसे वह निबंध बना दिया है जो मैं चाहता था।

सिंटोपिकॉन का अस्तित्व एक और भी महत्वपूर्ण कारण है कि मैंने इस अध्याय को सतही तौर पर ही संशोधित किया है। सिंटोपिकॉन, जिसमें विचार, विषय और उपविषय के आधार पर महान ग्रंथों के अनगिनत संदर्भ दिए गए हैं, उन्हें पढ़ने का एक बिल्कुल नया तरीका प्रदान करता है। सिंटोपिकॉन की प्रस्तावना (ग्रेट बुक्स ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड के खंड 2 के पृष्ठ 11-31) में, मैंने पढ़ने के इस नए तरीके का वर्णन किया है, जिसे मैं "सिंटोपिकल रीडिंग" कहता हूँ, और जिसमें किसी एक कृति को "सरसरी तौर पर पढ़ने" के विपरीत, महान ग्रंथों के पूरे समूह को "अंतर्दृष्टि से पढ़ना" शामिल है। इसलिए, यहाँ कम जगह होने के कारण, मैं केवल वही दोहरा रहा हूँ जो मैंने वहाँ कहा था।

अंत में, कई वर्षों बाद इस अध्याय को दोबारा पढ़ने पर मुझे यह एहसास हुआ कि सिंटोपिकॉन के बिना महान पुस्तकों को पढ़ने के तरीके पर इसकी चर्चा स्वयं सिंटोपिकॉन के बारे में बहुत कुछ बताती है। पच्चीस साल पहले, मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि सिंटोपिकॉन द्वारा संभव बनाया गया पठन कभी संभव हो पाएगा। (मैंने सिंटोपिकॉन का सपना तो देखा था, लेकिन तब मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह कभी हकीकत बनेगा।) अब पीछे मुड़कर देखने पर, मुझे सिंटोपिकॉन की उपयोगिता और शक्ति का और भी स्पष्ट रूप से एहसास होता है। इसकी सहायता के बिना महान पुस्तकों को पढ़ना एक ऐसा बौद्धिक अनुभव है जिसकी तुलना विचार जगत में शायद ही की जा सके। लेकिन इसे मार्गदर्शक के रूप में लेकर पढ़ना कहीं अधिक लाभप्रद है। मुझे आशा है कि पाठक इस अध्याय को पढ़ते समय इसे समझेंगे और मुझे भी क्षमा करेंगे कि मैंने इसे एक स्पष्ट विसंगति के रूप में छोड़ दिया है - उनकी शिक्षा के हित में।

- 1 -

किताबों का निर्माण कभी खत्म नहीं होता। और न ही किताबों की सूचियाँ बनाने का कोई अंत नज़र आता है। एक दूसरे का कारण है। हमेशा से ही इतनी किताबें रही हैं कि कोई भी उन्हें पढ़ नहीं सकता। और सदियों से जैसे-जैसे इनकी संख्या लगातार बढ़ती गई है, वैसे-वैसे और भी अधिक उत्कृष्ट सूचियाँ बनानी पड़ी हैं।

क्या पढ़ना है यह जानना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि पढ़ना सीखना। जब आप पढ़ना सीख जाएंगे, तो मुझे उम्मीद है कि आपके पास पढ़ने के लिए लंबा जीवन होगा। लेकिन, सबसे अच्छा यही होगा कि आप लिखी गई सभी पुस्तकों में से कुछ ही पढ़ पाएंगे, और जो कुछ पुस्तकें आप पढ़ेंगे उनमें सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें शामिल होनी चाहिए। आप इस बात से प्रसन्न हो सकते हैं कि पढ़ने के लिए बहुत अधिक महान पुस्तकें नहीं हैं। ग्रेट बुक्स ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड में चौवन खंड हैं—74 लेखकों की 1745 रचनाएँ।

सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों की सूची बनाना उतना ही पुराना है जितना कि पढ़ना- लिखना। प्राचीन अलेक्जेंड्रिया के शिक्षकों और पुस्तकालयाध्यक्षों ने ऐसा किया था। उनकी पुस्तकों की सूचियाँ शैक्षिक पाठ्यक्रम की रीढ़ थीं। क्विंटिलियन ने रोमन शिक्षा के लिए ऐसा किया, और जैसा कि उन्होंने कहा, प्राचीन और आधुनिक दोनों प्रकार की क्लासिक पुस्तकों का चयन किया। मध्य युग में मुसलमानों, यहूदियों और ईसाइयों द्वारा भी इसे बार-बार किया गया, और इसी उद्देश्य से। पुनर्जागरण काल में, मोंटेग्न और इरास्मस जैसे ज्ञान के पुनरुद्धार के नेताओं ने उन पुस्तकों की सूचियाँ बनाईं जिन्हें वे पढ़ते थे। उन्होंने स्वयं को सभ्य साक्षरता के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया।

मानवतावादी शिक्षा की नींव "मानवीय साहित्य" पर रखी गई थी, जैसा कि कहा जाता है।

निर्धारित पठन सामग्री मुख्य रूप से रोमन साहित्य की महान कृतियों - उसकी कविता, जीवनी और इतिहास, तथा उसके नैतिक निबंधों - से संबंधित थी।

उन्नीसवीं शताब्दी में, किताबों की और भी सूचियाँ थीं। अगर आप उन किताबों के बारे में जानना चाहते हैं जिन्होंने उस समय के एक प्रमुख उदारवादी के व्यक्तित्व को निखारने में अहम भूमिका निभाई, तो जॉन स्टुअर्ट मिल की आत्मकथा देखें। शायद पिछली शताब्दी में बनी सबसे प्रसिद्ध किताबों की सूची ऑगस्टे कॉम्टे की थी। कॉम्टे एक फ्रांसीसी विचारक थे जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के विज्ञान और विज्ञान के माध्यम से प्रगति के प्रति समर्पण का साक्षात उदाहरण प्रस्तुत किया।

यह स्वाभाविक है कि "सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों" का चयन समय के साथ बदलता रहता है। फिर भी, किसी भी काल की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों की सूचियों में आश्चर्यजनक एकरूपता पाई जाती है। ईसा पूर्व और ईस्वी, दोनों ही युगों में, सूची बनाने वाले प्राचीन और आधुनिक दोनों प्रकार की पुस्तकों को शामिल करते हैं, और वे हमेशा यह सोचते हैं कि क्या आधुनिक पुस्तकें अतीत की महान पुस्तकों के स्तर तक पहुँच पाती हैं। प्रत्येक युग में होने वाले परिवर्तन मुख्य रूप से प्रतिस्थापन के बजाय परिवर्धन होते हैं। स्वाभाविक रूप से, महान पुस्तकों की सूची समय के साथ बढ़ती जाती है, लेकिन इसके मूल और रूपरेखा वही रहती है।

इसका कारण यह है कि प्रसिद्ध सूचियाँ वास्तव में बहुआयामी होती हैं। वे मानव परंपरा की सभी महान कृतियों को शामिल करने का प्रयास करती हैं। एक गलत चयन वह होगा जो किसी विशेष स्वार्थ या पक्षपात से प्रेरित हो। ऐसी

सूचियाँ भी रही हैं जिनमें केवल उन्हीं पुस्तकों को चुना गया है जो किसी विशेष बात को सिद्ध करती हों। यूरोपीय परंपरा को इस प्रकार सीमित नहीं किया जा सकता। इसमें बहुत कुछ ऐसा शामिल है जो किसी विशेष दृष्टिकोण से देखने पर निश्चित रूप से गलत या भ्रामक प्रतीत होगा। जहाँ कहीं भी सत्य पाया जाता है, वहाँ हमेशा बड़ी त्रुटियाँ भी मौजूद होती हैं। महान पुस्तकों की उचित सूची बनाने के लिए, उन सभी को शामिल करना आवश्यक है जिन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, न कि केवल उन्हीं को जिनसे हम सहमत हैं या जिन्हें हम स्वीकार करते हैं।

साठ-सत्तर साल पहले तक, कॉलेज का पाठ्यक्रम अनिवार्य पठन सामग्री के एक समूह पर आधारित होता था। ऐच्छिक पाठ्यक्रम प्रणाली और अन्य शैक्षिक परिवर्तनों के प्रभाव से, इस देश में अनिवार्यताओं में धीरे-धीरे ढील दी गई, यहाँ तक कि स्नातक की डिग्री का अर्थ अब केवल सामान्य साक्षरता नहीं रह गया। महान पुस्तकें अब भी कहीं-कहीं, इस पाठ्यक्रम में और उस पाठ्यक्रम में दिखाई देती थीं, लेकिन उन्हें एक-दूसरे के संदर्भ में शायद ही कभी पढ़ा जाता था। अक्सर उन्हें मुख्य पाठ्यक्रम में प्रमुख पाठ्यपुस्तकों के पूरक के रूप में ही रखा जाता था।

जब मैंने बीसवीं सदी की शुरुआत में कॉलेज में प्रवेश लिया, तब हालात सबसे बदतर थे। जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, मैंने सुधार की शुरुआत भी देखी। जॉन एर्स्किन ने कोलंबिया विश्वविद्यालय के शिक्षकों को महान पुस्तकों के अध्ययन के लिए समर्पित एक ऑनर्स पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए राजी कर लिया था।

इस सूची को तैयार करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था, जिसमें साठ से सत्तर लेखक शामिल थे, जो विद्वत्ता के सभी क्षेत्रों और काव्य के सभी प्रकारों का प्रतिनिधित्व करते थे। यह सूची अन्य प्रचलित सूचियों से इस मायने में भिन्न थी कि इसमें चयन का उच्च मानदंड था, और इसमें किसी विशेष काल या प्रकार की महान कृतियों को ही नहीं, बल्कि हर महान कृति को शामिल करने का प्रयास किया गया था।

एर्स्किन सूची को इसके आरंभ से लेकर अब तक कई बार संशोधित और परिवर्तित किया गया है।

हचिन्स और मैंने शिकागो विश्वविद्यालय में कुछ बदलावों के साथ इसका उपयोग किया है। सेंट जॉन कॉलेज का चार वर्षीय पठन कार्यक्रम मूलतः इसी सूची पर आधारित है, हालांकि इसमें गणित और प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्रों से कुछ नई पुस्तकें जोड़ी गई हैं। इसी तरह की एक सूची, हालांकि थोड़ी छोटी, आजकल कई कॉलेजों में सभी छात्रों के लिए अनिवार्य पाठ्यक्रमों में उपयोग की जा रही है। और 'ग्रेट बुक्स ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड' की सूची, जिसमें 'गेटवे टू द ग्रेट बुक्स' भी शामिल है, पश्चिमी संस्कृति की महान कृतियों का काफी सटीक वर्णन करती है।

मुझे एक ऐसा अनुभव हुआ जिससे मुझे महान पुस्तकों की सूची बनाने के इस व्यवसाय के बारे में गहरी समझ मिली।

जब मूल सूची में संशोधन किया जा रहा था, उस दौरान मैंने कोलंबिया विश्वविद्यालय में ऑनर्स पाठ्यक्रम पढ़ाने वाले संकाय के सचिव के रूप में कार्य किया। संकाय के कई सदस्यों ने असंतोष व्यक्त किया था। वे कुछ लेखकों को हटाकर अन्य को शामिल करना चाहते थे। मामले को सुलझाने के लिए, हमने लगभग तीन सौ पुस्तकों की एक व्यापक सूची तैयार की, जो किसी के भी शामिल किए जाने की इच्छा से कहीं अधिक थी, लेकिन इतनी लंबी थी कि इसमें किसी भी लेखक का नाम शामिल हो सके।

फिर हमने मतदान शुरू किया, और धीरे-धीरे उन पुस्तकों या लेखकों को सूची से हटा दिया जिन पर आम सहमति नहीं थी। कई बार मतदान के बाद, हमें एक ऐसी सूची मिली जिससे सभी संतुष्ट थे। इसमें अस्सी पुस्तकें थीं, जो एर्स्किन की सूची से लगभग पंद्रह अधिक थीं। इसमें मूल सूची के लगभग सभी शीर्षक शामिल थे। दो वर्षों के इस संशोधन से मुझे यह पता चला कि महान पुस्तकों के बारे में राय कितनी एकमत है। यह स्पष्ट हो गया कि सौ से अधिक लेखकों की सूची बनाना मुश्किल होगा जिन पर इतनी सर्वसम्मत सहमति हो। इससे आगे बढ़ने पर, आप उस विशेष काल या विषय के विशेषज्ञों के हितों को ही ध्यान में रख रहे होंगे। पश्चिमी विश्व की महान पुस्तकों की सूची बनाते समय भी हमारा अनुभव कुछ ऐसा ही रहा।

सच कहें तो, सूचीपत्र पढ़ने की वस्तु नहीं है। यह संदर्भ के लिए होता है। इसीलिए मैंने परिशिष्ट में ग्रेट बुक्स और गेटवे की विषयसूची दी है। इस अध्याय में, मैं पुस्तकों के बारे में चर्चा करके उस सूची को जीवंत बनाने का प्रयास करूंगा।

इसलिए, मैं महान ग्रंथों को छोटे-छोटे समूहों में संकलित करने का प्रयास करूँगा, जिनमें से प्रत्येक समूह किसी विशेष समस्या पर चर्चा में भाग लेगा, जिसमें शायद आपकी रुचि पहले से ही हो। कुछ मामलों में, चर्चाएँ आपस में जुड़ी होंगी, ठीक वैसे ही जैसे समस्याएँ होती हैं। अन्य मामलों में, एक समस्या पर चर्चा दूसरी समस्या की ओर ले जाएगी। इस प्रकार, किताबों को एक कतार में एक साथ पड़े रहने के बजाय, वे आपको वैसे ही दिखाई देंगी जैसे उन्हें होना चाहिए—एक जीवंत परंपरा के सजीव पात्र। मैं इस अध्याय में सभी किताबों के नाम नहीं लूँगा, लेकिन मैं उनमें से पर्याप्त किताबों को आपस में चर्चा में शामिल करने में सक्षम रहूँगा, ताकि आप कार्य की कल्पना कर सकें। यदि आप इनमें से कुछ किताबें पढ़कर चर्चा में शामिल होने के लिए प्रेरित होते हैं, तो वे बाकी का काम संभाल लेंगी।

- 2 -

लेकिन इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूँ, यह बताना उचित होगा कि एक महान पुस्तक क्या होती है। मैंने इस वाक्यांश का बार-बार प्रयोग किया है, इस उम्मीद में कि अध्याय चार में महान पुस्तकों को मौलिक संचार के रूप में वर्णित करने से बात स्पष्ट हो जाएगी। अध्याय आठ में, मैंने सुझाव दिया था कि काव्य रचनाओं में भी इसी प्रकार का अंतर होता है। जिस प्रकार महान व्याख्यात्मक पुस्तकें अन्य पुस्तकों की तुलना में हमारी समझ को अधिक बढ़ाती हैं, उसी

प्रकार कल्पनात्मक साहित्य की महान रचनाएँ हमारी आत्मा को उन्नत करती हैं और हमारी मानवता को गहरा करती हैं।

अन्य अध्यायों में मैंने महान पुस्तकों के अन्य गुणों का उल्लेख किया होगा। लेकिन अब मैं उन सभी संकेतों को एक ही स्थान पर एकत्रित करना चाहता हूँ जिनसे महान पुस्तकों की पहचान की जा सकती है—कुछ को दोहराते हुए, कुछ नए जोड़ते हुए। ये वे संकेत हैं जिनका उपयोग हर कोई सूचियाँ बनाते या चयन करते समय करता है।

(1) मैं अक्सर मज़ाक में कहता था कि महान पुस्तकें वे हैं जिनकी हर कोई सिफ़ारिश करता है और कोई पढ़ता नहीं, या वे हैं जिन्हें हर कोई पढ़ने का इरादा बताता है लेकिन कभी पढ़ता नहीं। यह मज़ाक (दरअसल यह मार्क ट्वेन का है) शायद हमारे कुछ समकालीनों को सही लगे, लेकिन यह टिप्पणी अधिकतर गलत है। वास्तव में, महान पुस्तकें शायद सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली पुस्तकें हैं। वे एक-दो साल के लिए बेस्टसेलर नहीं होतीं। वे लंबे समय तक बेस्टसेलर बनी रहती हैं। जेम्स बॉन्ड के पाठक डॉन क्विक्सोट या शेक्सपियर के नाटकों की तुलना में अपेक्षाकृत कम रहे हैं। यह अनुमान लगाना उचित होगा, जैसा कि एक हालिया लेखक ने लगाया है, कि होमर की इलियड को पिछले 3,000 वर्षों में कम से कम 25,000,000 लोगों ने पढ़ा है। जब आप यह समझेंगे कि इन पुस्तकों का कितनी भाषाओं में अनुवाद हुआ है और कितने वर्षों तक इन्हें पढ़ा गया है, तो आपको नहीं लगेगा कि लाखों में पाठकों की संख्या अतिशयोक्तिपूर्ण है।

इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि हर वो किताब जो बहुत सारे पाठकों तक पहुँचती है, सिर्फ इसी वजह से क्लासिक बन जाती है। थ्री वीक्स, क्वो वाडिस और बेन-हुर जैसी काल्पनिक रचनाएँ इसके उदाहरण हैं। मेरा यह भी मतलब नहीं है कि एक महान किताब का अपने समय में बेस्टसेलर होना ज़रूरी है। उसे अपने अंतिम पाठकों तक पहुँचने में समय लग सकता है। खगोलशास्त्री केप्लर, जिनकी ग्रहों की गति पर लिखी रचना अब एक क्लासिक मानी जाती है, ने अपनी किताब के बारे में कहा था कि "इसे पाठक के लिए एक सदी तक इंतज़ार करना पड़ सकता है, जैसे भगवान ने 6,000 साल इंतज़ार किया है।"

एक पर्यवेक्षक के लिए वर्षों का समय।"

(2) महान पुस्तकें लोकप्रिय होती हैं, पांडित्यपूर्ण नहीं। वे विशेषज्ञों द्वारा विशेषज्ञों के लिए नहीं लिखी जातीं। चाहे वे दर्शनशास्त्र हों या विज्ञान, या इतिहास हो या कविता, वे मानवीय समस्याओं पर चर्चा करती हैं, न कि अकादमिक समस्याओं पर। वे मनुष्यों के लिए लिखी जाती हैं, प्रोफेसरों के लिए नहीं।

जब मैं इन्हें लोकप्रिय कहता हूँ, तो मेरा मतलब यह नहीं है कि ये अन्य पुस्तकों में मौजूद जानकारी को सरल बनाकर लोकप्रिय बनाई गई हैं। मेरा मतलब है कि इन्हें मूल रूप से आम पाठकों के लिए लिखा गया था। ये शुरुआती लोगों के लिए थीं। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, यह इनके मौलिक लेखन का परिणाम है। इन पुस्तकों में जो कुछ कहा गया है, उसके संदर्भ में अधिकांश पुरुष शुरुआती स्तर के हैं।

उन्नत स्तर के छात्रों के लिए लिखी गई पाठ्यपुस्तक को पढ़ने के लिए, आपको पहले प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तक पढ़नी होगी।

लेकिन महान पुस्तकें सभी मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित होती हैं। वे किसी भी विषय के मूल तत्वों का वर्णन करती हैं।

ये पुस्तकें पाठ्यपुस्तकों की एक श्रृंखला की तरह एक-दूसरे से संबंधित नहीं हैं, जिन्हें कठिनाई या समस्याओं की तकनीकी बारीकियों के आधार पर वर्गीकृत किया गया हो। मेरा यही तात्पर्य था जब मैंने कहा कि ये सभी पुस्तकें शुरुआती लोगों के लिए हैं, भले ही ये सभी विचार परंपरा में एक ही स्थान से शुरू न होती हों। हालांकि, एक प्रकार का पूर्व-अध्ययन है जो आपको एक महान पुस्तक पढ़ने में मदद करता है, और वह है लेखक द्वारा स्वयं पढ़ी गई अन्य महान पुस्तकें। यदि आप वहीं से शुरू करते हैं जहाँ से उन्होंने शुरू किया था, तो आप उनके द्वारा किए जाने वाले नए प्रयोग के लिए बेहतर रूप से तैयार हो जाते हैं। यही वह बिंदु है जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, जब मैंने कहा था कि गणित और विज्ञान की पुस्तकें भी विशेष निर्देश के बिना पढ़ी जा सकती हैं।

आइए, यूक्लिड की ज्यामिति के मूल तत्व और न्यूटन की प्राकृतिक दर्शन के गणितीय सिद्धांत का उदाहरण देकर इस बात को स्पष्ट करें। यूक्लिड को समझने के लिए गणित का पूर्व अध्ययन आवश्यक नहीं है। उनकी पुस्तक वास्तव में ज्यामिति और बुनियादी अंकगणित का परिचय है। न्यूटन के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि न्यूटन भौतिक समस्याओं के हल में गणित का उपयोग करते हैं। पाठक को उनके गणितीय तर्क को समझने में सक्षम होना चाहिए ताकि वह समझ सके कि उनके प्रेक्षणों की व्याख्या कैसे की जाती है। न्यूटन ने यूक्लिड का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनकी गणितीय शैली से पता चलता है कि वे अनुपात और समानुपात के यूक्लिड के विवेचन से कितने गहरे प्रभावित थे। इसलिए, उनकी पुस्तक को समझना, सक्षम वैज्ञानिकों के लिए भी, तब तक आसान नहीं है जब तक कि यूक्लिड को पहले न पढ़ा गया हो। लेकिन यूक्लिड को मार्गदर्शक मानकर, न्यूटन या गैलीलियो को पढ़ने का प्रयास व्यर्थ नहीं जाता।

मैं यह नहीं कह रहा कि इन महान वैज्ञानिक ग्रंथों को बिना प्रयास के पढ़ा जा सकता है। मैं यह कह रहा हूँ कि यदि इन्हें ऐतिहासिक क्रम में पढ़ा जाए, तो प्रयास सार्थक होता है। जिस प्रकार यूक्लिड ने न्यूटन और गैलीलियो को ज्ञान प्रदान किया, उसी प्रकार वे बदले में फैराडे और आइंस्टीन को समझने में सहायक होते हैं। यह बात केवल गणितीय और वैज्ञानिक कृतियों तक ही सीमित नहीं है। यह दार्शनिक ग्रंथों पर भी लागू होती है। उनके लेखक आपको बताते हैं कि उन्हें पढ़ने से पहले आपको क्या पढ़ना चाहिए: ड्यूई चाहते हैं कि आप मिल और ह्यूम को पढ़ें; व्हाइटहेड चाहते हैं कि आप डेसकार्टेस और प्लेटो को पढ़ें।

(3) महान पुस्तकें हमेशा समकालीन होती हैं। इसके विपरीत, जिन पुस्तकों को हम कहते हैं

समकालीन कहलाने वाली पुस्तकें, क्योंकि वे वर्तमान में लोकप्रिय होती हैं, केवल एक या दो साल, या ज़्यादा से ज़्यादा दस साल तक ही टिकती हैं। वे जल्द ही अप्रचलित हो जाती हैं। शायद आपको पचास के दशक की सबसे ज़्यादा बिकने वाली पुस्तकों के नाम याद न हों। अगर आपको उनके नाम याद दिला भी दिए जाएँ, तो शायद आपको उन्हें पढ़ने में दिलचस्पी न हो। विशेष रूप से गैर-काल्पनिक पुस्तकों के क्षेत्र में, आप नवीनतम समकालीन उत्पाद चाहते हैं। लेकिन महान पुस्तकें विचारों के प्रवाह या सिद्धांतों और मतों की बदलती हवाओं से कभी अप्रचलित नहीं होतीं। इसके विपरीत, एक महान पुस्तक उसी विषय पर लिखी गई अन्य पुस्तकों के महत्व को और भी बढ़ा देती है। इस प्रकार, मार्क्स की 'कैपिटल' और एडम स्मिथ की 'वेल्थ ऑफ नेशंस' एक-दूसरे को रोशन करती हैं, और इसी तरह क्लाउड बर्नार्ड की 'इंट्रोडक्शन टू एक्सपेरिमेंटल मेडिसिन' और हिप्पोक्रेट्स और गैलेन के चिकित्सा संबंधी लेखन जैसे एक-दूसरे से बिल्कुल अलग-अलग रचनाएँ भी।

शोपेनहावर ने यह बात स्पष्ट रूप से कही। उन्होंने कहा, "नई किताबों की एक विशाल सूची को देखते हुए,"

यह सोचकर रोना आ सकता है कि दस साल बीत जाने के बाद उनमें से किसी का भी नामोनिशान नहीं रहेगा। उनकी आगे की व्याख्या ध्यान देने योग्य है: हर समय दो साहित्य धाराएँ साथ-साथ चलती रहती हैं, लेकिन एक-दूसरे से बहुत कम परिचित होती हैं; एक वास्तविक, दूसरी केवल आभासी। पहली धारा स्थायी साहित्य में तब्दील हो जाती है; इसका अनुसरण वे लोग करते हैं जो विज्ञान या कविता के लिए जीते हैं; इसका प्रवाह संयमित और शांत होता है, लेकिन अत्यंत धीमा होता है;

और यूरोप में यह एक सदी में मुश्किल से एक दर्जन रचनाएँ ही प्रकाशित करता है; हालाँकि, ये रचनाएँ स्थायी होती हैं। दूसरी तरह का साहित्य उन लोगों द्वारा अपनाया जाता है जो विज्ञान और कविता पर निर्भर रहते हैं। यह बहुत तेज़ी से आगे बढ़ता है, समर्थकों के शोर-शराबे और जयजयकार के साथ। हर बारह महीने में यह एक हज़ार रचनाएँ बाज़ार में उतारता है। लेकिन कुछ वर्षों बाद सवाल उठता है, वे कहाँ हैं? वह प्रसिद्धि कहाँ है जो इतनी जल्दी आई और इतना शोर मचाया? इस तरह के साहित्य को क्षणभंगुर और दूसरे को स्थायी साहित्य कहा जा सकता है।

"स्थायी" और "क्षणिक" शब्द लगातार समकालीन महान पुस्तकों और जल्द ही अप्रचलित हो जाने वाली वर्तमान पुस्तकों को नाम देने के लिए उपयुक्त हैं।

क्योंकि ये समकालीन हैं, और इन्हें इसी रूप में पढ़ा जाना चाहिए, इसलिए "क्लासिक" शब्द का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। आपको याद होगा कि मार्क ट्वेन ने क्लासिक को इस प्रकार परिभाषित किया था, "ऐसी चीज़ जिसे हर कोई पढ़ना चाहता है, और कोई भी पढ़ना नहीं चाहता।" मुझे खेद है कि अब अधिकांश लोगों के लिए यह बात भी सच नहीं रही। "क्लासिक" का अर्थ अब एक प्राचीन और अप्रचलित पुस्तक हो गया है। लोग क्लासिक्स को बीते जमाने की महान कृतियाँ, अपने समय की महान पुस्तकें मानते हैं। वे कहते हैं, "लेकिन हमारा समय अलग है।" इस दृष्टिकोण से, क्लासिक्स को पढ़ने का एकमात्र उद्देश्य ऐतिहासिक

या भाषावैज्ञानिक रुचि है। यह अतीत की संस्कृति के कुछ हद तक पुराने स्मारकों में झाँकने जैसा है। इस प्रकार से देखे जाने पर, क्लासिक्स आधुनिक मनुष्य को शिक्षा नहीं दे सकते, सिवाय उसके पूर्वजों की विशिष्टताओं के बारे में बताने के।

लेकिन महान पुस्तकें फीकी पड़ चुकी शान नहीं हैं। वे विद्वानों के अध्ययन के लिए धूल से ढकी हुई अवशेष मात्र नहीं हैं। वे मृत सभ्यताओं का अभिलेख नहीं हैं। बल्कि वे आज विश्व में सबसे शक्तिशाली सभ्यतागत शक्तियाँ हैं।

निःसंदेह, कुछ क्षेत्रों में प्रगति हुई है। जीवन को सुगम और अधिक कुशल बनाने के लिए मनुष्य द्वारा आविष्कार किए जा सकने वाले सभी उपयोगी उपकरणों में प्रगति हुई है। सामाजिक क्षेत्रों में भी प्रगति हुई है, जिसका उदाहरण आधुनिक काल में लोकतंत्र का आगमन है। और ज्ञान तथा समस्याओं एवं विचारों के स्पष्टीकरण में भी प्रगति हुई है।

लेकिन हर चीज़ में प्रगति नहीं होती। मूलभूत मानवीय समस्याएं हर युग में एक जैसी ही रहती हैं। जो कोई भी प्लूटार्क और सिसरो को पढ़े, या चाहें तो बेकन और मोंटेग्न के निबंधों को पढ़े, उसे पता चलेगा कि मनुष्य सुख और न्याय, सद्गुण और सत्य, और यहाँ तक कि स्थिरता और परिवर्तन के प्रति कितना निरंतर चिंतित रहता है।

हम जीवन की गति को तेज करने में सफल हो सकते हैं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि हम इसके लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए उपलब्ध मार्गों को बदलने में असमर्थ हैं।

ऐसा नहीं है कि प्रगति केवल नैतिक या राजनीतिक मामलों में ही सतही होती है। सैद्धांतिक ज्ञान में भी, विज्ञान और दर्शन में भी, जहाँ ज्ञान बढ़ता है और समझ गहरी होती है, प्रत्येक युग की प्रगति एक पारंपरिक आधार पर टिकी होती है। सभ्यता प्याज की तरह परत दर परत बढ़ती है। आइंस्टीन को समझने के लिए, जैसा कि वे स्वयं कहते हैं, आपको गैलीलियो और न्यूटन को समझना होगा। व्हाइटहेड को समझने के लिए, जैसा कि वे भी कहते हैं, आपको डेसकार्टेस और प्लेटो को जानना होगा। यदि कोई समकालीन पुस्तकें इसलिए महान हैं क्योंकि वे मौलिक विषयों पर चर्चा करती हैं, तो सभी महान पुस्तकें समकालीन हैं क्योंकि वे एक ही चर्चा में शामिल हैं।

(4) महान पुस्तकें सबसे अधिक पठनीय होती हैं। मैंने यह बात पहले भी कही है। इसका कई अर्थ है। यदि कुशल पठन के नियम किसी प्रकार कुशल लेखन के नियमों से संबंधित हैं, तो ये सर्वोत्तम लिखित पुस्तकें हैं। यदि एक अच्छा पाठक उदार कलाओं में निपुण है, तो एक महान लेखक उनमें कितना अधिक पारंगत होगा! ये पुस्तकें उदार कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। यह कहते हुए, मेरा तात्पर्य मुख्य रूप से व्याख्यात्मक रचनाओं से है। कविता या कथा साहित्य की महानतम रचनाएँ ललित कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। दोनों ही मामलों में, लेखक पाठक के हित में भाषा पर महारत हासिल करता है, चाहे उद्देश्य शिक्षा हो या आनंद।

महान पुस्तकों को अत्यंत पठनीय कहना इस बात का प्रमाण है कि यदि आप उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ने का प्रयास करें तो वे आपको निराश नहीं करेंगी। आप

पढ़ने के नियमों का यथासंभव पालन कर सकते हैं और वे, साधारण रचनाओं के विपरीत, निरंतर लाभ प्रदान करती रहेंगी। लेकिन यह कहना भी उतना ही सत्य है कि उनमें पढ़ने के लिए और भी बहुत कुछ है। यह केवल उनकी लेखन शैली ही नहीं, बल्कि उनके संदेश का सार भी है। उनमें प्रति पृष्ठ इतने विचार समाहित हैं जितने अधिकांश पुस्तकों में संपूर्ण रूप से भी नहीं होते। यही कारण है कि आप एक महान पुस्तक को बार-बार पढ़ सकते हैं और फिर भी उसकी सामग्री को पूरी तरह से नहीं समझ पाएंगे, और शायद कभी भी इतनी कुशलता से नहीं पढ़ पाएंगे कि उसे पूरी तरह से आत्मसात कर सकें। सबसे पठनीय पुस्तकें अनंत रूप से पठनीय होती हैं।

इन्हें बार-बार पढ़ने का एक और कारण है। इन्हें समझने के विभिन्न स्तरों पर पढ़ा जा सकता है, साथ ही इनकी व्याख्या में भी बहुत विविधता है। पढ़ने के कई स्तरों के सबसे स्पष्ट उदाहरण गुलिवर ट्रेवल्स, रॉबिन्सन क्रूसो और द ओडिसी जैसी पुस्तकों में मिलते हैं। बच्चे इन्हें आनंदपूर्वक पढ़ सकते हैं, लेकिन उनमें वह सारी सुंदरता और महत्व नहीं पा सकते जो एक वयस्क मन को प्रसन्न करता है।

(5) मैंने पहले भी कहा है कि महान पुस्तकें वे हैं जो

अत्यंत शिक्षाप्रद, अत्यंत ज्ञानवर्धक। एक प्रकार से, यह इस तथ्य से सिद्ध होता है कि ये मौलिक रचनाएँ हैं, इनमें वह सब कुछ शामिल है जो अन्य पुस्तकों में नहीं मिलता।

चाहे आप अंततः उनके सिद्धांतों से सहमत हों या असहमत, ये मानव जाति के प्राथमिक शिक्षक हैं, क्योंकि इन्होंने मानव ज्ञान और चिंतन में मूलभूत योगदान दिया है। जहाँ तक उन्होंने महत्वपूर्ण समस्याओं का पूर्ण या आंशिक रूप से समाधान किया है, उनमें निहित सिद्धांत मानव ज्ञान के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं। और उनके रचनाकारों द्वारा निकाले गए निष्कर्ष मानव चिंतन की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं।

यह कहना लगभग अनावश्यक है कि महान पुस्तकें सबसे प्रभावशाली पुस्तकें होती हैं। ज्ञान की परंपरा में, इन पर सबसे अधिक चर्चा उन पाठकों द्वारा की गई है जो स्वयं लेखक भी रहे हैं। ये वे पुस्तकें हैं जिन पर अनेक अन्य पुस्तकें लिखी गई हैं। इन पर अनगिनत पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनमें टीकाएँ, सारांश या लोकप्रिय संस्करण शामिल हैं, और इनमें से अधिकांश पुस्तकें भुला दी गई हैं।

(6) अंत में, महान पुस्तकें मानव जीवन की लगातार अनसुलझी समस्याओं से निपटती हैं।

यह कहना पर्याप्त नहीं है कि उन्होंने महत्वपूर्ण समस्याओं को पूर्ण या आंशिक रूप से हल कर लिया है—यह उनकी उपलब्धि का मात्र एक पहलू है। दुनिया में ऐसे वास्तविक रहस्य हैं जो मानवीय ज्ञान और चिंतन की सीमाओं को

दर्शाते हैं। जिज्ञासा न केवल आश्चर्य से शुरू होती है, बल्कि आमतौर पर उसी पर समाप्त भी होती है।

महान बुद्धिजीवी, उथले बुद्धिजीवियों की तरह, रहस्यों को तुच्छ नहीं समझते और न ही उनसे भागते हैं।

वे ईमानदारी से उन्हें स्वीकार करते हैं और अंततः अविभाज्य विकल्पों के सबसे स्पष्ट कथन द्वारा उन्हें परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। अपनी सीमाओं को समझने से ज्ञान मजबूत होता है, नष्ट नहीं होता। अज्ञानता उतनी आसानी से मूर्ख नहीं बनाती जितनी आत्म-धोखा।

- 3 -

अब आप देख सकते हैं कि ये छह मापदंड आपस में कैसे जुड़े हुए हैं, कैसे एक दूसरे से संबंधित हैं और एक दूसरे का समर्थन करते हैं। आप समझ सकते हैं कि यदि ये योग्यताएं हैं, तो महान लेखकों के विशिष्ट समाज में चार सौ से भी कम सदस्य क्यों हैं।

शायद अब आप यह भी समझ सकते हैं कि आपको महान पुस्तकों को क्यों पढ़ना चाहिए, न कि उनके बारे में लिखी गई पुस्तकों को या उन पुस्तकों को जो आपके लिए उनका सार प्रस्तुत करने का प्रयास करती हैं। "कुछ पुस्तकें," फ्रांसिस बेकन कहते हैं,

"प्रतिनिधि द्वारा इन्हें पढ़ा जा सकता है, और अन्य लोग इनसे अंश निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा केवल कम महत्वपूर्ण तर्कों और निम्न स्तर की पुस्तकों के मामले में ही होगा।" अन्य के संबंध में,

"सारगर्भित पुस्तकें साधारण पानी की तरह होती हैं, दिखावटी वस्तुएँ।" जिस कारण से लोग संगीत समारोह और कला दीर्घाओं में जाते हैं, उसी कारण से उन्हें अपूर्ण प्रतियों के बजाय महान पुस्तकों की ओर जाना चाहिए। प्रत्यक्षदर्शी को हमेशा विकृत सुनी-सुनाई बातों से बेहतर माना जाता है। एक अच्छी कहानी भी एक बुरे कथावाचक के कारण बिगड़ सकती है।

इन किताबों के बारे में किताबें पढ़ने के लिए पुरुषों द्वारा दिया जाने वाला एकमात्र बहाना यहाँ उतना ही बेमानी है जितना कि रिकॉर्डेड संगीत या चित्रकला और मूर्तिकला की सस्ती नकलें। वे जानते हैं कि किसी उत्कृष्ट कलाकार से उसकी मूल कृति में मिलना, उसकी नकलों की तुलना में कहीं अधिक आसान और बेहतर है। लेकिन उनका मानना है कि महान गुरुओं से उनकी मूल कृतियों में मिलना संभव नहीं है। वे सोचते हैं कि वे बहुत कठिन हैं, उनसे बहुत ऊपर हैं, और इसलिए वे विकल्पों से अपना संतोष करते हैं। जैसा कि मैंने दिखाने की कोशिश की है, यह सच नहीं है। मैं दोहराता हूँ: महान पुस्तकें उन सभी के लिए सबसे अधिक पठनीय हैं जो पढ़ना जानते हैं। इस उत्कृष्ट संगति में प्रवेश के लिए पढ़ने का कौशल ही एकमात्र शर्त है।

महान पुस्तकों की सूची को उन सूचियों में से एक न समझें जो लोग किसी सुनसान द्वीप पर जहाज़ डूबने से पहले बनाते हैं। महान पुस्तकें पढ़ने के लिए आपको उस सुखद एकांत की आवश्यकता नहीं है, जिसका आधुनिक मनुष्य केवल आपदा के लाभ के रूप में ही सपना देख सकता है। यदि आपके पास थोड़ा भी खाली समय है, तो आप उसका उपयोग पढ़ने के लिए कर सकते हैं। लेकिन उस व्यापारी की गलती न करें जो अपनी सारी ऊर्जा पहले धन इकट्ठा करने में लगा देता है और सोचता है कि सेवानिवृत्ति के बाद वह अपने खाली समय का सदुपयोग करना सीख जाएगा। अवकाश और काम हर सप्ताह के हिस्से होने चाहिए, न कि जीवन के विभाजन।

महान ग्रंथों के माध्यम से ज्ञान और आत्मज्ञान की खोज, परिश्रम की नीरसता और व्यवसाय की एकरसता से उतना ही छुटकारा दिला सकती है जितना कि संगीत और अन्य ललित कलाएं।

लेकिन यह फुर्सत सचमुच फुर्सत होनी चाहिए। यह बच्चों और टेलीविजन से दूर, साथ ही पैसे कमाने की लालसा से मुक्त समय होना चाहिए। न केवल दिन में पंद्रह मिनट का व्यापक रूप से प्रचारित समय हास्यास्पद रूप से अपर्याप्त है—क्या गोल्फ या ब्रिज में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति सोचेगा कि पंद्रह मिनट वार्म-अप करने और शुरू करने के लिए भी पर्याप्त हैं?— बल्कि पढ़ने में बिताया गया समय टेडी को गोद में उछालने, मैरी के सवालों का जवाब देने या पुलिस को लुटेरों को पकड़ते देखने में नहीं बिताना चाहिए।

हालांकि, किसी संभावित दुर्घटना के लिए किताबें चुनते समय एक बात ध्यान देने योग्य है। जब उन्हें बहुत कम किताबें चुननी होती हैं, तो वे अक्सर सबसे अच्छी किताबें चुनते हैं। हम भूल जाते हैं कि व्यस्त जीवन से हम जो फुर्सत का समय निकाल सकते हैं, वह शायद किसी रेगिस्तानी द्वीप पर कुछ वर्षों से अधिक नहीं होगा। अगर हमें यह बात समझ आ जाए, तो हम अपने जीवन भर के लिए पढ़ने की सूची उतनी ही सावधानी से बनाएंगे जितनी कि किसी रेगिस्तानी द्वीप के लिए बनाते हैं। हम अनंत काल पर भरोसा नहीं कर सकते। घंटी जल्द ही बजेगी। स्कूल की छुट्टी हो जाएगी, और जब तक हमने अपनी योजनाएँ अच्छी तरह से नहीं बनाई हैं और उनका पालन नहीं किया है, तब तक पढ़ने का समय समाप्त होने पर हमें शायद यह एहसास होगा कि गोल्फ या ब्रिज खेलना हमारे लिए उतना ही बेहतर होता, क्योंकि इससे हमारे दिमाग को कोई लाभ नहीं होता।

परिशिष्ट में दी गई महान पुस्तकों की सूची उन लोगों के लिए एक सुझाव है जो संकेत को समझ सकते हैं।

यह न तो आम आदमी के खाली समय के लिए बहुत लंबा है और न ही उन लोगों के लिए बहुत छोटा है जिनके पास अधिक समय हो सकता है। आप इसे जितना भी करें, मुझे एक बात का पूरा भरोसा है: समय व्यर्थ नहीं जाएगा। चाहे आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो या खराब, इस सूची में दी गई हर चीज़ आपके लिए समय और ऊर्जा का लाभदायक निवेश साबित होगी।

- 4 -

मैंने पहले कहा था कि मैं किताबों के छोटे-छोटे समूह बनाऊंगा, इस आधार पर कि उनके लेखक एक ही तरह की समस्याओं पर चर्चा कर रहे हैं और आपस में संवाद

कर रहे हैं। चलिए, शुरू करते हैं। शुरुआत करने का सबसे आसान तरीका उन विषयों से है जो हमारी रोज़मर्रा की बातचीत में हावी रहते हैं। अखबार और टेलीविजन हमें विश्व संकट और उसमें हमारी राष्ट्रीय भूमिका को भूलने नहीं देते। हम खाने की मेज पर, शाम को और यहां तक कि दफ्तर के समय में भी युद्ध और शांति, तानाशाही शासन के खिलाफ लोकतंत्र, नियोजित अर्थव्यवस्था, नागरिक अधिकार और साम्यवाद, आगामी राष्ट्रीय चुनाव और इस प्रकार संविधान के बारे में बात करते हैं, जिसका इस्तेमाल दोनों पार्टियां एक मंच के रूप में और एक-दूसरे पर हमला करने के लिए करेंगी।

अगर हम सिर्फ अखबार पढ़ने या टीवी देखने से ज़्यादा कुछ करें, तो शायद हमें संविधान को पढ़ने की प्रेरणा मिले। अगर मौजूदा किताबों में जिन राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा हो रही है, उनमें हमारी दिलचस्पी है, तो हमें उनसे और संविधान से संबंधित और भी बहुत कुछ पढ़ना चाहिए। इन समकालीन लेखकों ने शायद कुछ महान पुस्तकें पढ़ी होंगी, और संविधान लिखने वालों ने तो निश्चित रूप से पढ़ी होंगी। हमें बस उनका अनुसरण करना है, और रास्ता अपने आप खुल जाएगा।

सबसे पहले, आइए संविधान का मसौदा तैयार करने वाले व्यक्तियों के अन्य लेखों पर नज़र डालें। इनमें सबसे स्पष्ट है हैमिल्टन, मैडिसन और जे द्वारा द इंडिपेंडेंट जर्नल और अन्य जगहों पर साप्ताहिक रूप से प्रकाशित लेखों का संग्रह, जिनमें संविधान के अनुसमर्थन के पक्ष में तर्क दिए गए थे। द फेडरलिस्ट को समझने के लिए, आपको न केवल परिसंघ के अनुच्छेदों को पढ़ना चाहिए, जिन्हें संविधान द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना था, बल्कि कई मुद्दों पर फेडरलिस्टों के प्रमुख विरोधी थॉमस जेफरसन के लेखों को भी पढ़ना चाहिए।

जॉर्ज वाशिंगटन, एडमंड बर्क और टॉम पेन ^ इस बहस में अन्य प्रमुख भागीदार थे। वाशिंगटन संविधान को एक तरह से मानवता की सबसे बड़ी आशा मानते थे। एक अंग्रेज बर्क ने हमारी क्रांति का समर्थन किया और 1789 में फ्रांस में हुई क्रांति की आलोचना की। पेन की रचनाएँ उस समय के मुद्दों और विरोधियों को नियंत्रित करने वाली विचारधाराओं पर प्रकाश डालती हैं।

ये लेखक, क्योंकि वे स्वयं भी पाठक थे, हमें उन पुस्तकों की ओर ले जाते हैं जिनसे वे प्रभावित हुए थे। वे ऐसे विचारों का उपयोग कर रहे हैं जिनका विस्तृत और निष्पक्ष विवरण अन्यत्र मिलता है। फेडरलिस्ट के पन्ने और जेफरसन, बर्क और पेन के लेखन हमें यूरोप के अठारहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के महान राजनीतिक विचारकों की ओर ले जाते हैं। हमें मोंटेस्क्यू की 'द स्पिरिट ऑफ लॉज़', लॉक का निबंध 'कंसर्निंग सिविल गवर्नमेंट' और रूसो का 'सोशल कॉन्ट्रैक्ट' पढ़ना चाहिए। इस तर्क युग के तर्कवाद का आनंद लेने के लिए, हमें वोल्टेयर के विपुल लेखों को भी जगह-जगह पढ़ना चाहिए।

आप शायद यह मान लें कि एडम स्मिथ का अहस्तक्षेपवादी व्यक्तिवाद भी हमारी क्रांतिकारी पृष्ठभूमि का हिस्सा है, लेकिन याद रखें कि 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' पहली बार 1776 में प्रकाशित हुई थी। संपत्ति, कृषिवाद और मुक्त व्यापार

के बारे में अपने विचारों में संस्थापक पिता जॉन लॉक और उन फ्रांसीसी अर्थशास्त्रियों से प्रभावित थे जिनके खिलाफ एडम स्मिथ ने बाद में लिखा था।

हमारे संस्थापक पिता प्राचीन इतिहास के ज्ञाता थे। उन्होंने अपने अनेक राजनीतिक उदाहरणों के लिए ग्रीस और रोम के इतिहास का सहारा लिया। उन्होंने प्लूटार्क की 'लाइव्स' और थ्यूसीडाइड्स की 'पेलोपोनीशियाई युद्ध का इतिहास' (स्पार्टा और एथेंस तथा उनके सहयोगियों के बीच का युद्ध) का अध्ययन किया था। उन्होंने विभिन्न ग्रीक संघों के घटनाक्रमों का अध्ययन किया ताकि वे अपने भावी कार्य को बेहतर ढंग से समझ सकें। वे न केवल इतिहास और राजनीतिक चिंतन में पारंगत थे, बल्कि उन्होंने प्राचीन वक्ताओं से शिक्षा भी प्राप्त की थी। परिणामस्वरूप, उनका राजनीतिक प्रचार न केवल उत्कृष्ट है, बल्कि आज भी आश्चर्यजनक रूप से प्रभावी है। लिंकन (जिन्होंने कुछ महान पुस्तकों का गहन अध्ययन किया था) को छोड़कर, बाद के अमेरिकी राजनेता न तो इतनी अच्छी तरह से बोल पाते हैं और न ही लिख पाते हैं।

यह सिलसिला आगे बढ़ता है। अठारहवीं शताब्दी के लेखकों पर उनके पूर्ववर्तियों के राजनीतिक विचारों का प्रभाव पड़ा था। थॉमस हॉब्स की 'द लेवियाथन' और स्पिनोज़ा के राजनीतिक ग्रंथ शासन की समान समस्याओं से संबंधित हैं—अनुबंध द्वारा समाज का गठन, राजतंत्र, कुलीनतंत्र और लोकतंत्र का औचित्य, और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह का अधिकार। लॉक, स्पिनोज़ा और हॉब्स एक तरह से आपस में संवाद कर रहे हैं। लॉक और स्पिनोज़ा ने हॉब्स को पढ़ा था। स्पिनोज़ा ने मैकियावेली की 'द प्रिंस' भी पढ़ी थी, और लॉक हर जगह "विवेकशील हूकर" का उल्लेख और उद्धरण देते हैं, वही रिचर्ड हूकर जिन्होंने सोलहवीं शताब्दी के अंत में चर्च शासन के बारे में एक पुस्तक लिखी थी, और जिनके जीवन पर मछुआरे इज़ाक वाल्टन ने एक लेख लिखा था।

मैं हूकर का ज़िक्र इसलिए कर रहा हूँ—भले ही उनका नाम न तो ग्रेट बुक्स में है और न ही गेटवे में—क्योंकि उन्होंने बाद की पीढ़ी के विद्वानों की तुलना में प्राचीन ग्रंथों, विशेषकर अरस्तू के नीतिशास्त्र और राजनीतिशास्त्र का गहन अध्ययन किया था। थॉमस हॉब्स की रचनाओं में दिए गए संदर्भों से स्पष्ट है कि उन्होंने उनसे कहीं बेहतर अध्ययन किया था। हूकर का प्रभाव ही लॉक पर पड़ा है, जो कई राजनीतिक प्रश्नों पर लॉक और हॉब्स के बीच के मतभेदों का आंशिक कारण है।

लॉक की तरह, हूकर ने राजाओं के दैवीय अधिकार के सिद्धांत का विरोध किया। मैडिसन और जेफरसन उनके तर्कों से परिचित थे। उनके माध्यम से ही अन्य पुस्तकें भी प्रचलन में आईं। हूकर ने राजनीतिक सिद्धांत पर मध्यकालीन महान कृतियों, विशेष रूप से सेंट थॉमस एक्विनास के लेखन को प्रतिबिंबित किया, जो जन संप्रभुता और मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों के समर्थक थे।

वर्तमान राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा इस प्रकार विस्तृत होकर संपूर्ण यूरोपीय राजनीतिक चिंतन को समाहित कर लेती है। यदि हम संविधान और 1976 के लेखों पर गौर करें, तो हम स्वाभाविक रूप से और आगे बढ़ते हैं, क्योंकि

प्रत्येक लेखक स्वयं को एक पाठक के रूप में प्रकट करता है। शायद ही कुछ छूटा हो। यदि हम प्लेटो के रिपब्लिक और लॉज़ को भी शामिल कर लें, जिन्हें अरस्तू ने पढ़ा और जिन पर उन्होंने विचार व्यक्त किए, और सिसरो के रिपब्लिक और लॉज़ को भी, जिन्हें रोमन न्यायविदों ने पढ़ा और जिनके माध्यम से मध्यकालीन यूरोप में कानून के विकास को प्रभावित किया, तो लगभग सभी महान राजनीतिक पुस्तकें इसमें समाहित हो जाती हैं।

- 5 -

यह पूरी तरह सच नहीं है। मूल बातचीत पर लौटकर और नए सिरे से शुरुआत करके, हम कुछ महत्वपूर्ण कमियों का पता लगा सकते हैं। मान लीजिए कि हमारे बीच कोई पूर्व नाज़ी है, और वह हमें 'मीन कैम्फ' का उद्धरण सुनाता है। चूंकि यह स्पष्ट नहीं है कि हिटलर ने कभी ये महान पुस्तकें पढ़ी थीं, इसलिए मुसोलिनी के राजनीतिक बयान अधिक उपयोगी सुराग दे सकते हैं। हमें याद आ सकता है कि मुसोलिनी कभी समाजवादी था। यदि हम इन सभी पहलुओं पर गहराई से विचार करें, तो अन्य पुस्तकें भी बातचीत में शामिल हो जाती हैं।

वहाँ हेगेल का इतिहास दर्शन और अधिकार दर्शन होगा। यहाँ हमें राज्य निरंकुशता और राज्य के देवत्वीकरण के औचित्य मिलेंगे। वहाँ कार्लाइल की रचनाएँ भी होंगी, विशेष रूप से उनकी पुस्तकें जैसे 'नायकों पर', 'नायक-पूजा' और 'इतिहास में वीरता'। यहाँ हमें महापुरुष का सिद्धांत मिलेगा जो सही और गलत के मानदंडों से ऊपर है, और शक्ति के सफल उपयोग का सिद्धांत जो स्वयं ही उसका अंतिम औचित्य है। और एक ओर हेगेल और दूसरी ओर कार्लाइल के पीछे—बाद वाले मामले में शोपेनहावर के प्रभाव से—जर्मनी के महानतम विचारक इम्मानुएल कांट होंगे। कांट के 'अधिकार विज्ञान' को पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति देखेगा कि उनके कुछ अनुयायियों के विचारों के लिए उन्हें जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।

हमारी मेज पर शायद कोई कम्युनिस्ट भी बैठा हो, चाहे वो ख्रुश्चेववादी हो या स्टालिनवादी। दोनों ही एक ही किताब को अपना आदर्श मानते हैं। कार्ल मार्क्स का जिक्र हुए बिना बातचीत अधूरी ही रहती। उनकी महान कृति 'कैपिटल' का भी जिक्र होता, भले ही उसे किसी ने न पढ़ा हो, यहां तक कि उस कम्युनिस्ट ने भी नहीं। लेकिन अगर किसी ने 'कैपिटल' और क्रांति से संबंधित अन्य साहित्य पढ़ा होता, तो उसे एक ऐसा मार्ग मिल जाता जो एक ओर तो फिर से हेगेल तक ले जाता—जो साम्यवाद और फासीवाद दोनों का आरंभिक बिंदु है—और दूसरी ओर इंग्लैंड और फ्रांस के महान आर्थिक और सामाजिक विचारकों तक: एडम स्मिथ की 'वेल्थ ऑफ नेशंस', माल्थस के 'जनसंख्या पर निबंध' और गुइज़ोट की 'हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन इन यूरोप' तक।

उपस्थित कोई वकील आर्थिक सिद्धांत से हटकर चर्चा को सरकार की समस्याओं, विशेषकर लोकतंत्र की समस्याओं की ओर मोड़ सकता है। हो सकता है उसने हाल ही में वाल्टर लिपमैन की पुस्तक 'द पब्लिक फिलॉसफी' पढ़ी हो। या फिर वह विदेशों में मौजूदा संकटों में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका पर सवाल उठा सकता है और अर्नोल्ड टॉयन्बी की पुस्तक 'सिविलाइजेशन ऑन ट्रायल' का हवाला दे सकता है। ये पुस्तकें अन्य लोगों को भी इस चर्चा में शामिल कर लेंगी।

लोकतंत्र की समस्याओं, और विशेष रूप से हमारी अपनी लोकतांत्रिक सरकार की समस्याओं में रुचि रखते हुए, हम लिपमैन से एलेक्सिस डी टॉकविले की 'डेमोक्रेसी इन अमेरिका' और कैल्हौन की 'डिस्क्विशन ऑन गवर्नमेंट' की ओर बढ़ सकते हैं। इन दोनों पुस्तकों में बहुमत शासन की संभावित तानाशाही और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा से संबंधित जो मुद्दे उठाए गए हैं, वे हमें जॉन स्टुअर्ट मिल के 'एस्से ऑन रिप्रेजेंटेटिव गवर्नमेंट' और 'ऑन लिबर्टी' की ओर ले जाएंगे। बाद वाला निबंध, विशेष रूप से विचार और विमर्श की स्वतंत्रता पर इसका शानदार अध्याय, हमें मिल्टन की 'एरोपैगिटिका' की ओर ले जाएगा।

मिल के दो निबंधों की व्याख्या, वैसे तो, उन लोगों द्वारा भी हर दिन की जा रही है जिन्होंने उन्हें पढ़ा नहीं है, कुछ लोग सहमति जताते हैं तो कुछ असहमति जताते हैं, क्योंकि वे उदारवादियों और रूढ़िवादियों के बीच समकालीन विवाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं।

युद्ध और शांति के बारे में टॉयन्बी के विचारों और युद्ध की रोकथाम में अंतर्राष्ट्रीय या अतिराष्ट्रीय संगठनों की भूमिका पर चर्चा से हमारा ध्यान प्राचीन यूनानी शहरों के संघ की पेलोपोनेशियाई युद्ध को रोकने में विफलता की ओर जा सकता है। टॉयन्बी बताते हैं कि कैसे उनके अपने विचार थ्यूसीडाइड्स के उस युद्ध के दुखद वर्णन को पढ़ने से प्रभावित हुए थे। युद्ध का संपूर्ण विषय, और विशेष रूप से बमों और लड़ाइयों के गर्म युद्ध और राजनयिकों, प्रचार एजेंसियों और जासूसों के शीत युद्ध के बीच का अंतर, संभवतः हमारे लिए पढ़ने का एक नया मार्ग खोल देगा, जिसकी शुरुआत वॉन क्लॉज़विट्ज़ की 'ऑन वॉर' से होती है, और कांट के 'शाश्वत शांति' पर लघु ग्रंथ और रूसो के 'यूरोप के संघ के माध्यम से स्थायी शांति' पर निबंध से होते हुए दांते के तेरहवीं शताब्दी के विश्व सरकार के माध्यम से विश्व शांति के दृष्टिकोण तक जाती है, जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक 'डी मोनार्किया' के पहले भाग में अकाट्य तर्क के साथ प्रस्तुत किया है।

एक ओर लोकतंत्र और शासन पर चर्चा, तो दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय मामलों, युद्ध और शांति पर चर्चा, अक्सर मानव स्वभाव की अंतर्निहित कमियों और अर्थ स्पष्टीकरण की पेचीदगियों से जुड़े जटिल प्रश्नों में उलझ जाती है। मनुष्य की आक्रामकता का प्रश्न फ्रायड के छोटे से निबंध 'युद्ध क्यों?' के अध्ययन का संकेत दे सकता है। और यदि हम इससे शुरुआत करें, तो पावलोव की कृति 'अनुकूलित प्रतिवर्तों पर व्याख्यान', विलियम जेम्स की 'मनोविज्ञान के सिद्धांत', ह्यूम की 'मानव स्वभाव पर ग्रंथ', डेसकार्टेस की 'आत्मा की भावनाएँ' आदि सहित कई पुस्तकों की एक और सूची में मनोविज्ञान का पूरा इतिहास खुल सकता है। चूंकि हमने राजनीति और युद्ध के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर विचार करके शुरुआत की है, इसलिए मैकियावेली की 'राजकुमार' भी प्रासंगिक हो जाती है, क्योंकि यह मनुष्य के अपने साथी मनुष्यों के प्रति परोपकार या द्वेष के मूलभूत प्रश्न को उठाती है।

शब्दों के अर्थ की समस्या, और विशेष रूप से उनकी पेचीदा अस्पष्टता की समस्या, स्वाभाविक रूप से किसी को विभिन्न विचारधाराओं के भाषाई दार्शनिकों की वर्तमान पुस्तकों की ओर ले जाएगी। यह सारा वर्तमान साहित्य

— और यह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है—पश्चिमी चिंतन की परंपरा में गहराई से निहित है, जिसकी शुरुआत प्लेटो के संवादों और अरस्तू के ग्रंथों से होती है, जिनमें चर्चा के महत्वपूर्ण शब्दों के अनेक अर्थों पर ध्यान दिए बिना शायद ही कोई कदम उठाया जाता है। यदि हम शब्दों के अर्थों और चिंतन में उनके उपयोग में इस रुचि को जारी रखते हैं, तो उदार कलाओं की सभी महान कृतियों को अंततः पुनः खोजना होगा।

आवश्यक पठन सामग्री की सूची में लॉक का 'एस्से ऑन ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग', विशेष रूप से भाषा पर तीसरा खंड; हॉब्स का 'लेवियाथन', विशेष रूप से पहला खंड, और उनका 'रेटोरिक', जो अरस्तू के 'रेटोरिक' का बारीकी से अनुसरण करता है, शामिल होंगे। इसमें प्लेटो के भाषा और वाक्पटुता पर संवाद (विशेष रूप से क्रैटिलस, गोरगियास और फेड्रस) और शिक्षण और शिक्षा प्राप्त करने पर दो महान मध्यकालीन रचनाएँ भी शामिल होंगी—एक सेंट ऑगस्टीन द्वारा और दूसरी सेंट थॉमस द्वारा, दोनों को 'ऑफ द टीचर' कहा जाता है। मैं तार्किक रचनाओं पर चर्चा शुरू करने का साहस नहीं करता, क्योंकि सूची बहुत लंबी हो सकती है, लेकिन जॉन स्टुअर्ट मिल की 'सिस्टम ऑफ लॉजिक', बेकन की 'नोवम ऑर्गेनम' और अरस्तू की 'ऑर्गेनन' का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए।

एक और दिशा संभव है। राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर विचार करने से सुख और सद्गुण, सुख, जीवन के लक्ष्य और उन्हें प्राप्त करने के साधनों से संबंधित मूलभूत नैतिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। संभवतः किसी ने जैक्स मैरिटेन की नैतिक दर्शन पढ़ी होगी और अरस्तू और एक्विनास के इस जीवित अनुयायी के समकालीन समस्याओं, विशेष रूप से वर्तमान राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों के नैतिक पहलुओं के बारे में विचारों पर गौर किया होगा। यह न केवल हमें अतीत के महान नैतिक ग्रंथों - अरस्तू के नीतिशास्त्र और एक्विनास के सुम्मा थियोलॉजिका के द्वितीय भाग - की ओर ले जाएगा, बल्कि हमें एक बहुआयामी विवाद में भी उलझा सकता है। इसे समझने के लिए हमें मिल के उपयोगितावाद, कांट की व्यावहारिक तर्क की आलोचना और स्पिनोज़ा के नीतिशास्त्र का सहारा लेना होगा। हम रोमन स्टोइक और एपिक्यूरियन दार्शनिकों, मार्कस ऑरेलियस के ध्यान और ल्यूक्रेटियस की 'वस्तुओं की प्रकृति पर' की ओर भी लौट सकते हैं।

- 6 -

वर्तमान समस्याओं पर बातचीत या चिंतन के इस विस्तार में आपने कई बातें देखी होंगी। न केवल एक पुस्तक दूसरी पुस्तक की ओर ले जाती है, बल्कि प्रत्येक पुस्तक में अंतर्निहित रूप से अनेक प्रकार के संकेत होते हैं। हमारी बातचीत या विचार कई दिशाओं में फैल सकते हैं, और हर बार ऐसा होने पर पुस्तकों का एक नया समूह उससे जुड़ जाता है। इसके अलावा, ध्यान दें कि अक्सर एक ही लेखक विभिन्न संदर्भों में मौजूद होते हैं, क्योंकि उन्होंने आमतौर पर इन संबंधित विषयों पर लिखा होता है, कभी-कभी अलग-अलग पुस्तकों में, लेकिन अक्सर एक ही कृति में।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जब हम मध्यकालीन और प्राचीन काल की दुनिया में जाते हैं, तो वही नाम कई बार दोहराए जाते हैं। उदाहरण के लिए, अरस्तू और प्लेटो, सिसरो और एक्विनास इसके मूल स्रोत हैं। आधुनिक काल के लेखकों ने

इन्हें पढ़ा है, इन पर चर्चा की है, इनसे सहमति जताई है और असहमति भी व्यक्त की है। और जहाँ इन्हें पढ़ा नहीं गया है, वहाँ भी इनके सिद्धांत कई अप्रत्यक्ष तरीकों से, हूकर जैसे लोगों के माध्यम से, लोगों तक पहुँचे हैं।

अब तक हमने मुख्य रूप से व्यावहारिक मामलों—राजनीति, अर्थशास्त्र, नैतिकता—पर चर्चा की है।

हालाँकि आपने शायद सैद्धांतिक होने की प्रवृत्ति देखी होगी। वकीलों पर फ्रायड के प्रभाव के कारण हम मनोविज्ञान की ओर मुड़े। यदि नैतिक विवाद को थोड़ा और आगे बढ़ाया जाता, तो हम जल्द ही तत्वमीमांसा में पहुँच जाते। वास्तव में, हम पहुँच ही गए थे, मैरिटेन की स्वतंत्र इच्छा की चर्चा और स्पिनोज़ा के नीतिशास्त्र के साथ। कांट की व्यावहारिक तर्क की आलोचना हमें उनकी शुद्ध तर्क की आलोचना और ज्ञान और अनुभव की प्रकृति से संबंधित सभी सैद्धांतिक प्रश्नों की ओर ले जा सकती थी।

मान लीजिए कि हम कुछ सैद्धांतिक प्रश्नों पर संक्षेप में विचार करें। इस पुस्तक में हमने शिक्षा पर ही चर्चा की है। श्री हचिन्स की पुस्तक 'द हायर लर्निंग इन अमेरिका' पढ़ने वाला कोई व्यक्ति तत्वमीमांसा और उच्च शिक्षा में इसके स्थान के बारे में प्रश्न उठा सकता है। इससे आमतौर पर तत्वमीमांसा क्या है, इस पर चर्चा शुरू हो जाती है। और अक्सर कोई कहता है कि ऐसी कोई चीज नहीं है। हमें शायद जॉन ड्यूई की 'डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन' और 'क्वेस्ट फॉर सर्टेनटी' का हवाला दिया जाएगा, जिसमें बताया गया है कि सभी मान्य ज्ञान वैज्ञानिक या प्रायोगिक होता है। यदि हम उसमें दिए गए सभी बिंदुओं का अनुसरण करें, तो हम शायद जल्द ही वर्तमान तत्वमीमांसा-विरोधी प्रवृत्ति के स्रोत पर वापस पहुँच जाएँगे: ह्यूम की 'एनक्वायरी कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग' और शायद कांट की 'प्रोलेगोमेना टू एनी फ्यूचर मेटाफिजिक्स'।

व्हाइटहेड की 'प्रोसेस एंड रियलिटी' और 'साइंस एंड द मॉडर्न वर्ल्ड', सैंटायना की 'रियल्म ऑफ एसेंस एंड रियल्म ऑफ मैटर', या मैरिटेन की 'डिग्रीज ऑफ नॉलेज' जैसी पुस्तकें पढ़ने वाले व्यक्ति को तत्वमीमांसा की अस्वीकृति पर आपत्ति हो सकती है। 'नायक' सैद्धांतिक दर्शन के दावों का बचाव कर सकता है कि यह हमें चीजों की प्रकृति के बारे में विज्ञान से भिन्न और अलग प्रकार का ज्ञान देता है। यदि उसने उन पुस्तकों को अच्छी तरह पढ़ा होता, तो वह आधुनिक और प्राचीन काल के महान चिंतनशील कार्यों की ओर आकर्षित हो जाता; डेसकार्टेस के 'प्रिंसिपल्स ऑफ फिलॉसफी', एक्विनास की 'बीइंग एंड एसेंस' पर छोटी सी रचना, अरस्तू के 'मेटाफिजिक्स' और प्लेटो के संवादों, जैसे 'टिमेयस', 'पार्मेनिड्स' और 'सोफिस्ट' की ओर।

या मान लीजिए कि हमारी सैद्धांतिक रुचि दर्शनशास्त्र के बजाय प्राकृतिक विज्ञानों की ओर है। मैं फ्रायड और पावलोव का पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ। मानव व्यवहार और मानव स्वभाव की समस्याएँ अनेक अन्य प्रश्नों को जन्म देती हैं। न केवल मनुष्य का स्वभाव, बल्कि प्रकृति में उसका स्थान भी हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। ये सभी मार्ग डार्विन की 'ओरिजिन ऑफ

स्पीशीज' की ओर ले जाते हैं और फिर अप्रत्यक्ष रूप से लायल की 'एंटीक्विटी ऑफ मैन' और माल्थस के 'जनसंख्या पर निबंध' तक पहुँचते हैं।

हाल ही में चिकित्सा पद्धति पर कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, और इसके सिद्धांत पर कुछ ही पुस्तकें आई हैं। मनुष्य की स्वाभाविक रोगनिरोध की प्रवृत्ति उसे डॉक्टरों, स्वास्थ्य और अपने शरीर की कार्यप्रणाली में असामान्य रूप से रुचि लेने के लिए प्रेरित करती है। यहाँ पढ़ने के कई रास्ते हैं, लेकिन संभवतः सभी रास्ते क्लाउड बर्नार्ड की 'प्रायोगिक चिकित्सा का परिचय' और हार्वे की 'हृदय की गति' नामक पुस्तक से होकर गैलेन की 'प्राकृतिक क्षमताएं' और हिप्पोक्रेट्स के यूनानी चिकित्सा के अद्भुत सिद्धांतों तक पहुँचेंगे।

आइंस्टीन और इन्फेल्ड की पुस्तक 'भौतिकी का विकास' हमें मानव के प्रायोगिक ज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण पड़ावों की ओर ले जाती है। पोइंकेयर की 'विज्ञान की नींव' और क्लिफोर्ड की 'सटीक विज्ञान की सामान्य समझ' का अध्ययन करने से हमारा ज्ञान और अधिक गहरा होगा। ये पुस्तकें हमें फैराडे की 'विद्युत पर प्रायोगिक शोध' और मेंडेलीव के 'रासायनिक तत्वों का आवर्त नियम' जैसी रचनाओं तक ले जाएंगी; संभवतः न्यूटन की 'प्रकाशिकी' और गैलीलियो की 'दो नए विज्ञान' तक भी।

सबसे सटीक विज्ञान न केवल सबसे प्रयोगात्मक होते हैं, बल्कि सबसे गणितीय भी होते हैं। यदि हम भौतिकी में रुचि रखते हैं, तो गणित पर विचार करना अनिवार्य है। इस विषय पर भी हाल ही में कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, लेकिन मुझे लगता है कि व्हाइटहेड की एक छोटी सी उत्कृष्ट कृति, 'गणित का परिचय', से बेहतर कोई नहीं है। गणित के अर्थ पर बर्ट्रेंड रसेल के विभिन्न लेखन भी विचारणीय हैं।

यदि हम इन रचनाओं को पढ़ें, तो हम फोर्सेथ की पुस्तक 'मैथमेटिक्स इन लाइफ एंड थॉट' की ओर रुख कर सकते हैं।

इससे हमें डेसकार्टेस की ज्यामिति और न्यूटन के गणितीय कार्यों में आधुनिक गणित के आरंभिक बिंदुओं की ओर लौटने की आवश्यकता महसूस होती है। हॉगबेन, डेंटज़िग और कासनर और न्यूमैन जैसे आधुनिक टीकाएँ अत्यंत सहायक होंगी, लेकिन मुझे लगता है कि हमें आधुनिक गणित को ग्रीक उपलब्धियों, विशेष रूप से यूक्लिड की ज्यामिति के मूल तत्व, निकोमाचस की अंकगणित की प्रस्तावना और अपोलोनियस की शंकु परिच्छेद पर ग्रंथ के साथ तुलना करके देखना भी आवश्यक होगा।

महान ग्रंथों का संबंध और उनके लेखकों की बहुमुखी प्रतिभा अब पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकती है। डेसकार्टेस और व्हाइटहेड दोनों ही गणितज्ञ और तत्वमीमांसाविद थे। माल्थस का जनसंख्या पर निबंध न केवल सामाजिक विज्ञान का एक महत्वपूर्ण कार्य था, बल्कि इसने अस्तित्व के संघर्ष और योग्यतम की उत्तरजीविता के बारे में डार्विन के विचारों को भी प्रभावित किया। न्यूटन न केवल एक महान प्रायोगिक भौतिक विज्ञानी थे, बल्कि एक महान गणितज्ञ भी थे। लियोनार्डो की नोटबुक में चित्रकला में

संदर्भित करते हैं। मोंटेग्न और मैकियावेली के साथ-साथ प्लूटार्क के पाठक को शेक्सपियर के नाटकों में उनके भाव, कहानियां, यहां तक कि उनकी भाषा भी मिलेगी। 'द डिवाइन कॉमेडी' में सेंट थॉमस एक्विनास की 'सुम्मा थियोलॉजिका', अरस्तू के 'एथिक्स' और टॉलेमी के खगोल विज्ञान की झलक मिलती है। और हम जानते हैं कि प्लेटो और अरस्तू कितनी बार होमर और महान दुखद कवियों का उल्लेख करते हैं।

- 8 -

अब शायद आप समझ गए होंगे कि मैंने इतनी बार क्यों कहा है कि महान ग्रंथों को एक दूसरे के संदर्भ में और विभिन्न प्रकार के जुड़ावों में पढ़ा जाना चाहिए। इस प्रकार पढ़ने पर वे एक दूसरे का समर्थन करते हैं, एक दूसरे को रोशन करते हैं, एक दूसरे के महत्व को बढ़ाते हैं। और, निश्चित रूप से, वे एक दूसरे को अधिक पठनीय बनाते हैं। उनके नामों का उल्लेख करते हुए और उनके जुड़ावों का पता लगाते हुए, मैं समकालीन ग्रंथों से पीछे की ओर गया हूँ, प्रत्येक चरण को उन ग्रंथों के संदर्भ में लेते हुए जिन्हें लेखक ने स्वयं पढ़ा था। इससे आपको पता चला है कि महान ग्रंथों की पूरी परंपरा आज हमारे जीवन में किस प्रकार समाहित है।

लेकिन अगर आप किसी महान पुस्तक की मदद से दूसरी महान पुस्तक पढ़ना चाहते हैं, तो अतीत से वर्तमान की ओर पढ़ना बेहतर होगा, न कि इसके विपरीत। यदि आप पहले लेखक की पढ़ी हुई पुस्तकें पढ़ेंगे, तो आप उन्हें बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। आपका दिमाग भी उनके साथ विकसित हुआ है, और इसलिए आप उन्हें बेहतर ढंग से समझ पाएंगे, जान पाएंगे और जान पाएंगे।

दूसरी दिशा में आगे बढ़ना कभी-कभी ज़्यादा रोमांचक होता है। यह जासूसी करने या शिकारी कुत्ते का खेल खेलने जैसा होता है। भले ही आपको किताबों को उल्टे क्रम में पढ़ने से रोमांच मिले, फिर भी आपको उन्हें सीधे क्रम में ही समझना होगा। वे इसी तरह घटित हुई थीं, और उन्हें किसी और तरीके से पूरी तरह समझा नहीं जा सकता।

महान ग्रंथों के बीच हमारा भ्रमण मुझे एक और बात स्पष्ट करने में सहायक होता है। किसी भी समकालीन पुस्तक को महान कहना कठिन है। हम उसके इतने करीब होते हैं कि निष्पक्ष निर्णय लेना असंभव हो जाता है। कभी-कभी हम अपेक्षाकृत आश्वस्त हो सकते हैं, जैसे आइंस्टीन की रचनाओं, प्रॉस्ट और जॉयस के उपन्यासों, या ड्यूई, व्हाइटहेड और मैरिटेन के दर्शनशास्त्र के मामले में। लेकिन, अधिकतर मामलों में, हमें ऐसे चुनाव करने से बचना चाहिए। प्रसिद्धि की सूची इतनी प्रतिष्ठित है कि बीसवीं सदी के अपने उम्मीदवारों को बिना वापसी डाक टिकट भेजे भेजना उचित नहीं है।

लेकिन वर्तमान पुस्तकें निश्चित रूप से अच्छी हो सकती हैं, भले ही हम यह सुनिश्चित न कर सकें कि वे महान हैं। मेरी जानकारी में किसी वर्तमान पुस्तक की अच्छाई और भविष्य में महान माने जाने की सबसे बड़ी निशानी महान पुस्तकों के साथ उसका स्पष्ट संबंध है। ऐसी पुस्तकें महान पुस्तकों के संवाद में समाहित होती हैं और हमें भी उसमें शामिल करती हैं। स्वाभाविक रूप से उनके लेखक सुशिक्षित होते हैं। वे परंपरा का हिस्सा होते हैं, चाहे

वे इसके बारे में कुछ भी सोचते हों या इससे कितना भी विद्रोह करते प्रतीत हों।

मैं एक और निष्कर्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ। आज हम न केवल राजनीतिक राष्ट्रवाद से पीड़ित हैं, बल्कि सांस्कृतिक संकीर्णता से भी। हमने वर्तमान क्षण की पूजा को बढ़ावा दिया है। हम अधिकतर केवल वर्तमान पुस्तकें ही पढ़ते हैं, यदि पढ़ते भी हैं तो। यदि हम केवल इस वर्ष की अच्छी पुस्तकें ही पढ़ेंगे, तो न केवल हम उन्हें अच्छी तरह से नहीं पढ़ पाएंगे, बल्कि महान पुस्तकों को न पढ़ने से हम मानव जगत से अलग-थलग पड़ जाएंगे, ठीक उसी प्रकार जैसे हथौड़ा और दरांती के प्रति बिना शर्त निष्ठा रखने से व्यक्ति पहले रूसी या चीनी बन जाता है, और बाद में—यदि कभी बना भी पाए। मनुष्य होना हमारा सबसे पवित्र मानवीय अधिकार है, और नागरिक या राष्ट्रवादी होना बाद में। यह बात सांस्कृतिक क्षेत्र में भी उतनी ही सत्य है जितनी राजनीतिक क्षेत्र में। हम अपने देश या अपनी सदी के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं।

यह हमारा सौभाग्य है, बल्कि मैं कहूंगा कि यह हमारा कर्तव्य है कि हम मानव जाति के उस विशाल भाईचारे का हिस्सा बनें जो किसी भी राष्ट्रीय सीमा या स्थानीय या जनजातीय रूढ़ियों को नहीं मानता। मैं राजनीतिक राष्ट्रवाद के बंधन से मुक्त होने का तरीका नहीं जानता, लेकिन मैं यह अवश्य जानता हूं कि हम साहित्य जगत के नागरिक कैसे बन सकते हैं, समय और स्थान की परवाह किए बिना, मानव आत्मा के सभी रूपों के मित्र कैसे बन सकते हैं।

आप उत्तर का अनुमान लगा सकते हैं। यह महान ग्रंथों को पढ़ने से ही संभव है। इस प्रकार, मनुष्य का मन, चाहे वह कहीं भी स्थित हो, सार्वभौमिक संचार के स्तर तक पहुँचकर वर्तमान परिस्थितियों और स्थानीय पूर्वाग्रहों से मुक्त हो सकता है। वहाँ वह उन सामान्य सत्यों को ग्रहण करता है, जिनकी गवाही संपूर्ण मानव परंपरा देती है।

जो लोग अच्छी तरह पढ़ सकते हैं, वे आलोचनात्मक चिंतन कर सकते हैं। इस हद तक वे स्वतंत्र विचारक बन चुके हैं। यदि उन्होंने महान ग्रंथ पढ़े हैं—और मेरा मतलब है कि उन्हें सचमुच पढ़ा है—तो उन्हें मानव जगत में कहीं भी जाने की स्वतंत्रता प्राप्त होगी। केवल वही लोग तर्क का पूर्ण जीवन जी सकते हैं जो किसी विशेष समय और स्थान में रहते हुए भी, उससे पूरी तरह ग्रसित न हों।

अध्याय सत्रह

स्वतंत्र विचार और स्वतंत्र पुरुष

- 1 -

आइए, साधन और साध्य के बीच भ्रमित न हों। महान ग्रंथों को पढ़ना केवल उनके बारे में चर्चा करने के लिए नहीं है। उनका नाम लेकर उल्लेख करने से आपको साक्षरता का आभास हो सकता है, लेकिन आपको उन्हें केवल मनोरंजन के लिए या किसी रात्रिभोज में दूसरों से बेहतर प्रदर्शन करने के लिए पढ़ने की

आवश्यकता नहीं है। मुझे आशा है कि मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि महान ग्रंथों को पढ़ने—वास्तव में पढ़ने—के और भी बेहतर कारण हैं।

जहां तक संवाद की बात है, मामला बिल्कुल उलट है। मैंने चर्चा को पढ़ने में सहायक के रूप में सुझाया है, न कि "शानदार" संवाद के लिए पढ़ने के रूप में। पाठक और लेखक के बीच संवाद, जो अच्छे पठन का अभिन्न अंग है, तब तक संभव नहीं है जब तक पाठक पुस्तकों पर चर्चा करने का आदी न हो। यदि उसके ऐसे मित्र हैं जिनसे वह पुस्तकों के बारे में बात करता है, तो संभावना है कि वह पुस्तकों से ही बात करने लगेगा।

लेकिन एक और अधिक महत्वपूर्ण बात है। महान ग्रंथों को अच्छी तरह से पढ़ना भी अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं है। यह एक सभ्य मानवीय जीवन जीने का साधन है, एक स्वतंत्र व्यक्ति और एक स्वतंत्र नागरिक का जीवन जीने का। यही हमारा अंतिम उद्देश्य होना चाहिए। यही इस पुस्तक का मूल विषय है। मैं इस अध्याय के अंत में इस पर चर्चा करूंगा। फिलहाल, मैं पढ़ने से संबंधित चर्चा के मुद्दे पर थोड़ा और ध्यान देना चाहता हूं।

बेशक, आप अकेले किताब से भी बातचीत कर सकते हैं, लेकिन ज्यादातर लोगों को यह खुद से बात करने जैसा लगेगा। जीवंत बातचीत के लिए, आपको किताबों और उन्हें पढ़ने की क्षमता से कहीं अधिक की आवश्यकता होती है। आपको दोस्तों और बात करने और सुनने की क्षमता की आवश्यकता होती है।

दुर्भाग्यवश, केवल दोस्त होना ही काफी नहीं है। हम सभी के दोस्त होते हैं। लेकिन मान लीजिए कि हमारे दोस्तों को किताबें पढ़ना पसंद नहीं है, और उन्हें पढ़ना और उनके बारे में बात करना नहीं आता।

मान लीजिए कि वे गोल्फ कोर्स या ब्रिज टेबल के दोस्त हैं, संगीत या थिएटर के दोस्त हैं, या किताबों को छोड़कर किसी भी चीज़ के दोस्त हैं। उस स्थिति में, पिछले अध्याय में मैंने जिस तरह की बातचीत की कल्पना की थी, वह नहीं होगी।

आपकी बातचीत अक्सर मौजूदा विषयों या हाल ही में प्रकाशित पुस्तकों से शुरू होती है। कोई अखबार की सुर्खियाँ या ताज़ा समाचार सुनाता है। आजकल की बड़ी खबरें समस्याओं से भरी होती हैं। इनमें अनगिनत बातचीत के बीज छिपे होते हैं।

लेकिन क्या इनमें कोई विकास होता है? क्या बातचीत अखबार और रेडियो के स्तर से ऊपर उठ पाती है? अगर ऐसा नहीं होता, तो जल्द ही सभी को बातचीत नीरस लगने लगेगी और वही पुरानी बातें दोहराते-दोहराते थककर लोग ताश खेलने, फिल्म देखने या अपने पड़ोसियों के बारे में बातें करने का फैसला कर लेंगे।

इसके लिए किसी विशेष साक्षरता की आवश्यकता नहीं है।

किसी ने शायद कोई किताब पढ़ी हो, संभवतः कोई ऐसी किताब जिसकी चर्चा अब जानकार लोगों के बीच हो रही है। बातचीत शुरू होने का एक और मौका है। लेकिन यह जल्द ही रुक जाएगी, जब तक कि सौभाग्य से वही किताब पढ़ने वाले अन्य पाठक

न मिल जाएं। ज़्यादा संभावना यही है कि अन्य लोग भी हाल ही में पढ़ी गई अन्य किताबों का ज़िक्र करके बातचीत में शामिल हो जाएंगे। कोई जुड़ाव नहीं बनेगा। जब सभी लोग अगली किताब के बारे में सुझाव दे और ले लेंगे, तो बातचीत उन चीज़ों पर केंद्रित हो जाएगी जो लोगों को लगता है कि उनमें समान हैं। भले ही कई लोग मौजूद हों जिन्होंने वही किताब पढ़ी हो, फिर भी बातचीत के रुकने की संभावना है क्योंकि वे उस पर इस तरह से चर्चा करने में असमर्थ होंगे जिससे कोई सार्थक निष्कर्ष निकले।

हो सकता है मैं आपकी स्थिति को थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर बता रहा हूँ, लेकिन मैं अपने खुद के अनुभव के आधार पर बोल रहा हूँ, जिसमें मैंने कई अंतहीन उबाऊ सामाजिक शामें बिताई हैं। ऐसा लगता नहीं था कि वहाँ पर्याप्त लोग थे जिनकी पढ़ने की रुचि एक जैसी हो। आजकल यह वाक्यांश प्रयोग करना चलन बन गया है।

"संदर्भ का दायरा।" अच्छी बातचीत के लिए आवश्यक है कि उसमें भाग लेने वाले सभी लोग एक ही संदर्भ के दायरे में बात करें। संचार का परिणाम केवल कुछ साझा विचारों का होना ही नहीं होता; इसके लिए आमतौर पर एक साझा पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है। संचार में हमारी विफलताएँ न केवल बोलने और सुनने की हमारी अक्षमताओं के कारण होती हैं, बल्कि विचारों की प्रारंभिक समानता के अभाव के कारण भी होती हैं।

मेरी बात सुनकर शायद लगे कि इसके गंभीर परिणाम होंगे। मैं न सिर्फ आपसे पढ़ना सीखने की उम्मीद कर रहा हूँ, बल्कि अब आपसे अपने दोस्त बदलने के लिए भी कह रहा हूँ! मुझे लगता है इसमें कुछ सच्चाई है। या तो आप खुद में ज्यादा बदलाव नहीं लाएँगे, या फिर आपको अपने दोस्त बदलने होंगे।

मैं तो बस वही कह रहा हूँ जो सब जानते हैं, कि दोस्ती समान रुचियों वाले लोगों पर निर्भर करती है। अगर आप महान पुस्तकें पढ़ते हैं, तो आप ऐसे दोस्त चाहेंगे जिनके साथ आप उन पर चर्चा कर सकें।

यदि आप अपने पुराने पाठकों को अपने साथ पढ़ने के लिए राजी कर सकते हैं, तो आपको नए पाठकों को खोजने की आवश्यकता नहीं है।

मुझे याद है जॉन एर्स्किन ने क्या कहा था जब उन्होंने महान ग्रंथों के अध्ययन के लिए छात्रों के उस समूह की शुरुआत की थी जिसमें मैं शामिल था। उन्होंने हमें बताया कि पिछले कुछ वर्षों से उन्होंने देखा था कि कॉलेज के छात्र आपस में समझदारी से बात नहीं कर पाते थे। ऐच्छिक पाठ्यक्रम प्रणाली के तहत, वे अलग-अलग कक्षाओं में जाते थे, कभी-कभार ही मिलते थे और केवल कोई एक-दो पाठ्यपुस्तकें ही साथ में पढ़ते थे। एक ही कॉलेज के सहपाठी बौद्धिक मित्र नहीं थे। जब वे सदी की शुरुआत में कोलंबिया गए थे, तब सभी छात्र एक ही पाठ्यक्रम पढ़ते थे और एक ही पुस्तकें पढ़ते थे, जिनमें से कई महान पुस्तकें थीं। अच्छी बातचीत खूब फली-फूली थी और उससे भी बढ़कर, खेल के मैदान या बिरादरी में जितनी दोस्ती होती थी, उतनी ही विचारों के मामले में भी दोस्ती पनपी थी।

ऑनर्स पाठ्यक्रम शुरू करने के पीछे उनका एक उद्देश्य कॉलेज जीवन को एक बौद्धिक समुदाय के रूप में पुनर्जीवित करना था। यदि छात्रों का एक समूह एक ही पुस्तकें पढ़े और दो वर्षों तक साप्ताहिक रूप से मिलकर उन पर चर्चा करे, तो उन्हें एक नए प्रकार का भाईचारा मिल सकता है। महान पुस्तकें न केवल उन्हें विचारों की दुनिया से परिचित कराएंगी, बल्कि उनके बीच आगे के संवाद के लिए संदर्भ का ढांचा भी प्रदान करेंगी। वे एक-दूसरे से बुद्धिमानी और स्पष्टता से बात करना सीखेंगे, न केवल पुस्तकों के बारे में, बल्कि पुस्तकों के माध्यम से उन सभी समस्याओं पर चर्चा करेंगे जो मनुष्य के चिंतन और कर्म को प्रभावित करती हैं।

एर्स्किन ने कहा था कि ऐसे समुदाय में लोकतंत्र सुरक्षित रहेगा, क्योंकि लोकतंत्र के लिए मानवीय समस्याओं के समाधान में बुद्धिमत्तापूर्ण संवाद और सामूहिक भागीदारी आवश्यक है। यह तब की बात है जब किसी ने सोचा भी नहीं था कि लोकतंत्र को कभी फिर से खतरा होगा। मुझे याद है, उस समय हमने एर्स्किन की इस अंतर्दृष्टि पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। लेकिन वे सही थे। अब मुझे इस बात का पूरा यकीन है। मुझे पूरा विश्वास है कि उदार शिक्षा ही लोकतंत्र का सबसे मजबूत रक्षक है।

- 2 -

मुझे नहीं पता कि इस देश के स्कूलों और कॉलेजों को बदलने की कितनी संभावना है।

आज वे तीन अंकगणित और साक्षरता से दूर, विपरीत दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

(विडंबना यह है कि शिक्षा के वर्तमान रुझान, जिनकी मैंने आलोचना की है, वे भी लोकतंत्र के प्रति समर्पण से प्रेरित हैं।) लेकिन मैं जानता हूँ कि वयस्क शिक्षा के बारे में कुछ किया जा सकता है। यह अभी पूरी तरह से शिक्षक महाविद्यालयों और शिक्षा संस्थानों के नियंत्रण में नहीं है। आप और आपके मित्र स्वयं योजनाएँ बनाने के लिए स्वतंत्र हैं। आपको किसी के आने और आपको कोई कार्यक्रम देने का इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है। आपको इसे स्थापित करने के लिए किसी जटिल तंत्र की आवश्यकता नहीं है। आपको शिक्षकों की भी आवश्यकता नहीं है। एक साथ मिलें, महान पुस्तकें पढ़ें और उन पर चर्चा करें। जिस प्रकार आप पढ़कर पढ़ना सीखते हैं, उसी प्रकार आप चर्चा करके चर्चा करना सीखते हैं।

मुझे लगता है कि यह काफी संभव है, इसके कई कारण हैं। जब मैं शिकागो गया और राष्ट्रपति हचिन्स के साथ पठन पाठ्यक्रम पढ़ाना शुरू किया, तो पास के एक उपनगर के कुछ लोगों ने मुझे इसके बारे में बताने के लिए आमंत्रित किया। समूह में परिपक्व पुरुष और महिलाएं थीं, सभी कॉलेज स्नातक थे, कुछ पुरुष पेशेवर काम में लगे थे, कुछ व्यवसाय में थे, और कई महिलाएं स्थानीय शैक्षिक और राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने के साथ-साथ अपने परिवारों की देखभाल भी करती थीं। उन्होंने पाठ्यक्रम में भाग लेने का निर्णय लिया।

कॉलेज में हमने दो साल में लगभग साठ किताबें पढ़ीं, यानी हर हफ्ते एक किताब। चूंकि उपनगरीय समूह के पास इतना समय नहीं होता (बच्चों और व्यवसाय

की वजह से), वे महीने में केवल एक किताब ही पढ़ पाते। इसलिए, उन्हें उतनी ही किताबें पढ़ने में लगभग आठ साल लग जाते। सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता था कि वे इसे जारी रख पाएंगे।

आरंभ में उनकी पढ़ने की क्षमता अधिकांश कॉलेज स्नातकों से बेहतर नहीं थी। वे बिल्कुल शून्य से शुरुआत कर रहे थे, कॉलेज की शिक्षा से मिलने वाली उस सतही ज्ञान की परत से। उन्होंने पाया कि दैनिक समाचार पत्र और यहाँ तक कि सर्वश्रेष्ठ पत्रिका या वर्तमान पुस्तक के अनुसार उनकी पढ़ने की आदतें, इलियड, द डिवाइन कॉमेडी या क्राइम एंड पनिशमेंट; प्लेटो की रिपब्लिक, स्पिनोज़ा की एथिक्स या मिल का एस्से ऑन लिबर्टी; न्यूटन की ऑप्टिक्स या डार्विन की ओरिजिन ऑफ स्पीशीज जैसी रचनाएँ पढ़ते समय बिल्कुल भी कुशल नहीं थीं। लेकिन उन्होंने ये सभी पुस्तकें पढ़ीं और ऐसा करने के दौरान उन्होंने पढ़ना सीख लिया।

उन्होंने अभ्यास जारी रखा क्योंकि उन्हें हर साल अपनी दक्षता में वृद्धि का एहसास होता था और कौशल से मिलने वाली निपुणता का आनंद मिलता था। अब वे बता सकते हैं कि लेखक क्या कहना चाह रहा है, किन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कर रहा है, उसकी सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाएँ क्या हैं, उसके निष्कर्षों के क्या कारण हैं और यहाँ तक कि विषय के प्रति उसकी प्रतिक्रिया में क्या कमियाँ हैं।

उनकी चर्चा का स्तर दस साल पहले की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक है, और यह निश्चित रूप से एक बात को दर्शाता है: उन्होंने अधिक बुद्धिमत्ता से पढ़ना सीख लिया है।

यह समूह दस वर्षों से साथ है। जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, वे अनिश्चित काल तक साथ रहने की योजना बना रहे हैं, अपने पठन का दायरा बढ़ा रहे हैं और उन पुस्तकों को दोबारा पढ़ रहे हैं जिन्हें उन्होंने शुरुआती वर्षों में ठीक से नहीं पढ़ा था। मैंने उनकी चर्चाओं का नेतृत्व करके शायद उनकी मदद की हो, लेकिन मुझे यकीन है कि अब वे मेरी मदद के बिना भी आगे बढ़ सकते हैं। वास्तव में, मुझे पूरा विश्वास है कि वे ऐसा ही करेंगे।

उन्होंने अपने जीवन में इसके प्रभाव को महसूस किया है।

शुरू करने से पहले वे सभी दोस्त थे, लेकिन अब उनकी दोस्ती बौद्धिक रूप से परिपक्व हो गई है। बातचीत अब फल-फूल रही है, जबकि पहले यह फीकी पड़ जाती थी और अन्य बातों में खो जाती थी। उन्होंने गंभीर समस्याओं पर बुद्धिमत्तापूर्वक चर्चा करने का आनंद अनुभव किया है। वे समय के साथ-साथ विचारों का आदान-प्रदान नहीं करते।

चर्चा अब एक ज़िम्मेदारी बन गई है। व्यक्ति को अपने कथन का प्रमाण देना होगा। विचारों का आपस में और रोज़मर्रा की दुनिया से गहरा संबंध है। उन्होंने प्रस्तावों और तर्कों को उनकी सुगमता और प्रासंगिकता के आधार पर परखना सीख लिया है।

शिकागो जाने से कई साल पहले, हमने न्यूयॉर्क में इसी तरह का एक वयस्क शिक्षा कार्यक्रम शुरू किया था। श्री बुचानन उस समय पीपुल्स इंस्टीट्यूट के सहायक निदेशक थे, और उन्होंने और मैंने श्री एवरेट डीन मार्टिन को वयस्कों के समूहों के साथ महान ग्रंथों को पढ़ने का प्रयास करने के लिए राजी किया। हम वयस्क शिक्षा में एक ऐसा प्रयोग प्रस्तावित कर रहे थे जो उस समय एक अभूतपूर्व प्रयोग था। अब यह कोई प्रयोग नहीं रह गया है। अगर हमें यूरोपीय इतिहास के तथ्य याद होते, तो हम इसे तब भी प्रयोग नहीं मानते। महत्वपूर्ण समस्याओं पर चर्चा हमेशा से ही वयस्कों की शिक्षा का निरंतर माध्यम रही है, और यह चर्चा महत्वपूर्ण पुस्तकों को पढ़ने से प्राप्त सामान्य पृष्ठभूमि के अलावा शायद ही कभी हुई हो।

हमने न्यूयॉर्क क्षेत्र में लगभग दस समूह शुरू किए। ये समूह पुस्तकालयों, व्यायामशालाओं, चर्च के सामाजिक हॉलों और युवा चिकित्सा संस्थानों (वाईएमसीए) में मिलते थे। इनमें हर तरह के लोग शामिल थे - कुछ कॉलेज पढ़े हुए, कुछ नहीं पढ़े हुए, अमीर और गरीब, मंदबुद्धि और प्रतिभाशाली। इन समूहों के नेता युवा थे, जिनमें से अधिकांश ने स्वयं पुस्तकें नहीं पढ़ी थीं, लेकिन पढ़ने के इच्छुक थे। उनका मुख्य कार्य चर्चा का संचालन करना, कुछ मार्गदर्शक प्रश्न पूछकर चर्चा शुरू करना, गतिरोध उत्पन्न होने पर उसे जारी रखना और वास्तविक मुद्दों से भटकने वाले विवादों को स्पष्ट करना था।

यह एक बड़ी सफलता थी। यह केवल इसलिए बंद हो गई क्योंकि इसे कर्मचारियों और रखरखाव के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता थी जो इसे नहीं मिल पाई। लेकिन इसे कहीं भी और कभी भी, लोगों के किसी भी समूह द्वारा पुनर्जीवित किया जा सकता है जो महान पुस्तकों को एक साथ पढ़ने और उन पर चर्चा करने का निर्णय लेते हैं। शुरुआत में आपको बस कुछ दोस्तों की ज़रूरत है, और जब तक आप इसे पूरा करेंगे, तब तक आप और भी अच्छे दोस्त बन जाएंगे।

आप कह सकते हैं कि मैं एक बात भूल गया हूँ। न्यूयॉर्क और शिकागो के जिन समूहों का मैंने वर्णन किया है, उन दोनों में चर्चा का संचालन करने के लिए नेता मौजूद थे, ऐसे नेता जिन्हें शायद बाकी समूह की तुलना में किताबें पढ़ने का थोड़ा अधिक अनुभव था। मैं मानता हूँ कि प्रशिक्षित नेता आपको शुरुआत करने में मदद करेंगे। लेकिन वे विलासिता हैं, आवश्यकता नहीं।

आप प्रत्येक बैठक के लिए एक नेता का चुनाव करके सबसे लोकतांत्रिक तरीके से आगे बढ़ सकते हैं।

अलग-अलग लोगों को बारी-बारी से यह ज़िम्मेदारी लेने दें। हर बार, नेतृत्वकर्ता संभवतः पुस्तक पढ़ने और उस पर चर्चा करने के बारे में बाकी सभी से ज़्यादा सीखेगा। यदि समूह के प्रत्येक सदस्य को बारी-बारी से यह अनुभव प्राप्त होता है, तो पूरा समूह बाहर से किसी नेता को नियुक्त करने की तुलना में अधिक तेज़ी से सीखेगा। मेरे द्वारा सुझाई गई योजना में यह लाभ शामिल है, हालाँकि शुरुआत में यह थोड़ा कठिन हो सकता है।

मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि किसी किताब पर चर्चा कैसे की जानी चाहिए। पढ़ने के सभी नियम यही बताते हैं। वे किताब को पढ़ने के साथ-साथ उस पर चर्चा करने के लिए दिशा-निर्देशों का एक समूह हैं। जिस तरह वे लेखक के साथ आपकी बातचीत को नियंत्रित करते हैं, उसी तरह वे आपके दोस्तों के साथ किताब पर होने वाली बातचीत को भी नियंत्रित करते हैं। और, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, ये दोनों बातचीत एक-दूसरे का समर्थन करती हैं।

चर्चा की शुरुआत प्रश्न पूछने से होती है। पढ़ने के नियम उन प्रमुख प्रश्नों को दर्शाते हैं जो किसी भी पुस्तक के बारे में, चाहे वह स्वयं पुस्तक हो या अन्य पुस्तकों के संदर्भ में, पूछे जा सकते हैं। चर्चा प्रश्नों के उत्तर देने से आगे बढ़ती है। प्रतिभागियों को, निश्चित रूप से, प्रश्नों को समझना चाहिए और अपनी टिप्पणियों में प्रासंगिक होना चाहिए। लेकिन यदि आपने किसी लेखक को समझने का अनुशासन प्राप्त कर लिया है, तो आपको और आपके मित्रों को एक-दूसरे को समझने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। वास्तव में, यह आसान है, क्योंकि आप एक-दूसरे को समझने में मदद कर सकते हैं। मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि आपमें बौद्धिक शिष्टाचार अच्छा होगा, आप दूसरे व्यक्ति की बात को समझे बिना कोई राय नहीं बनाएंगे, और जब आप राय बनाएंगे, तो आप कारण बताएंगे।

हर अच्छी बातचीत अपने आप में अनोखी होती है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ होता और न ही दोबारा कभी होगा। हर मामले में सवालों का क्रम अलग होगा।

व्यक्त किए गए विचार, उनका विरोध और स्पष्टीकरण, प्रत्येक पुस्तक में और एक ही पुस्तक पर चर्चा करने वाले समूहों में भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। फिर भी, हर अच्छी चर्चा कुछ मायनों में समान होती है। यह स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ती है। तर्क जहाँ भी ले जाए, उसका अनुसरण किया जाता है।

समझ और सहमति निरंतर लक्ष्य होते हैं, जिन्हें अनगिनत रास्तों से प्राप्त किया जा सकता है। एक अच्छी बातचीत न तो लक्ष्यहीन होती है और न ही निरर्थक। जब किसी सार्थक विषय पर अच्छी तरह से चर्चा हो जाती है, तो चर्चा वह नीरस और निरर्थक चीज नहीं रह जाती जैसा कि ज्यादातर लोग सोचते हैं।

महान ग्रंथों के प्रकाश में महत्वपूर्ण समस्याओं पर अच्छी चर्चा करना, चिंतन और संचार की कलाओं का लगभग संपूर्ण अभ्यास है। केवल लेखन ही इसमें शामिल नहीं है। बेकन ने कहा था:

"पढ़ने से व्यक्ति परिपूर्ण बनता है, बातचीत से वह तैयार रहता है और लिखने से वह सटीक बनता है।"

शायद सुव्यवस्थित चर्चा में आवश्यक सटीकता के माध्यम से पूर्णता भी प्राप्त की जा सकती है। किसी भी स्थिति में, पढ़ने, सुनने और बोलने से मन को पर्याप्त रूप से अनुशासित किया जा सकता है।

- 3 -

जिस मस्तिष्क को अच्छी तरह से पढ़ने का प्रशिक्षण दिया जाता है, उसकी विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक क्षमताएं विकसित हो जाती हैं।

अच्छी तरह से चर्चा करने का अभ्यास करने वाले मन की क्षमता और भी बढ़ जाती है। धैर्य और सहानुभूति से तर्कों को समझने से व्यक्ति में उनके प्रति सहनशीलता विकसित होती है। दूसरों पर अपनी राय थोपने की स्वाभाविक प्रवृत्ति पर अंकुश लग जाता है। हम सीखते हैं कि एकमात्र अधिकार स्वयं तर्क का है—किसी भी विवाद का एकमात्र निर्णायक तर्क और प्रमाण ही होते हैं। हम बल प्रयोग करके या अपने से सहमत लोगों की संख्या गिनकर वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास नहीं करते। वास्तविक मुद्दों का निर्णय केवल मतों के बल पर नहीं किया जा सकता। हमें तर्क का सहारा लेना चाहिए, दबाव समूहों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

हम सभी सही तरीके से सोचना सीखना चाहते हैं। एक अच्छी किताब हमें गहन अंतर्दृष्टि और ठोस विश्लेषण के उदाहरणों से मदद कर सकती है। एक अच्छी चर्चा हमें गलत सोच को पकड़ने में मदद कर सकती है। अगर हमारे दोस्त हमें ऐसा करने से नहीं रोकते, तो हम जल्द ही यह सीख जाएंगे कि लापरवाही से सोचना, हत्या की तरह, हमेशा उजागर हो जाता है।

शर्मिंदगी हमें ऐसे प्रयास करने पर मजबूर कर सकती है जिनके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं था कि वे हमारे बस में हैं। जब तक पढ़ना और चर्चा करना हमें स्पष्ट और सटीक सोच के लिए प्रेरित नहीं करते, तब तक हममें से अधिकांश लोग अपने विचारों और निर्णयों पर अविश्वसनीय रूप से झूठे भरोसे के साथ जीवन व्यतीत करते रहते हैं। हम अक्सर गलत सोचते हैं और इससे भी बुरी बात यह है कि हमें इसका एहसास भी नहीं होता क्योंकि हमारी यह गलती शायद ही कभी पकड़ी जाती है।

जो लोग अच्छी तरह पढ़, सुन और बोल सकते हैं, उनका मन अनुशासित होता है। अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने के लिए अनुशासन अत्यंत आवश्यक है। जिस व्यक्ति में किसी काम को करने की कुशलता नहीं होती, वह उसे करने का प्रयास करते समय उलझन में पड़ जाता है। कौशल से प्राप्त अनुशासन सहजता के लिए आवश्यक है। आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ पुस्तक पर कितनी चर्चा कर सकते हैं जो उसे पढ़ना या उसके बारे में बात करना नहीं जानता? बिना प्रशिक्षित क्षमता के आप स्वयं कितना पढ़ सकते हैं?

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, अनुशासन स्वतंत्रता का स्रोत है। केवल प्रशिक्षित बुद्धि ही स्वतंत्र रूप से सोच सकती है। और जहाँ सोचने की स्वतंत्रता नहीं होती, वहाँ विचार की स्वतंत्रता भी नहीं हो सकती। स्वतंत्र मन के बिना हम लंबे समय तक स्वतंत्र मनुष्य नहीं रह सकते।

शायद अब आप यह मानने को तैयार होंगे कि पढ़ना सीखना अन्य चीजों से, वास्तव में, पाठक के पूरे जीवन से काफी हद तक जुड़ा हो सकता है। इसके सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थ भी स्पष्ट हैं। लेकिन इन पर विचार करने से पहले, मैं आपको पढ़ने सीखने के एक तात्कालिक औचित्य की याद दिलाना चाहता हूँ।

पढ़ना—और इसके साथ ही सोचना और सीखना—उन लोगों के लिए आनंददायक होता है जो इसे अच्छी तरह से करते हैं। जिस प्रकार हम अपने शरीर का कुशलतापूर्वक उपयोग करने में आनंद पाते हैं, उसी प्रकार हम अपनी अन्य क्षमताओं का सक्षम उपयोग करने से भी आनंद प्राप्त कर सकते हैं। हम अपने दिमाग का जितना बेहतर उपयोग कर पाते हैं, उतना ही हम सोचने और सीखने की क्षमता के महत्व को समझते हैं। इसलिए, पढ़ने की कला को स्वाभाविक रूप से अच्छा माना जा सकता है। हमारे पास उपयोग करने के लिए मानसिक क्षमताएं हैं और उन्हें निस्वार्थ भाव से उपयोग करने के लिए खाली समय भी है। पढ़ना निश्चित रूप से उन्हें पूरा करने का एक तरीका है।

यदि केवल इतनी प्रशंसा ही पर्याप्त होती, तो मैं संतुष्ट नहीं होता। यद्यपि पढ़ना तात्कालिक आनंद का स्रोत है, फिर भी यह अपने आप में पूर्ण लक्ष्य नहीं है। मानवीय जीवन जीने के लिए हमें केवल सोचना और सीखना ही पर्याप्त नहीं है। हमें कर्म करना होगा। यदि हम अपने खाली समय को निस्वार्थ गतिविधियों के लिए बचाना चाहते हैं, तो हम अपनी व्यावहारिक जिम्मेदारियों से पीछे नहीं हट सकते। पढ़ने का अंतिम औचित्य हमारे व्यावहारिक जीवन से ही जुड़ा है।

महान ग्रंथों को पढ़ना व्यर्थ है जब तक हम एक अच्छे समाज के निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध न हों। हर कोई ऐसे समाज में रहना चाहता है, लेकिन इसके लिए काम करने को तैयार बहुत कम लोग दिखाई देते हैं।

आइए, मैं संक्षेप में समझाता हूँ कि एक अच्छे समाज से मेरा क्या तात्पर्य है। यह सरल शब्दों में उस समुदाय का विस्तार है जिसमें हम अपने मित्रों के साथ रहते हैं। हम अपने मित्रों के साथ शांतिपूर्ण और बुद्धिमत्तापूर्ण संगति में रहते हैं। हम तभी एक समुदाय का निर्माण करते हैं जब हम संवाद करते हैं, समान विचार और उद्देश्य साझा करते हैं। एक अच्छा समाज, व्यापक रूप से, बुद्धिमत्तापूर्ण संवाद द्वारा मित्र बने व्यक्तियों का एक संघ होना चाहिए।

- 4 -

जहां मनुष्य संचार कौशल से वंचित होते हैं, वहां बुद्धिमत्तापूर्ण चर्चाएँ निरर्थक हो जाती हैं। जहां विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम पर निपुणता नहीं होती, वहां विचार मानव जीवन में अपना महत्व खो देते हैं। जब ऐसा होता है, तो मनुष्य उन क्रूर प्राणियों से कुछ बेहतर नहीं रह जाते जिन पर वे बल या छल से प्रभुत्व जमाते हैं, और वे शीघ्र ही एक-दूसरे पर भी उसी तरह प्रभुत्व जमाने का प्रयास करेंगे।

इसके परिणामस्वरूप स्वतंत्रता का हनन होता है। जब मनुष्य मित्रवत रूप से एक साथ नहीं रह सकते, जब पूरा समाज वास्तविक आपसी समझ पर आधारित नहीं होता, तब स्वतंत्रता फल-फूल नहीं सकती। हम केवल अपने मित्रों के साथ ही स्वतंत्र रूप से रह सकते हैं। अन्य सभी के साथ, हम हर प्रकार के भय से घिरे रहते हैं, और संदेह के कारण हमारी हर गतिविधि बाधित होती है।

आज हमारी प्रमुख चिंताओं में से एक है स्वयं के लिए और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वतंत्रता की रक्षा करना।

स्वतंत्रता के प्रति उचित सम्मान ही सच्चे उदारवाद का मूल आधार है। लेकिन मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि क्या हमारा उदारवाद वास्तव में सही है? ऐसा लगता है कि हम स्वतंत्रता के उद्गम और उसके उद्देश्यों को नहीं जानते। हम हर तरह की स्वतंत्रता की वकालत करते हैं—भाषण की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, सभा की स्वतंत्रता—लेकिन हम यह नहीं समझते कि विचार की स्वतंत्रता ही इन सभी स्वतंत्रताओं का आधार है। इसके बिना, भाषण की स्वतंत्रता एक खोखला विशेषाधिकार है, और स्वतंत्र अंतरात्मा केवल एक निजी पूर्वाग्रह है। इसके बिना, हमारी नागरिक स्वतंत्रताओं का प्रयोग केवल औपचारिक रूप से ही किया जा सकता है, और यदि हम उनका सही उपयोग करना नहीं जानते, तो हम उन्हें लंबे समय तक बनाए रखने में असमर्थ हैं।

सेंट जॉन कॉलेज के अध्यक्ष बैर ने जैसा बताया है, आज अमेरिकी उदारवाद बहुत कम की मांग करता है, बहुत अधिक की नहीं। हमने अपने पूर्वजों की तरह अज्ञानता से मुक्त मन, जागृत कल्पना और अनुशासित तर्कशक्ति की मांग नहीं की है, जिनके बिना हम अपनी अन्य स्वतंत्रताओं का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर सकते या उन्हें संरक्षित भी नहीं कर सकते। हमने स्वतंत्रता के सार के बजाय उसके बाहरी उपयोगों पर ध्यान दिया है। इसके अलावा, प्रचलित शिक्षा प्रणाली यह संकेत देती है कि हम अब यह नहीं जानते कि स्वतंत्र मन कैसे बनते हैं और उनके माध्यम से स्वतंत्र मनुष्य कैसे बनते हैं।

उदारवाद और उदार शिक्षा को आपस में जोड़ना या यह कहना कि उदार कलाओं का प्रशिक्षण हमें उदार बनाता है—हमें स्वतंत्र करता है—यह महज़ शब्दों का खेल नहीं है। पढ़ना-लिखना, सुनना-बोलना, ये वो कलाएँ हैं जो हमें स्वतंत्र रूप से सोचने में सक्षम बनाती हैं, क्योंकि ये मन को अनुशासित करती हैं। ये मुक्तिदायक कलाएँ हैं। इनके द्वारा प्राप्त अनुशासन हमें निराधार विचारों की अस्थिरता और स्थानीय पूर्वाग्रहों की जकड़न से मुक्त करता है।

वे हमारे मन को तर्क के अधिकार के अलावा हर तरह के बंधन से मुक्त करते हैं। एक स्वतंत्र व्यक्ति किसी अन्य अधिकार को नहीं मानता। जो लोग हर तरह के अधिकार से—यहाँ तक कि तर्क से भी—मुक्त होना चाहते हैं, वे झूठे उदारवादी हैं। जैसा कि मिल्टन ने कहा था, "जब वे स्वतंत्रता की बात करते हैं, तो उनका मतलब मनमानी करना होता है।"

पिछले वर्ष मुझे वाशिंगटन में आयोजित अमेरिकन काउंसिल ऑफ एजुकेशन की वार्षिक बैठक में भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया था। मैंने "उदारवाद और उदार शिक्षा" शीर्षक के तहत तीन अंकों (पढ़ना, लिखना, अंकगणित और गणित) के राजनीतिक निहितार्थों पर बोलने का विकल्प चुना। मैंने यह दिखाने का प्रयास किया कि कैसे झूठा उदारवाद उदार शिक्षा का शत्रु है, और इस व्यापक रूप से प्रचलित झूठे उदारवाद की भ्रांतियों को दूर करने के लिए इस देश में एक सच्ची उदार शिक्षा की आवश्यकता क्यों है। झूठे उदारवाद से मेरा तात्पर्य उस प्रकार के उदारवाद से है जो सत्ता को अत्याचार और अनुशासन को

नियमबद्धता के साथ भ्रमित करता है। यह वहाँ मौजूद है जहाँ लोग सोचते हैं कि सब कुछ केवल राय का मामला है।

यह एक आत्मघाती सिद्धांत है। अंततः यह इस स्थिति तक सिमट जाता है कि केवल बल ही उचित है। जो उदारवादी स्वयं को तर्क से मुक्त करता है, न कि उसके माध्यम से, वह मानवीय मामलों में एकमात्र अन्य निर्णायक - बल, या जिसे श्री चेम्बरलेन ने "युद्ध का भयानक निर्णय" कहा है, के सामने आत्मसमर्पण कर देता है।

तीन अंकगणित, यानी उदार कलाओं के राजनीतिक निहितार्थ स्पष्ट हैं। यदि लोकतंत्र स्वतंत्र व्यक्तियों का समाज है, तो उसे उदार शिक्षा को बनाए रखना और उसका विस्तार करना होगा, अन्यथा वह नष्ट हो जाएगा। लोकतांत्रिक नागरिकों को स्वयं सोचने में सक्षम होना चाहिए। इसके लिए, उन्हें पहले सोचने में सक्षम होना चाहिए और उनके पास विचार करने के लिए विचारों का भंडार होना चाहिए। उन्हें एक-दूसरे के साथ स्पष्ट रूप से संवाद करने और सभी प्रकार के संचार को आलोचनात्मक रूप से ग्रहण करने में सक्षम होना चाहिए। इन्हीं उद्देश्यों के लिए पढ़ने का कौशल और महान ग्रंथों का अध्ययन करना स्पष्ट रूप से केवल साधन मात्र हैं।

शेक्सपियर के नाटक हेनरी VI में निम्नलिखित भाषण मिलता है: तुमने व्याकरण विद्यालय की स्थापना करके राज्य के युवाओं को घोर विश्वासघात से भ्रष्ट कर दिया है; और जबकि पहले हमारे पूर्वजों के पास स्कोर और टैली के अलावा कोई अन्य पुस्तकें नहीं थीं, तुमने छपाई का उपयोग शुरू करवा दिया है, और राजा, उसके ताज और गरिमा के विरुद्ध जाकर तुमने एक कागज़ की मिल बनवा दी है।

तानाशाह के लिए पढ़ना-लिखना घोर राजद्रोह के समान था। वह इनमें ऐसी शक्तियाँ देखता था जो उसे उसके सिंहासन से हटा सकती थीं। और कुछ समय के लिए ऐसा हुआ भी, जब ज्ञान के प्रसार और साक्षरता में वृद्धि के माध्यम से पश्चिमी दुनिया का धीरे-धीरे लोकतंत्रीकरण हुआ। लेकिन आज हम मानव जीवन में एक अलग मोड़ देखते हैं। संचार के वे साधन जिनका उपयोग कभी मुक्तिदाताओं द्वारा मनुष्यों को मुक्त करने के लिए किया जाता था, अब तानाशाहों द्वारा उन्हें दबाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

आज तानाशाह बनाने में कलम तलवार जितनी ही शक्तिशाली है। तानाशाह कभी महान सेनापति हुआ करते थे। अब वे संचार के माहिर, लुभावने वक्ता या प्रचारक बन गए हैं। उनके हथियार रेडियो और प्रेस हैं, ठीक वैसे ही जैसे गुप्त पुलिस और यातना शिविर। और जब लोगों को प्रचार के दबाव में चलाया जाता है, तो वे उतने ही आज्ञाकारी हो जाते हैं जितने कि जब उन्हें बलपूर्वक नियंत्रित किया जाता है। वे लोकतांत्रिक रूप से शासित स्वतंत्र व्यक्ति नहीं, बल्कि राजनीतिक कठपुतलियाँ हैं।

हॉब्स लोकतंत्र के प्रति संशय में थे क्योंकि उन्हें डर था कि यह वक्ताओं के एक कुलीनतंत्र में तब्दील हो सकता है। यद्यपि हमारे उद्देश्य उनसे

भिन्न हैं, फिर भी हमें यह स्वीकार करना होगा कि हाल का इतिहास उनके इस विचार का समर्थन करता है। हमने विदेशों में देखा है कि कैसे देश का अग्रणी वक्ता तानाशाह बन सकता है। हमें तानाशाही के ऐसे रास्तों को बंद करके लोकतंत्र को इन अंतर्निहित कमजोरियों से बचाना होगा। यदि हम बल प्रयोग करने वाले संगठनों द्वारा उत्पीड़ित किए जा रहे हैं, तो हम उन्हें निरस्त्र करने के लिए संघर्ष करते हैं। इसलिए हमें वक्ताओं को निरस्त्र करना होगा, और हमें ऐसा उस दिन से पहले ही करना होगा जब उनका प्रभाव हावी होने लगे। जिस देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सभी का अधिकार है, वहाँ ऐसा करने का केवल एक ही तरीका है। नागरिकों को अपने द्वारा पढ़ी और सुनी जाने वाली बातों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा। उन्हें उदार शिक्षा प्राप्त करनी होगी। यदि विद्यालय उन्हें ऐसी शिक्षा देने में विफल रहते हैं, तो उन्हें स्वयं पढ़ना सीखकर और पढ़कर इसे प्राप्त करना होगा।

लेकिन, अपने बच्चों के भले के लिए, उन्हें अंततः यह एहसास हो सकता है कि स्कूलों के बारे में कुछ न कुछ करना ही होगा।

उदारवादी सोच वाले लोगों के लिए संचार के साधनों का दुरुपयोग करना कठिन हो जाता है, यह एक नकारात्मक पहलू है। लेकिन इसके सकारात्मक लाभ भी हैं। लोकतंत्र को सक्षम नेताओं और जिम्मेदार अनुयायियों दोनों की आवश्यकता होती है। ये दोनों ही तब तक संभव नहीं हैं जब तक मनुष्य स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम न हों और उनके पास ऐसे सिद्धांत न हों जो कार्यों को सही दिशा में निर्देशित करें। एक लोकतांत्रिक नागरिक स्वतंत्र होता है, क्योंकि अंततः वह अपने स्वतंत्र निर्णयों के अधीन होता है। एक लोकतांत्रिक नेता केवल मार्गदर्शन करके शासन करता है, न कि उस स्वतंत्रता को थोपकर।

जिस प्रकार एक अच्छा शिक्षक अपने छात्रों में सक्रिय अधिगम को प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है, उसी प्रकार लोकतंत्र में शासन करने की कला नागरिकों की सक्रिय भागीदारी को आमंत्रित करने की कला है।

लेकिन जिस प्रकार अच्छी शिक्षा तभी सफल हो सकती है जब विद्यार्थियों में सीखने की कला—शिक्षक से सक्रिय रूप से सीखने का कौशल—हो, उसी प्रकार लोकतांत्रिक शासन तभी विफल हो सकता है जब नागरिकों में शासित होने की पारस्परिक कला हो। सीखने की कला के बिना, विद्यार्थियों को निष्क्रिय रूप से ही शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। वे केवल विकृत विचारधारा के माध्यम से ही सीख सकते हैं, उस शब्द के दुष्परिणाम स्वरूप में। जैसा कि हमने देखा है, हम तभी उचित रूप से सीखने योग्य या आज्ञाकारी होते हैं जब हमारे पास अपनी क्षमताओं का सक्रिय और स्वतंत्र उपयोग करके सीखने का मानसिक अनुशासन हो। इसी प्रकार, शासित होने की कला के बिना, हम केवल बल या थोपने के द्वारा ही शासित हो सकते हैं।

संक्षेप में, लोकतंत्र उन लोगों पर निर्भर करता है जो स्वयं पर शासन कर सकते हैं क्योंकि उन्हें शासित होने की कला आती है। चाहे वे सरकारी पदों पर हों या मात्र नागरिक, ऐसे लोग अपनी निष्ठा या स्वतंत्रता खोए बिना शासन

आपको आनंद आया हो, लेकिन यह आनंद क्षणिक है। जब तक पढ़े-लिखे लोग सही कार्य करना नहीं सीखते, तब तक हम इन उपलब्धियों से मिलने वाले सुखों से वंचित हो जाएंगे। ज्ञान अपने आप में अच्छा है, लेकिन सही कर्म के बिना ज्ञान हमें एक ऐसे संसार में ले जाएगा जहाँ ज्ञान की खोज ही असंभव हो जाएगी—एक ऐसा संसार जहाँ किताबें जला दी जाएंगी, पुस्तकालय बंद कर दिए जाएंगे, सत्य की खोज को दबा दिया जाएगा और निस्वार्थ अवकाश खो जाएगा।

मुझे उम्मीद है कि स्कूली और गैर-विद्यालयी, वास्तविक उदार शिक्षा से इसके विपरीत उम्मीद रखना भोलापन नहीं होगा। मेरे पास यह मानने का कुछ कारण है कि जिन्होंने वास्तव में महान ग्रंथों को पढ़ा है, वे आज हमारे सामने मौजूद मुद्दों पर अच्छी तरह और तर्कसंगत रूप से विचार करेंगे। व्यावहारिक समस्याओं के बारे में स्पष्ट रूप से सोचने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से जानता है कि उनका सही समाधान केवल उचित कार्रवाई से ही संभव है। हालांकि, वह तदनुसार कार्य करने के दायित्व का सम्मान करेगा या नहीं, यह निश्चित रूप से उदार कलाओं के दायरे से परे है। फिर भी, वे स्वतंत्रता के लिए तैयार करते हैं। वे स्वतंत्र मानसिकता विकसित करते हैं और ऐसे मित्रों का समुदाय बनाते हैं जो विचारों की एक साझा दुनिया में रहते हैं।

इसके अलावा, स्वतंत्र व्यक्तियों की तरह व्यवहार करने की जिम्मेदारी को स्वीकार करना या उससे बचना हम पर निर्भर है।